



मगलाघरण



प्रेमचंद

# मंगलाचरण

श्री ३॥ श्री ३॥ श्री ३॥  
श्री ३॥ श्री ३॥ श्री ३॥  
श्री ३॥ श्री ३॥ श्री ३॥

- ✓ असुरारं मन्त्राविद
- ✓ प्रेमा
- ✓ ह्रम स्वर्मा च ह्रम सवाच
- ✓ लठी सनी

श्री ३॥ श्री ३॥ श्री ३॥  
श्री ३॥ श्री ३॥ श्री ३॥  
श्री ३॥ श्री ३॥ श्री ३॥

ह्रम प्रकाशन  
३ ३ ३ ३ ३

© अमृत राय



प्रकाशक—इस प्रकाशन इलाहाबाद

मुद्रक—सम्पत्तन मुद्रनालय इलाहाबाद

आवरण छग्ना—दृश्य बर श्रीरामान

प्रथम आवरण—प्रमर्षदस्मृति विम १९९२

दृश्य—पहल दाना

## अनुक्रम

१	बसणारे ममाविद ऊर्ऊं देवस्वान-रुस्य	१
२	हमसुर्मा व हमसबाब	१ १
३	प्रेमा	२१९
४	बडी पत्नी	३४९



## भूमिका

प्रमचन्द-साहित्य के सभी पत्रवाले जानते हैं कि मुन्शी प्रमचन्द ने पन्नाह-बीस साल तक उर्दू में लिखने के बाद हिन्दी में लिखना शुरू किया। लेकिन क्या लिखा और क्या लिखा इसके बारे में जनसाधारण को तो छाड़ ही बीबिए, प्रमचन्द-साहित्य के गम्भीर अप्पेठार्या को भी क्यास कुछ नहीं मालूम। पहली बात तो यह है कि वह सब आरम्भिक रचनाएँ पुस्तक-रूप में निकलीं नहीं। जो निकलीं वह भी कुछ ही बरसों में सो यकीं क्योंकि जिसनी बजह से हो उनके बराबर निकलते रहने का तिसमिना नहीं कायम हो सका। सुद मुन्शीजी ने भी उनको या उनकी स्मृति को जीवित रखने का कोई प्रयत्न नहीं किया। कभी बयर किसी ने पूछा भी था बहुत अममने टंग से अबाब देकर बात को टाल दिया। २९ जनवरी १९२१ को उन्होंने अपने बोस्त इन्तयाज अली 'ताज' को अबाब भेजे हुए लिखा था— 'हाँ हमकुर्मा ब हमसबाब और कियना बयैरह मेरी इन्तयाज तसानीज है। पहली बिताब तो सलतत के नबसकिपोर प्रेस में पाया की थी दूसरी बिताब बनारस के मेडिकल हाल प्रेस में। ये साधिवन् सन् १९ की तसानीज हैं। मुन्शी दयानदयन नियम को एक पत्र में अपना सलित्त जीवनवृत्त देते हुए उन्होंने ७ जुलाई १९२१ को लिखा था— सन् १९ १ से छिटररी दिवगी शुरू की। तिसाला बमाना में लिखता रहा। कई साल तक मुतअरिक्त मजामीन लिखे। सन् १९ ४ में एक हिन्दी नाबिल 'प्रमा' छितकर इण्डियन प्रेस से पाया करपा

'प्रमा' मुन्शीजी ने खुद हिन्दी में लिखा होया इस बात को मानने में कोई बिज्जठ लुप मुन्शीजी के इस खत की बजह से पैदा होती है जो उन्होंने ४ सितम्बर १९१४ को मुन्शी दयानदयन नियम को लिखा था— 'प्रताप' के इतरार से मजबूर होकर एक मुत्तसर-सा तिसाला हिन्दी में उसके बिजयबसमी नम्बर के लिए लिखा है। हिन्दी लिखनी तो जाती नहीं मगर कुछ कसम ठीक-मोड़ बिया है।

जिस आबमी को १९१४ में 'एक मुत्तसर-सा तिसाला' लिखने भर की हिन्दी नहीं जाती उसने १९ ७ में पूरा एक नाबिल हिन्दी में कैसे लिखा ?

अन्दाज यही होता है कि मुन्शीजी ने अपने उर्दू किस्से 'हमकुर्मा ब



‘हमसबाब’ का हिन्दी अनुवाद अपने किसी दोस्त से करवा लिया होना और घायर खुद भी एक तरह कास ली हो। ‘हमसुर्मा व हमसबाब’ के प्रकाशन का बर्ष लो ठीक-ठीक कहीं के न मामूम हो सका क्योंकि खुद किताब पर वह कहीं दर्ज नहीं है। मेरे पास जो प्रति है वह उसका दूसरा संस्करण है। नबलकिशोर प्रस में मुझे जो प्रति देने को मिली वह भी उसके दूसरे संस्करण ही की थी। किसी पर प्रकाशन का बर्ष अंकित नहीं है। नबलकिशोर प्रस में ऐसा कोई रिकार्ड नहीं मिला जिससे इस बात का पक्का पता चल सकता। पटना की सुवाबका काइबेरी में इसका पहला संस्करण है लेकिन उस पर भी प्रकाशन का बर्ष नहीं छपा है।

एसी स्थिति में अनुमान ही किया जा सकता है। लेकिन अनुमान के लिए आधार है। उसका पहला विज्ञापन सितम्बर १९१६ के ‘जमाना’ में मिलता है और फिर बराबर मिलता है। इससे यह मतीबा निकालना घायर बहुत एकदम न होगा कि ‘हमसुर्मा व हमसबाब’ १९१६ के मध्य में कभी निकली होगी। यानी ‘प्रेमा’ से पहले क्योंकि ‘प्रेमा’ १९०७ में निकली है कि आप स्वयं उस पर अंकित है— १९०४ में निकलने की बात मुंशीजी ने मल्ल लिखी है।

उपन्यास का पहला मसौदा उर्दू में तैयार करने का तरीका मुंशीजी ने बहुत बाद तक बताया रखा। ‘सेवासदन’ (१९१९) का पहला मसौदा उर्दू में है। ‘प्रमाथन’ (१९२१) का पहला मसौदा उर्दू में है। ‘रंभुमि’ (१९२५) मुंशीजी के उपन्यासों में पहला है जिसका पहला मसौदा हिन्दी में लिखा गया। लिहाजा अगर ‘हमसुर्मा व हमसबाब’ और ‘प्रेमा’ के साथ भी यही बात हुई हो तो कोई टांगुल नही।

इस संरक्षण में आप इन दोनों उपन्यासों को पायेंगे। हमें यह निश्चय करने में थोड़ा समय लगा कि हम इन दोनों उपन्यासों को छापें या किसी एक को ही छापकर संतीय कर दें। लेकिन फिर हमने यही निश्चय किया कि इन दोनों को ही छापना ही होना क्योंकि ये दोनों ही नाम जितानु पाठकों के सामने आते रहे हैं और घायर अपने पूर्व संस्करण के लिए वे इन दोनों को ही बेचना चाहेंगे। बैसे दोनों के कथानक में थोड़ा-सा अंतर भी मिलता है। पर हमारे इस निश्चय के पीछे प्रेमबन्ध-साहित्य के गम्भीर अभ्येताओं की जिज्ञासा का ध्यान ही विचार कारण रहा है। दोनों ही पुस्तकें अपने अविकल रूप में छापी जा रही हैं।

'मसरोरे ममाबिद' (देवस्थान रहस्य) का हवाला मुझको दो-एक उर्दू आलाचम-ग्रन्थों में मिलने को मिला लेकिन बस इतना ही कि 'इन्दारे मुहम्बत (!) नाम का एक किस्सा मूषीजी का बनारस से निकलनवास उर्दू साप्ताहिक 'आबाजए खल्क' में मिलसिसेवार निकला। इतना ही सूत्र काफ़ी हुआ और इसे एक बहुत बड़ा गुप्त सनाप मानना चाहिए कि उस पत्र की प्रकृत मिल गयी। यह एक निहायत गुमनाम-सा पत्रों का जिसकी प्रकृत खुर उसके बपुतर में ही मिल सकती थी मगर मिलनी दुमरी किमी जगह उसके मिलने की इतनी उम्मीद नहीं थी। तभीब अच्छा या जो यह प्रकृत अब तक वहाँ सुरक्षित रही मायी — बीच का एक बंद गुप्त हो गया है जिसका संकेत यथास्थान दे दिया गया है।

मूषीजी की जो रचनाएँ अब तक मिली हैं उनमें 'मसरोरे ममाबिद' ही सबसे पुरानी रचना है और यह एक विचित्र सयोग है कि इस किस्से की पहली किस्त ८ अक्तूबर १९३३ के अंक में छपी — ठीकीस साल बाद ठीक इसी दिन मूषीजी का देहान्त हुआ।

यह किस्सा बिलकुल सरदार के रंग में लिखा गया है, लेकिन बार के मुनी प्रेमचन्द की शक्तियाँ भी उसमें भरपूर हैं। पता नहीं क्यों मूषीजी ने बीच ही में उसे खत्म कर दिया। क्यानक बहुत डीला होने की वजह से उसे जहाँ मन चाहे खत्म कर देने की थोड़ी-सी सुविधा थी उकर है ताहम लगता है कि किस्सा पूरा नहीं हुआ।

इस किस्से को बिलकुल ज्यों का त्यों छापकर मैंने उसका हिन्दी रूपांतर करना ठीक समझा क्योंकि भाषा वहाँ-तहाँ हिन्दी पाठकों के लिए बहुत लिप्त हो गयी है। लेकिन इतना और भी कह देना जरूरी है कि यह रूपांतर बहुत हल्का रूपांतर है। कम से कम शब्दों और वाक्यांशों को बदला गया है और वह भी इस तरह कि न केवल अर्थ की या मात्र की रखा हो बल्कि मूषीजी की शैली की भी पूरी-पूरी रखा हो। निवार की शेष भाषा से बिलकुल बेनेस एक टुकड़ा जो बेहद अरमी-बोसित है और किसी खास महत्तर से (आजकालियों की उर्दू का मजाक उड़ाने के लिए) दिया गया जान पड़ता है, ज्यों का त्यों दे दिया गया है। उठने शब्दों का अर्थ भी नीचे फुनोड में देना बहुत बेडील मान्य होता इस खयाक से उसका केवल सारांश उस टुकड़े के बाद दे दिया गया है।

'रुठी रानी' नाम का क्रिस्ता भी जो अग्रेजों से लेकर अगस्त १९७ तक 'जमाना' में निकला या हिन्दी के लिए बिलकुल नया है। सिद्धान्त वह भी पेश किया जा रहा है बहुत कुछ ज्यों का त्यों।

मुंजीजी की आरम्भिक रचनाओं की खोज-खूँड का काम इस तरह बहुत कुछ पूरा हो जाता है। अब सब एक उपन्यास बचता है 'क्रिस्ता' या बहुत तलाश करन पर भी अब तक कहीं नहीं मिला। बहरहाल तलाश अब भी जारी है। 'क्रिस्ता' का पहला इस्तहार अगस्त १९७ और समाप्तोपना अक्टूबर-नवम्बर १९७ के 'जमाना' में मिलती है। उम्मीद है कि अगले दो-एक वर्षों में वह भी कहीं न कहीं मिल ही जायगी।

'प्रतापचम्य' नाम क कित्ती उपन्यास का जिक्र करनेवाले सब एक मजबूत हैं—अयेस्वर नाम 'बिताब' बरेलवी। उसका और कहीं कोई जिक्र मेरे देखने में नहीं आया इसलिए समझ में नहीं आता कि बिताब साहब की संनद को कहीं ठक ठीक या एतबार के इतिहास माना जाय। उन्होंने भी यह इस बिताब का नाम ही लिया है दूसरी कोई तफ्तील उसके बारे में नहीं दी। अगर इस नाम की कोई किताब मुंजीजी ने सब मुच मिली है तो वह शायद 'अल्फ ईसार' या 'बरदान' का कोई आरम्भिक रूप हो। इस अनुमान का आधार दो बातें हैं—एक तो यह कि इनका भी नामक प्रतापचम्य नाम का ही आया है और दूसरे यह कि मुंजीजी के लिए अपने किसी पुरान क्रिस्ता को फिर उद्यकर मये रूप में सिंग डालना कोई नयी बात नहीं। 'प्रमा' को ही उन्होंने पूरे बीस बरस बाद फिर से उठाकर मय रूप में 'प्रतिमा' के नाम से लिखा है।

पाकिस्तान के अपने दोस्त खहीर प्रजेहपुरी की मेहरबानी से मुझे 'हमसुर्मा व हमसुबाब' सबसे पहले देखने को मिला। उन्हीं की भतीजी प्रति से मैंने नाम लिया है और मैं उनका एहसानमन्दा हूँ।

'अगरारे मन्नाबिद' की प्रशस्त के लिए मैं 'आबाइए रात्र' के बर्न मान अपिचारियों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

'प्रमा' की प्रति मुझे जाती भागरीप्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में मिली। उन्होंने मुझे मुक्तिपूर्वक उमरा उपयोग करने दिया हमके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

★

★

★

असरारे मआबिद  
उफ़

देवस्थान-रहस्य



रेंपीले बलम काहे करो बतुराई ।

रेंपीले बलम काहे करो बतुराई ॥ रेंपीले बलम० ॥

रात का बक्त । अभी इस काली बका की पहली ही मखिल है । दूर से भीठे सुरों की आवाज सुनायी पड़ती है । मालूम होता है कि कोई क्रोडिल-कंठी यौरबर्णा, मुन्दरी प्रेमिका कुब बिल लोड़-लोड़कर गा रही है, बर्षकों को भाव बठा-बठाकर सुमा रही है । तारीजों की बीछार हो रही है । सदर्कों की मरमार हो रही है । बाह-बाह की सबा बुन्द है । हर सस्त का विल कुर्सन्व है । मइद्रिल के सोग सगीत की शराब से मखमूर है । जलसे के भीर्मत अंपूरी शराब से चूर है । मइद्रिल का बिपद्य बिल की लक्ष्म के मारे बेकरार है, परबाना उस पर जान से निसार है । तमाम नेचर मबहोत है । बीबार भी हमातनगोष है ।

धोताओ ! आपका धायब यह सबास होमा कि ऐसी बिल कभाने वाली बदा कहीं बुन्द है ? किस खुपनसीब ने माय जागे है ? किस बदनसीब के रंबो-बुल दूर भाये है ? ऐं, यह आप बंके क्यों पडके पूरी बात तो सुन लीबिए, फिर फिर और गर्वन हिलाइयेमा । एठराब निकासियेमा । यह आवाज भी महादेव त्तियेश्वरनाथ के मन्विर से आ रही है ।

यह सुन्बर मन्विर सरजू नदी के किनारे है । इसके आस-पास की हरियाली ऐसी प्राबलामिनी थीर ऐसी आत्मा को मुख पडुंवायेवाली है कि अमरीका और त्विट्चरसीण्ड के मनमोहक दृश्य भी इसके आये पानी भरते हैं । इसके नामों को नुनकर कानों पर हाथ बरते हैं । एक लख नदी सहूरें मार रही है रात के बक्त सऊर करनेवाली किस्तिर्मा पाल

सोले बसी जा रही है और उनके तख्तों पर बीमे बीमे टिमटिमाते हुए चिरगुण उम्मीद की तरह धुँबले नजर आते हैं। दरिया की लहरें बड़े जोशो-खरोश से उठती हैं और कपारों से टक्कर खाकर रुक जाती हैं। बिलकुल उसी तरह जैसे कोई सुस्मर और सत्तापी हुई क्रीड किसी मजबूत और पायेदार किले पर हमला कर रही हो मगर उसका तो बाल भी बाँका न कर सके खुद ही अपना-सा मुँह लेकर रह जाये। दूसरी तरफ कुछ हरे मरे पेड़ अपनी लंबी शाखों को हवा में उठाने मस्ती से झूम रहे हैं और इस बात का स्पष्ट प्रमाण वे रहे हैं कि जो जमाने की लहरों ने जन गिनत हेकड़ों को बड़ सि खोदकर फेंक दिया और हजारों मजहूर मीलों का नाम हस्ती के पंखे से मिटा दिया मगर उन बोड़े से नामवालों का कुछ भी न बचाइ सके जिनका नाम आज तक दोपहर के सूरज की तरह चमक रहा है और अनन्त कास तक यों ही चमकता रहेगा। पास-पड़ोस के गाँव बिलकुल बीधे हो रहे हैं। इस मन्दिर में शक्ति होते ही एक बड़ा फाटक मिलता है जिस पर बरबानों की मूर्ति इस सज्जाई से धँसी गयी है कि पहली मजहूर में इंसान बरकर धोला सा जाये। फाटक से जाने बड़कर एक लम्बा-चौड़ा महल है जिस पर हरी-हरी पास खूब गुहाबनी मामूम होती है। इस महल के सामने महादेव जी का आलीपान मन्दिर है और उसके इपर उधर मज्जीम इमारतें बनी हुई हैं जिनमें से कोई तो मोघाका है कोई बर्म शासा कोई मठ और कोई महल जी का निबानस्थान। महल जी की बैठक का कमरा तरह-तरह की मुम्बर चीजों से सजा हुआ है। प्रान्त पर संयमर मर के खूबसूरत तख्ते बड़े हुए हैं। दीवारों की पच्चीकारी इन इमारत की समान खूबियों को बजाती है। एक-एक मुल-बूटा देखकर बहुत रग हो जाती है। जो मजाबट और मजामत यहाँ देखने में आती है चायद घरीजों और बमीरों के पुरतबस्तान कमरों में मुद्रिक से नजर पड़ेगी। हर खिम की शीमनी चीजें तरह-तरह के सजाबट के सामान यहाँ पर मुजोमित हो रहे हैं और उनका मुनामिब मीचों पर मजामा आना मजाम मालिक की मुद्र और पतिवृत्त दधि का प्रमाण देता है।

इस बरन भीमान् बाबा बिलोरीनाब माधे पर लाले खन्दन का टीका

अपाये पीले रंग की भड़कीली मिर्चें बाटे बैठे हैं। यसे में अममोल मोठियों की एक मोहनमाला पड़ी हुई है। सिर पर एक बड़ा टोपी अजीब रंग से रक्की हुई है। उनके जूनी पाँतों ने बेचारे बेगुनाह पाग के बीकों का जून इतना बसाया किया है कि जून की लाली क्रांतियों के गले का हार होकर बार-बार उनकी तरफ उंगली दिखा रही है और चूँकि ये जलसादी बात जून करने के आधी ही पये हैं, उन्हें बिना किसी बेगुनाह के जून से हाथ रीन नहीं और इस समय वे बड़ी तत्परता से अपने काम में लगे हैं। यह जो आप महंत जी के माये पर लाल निघान देख रहे हैं यह बन्दन के निघान नहीं बल्कि इस बात को सिद्ध कर रहे हैं कि हज्जत ने म्याय और बर्म का जून कर डाला है। आप जो इनके घले में मोहनमाला देख रहे हैं यह अचल में लोन का फंदा है जो आपकी जूब कसकर जकड़े हुए है। सिर पर सिरपी रखी हुई टोपी आपकी बज्जत के तिरछेपन को बाहिर कर रही है। आपके शरीर पर रंग-बिरंगी मिर्चें नहीं हैं, बल्कि र्मभिरबासियों को सम्ब बाण दिखाने का संन है जो आपके हृदय के अन्व कार और कालिमा के ऊपर परों की तरह पड़ा हुआ है या बुद्धों को लाल परबादा दिखाने का बीबार है जो भीतर की कालिमा को संन्यास और वैराग्य के परों में छिपा रहा है, या घोबे की टट्टी है जो मकड़ों को जाक में फँसाने के लिए फँसायी बयी है। बिलोभीनाप यह अमीरों बैसा ठाट-बाट बनाये पाबतकिमा रुमाये बड़ी आन-बान से सुशोभित हो रहे हैं। उनके शक्तिने तरफ एक और महानुभाव आसीन है। यह महापय उन्न में महंत से कुछ बड़े होंगे इन्ह भी उनसे कुछ ऊँचा होया। इन दोनों साहबों के अलावा और कोय भी मौजूद हैं, मगर कोई ऐसा नहीं जिसके बैहरे से पबिबता न टपकती हो, जिसने बाबापन का लमणा न हासिल किया हो। इन लोनों के शरीर ही से प्रकट है कि ये परले सिरे के पैदू हैं। हममें तनिक भी अति रंजना नहीं है कि उनका पैद नाह से कम नहीं। गाळ इतने फूले हुए हैं कि लगता है हक ने काट साया है। उस पर तुर्प यह है कि मुँह में पाग ठँसा हुआ है। महकिसवालों का हाक तो हम कुछ बिस्तार के साथ बतला चुके, अब महकिस की आन और महकिस की रौनक का भी कुछ बिब सुन



लीजिए। तिलोकीनाथ के सामने एक फूल जैसे मुखड़ेवाली बड़े-बड़े मृदुपियों का ठप भंग करनेवासी सबको तबाह करनेवासी कमखिल छोकरी बड़े नाबो-अन्दाब से बिराज रही है। यह परी उन सब प्रसंसाओं की अवि-  
कारिणी है जो कदियों की अतिव्योक्ति ने सदियों पसीना बहाने और जान सगाने के बाद पड़कर निकामी है। उसके यहने-कपड़ों का क्या पूछना। मामूम होता है कि आसमान से कोई अप्सरा उसके भेप में उतर आयी है। इस परी के साम साबिन्दे बह-मण्डल की तरह जमा हैं। सबसे पर बाप पड़ रही है। जोड़ी बज रही है। कमरे का दरवाजा अजीमची की नाँव की तरह बन्द है।

स्वामी जी — (तिलोकीनाथ के असली दोस्त) ओ हो हो क्या मला पाया है!

छोकरी (मुस्कराकर) — ठसलीम यह आपकी छत्र-अच्छाई है।

तिलोकी — बाह बाह बाह क्या लुब! ईश्वर जानता है, वह मजा ना रहा है जैसे कोई अप्सरा ना रही हो।

छोकरी (आँसू मटकाकर) —

मोहे आछत सौतिन घर डाप्यौ।

अरे ही मोहे आछत सौतिन घर डाप्यौ

मला ई है कीन भलाई।

रैतीले बलम काहे करो बनुराई॥ काहे करो॥

तिलोकी — हाय हाय आत्मि अन्त कर डाना! क्यों स्वामी जी सैसा रंग गठा?

स्वामी — माई हमस इस बक्त कुछ न बूछो रिम अमागे के हीग हवास ठिराने है।

तिलोकी — अजी यह पीत्र ही ऐना है कि परपर हो तो वह भी रिमन बाप हमारी-गुन्हारी क्या बात है?

स्वामी — उस्ताद मिरा तो हम निकला चाहता है। बुरी बन हो रही है।

मसखारे मजाबिब

बिसोकी (छोकरी की तरफ मुखातिब होकर) — कहो बीबीबाब  
हमारे स्वामी जी का तो अब बम टूटा बाहूटा है।  
छोकरी (एक ब्रास बन्दाब से मुस्कराकर) — मसा मेरा बार भी  
कमी ब्रासी बाटा है।

बिसोकी — भण्डा भण्डा इस वक्त घाब पर तमक छिड़क को।  
बिन्दा है तो हम भी देख लीये।

छोकरी — बरा मुँह तो देखूँ? बस इसी पर समझ केने का दावा  
है? यह कहकर उस स्मसी ने फिर घुर घरा —

सास-ननद मोहें बरही मारें।  
मरे सास-ननद मोहें बरही मारें।।  
मसा का पइहूँ मोका बलाई।  
रेपीले बलम काहे करो बतुराई।।

बिसोकी — बाहू बाहू, क्या बात है।  
छोकरी (कन्मास से बेहरे का पसीना पोंछकर) — कहिये बाबा जी  
बाब क्या कंबूसी पर कमर बाँधी है? क्या कुछ परघाब बरीछू न पिल्ला  
हवेगा ?

बिसोकी — हाय बाब साहब तुम्हारे लिए तो जान तक हाबिर  
है।

यह कहकर बाबा जी उठे, एक बरमायी का घासा बोला जिसमें  
हर तरफ़ की घराबों की बहुत-सी बोतलें बड़े झरीने से चुनी हुई रखी थीं।  
कई बोतलें निकाली नमकीन बटपटी चीजों का भी प्रबन्ध किया  
गया।

स्वामी — सराब पीने का मजा तो जमी मिलता है जब कोई मेंहरी  
रवा क्रोमल हाय पिलास भरकर दे और पार सोय बाँब सूँदकर सब का  
सब एक ही बम में बट कर बायें — क्यों जान साहब बरा इतर रेखो  
हमारी खातिर से इतना ही करो।

छोकरी (बैगूठा रिबाकर) — मेरी बला जाती है। मस्ताह की

झीबिए। त्रिलोकीनाथ के सामने एक फूँट जैसे मुखड़ेवाली बड़े-बड़े ऋषियों का तप भंग करनेवाली सबको तबाह करनेवाली कमखिम छोकरी बड़े मानो-अन्त्या से बिराज रही है। यह परी उन सब प्रसंखानों की अथि कारिणी है जो ऋषियों की अतिथिमोक्ति ने सवियों पसीना बहाने और आन छगाने के बाद गड़कर निकाली है। उसके गहने-कपड़ों का क्या पूछना। मामूम होता है कि आसमान से कोई अप्सरा उसके मेघ में उतर आयी है। इस परी के साथ साखिन्हे ग्रह-मण्डल की तरह बमा हैं। उसके पर बाप पड़ रही है। जोड़ी बच रही है। कमरे का परबाबा अश्रीमजी की बाँख की तरह बच है।

स्वामी जी — (त्रिलोकीनाथ के असकी बोस्त) ओ हो हो क्या बला पाया है !

छोकरी (मुस्कराकर) — उससीम यह आपकी कत्र-अफ्रवाई है।

त्रिलोकी — बाह बाह बाह क्या खूब ! ईश्वर जानता है, वह मबा था रहा है जैसे कोई अप्सरा गा रही हो।

छोकरी (बाँसें मटकाकर) —

मोहे आञ्जत सीतिग धर डार्यी।

भरे ही मोहे आञ्जत सीतिग धर डार्यी

मला ई है कौन मलाई।

रैपीले बलम काहे करो बपुराई ॥ काहे करो ॥

त्रिलोकी — हाय हाय आञ्जिम इतरु कर डाला ! क्यों स्वामी जी कैसा रंग मठा ?

स्वामी — भाई हमसे इस बक्त कुछ न पूछो किस अमाने के होय हवास ठिकाने है।

त्रिलोकी — अजी यह पीठ ही ऐसा है कि पत्थर हो तो वह भी पिबल बाव हमारी-तुम्हायी क्या बात है ?

स्वामी — उस्ताद मेरा तो दम निकला बाहता है। बुरी गठ हो रही है।

मसलारे मसाबिब

बिलोकी (छोकरी की तरफ मुखातिब होकर) — कहां बीबीजान  
हमारे स्वामी जी का तो सब बम टूटा जाहता है।  
छोकरी (एक सास अम्दाब से मुस्कराकर) — मका मेरा बार भी  
कनी खासी जाता है।

बिलोकी — अच्छा अच्छा इस बकल घाब पर तमक छिपक को।  
बिन्ना है तो हम भी देख लेंगे।

छोकरी — क्या मुँह तो देखूँ? बस इसी पर समझ लेने का दावा  
है? यह कहकर उस स्वामी ने फिर मुर मरा —

सास-जगद मोहूँ बरही मारें।  
धरे सास-जगद मोहूँ बरही मारें॥  
मला का पदहूँ मोला जलाई।  
रेवीले बलम काहे करो बपुराई॥

बिलोकी — बाह बाह क्या बात है।

छोकरी (कमाक से बेहरे का पसीना पोंछकर) — कहिये बाबा जी  
बाब क्या कंजूसी पर कमर बाँधी है? क्या कुछ परघार बपौरहूँ म पिलवा  
इयेवा ?

बिलोकी — हाय जान साहब तुम्हारे लिए तो जान तक हाबिर  
है।

यह कहकर बाबा जी उठे एक जलमाटी का ताका खोला जिसमें  
हर तरह की घराबों की बहुत-सी बोटलें बड़े कटीने से चुनी हुई रली थीं।  
कई बोटलें तिकाली तमकील बटपटी चीरों का भी प्रबन्ध किया  
गया।

स्वामी — घराब पीने का मजा तो जनी मिलता है जब कोई मेंहरी  
रवा कोमल हाब पिलास भरकर बे नीर मार लोग बाँब मूँदकर सब का  
सब एक ही बम में बट कर बाये — क्यों जान साहब बरत इपर देखो

छोकरी (बौगुडा दिखाकर) — मेरी बला बाडी है। जल्बाह की

शान में बसू और आप विमें। ऐसी छाठिरवारी को दूर ही से सजाम है।

त्रिलोकी — हम लोगों का दिक् न ठोड़ा करो जान साहब हम लोग चोट साने हुए हैं।

सरब कि बड़ी मान-मनीषठ के बाद छठ कमसिन छोकरी ने धरम उठेनी और मार लोग इहलोक और परलोक को भूसकर गिजास पर गिजास बड़ाने लये।

त्रिलोकी — माई, ईस्वर जानवा है, ऐसी बुरी हासिल हुई कि जैसे स्वर्ग का द्वार खुल गया।

छोकरी — जी हाँ बरकर, बहिष्ठ का दरवाजा आप जैसे पिसकड़ों के बास्ते ही तो खुलेमा।

स्वामी जी — जान साहब हमको स्वर्ग-नरक केकर आटना बोड़े ही है। तुम जिस दिन हमारी बपस गरम करती हो उस दिन हम समसते है कि स्वर्ग का दरवाजा खुल गया।

छोकरी — अब आप बहुत बड़ बले हैं। नहीं मसल हुई कि मुँह अगाये डोमनी नाके तास बेताल। मैं तरह देती जाती-हूँ और आप बोकी कसे बाठे है। बल्लाह अब तुम्हारी खामत जाया ही जाहूयी है।

स्वामी — इस बस्त मेरा बिमाग सातबे आसमान पर है।

त्रिलोकी — और मेरा बिमाग रसातल में है।

स्वामी — मेरा बिमाग सातबे आसमान पर इस बजह से है कि आज की जान मे मुझ पर करम किमा और मुझको चुमने की इजाजत से बी।

त्रिलोकी — और मेरा बिमाग रसातल में इस बजह से है कि आज की जान मे इनकार करके दिक् ठोड़ दिया।

छोकरी — माहूम होता है कि तुम लोगों की जोपड़ी खुजभा रही है, लामो ठो बरा सहजा है।

त्रिलोकी — जोपड़ी सहलाओ अपते जनाओ मपर आज दिन न टले। मुपाद बरूर पूरी करो।

अमी बेचारे के मुँह से पूरी बात भी न निकलने पायी की कि छस छोछ

## भरतारो समाधि

लड़की ने उठकर वह तपस्वी की टोप बड़ी कि तमाम कमरा पूरा उठा और वह बड़ाऊ टोपी एक तरफ को फिर पड़ी।

छोकरी — और सोये बचा और लोने। जैसे ये मुझसे छिडोली करते। (रुड़रुहा लपटी है)

त्रिलोकी — मेरी जान अगर तुम इतक भी कर बालो तो उठ न करे। यह बौतिकियाँ ऐसे फिटने पटावे खाया करती हैं मपर बरा भी अगर नहीं होता। कुछ काँच की तो बनी नहीं है कि टूट जायेंगी ही शायद तुम्हारे मानुस हाथ को कुछ टेंस लगी ही।

कथावाचक — क्या कहने हैं जिस हाथ की टोप से तमाम कमरा पूरा उठे उसे मानुस कहना आप ही का हिस्सा है।

गरब कि बड़ी देर तक आपस में नोक शोक होती रही। बाहर कार धराब ने सबसे होश-हवास को मार मगाया और इन बेबकूफ पीने वाला को बुरा विगानी का नाच मचाया। जब सकर इरा ख्यावा हुमा तो स्वामी जी ने उस मुन्ढरी का हाथ पकड़कर उसे अपनी गोद में लीचा। त्रिलोकीनाथ भी थुपके से बड़ आये। कमसिन छोकरी ने 'छोड़ दे छोड़ दे ठेरे पीयाँ पड़े छोड़ दे छोड़ दे पीयाँ पड़े छोड़ दे' कहकर स्वामी जी को मानुस-मानुस हाथों से अपतियाना शुरू किया।

कथावाचक — जब तो आपको हाथ की मबाकत का हास बकर ही मानुस ही गया होया।

स्वामी जी बेधुमार बपते जाते-जाते बपरपट्टु बन गये लेकिन इस खयाल से कि कहीं मेरा त्रिसियानापन बाहर न ही जाय और यह लोग बाड़े हाथों न सेने सगे बेचारे सामोस होकर सब कुछ रहते जाते ये।

छोकरी (एक और जमाकर) — देखो देखो छोड़ दो नहीं तो ठीक नहीं होला। (बीरे से) क्यों जाने से बाहर हुए जाते हो? जल्दी के मारे मरे जाते हैं! पहले इन समाजियों को तो दूर करो। इस तरह ह्येनी पर तरखों नहीं जमायी जाती।

त्रिलोकी (समाजियों से) — तुम लोग बड़े बरतनीब हो जी बड़े बैठे हो क्या गर्दनिया सामोने?

बुढ़ा समाजी— बिस्मिल्लाह हुजूर खुशी से चीक़ क्रमामें बन्धा हरमिय बार्डे न बायेगा। अगर मुसाम को खबर होती कि मेरे सबब से हुजूर के ऐश में फ़काबट हो रही है तो मैं कमी का चसा नया होता। हुजूर ही के इशमों की बरकत से बड़े-बड़े रईसों के दरबारों और महफ़िलों में हाज़िर होता हूँ और जो हुजूर खुशामब कटीम ने इस नापीब को जता क्रमामा है, उसी से हुजूर की तबीयत बहकाता हूँ। हुजूर बन्धापरबद, इतनी उन्न मुसाम की बड़े-बड़े अमीरों और शरीफ़ों के इशमों तसे बसर हुई है मगर जो अमीराना अन्धाब और शरीफ़ाना तर्ब व शरीफ़ा हुजूर के दरबार में दिक्कामी पड़ता है, शाबब और किष्ती को मयस्सर भी न हो। और हो क्योंकर, आप पौतकों के रईस हैं हुजूर

बिसोकी— स्वामी खर इस मरबूब को वेता तो एक पुहा। बेहूबा फ़िज़ूल बक-बक करके मगब जाट गया। किष्ती तरख़ जाटा ही नहीं। निकाल बाहर करो मरबूब को।

समाजी— खर हुजूर सामयशूर इस मुकामे बिरम नाखरीवा कि खर नसीहों शीर से

बिसोकी— खुप रख़ उखू का पट्टा आया है वहाँ से बुकरात बनके। वही गैबारु मसल है कि भौड़ भाब न जाने अपने तीन पसर से काम। नया बिम्बगी भर माड़ शौक़ते रहे या बाउ काटते रहे। बाउ सज़ेद हो गबे मगर मीके-महस की तमीब न आयी न आयी।

समाजी— हुजूर की यह सकत बाते इस नापीब को बहुत मीठी माखूम होती हैं। बाख़िरकार तो हुजूर के नमक पर पला हुवा गुसाम ठहरा। अगर इस नापीब से कोई ऐसी बात हो मयी हो जो आपकी तबी यत के खिजाऊ हो तो हाब जोड़कर बिनती है कि उसे आप अपने बिस से निकाल बाक़िये।

बिसोकी (शक्काकर)— मर्द, इस बेईमान की शिकसिक ने तो मजब परीघान कर दिया। न माखूम कहीं की बाते पेट में भरी हैं। बरे मियां रोब जो आप इस बक्त हैं कहीं यह कोई नया दरबार बोड़े ही है जो आप इस इशर बहस-मुबाहसा कर रहे हैं। होस में आइये।

## असरारे मजाबिब

समाजी — हुजूर बन्दे की एक सुबारिया गुमने की तकलीफ कीजिए। एक बच्चा इस माफीज की मजाब साहब बहादुर की महकिल अर्थमंडिल में हाजिर होने का मौका मिला। मजाब साहब बड़े ही बरिपाविस जुम मजाब और हँसोड़ तबीयत के थे। एवों ही माफीज ने महकिल में काम रक्खा उन्होंने फरमाया — बस्साह, किम्का इबर ठसरीछ साहये। बस्साह जाँबें आपकी डूँड रही थीं। इस माफीज ने फ़ौरन कहा — हुजूर, किम्का की कहीं नजरों से बोसल होता है। अब बेसिये नजरों के सामन। अब मजाब महकिल के तमाम लोग हूँसी के मारे लोट-लोट पये वो वा फ़रमायी छहकड़े पड़े कि कमल हिल उठा। हुजूर और फ़रमायें कि साबिम से एक हजरत ने पूछा कि क्यों साहब यह जो हँसते बसत लोग बार से छहकड़ा माघ करते हैं उसकी क्या बजह है? डिखी ने झूठे ही बहा — मुसिये किम्का आबमियों के बिल में हर बजत किसी न किसी किस्म का मलास रखा है और चूँकि खुशी और रंज फ़िरत से एक-दूसरे के ठठटे हैं इसकिए अब खुशी का दौर होता है तो वह पहले जाती है, डीट बतघाली है ताकि रंज फ़ौरन डरकर भाग भाग्य। इस कलीके पर सोप यहाँ तक हँसि कि पेट में बल पड़-पड़ पये।

ममी मियाँ साहब का तकरीर का सिलसिला सतम नहीं हुआ वा और करीब वा कि वह कोई नया दिगूझ खिलायें मपर स्वामी की ने धक्के देकर निकाल बाहर किया। खेच भी अब निकाल बाहर किये पये तो उनके साबियों ने भी रास्ता किया। ऐरे-ऐरे पँचकस्मानी जितने व सबकी पुतकर बतायी गयी और अब इस महकिल में स्वामी महल और कमधिन छोडरी को छोडकर कोई न रहा। इस तरह अब एकांत हो गया तो मापस में प्रेम और लगावट की गुपचुप बातें होने लगीं।

बिलोकी — बानी अब आज तो बादा पूरा करे। वा बाबो कसेजे में बिठा सँ।

स्वामी — बानी हाथ जोड़ता हूँ आज खुशी से एक बुम्मा दे दो।

बिलोकी — देखें पहले किस माम्यबाग की किस्मत आगती है।



बुढ़ा समाजी — बिस्मिल्लाह हुनूर खुशी से शीक़ करमायें बन्वा हरगिब भाड़े न बायेगा। अगर गुलाम को खबर होती कि मेरे सबब से हुनूर के ऐश में रुकावट हो रही है तो मैं कभी ना चका गया होता। हुनूर ही के इत्यमों की बरकत से बड़े-बड़े दरबारों और महफ़िलों में हाज़िर होता हूँ और जो हुनूर सुदाबब करीम ने इस नाबीब को अठा करमाया है उसी से हुनूर की तबीयत बहसाता हूँ। हुनूर बन्दपरबत, इतनी उम्र गुलाम की बड़े-बड़े अमीरों और सरौछों के इन्दमों तछे बसर हुई है मगर जो अमीराना अन्बाब और सरौफामा तर्ब न तरीका हुनूर के दरबार में बिस्मायी पक़ता है, चायब और किसी को मयस्सर भी न हो। और हो क्योकर, आप पीतकों के रईस हैं हुनूर

बिलोकी — स्वामी जरा इस मरदूब को देना तो एक गुहा। बेहुवा फ़िज़ूल बक-बक करके मग़ब चान गया। किसी तरह बाता ही नहीं। निकास बाहर करो मरदूब को।

समाजी — जरा हुनूर सायमभूर इस गुलामे बिरम ताबरीदा कि चन्द मसीहयें गौर से

बिलोकी — पुप रू उस्तू का पट्टा आया है वहाँ से बुकरात बनके। वही गैबाक मसख है कि मोंपू माव न जाने अपने तीन पसर से काम। क्या खिन्दगी मर भाड़ झोंकते रू या चास काटते रहे। बाब सफ़ेद हो गये मगर मीझे-महल की तमीब न बायी न बायी।

समाजी — हुनूर की यह सख्त बातें इस नाबीब को बहुत मीठी मानूम होती हैं। बाख़िरकार तो हुनूर के नामक पर पसा हुमा गुलाम ठहरा। अगर इस नाबीब से कोई ऐसी बात हो मयी हो जो आपकी तमी यत के सिक्का हो तो हाब जोकर बिनती है कि उसे आप अपने बिक से निकास बाबिये।

बिलोकी (अस्काकर) — भई, इस बेईमान की शिक़सिक ने तो मग़ब परीखान कर दिया। न मानूम कहीं की बातें पेट में मरी हैं। जरे मियाँ खेब की आप इस बकत हैं कहीं यह कोई गया दरबार बोड़े ही है जो आप इस इन्दर बहस-मुबाहला कर रहे हैं। होस में भाइये।

## बसरारे मन्नाबिब

स्वामी — हुनूर बन्ने की एक मुबारक गुनमे की तकलीफ कीबिए। एक बड़ा इस नाबीब को नबाब साहब बहादुर की महफिल अरामबिल में हाबिर होने का मौका मिला। नबाब साहब बड़े ही दरियाबिल गुन मबाह और हँसोड़ तबीयत के थे। ज्यों ही नाबीब ने महफिल में इराम रक्ता जन्हेन क्रमाया — बस्काह किम्ता इबर तपरीफ काइये। बस्काह बाबें बापको हँड रही थीं। इस नाबीब ने फौरन कहा — हुनूर, क्रमाइयी इरुकरे पड़े कि कमरा हिल जठा। हुनूर और क्रमाये कि काबिम से एक हजरत ने पूछा कि क्यों साहब यह जो हँसते बत सोम बोर से इरुकरा मारा करते हैं उसकी क्या बजह है? डिबबी ने फूटते ही बहा — मुनिये किम्ता बाबमियों के दिल में इर बजत किसी न किसी किम्ता का मलाह रहता है और बूँकि कुगी और रंज डिबलत से एक-बूसरे के जन्टे हैं इसलिए जब कुगी का बीर होता है तो वह पहले जाती है, डाँट बतलानी है ताकि रंज फौरन डरकर भाग पाय। इस कतीजे पर लोग यहाँ तक हँसि कि पेट में बल पड़-पड़ मये।

अभी मियाँ साहब का तकरीर का सिबसिला खतम नहीं हुआ बा और डरीब बा कि वह कोई नया सिपूजा बिसायें मगर स्वामी जी ने उनके बैकर निकास बाहर किया। रोख भी जब निकास बाहर किये गये तो उनके बाभियों ने भी रास्ता लिया। ऐरे-दीरे पँचकस्यानी बितने से सबको दुतकार बतयी गयी और अब इस महफिल में स्वामी महंत और कमसिम डोकरी को छोड़कर कोई न रहा। इस तरह जब एकांत हो गया तो बापस में प्रेम और लमाबट की गुणगुण बातें होने लयीं।

बिलोकी — बानी अब भाब तो बाबा पूरा करो। भा बाबो कलजे में बिठा नूँ।

स्वामी — बानी हाब जोइता हूँ मात्र कुगी से एक चुम्मा दे दो।

बिलोकी — देखें पहले किस भाग्बान की किम्मत जागती है।

छोकरी — जमी बसम हटकर बैठे, चले हो ठंडी ममियाँ जताने ।  
म मामूम इन मरदूरों को इतना बात बनाना किसने सिखा दिया ।

बिलोकी — मेरी जान हम तो तुम्हारे आधिष्ठ हैं, हम बात बनाना क्या जानें ।

बिलोकी — मेरी जान इसमिया कहता हूँ कि न मामूम किसने दिनों से तुम्हारी प्यारी सूरत पर फिखा हूँ मगर तुम्हारा विस ऐसा सख्त है कि जमी तक न पसीया । हम तो तुम्हारे ऊपर जान बँ और तुम हमसे बँ भागी भागी फिरो । क्यों यही इच्छाऊ है ?

स्वामी — उस्ताद ईश्वर ने इन हसीनों की मिट्टी में बेचारे टूटे हुए बिस के मर्दों को बचाने का कुछ माहा इकट्ठा कर रखा है । चाहे कोई बरख हो या न हो मगर इनको इस काम में ऐसा मबा खाता है कि जब देखो इसी टोह में रहते हैं । हम तो इनके बेवामों मुकाम बनने को तैयार हैं और इनकी भी बिस है कि हम अपनी बात बनायेंगे ।

छोकरी (हसरतमरे लहजे में) — जमी यह सब जाली-पीली बातें हैं । इस जवानी फलसफ़े से काम नहीं चलता । मैं ऐसी लम्हीं भी नहीं हूँ कि अपने फ़ायदे की बात न समझूँ । यो जमी पन्द्रहवें साल में हूँ मगर तुम लोगों की बेबक़ादियाँ खूब बेख चुकी । तुम लोगों की तो यही हासत है कि मुँह पड़ी जाला नानी और पीठ पीछे रुपमन खानी — मुँह में और, मन में और । मुँह से तो जो जो बातें करोये कि जमीन और आसमान के कुम्भारे मिसा बीये और मन में छुरी छिनाने रहोये । तुम लोगों के हक़क़ं बुबा की पनाह बुबा बचाये उनसे ।

बिलोकी (बोध से बोध में खीबकर) — मेरी जान इसमिया कहता हूँ कि मैं तुम्हारी सूरत पर मरता हूँ । मैं वह मर्द नहीं हूँ कि दया फ़रेब सेरुँ एक बेचापी औरत को बोक़ा हूँ । तुम जाबमा ली हर भाव माहल में हमको बरा पामोनी ।

छोकरी — जमी ऐसी ही ठंडी ठंडी बातें तो सभी करते हैं मगर इसई तो बाद को बुल जाती है न ! पहले तो ऐसी ऐसी मममाई बातें करोये कि बीसे कुछ तीन-चार छनका-पजा नहीं जागते मगर बाद को जो

वो चालें बल्लोने कि लोबा ही जली। तुम सोनों की मीठी बातों पर लट्टू होला मन की मिठई खाना है।

स्वामी — मेरी जान हम अब ऐसे घब्र कहीं से लायें वो हमारी सखी बातों को तुम्हारे दिल पर जमा हैं। जनेऊ की दापन खाकर कहता हूँ कि हम सोनों की बात में रती पर भी लमन-विष नहीं। (कुछ सोचकर) मेरी एक बात मांगो वो कहीं मगर तुम काहे को मानने लयीं।

छोकरी — क्या कहते हो कहो मानने काबिस होनी तो क्यों न मानूंगी।

स्वामी — हमारे यहाँ इस बरत सब तरह का बायम का सामान मौजूब है — इलाका नीकर बाकर, हापी-भोड़े सभी कुछ हैं। तुम्हारे बासते एक बूबसुख मकान बनन कर दिया जायगा। हर तरह का बकरी सामान भी इकट्ठा कर दिया जायगा। दो-एक लौबिमा भी नीकर रख दी जायेंगी वो हर तरह का बायम रेंगी। हम लोग खुद ही तुम्हारे नीकरों बीसे रहेंगे। तुम्हारी साखिरापी में कोई बात उठा न रखी जायगी। खूब शीर से सोचो।

यह कहकर स्वामी जी ने पाहा कि लकड़कर उधके सात-सात होंठों को घूम लूँ, मगर उसने मूँह हटा किया।

छोकरी — भई, तुम्हारा एतबार नहीं। बाब लो में यहाँ बाकर रहना-सहना धुक करे, कल को कोई मुसीबत जा पड़े और मैं यहाँ से बनन होने पर मजबूर की बाउं लो माहक मुफ्त की समिन्गी हो। रिस्ते-बिरादरी की बीरतों को ठाना मारने का पीका हाथ जा जाये कि भरी हुई नेमत को सात मारकर यहाँ ययी भी बाखिरकाण बलील होकर निकाल दी गयीं।

जिलोकी — अब तुम्हारे इस अविश्वास का क्या हसाज है ?

छोकरी — माई मुनो, बूब का जमा लछ मी फूँक-फूँक पीता है। मैं एक बटा बह पत्तड़ बेल चुकी हूँ। तब से मैंने काल पकड़े कि अब बिना सोने-समझे हरमिब हरमिब ऐसे पेचीदा मामलों में जान न फँसाऊंगी। बनी कुछ ही रोज बीते हैं मेरी एक मूँह बोलनी बहुत हारी है, उनसे और एक तासमुन्नेरा से कुछ छँठ-गाँठ हो गयी। बानू साहब ने देवी-देवी

बिकनी-भुपड़ी बातें कीं कि वह बेचारी कमिनी की मारी फूल उठी और बोरिया-बचना लेकर उनके यहाँ जा बसकी। कुछ दिनों तक तो ऐसा मन्सा बसा रहा कि क्या बतकाऊँ। हम लोग समझने लगे थे कि बेचारी की जिन्दगी अब बिना किसी झगड़ के कूट जायगी। मगर बोड़े ही दिनों में तमाम उम्मीरें हवा हो गयीं। पहले तो बी-तीन बार पेट पिराया गया बाहिरकार बाबू ने उसे निकाल दिया। बेचारी की बही मसख हुई—न लुबा ही मिला न बिसासे समन न इबर के हुए न उबर के हुए। वहाँ से निकलने के बाद उसने कैंची-कैंची परेसामियाँ और मुसीबतें खेची हैं कि उनको याद करके मेरे तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कौन-कौन सा कुछ नहीं सोयी बेचारी! बेकसामे वह बयी घर उसका कुर्क हुआ जहर भी बेचारी को दिया गया मगर जिन्दगी मजबूत भी बच गयी और सब पर तुरी यह कि यह सब बाबू साहब ही की बरीकत हुआ।

स्वामी—सब मर्ब एक ही कँडे के बोड़े ही होते हैं। वह बेवक़्त या बेवक़ाई कर गया। हमको तो ऐसे आवतियों की सूरत से ही मकरत है।

छोकरी—इसका तो सब ही इन्तिहास ही जायगा।

बिकनी—मेरी जान अब इस बात का ऊँसला सोचकर कल कर सेना। इस वक़्त मबा किरकिरा हो रहा है।

यह कहकर उसने बिलास पर बिकास चढ़ाना शुरू कर दिया। उसके साधियों ने भी उसका अनुकरण किया। पीड़ी ही बेर में वह सब मसे में बुत् हो गये।

(छोकरी बिकनीनाम के कान में कुछ कहकर मुस्कणती है।)

स्वामी—क्यों मार जी दिन दहाड़े मेरी नजरों में लाक बाली जाती है! अकेसे ही अकेसे मबा लोये!

बिकनी—तो तुम क्यों चकते ही? क्या इसमें भी कुछ सामा है तुम्हारा।

यह कहकर महंत जी महाराज ने उस परी को गोद में बिठा लिया और टाबड़तोड़ कई बोस लिने।

स्वामी — याद, अब तुम बड़ा बुझ कर रहे हो। हमारा हिस्सा यो बकर लगाना चाहिए। यह बेहम्याली अब नहीं देखी जाती।

बिलोकी — बड़ी परे हटो किछ सेव की मूठी हो तुम। हुं बड़े पत्रासेठ बनकर भाये हो वहाँ से श्रमा यी हिस्सा लने।

स्वामी — अब तुम पिटे मेरे हाव से आ गयी कामत तुम्हारे।

बिलोकी — तुम अब बहुत बड़े जा रहे हो। बखान में रूपाम से, नहीं तो बनी सीकर बाहर निकाल दूंगा।

यह बात सुनकर स्वामी भी कुछ नाराज हो गये। इसी बीच उस बालिम झोठपी ने उन पर एक चिन्करा बुस्त किया और बिलोकी ने बड़े खोर से झूठकहा किया। स्वामी भी बेचारे बूब सेये। सेप मिटान की परब से उन्होंने महंत को एक हल्का-सा चप्पड़ रसीद किया और उस मासूका का ह्राय पकड़कर अपनी तरफ पसीटा। बिलोकी का मित्राब तो रातब स यो ही उबस रहा था अब जो तयाचा पड़ा तो कुछ सेप भी मासूम हुई और कुछ गुस्ता भी आ गया। उन्होंने बड़कर स्वामी के एक बूँटा रसीद किया। स्वामी ने वह बात बड़ी कि महंत को छठी का ह्राय पाद आ गया। मगर उन्होंने जो हिम्मत करके छड़ाई मयाना शुरू किया। बरब उन दोनों मे वून गुत्यमगुत्या हुई, वून ही मारपीद हुई। स्वामी भी बरब हट्टे-कट्टे भावपी के उनकी भीत हुई और महंत बेचारे यो किछी तरफ कमबीर या मरियस न ये मगर काहिक रहने की बजह से उनमें ताब्य न रह गयी भी बूब ही पिटे। वह यो पिटपिटाकर निकल जाने मगर यहाँ स्वामी यो की छिड़ी पिट्टी शुरू ययी। तयाम गछा हिरन ही यया सोचे कि बन खेरियत मबर नहीं जाती। बिलोकीनाय इस बक्त बिकरत हुआ है, इस हासल में यो कुछ न कर मुबरे बोड़ा है। मगर मैं यहाँ खूँया तो मासूका को बनीक दूना बड़ेबा। इस बक्त सपहरापी इसी में है कि यहाँ से बितक बर्नू। यह सोचकर स्वामी यो रबूबकर ही गये और उनकी मासूका यी उन्न स्र ही गयी मगर बिलोकी का गुस्ता महब गीबड़मकी यो। वह बाहर भाये यो छिप यी की आरती का बक्त आ गया था। आरती बतैरु न बाद महंते का फाटक बर कर लिया गया।

हिन्दू जाति की धार्मिक परम्पराओं में तीसरे करोड़ देवताओं में से तीन देवता सारी सृष्टि के स्वामी बतलाये गये हैं। दिन जी महाराज अपने तेजस्वी शरीर पर भ्रमूच रमाये सिर पर अटा बड़ाये हरबन और हार बड़ी निर्भुम मगनात से ली कमाये रहते हैं। आपको ईश्वर से कुछ एसा प्रेम है कि आठों पहर उषी की स्तुति में और दिन-रात उषी की प्रशंसा के भीत गाने में लगे रहते हैं। उषी के नाम पर बिके हुए हैं और ब्रह्मात्म के रंभ में लुभ गे हुए हैं। जब देखिए उषी के स्मरण में लीन अपने प्रियतम के दर्शन में लगे हुए, ज्ञान की मुद्य पीकर मस्त और बेबान्त के मसे में लुर रहते हैं। आपके वैराग्य का यह हास है कि सांसारिक ऋषि सिद्धि की ओर जाँक उठाकर नहीं देखते बाबजूब इसके कि सर्वज्ञ ईश्वर ने आपको विशेष रूप से वो छोड़ तीन-तीन जाँके बी हैं। आप भौतिक वस्तुओं को पास पूस से भी कम समझते हैं। भाग्यशाली हैं वे लोम जो धार्मिक सुख-बेन को त्यागकर अपना जीवन परलोक बनाने में लक्ष्य करते हैं। महारमा हैं वे लोम जो लोम के फये में न फँसकर वैराग्य धारण कर लेते हैं। क्या लुभ कहा है महाराज भर्तृहरि जी ने — ऐ बुद्धिमानो तुम समझते हो कि बड़े-बड़े राजाओं के पास हर तरह की अच्छी-बच्छी चीजें होती हैं और भोग विकास के सब सामान होते हैं इसलिए जनका जीवन ईर्ष्या करने योग्य है। मगर मैं कहता हूँ कि जिन्होंने वैराग्य का मखा मिळ गया हैं वे तीनों लोक के राज्य को भी कुछ नहीं समझते। बाबसाहों के ठाटवार कमरे एक से एक अनोन्नी और मायाब चीजों से सजे होते हैं मगर बुनिया को छोड़ देनेवाले वैरागियों के लिए किसी पहाड़ की मुझा ही सजा हुआ कमरा है। बाबसाहों के यहाँ सुन्दर मसहरियाँ होती हैं दिन पर नरम-नरम

तकिये लपे होते हैं और उनसे कुछ देर तक घाटीर को आराम मिळता है मगर बेचगियों के लिए पत्थर की अट्टान ही प्राकृतिक मसहरी है और अपना हाथ ही बीना आगता तकिया है। बारघाहों के यहाँ मच्छे-अच्छे पसे म्स्टके होते हैं और मोमी आनूस जला करती है मगर बेचगियों के लिए घीतल मुपपिज हवा ही प्राकृतिक पंखा है और अत्रमा ही प्राकृतिक दीनक है। बारघाहों के यहाँ घम्पा पर कोई नषवीरना स्पवान स्त्री बिपजती है जो उनकी काम बातना को क्षम नर के लिए तृप्त कर देने का साधन है मगर बेचगियों के लिए बर-कम्पा ही बहू स्त्री है जिस पर उन्होंने अपना लन-मन-वन सब अर्पण कर दिया है और जो उनके लिए मन प्राण से प्रमत्त दीक होकर ईश्वर के दर्शन का उपाय बतलाती है। महारैव जी महापत्र के इन्द्रिय-रमन का एक छोटा-सा प्रमाण यह है कि आपने कामरैव को जला कर ज्ञाक कर दिया। आपका सिर उस पवित्र मारा का कोठ है जिसे चरमप-ईक नई तो ठीक है बसिक चरमप कौसर से उपमा हैं तो उचित है। इस नदी से हिमुस्तान का एक बड़ा-सा भाग उपकृत होता है। बनता का विस्वास है कि जो लील मूठकर भी इस नदी में डबकी ज्माते हैं वे पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाकर स्वर्ग के मजे उठाते हैं और जो लोप इस बरबान से सामान्धित होने के लिए मजिलें छप करके जाते हैं वे तो देव ताओं के भी उपास्य हो जाते हैं। इन्द्र कुमेर, नारद और बृहदे अद्वैत देवताओं को भी उनके पुनीत चरणों पर सिर झुकाने की उत्कण्ठा हो जाती है और फिरसे उनके ऊपर्मों तले की ज्ञाक सर और भाषों पर चढ़ाते हैं। इन नदी की लहरी का बहाव मनुष्य के पापों को काटकर फेंक देने की मजिन है और मक्सापर पार उतरने की नैया है। बिल को जो आपका बाहन है मारे संसार का अत्रदाष्टा नई तो ठीक होमा। मानव जाति को जितने काम इस जलवर से मिलते हैं संभव नहीं कि उनकी तुलना भी किसी और जलवर से हो सके। मानो सबको रोबी बनेवाले ईश्वर ने सृष्टि की रोबी नईवाने का उपाय इतनाम इसी के हाथ में दे रखा है। चिबराति का मला मान ही की स्मृति में आयोचित होता है। इस दिन सभी नदूर विस्वात पाक हिन्नु बन रखते हैं और सिब जी की पूजा बड़ी मुमनाम से की जाती है।



आज वही धूम बिन है। इस वक़्त औरतों की एक टोली बची जा रही है। तमाम औरतें कपड़े-कत्ते से छीस हैं नाक-भोटी से वुस्त खेबरों से गोंबनी की तरह कबी हुई, मारे खेबरों के जिस्म पर तिल रखने की बग़ाह नहीं। आज वह छीमती जोड़े निकाले सपे हैं जो बरतें कह्वाते हैं और जो खावी-म्याह के वक़्त बड़े ठाट-भाट से पहने भाते हैं। उसमें हरेक बेजोड़ है कोई छीटने शक्ति नहीं। कस्तूरी में बसी हुई चोटियाँ जो स्नान करने के बाद कंधों पर बिखेर दी गयी हैं, उनकी सुन्दरता को और भी बढ़ाती हैं। हरेक स्त्री के सुन्दर और सुकुमार हावों में एक बहुत अच्छा पीठक का कमण्डल बटक रहा है जिसमें पूजा का सामान है। यह बात कुछ ऐसा लोकप्रिय है कि बूढ़ी ठो बूढ़ी बचान और कमसिन औरतें भी बड़े सच्चे दिल से उसको रक्षती हैं ताकि पार्वती शिव जी की प्यारी पत्नी उनके सदाचार पर प्रसन्न होकर उनके दिल के सब अरमान पूरे कर दें। आज रिवाज के मुताबिक यह औरतें भी रास्ते की धकन को आसान करने की इराद से एक फड़कानेवाला पीठ असापती हुई बची जा रही हैं —

सौंसरे गड़जवा पंगालल पानी  
 सौंसरे गड़जवा पंगालल पानी  
 अरे पनिसा न पिये अरे मोरी बहियाँ  
 मोरा सैयाँ अरे आये रतियाँ ॥ मोरा सैयाँ ॥

चुन चुन कलियाँ न सेज बिछाऊँ  
 अरे चुन चुन कलियाँ न सेज बिछाऊँ  
 सेज न सोवे अरे मोरी बहियाँ  
 मोरा सैयाँ अरे आये रतियाँ ॥ मोरा सैयाँ ॥

सोने की चारी में खेबना परोसेउँ  
 अरे सोने की चारी में खेबना परोसेउँ  
 खेबना न कैवें अरे मोरी बहियाँ  
 मोरा सैयाँ अरे आये रतियाँ ॥ मोरा सैयाँ ॥

मोरा सैयाँ अरे आये रतियाँ।

## मन्नरारे मन्नाबिद

एक नीरवान बँचल औरत भाय बड़कर बननी सहेली स पूछने लयी—  
क्यों बीनी तुमने कौन मनीजी की है ?

बह औरत (नीरवान मुन्दर, गोरी-चिट्टी सीना उमरा हुआ उम्र  
इरीब बीस साल) — मुझको बर बच्छा मिलेगा।

पहली औरत — क्या इनने ही दिनों में एक से मन भर पाग जो  
दूसरा करने पर तुम्ही हुई हो ?

बही औरत — क्या क्यूँ मरा भाइयो मुझको मानता ही नहीं।

पहली औरत — मैं तुम्हारे बूढ़े को पाऊँ तो छाती से सपा लूँ। मैंनी  
प्यारी-प्यारी मूल पायी है मरा दिन मयोनकर रह जाता है।

दूसरी औरत — भायो फिर मरना-बननी हो जाय।

पहली — ना बहन मेरा आरमी बेचारा मेरी-सी बीबी कहीं पावेगा।  
बिटाए लेकर डूँडिगा अब भी बेचारे को मुझ-सी बीबी न मिलेगी।

दूसरी — बच्छाह अब भापको भी मुन्दर होने का दावा हुआ है।  
बही मसक है मूल न शकल बूढ़े मे निकल। कुम्भी-कुम्भी जाँल लेकर  
बनी हो कहीं से दून की लेने ! अब बाकर भाइने में मूँह लो बेबी !

एक तीसरी औरत (अबेड़ भरेम मोटी) — तुम छोरियों से भाव  
बरम बरम के दिन भी न्यु नहीं रहा जाता।

पहली — भाप अपना मनीहन ठहकर रजिये। बरस बरस का दिन  
है, भाव भी भापस में न हूँ-बोले — बाकिर रोज तो मूँह में चानी देकर  
बैठना ही है। जिसको भाव का दिन देखना मनीब होया बही फिर इधर  
से हम मन्दिर तक आवेगा।

ये बचक जवान औरतें भापस में हँसती-बोलती हिस्सनी-मजाक  
करती चली या रही थीं। भापस म छेड़-छाड़ भी होती थी बोनी-डोबी  
भी मापी जाती थी सज्ज बायें भी कही जाती थीं लाने-डिगल की भी  
नीरव या जाती थी फिर विज्ञान हो जाता था। इसी बीच एक बूढ़े  
महामय निके। उनकी चाल-आल उन तीनों बूढ़ों-नी थी जो भावकल  
कनकड में श्राव छाते दिग्ने हैं या उन मुहम्मदशाही नीरवान बागिह-  
मिदाओं की-सी जो पत्तियों में लहरें छड़ाया करते थे। लठेर दाड़ी लहरें

मारती हुई। एक हठानुमा टोपी सर पर, कामबानी का बैपरखा बदन पर। आपने जो इन परिवर्तों को देखा तो बाँधों में बीबार का सोक पीवा हुआ और मुँह में पानी भर आया। आप इधर बढ़ाकर उन सबों के बरतबर हो गये और एक बहुत ही चपक-चंचक औरत की तरफ़ धूरकर फ़रमाने लगे —

मर्द — क्यों घरीक़बादियो बरा मुझे भी बतलाना आज कीन-सा मेला है जो तुम लोग बन-सँवरकर बनी जा रही हो ?

औरत (मुस्कराकर) — आज तो शिवरात्रि का मेला है हम लोग मन्दिर को जा रहे हैं।

अब उन हज़रत ने जो देखा कि इस-बारहू परीबाद औरतें बाँधें उठा-उठकर मेरी तरफ़ देखने लगीं तो आपको यह ज़माना मुबारक कि वह सब मेरी सूरत पर छट्टू हो गयीं। ज्योंही आपके दिल में यह ज़ख़्त समाया आपने झौरत टोपी टेढ़ी कर ली कमर को जो मोटापे के बोझ से मुक़ गयी थी बड़ी कोसिबों से सीमा किया। इस तरह दिल चुरानेवाली बीबों से लँस होकर आपने उन परीबाधों पर क्या-दृष्टि डाली कि जैसे आपकी बाँधें कह रही हों कि जो तुमने बिना समझे-जुझे दिल दिया है मगर मैं तुम्हारी मुहम्मत की इत्र करेगा।

अब ही बड़ा एक अवेक़ औरत ने बोली कसी — क्यों मियाँ क्या यहाँ अपनी गतिनियों को धुरते हो ?

इस सवाल ने मीर साहब की अक्की-बक्की पना ही बेचारे बेहप खरमाये और इस छिन्न में कि कोई मौके का मुँहतोड़ जबाब दूँ, इधर उधर ताकना शुरू किया। उन सबों ने इन्हें जो बबलें झाँकते देखा तो और भी बी-बार बपकियाँ जमायीं और इहक़ड़े पर इहक़ड़ा पड़ने लगा। मीर साहब बेचारे मन्दाक़ का मिघाना बन गये और इस ठिठोली से कुछ ऐसे जम्बित हुए कि कुछ बस न जाता रफूचककर ही गये। जो यह हज़रत बिलागोर्द में ताक़ जुमतबाबी में सोहरए जाक़ाक़ ये हज़ारों ही मतलब मरी फ़बतियाँ कह डाली थीं और अपनी मध्यमी में हँसी-मन्दाक़ के जस्ताद माने जाते थे मगर इन बेचारे ने कनी घरीर, कमतिन कोफ़रिबों से माठ नहीं लायी थी। बड़े-बड़े ज़ाख़ाब मारों के मुक़ाबले में पाला मारा

था। मगर ऐसी कड़कियोंसे जिनका मन्त्राक्षर से कोई वास्ता नहीं कनी भीचा नहीं देखा था। आपको यह पछतावा हुआ कि हाथ अऊनीस जिनगी भर की मेहनत बकार्य गयी अब मौनत यहाँ तक पहुँच गयी कि इनके मुकाबले में भी हार हो गयी। मेरी यह तबीयत ही न रही या हिमाश ही पर पत्थर पड़ गया कि जबाब न दे सका भीर छँकर बच गया। यह भी सोच रहे थे कि ऐसे मोठे मन्त्राक्षर का जबाब तो इस ऊन क पुराने भीर नये जस्ताखों में से एक ने भी नहीं दिया। लिहाजा अगर मैं बुरा गया तो क्या हुआ अब भी पाला मेरे ही हाथ है। किस्सा कोताह जब भीर ताहब इस तरह हार जाकर मरनी यह तने तो यहाँ आपस में कलबठियाँ होने लगीं।

पहली — तुम लोगों ने इनकी बाड़ी को नहीं देखा मालूम होती थी किम बन्दर की दुम। मुमा ताह की तरह तो बड़ता बना गया है!

दूसरी — और मुडीकारे को टोनी तक मयस्तर नहीं घर पर एक हीदिया-नी बीबामे हुए है।

तीसरी — मुँह में शक्ति न वेर में मात्र मगर दमखन बही है। सत्तर बरस का हुआ बेचार मगर मनी जबाब ही बना किछा है।

चौथी उसी बनेब मोटी मही बीछ से मुस्कराकर मन्त्राक्षर कहने लगी — क्यों मामी यह बरबुया तुम्हारे जोड़ सारक बच्छा था न?

बही अरेड़ — बाह रे तेरी समझ यह तो मेरे बाबा से भी दो-चार बरस निकलता होया।

अब यह टोनी कुनी-गुनी मन्दिर के ऊपर पहुँच गयी। रास्ते में कुछ आबाद घोड़ों से भी मुठनेड़ हुई। उन सबों में भी छिन्दरे बुन्त जिये। इन्तर से भी जबाब तुर्की-ब-गुर्की दिया गया। यह मौनबाब बीछें मन्त्राक्षर पर किसी तरह बर न थीं। उनके इस रोबना स्नान और पूजा ने उनको जरा निबर और खंचक बना दिया था। घमों-हवा ना भीसों में नाब नहीं। कुसेबों सक्क पर बुन्द नहूने और छेने कुर्ते में गाड़ी हुई आक्षरकार मन्दिर के अहाते में शक्तिब हुए।

अब यहाँ पर बड़ी बबरलन्द नीड़ देखने में आयी। हवाएँ ही

मादमी शिव जी की पूजा को आये हुए थे। जब मेड़ियापसान लोग थे। हरेक इसी धुन में था कि पहले मैं जाकर पुस्तक लूँ। जो औरतें कर्मों की मारी आयी हुई थीं उनकी जो जो मति होती थी कि परेशान हो हो जाती थीं। वह बकबक बकका था कि लुटा की पनाह। वह रेकम-रेका था कि मादमल्लाह। जो बेचारे बरा कमबोर थे वह बेवम होकर हाँक रहे थे तो मला औरतें किस गिनती में थीं। जिन साहबान ने बरा हिम्मत करके निश्चित सीमा से आये इत्यम बड़ाया उन्हें वह बकका पका कि कठी का बूब याद आ गया। साधार बेचारियाँ एक कोने में सड़ी थीं कि बरा भीड़ छँटे तो बाबिल हों मगर यह औरतें जिनका हम ऊपर बिक कर आये हैं एक बास रास्ते से मन्दिर में बाबिल हो गयी। वहाँ रस्म के मुताबिक पूजा करके जब वह बाहर निकली तो एक पुजारी (यशोदानन्द) ने मुस्करा कर कहा—भाब रामकली का पता नहीं है। बेचारे बाबा जी राह बगोरते बीठे हैं।

रामकली (एक बगोरती मया से आँसु हटाकर) — तेरी आँसुओं में तो छा गयी है चर्बी मुजा बेब बेब मया बनता है। परतल्ल बेब रहा है कि सामने सड़ी हूँ मगर बकोरी कमाये जाता है। और यह तो बेबो कहता है बाबा जी राह बगोरते बीठे हैं। कौन बाबा रे बतला बरा बेहया नहीं तो!

यशोदानन्द — बस करो महारानी बस करो क्याबा पुस्ता मत हो। बाजो महंत जी को जो कुछ बक्षिणा देना हो दे मामो।

रामकली नाबो-बन्बाब से इठलाती फूँक-फूँककर इत्यम परती महंत के कमरे की तरफ चली।

यशोदानन्द — भाब तो रामकली ने वह सिमार किमा है कि शिव जी बेचारे भी मोहित हो गये।

रामकली — मालूम होता है कि तुम लोगों की सामत आ गयी है।

यशोदानन्द — सामत न आयी होती तो तुम यों बचकर निकल जाती।

एतद जब भाबमियों के बिसों को कटती और पाजेब की छमाछम से बजा का धोर करती हुई रामकली बाबा जी के कमरे में बाबिल हुई,

उम बसत बाबा भी आइना सामने रखे बैठा बने बैठे वे। उसकी जो बेसा ठी मारे सुधी के उछल पड़े।

मईत — अब तो तुम्हारे बर्छन को ज़ाँवें तरसा करती हैं। पूरर का पूरर हो जाती हो।

रामकली — क्या कहूँ मैं तो तुमसे भी क्यादा बेचैन रहती हूँ।

मईत — तो फिर जायीं क्यों नहीं ?

रामकली — बाबकल हमारे यहाँ कुछ बरूयी काम-काज पड़ गया नहीं तो भला मैं कब करनेवासी थी।

मईत — बहाना करना कोई तुमसे सीख से।

रामकली — और बहाना भी कर्कनी तो तुमसे।

मईत — मनी जाओ ऐसी बहूठ-सी बार्ते सुने बैठा हूँ।

रामकली — अब तुम्हें यकीन ही न जाये तो इसका क्या इलाज।

मईत — यकीन करने शाबिब बात भी तो हो।

रामकली — निरे गौरी ही हो जरे अब क्या साऊ-साऊ कहलवाया चाहते हो।

मईत (हँसकर) — अस्बाह यह बात भी अब समस्त गया। हाँ ठीक है, आज बीये बिन तुम्हारी सूरत बिबलामी पड़ी है।

यह कहकर बिबोलीलाब ने उस औरत को मस्ती से बीँबा और मुक्कर ताबकतोड़ कई बोधे सिये।

रामकली — हटाओ मुँह न मामूम कैसी बू जाती है ! तुम बड़े बो हो। आज भी न छोड़ते बनी।

मईत — क्या करें जानी तुम्हारे बियोग में इसी के सहारे बीते हैं। पम भी यकूठ हो जाता है और कुछ नशा भी जन जाता है।

रामकली — इसकी बू बड़ी बरउब होती है।

मईत — जो लोव नहीं पीते उनके सिए बीसों हीसे होते हैं। मगर जहाँ एक बड़े मुँह रूप गयी तो फिर बूटना जानती ही नहीं।

रामकली — भला बापक औरतें तो काड़े को पीती होंगी ?

महंत—बड़े-बड़े पराये की सब औरतें लुंवायी हैं। बागकक वर भी जपजप और प्रियन में शक्ति हो गया है।  
 रामकली—जो मैं पी लूँ तो कैसा हो?

महंत—फिर तो मरना जा जाय। मरने तो तुमसे कुछ नहीं तो हवाएँ ही बरसा कहा होगा मगर तुमने कभी अपनी नहीं म छोड़ी। आज बाहर बैसठा धीरे हुए हैं।  
 रामकली—पीने को तो पी लूँ मगर मुँह से बदन जानेनी और फिर बूरेया।

महंत—बचतू बेसी सराब में होयी है और बही किसी स्मर कदवी पी होयी है। मैं तुमको बिलावती सराब पिजाऊँगा। पहले तो तुम उसकी लुसतू ही से मस्त हो जाओगी और पीने पर तो जायें १ जायेंगी। ईस्वर आगवा है, ऐसा मालूम होता है कि जैसे बैकुण्ठ बैठे हैं।

पराय कि अंदेजी सराब को और भी दो-चार टापीजी से मार करने के बाद बाबा जो ने रामकली को एक पितावत जम्बा सराब की मरकर दी। पहले तो रामकली ने कुछ मुँह सिफोड़ा कुछ शिक्किशायी मरकर बिलोकी के इस पानय ने बना धोखती ही जाति मूँकर पी जाओ उसकी दिम्बात बढ़ायी और वह सब का सब मटगटा गयी। वह सराब स्वादिष्ट की इस बचह से उठने पिताव पर पिताव बढ़ाता सूक किया और मरकर बला और मजे में जायी तो उठने महंत के बले में बहिं डाक ही और पुन पुनकर बायें करने लयी।

रामकली—तुम यह भेष क्यों बनाये रहते हो? जाओ इस-तुम कहीं निरम जायें बेंदोऊ-टोऊ मरना उड़ायें।  
 महंत—मरना कहाँ से उड़ायेंगे कीही-कीही को तो मोहवाय ही जायेंगे। इस बसत बीच हवाएँ साकाना की जायबनी है, उस पर भी तो लर्च को काशी नहीं होता बर टके की भी जायदनी ही न होयी तो कैनी बुरी मर होनी।

रामकली — यह इसाहा निगोड़ा किस दिन काम आयवा? इसे बेच-बाचकर ठिकाने समा दो और बाबो कहीं का रास्ता पकड़ें।

महंत — क्या? नहीं इसाके को बच करने का अस्तिपार ही नहीं है जानी नहीं तो बम्बा कब चूकनेवाला था और वो सच पूछो तो यहाँ भी नहीं है। दिन भर एक से एक सजीली औरतें चूरने में जाती हैं। रात भर नाच रंग की महुँछिळ गर्म रहती है। कभी-कभी तुम भी आकर कुठार्थ कर देती हो। हर बस्त सराब-कराब का दौर चला करता है। यार दोस्तों का बमबट रूहा करता है। इतने आराम के होते मुझे क्या भैस ने काटा है कि कुत्ते ने काटा है कि इबर-उबर मार-मार फिरे।

रामकली — तो माकूम हो गया कि तुमको मुझसे जरा भी प्रेम नहीं है बस जवानी बमालर्ष है।

महंत — तुम तो जानी कभी-कभी सड़कपन की बातें करन समती हो।

रामकली — बस-बस माऊ कीबिए, मैं अब तक बोले ही बोख में थी।

महंत — होश में आओ प्यारी तुम्हारे बिना तो मुझे दिन भी अँबेरा माकूम होता है और तुम उस्टे गिठा करती हो!

रामकली — तो फिर क्यों नहीं भाग चलते?

महंत — तो यह खर्च कहाँ से आयेगा?

रामकली — खर्च न आयेगा न सही जरा जाजारी के साथ दो गाल हँसना-बोसना तो नसीब होया। यहाँ तो औरों की तरह हरबम जी बड़का करता है।

महंत — जानी मैं तो तुम्हारे आराम के लिए कहता था लेकिन अब तुमको खुद ही ठकसीऊँ उठाना मजूर है तो मैं कोई न कोई बंदिब लगाऊँगा।

इसके बाद कुछ इबर-उबर की गप-सप हुई। अब मुसुर और भी पयाबा हुआ तो चूमा चाटी की बातें होने लगीं।

महंत — क्यों जानी तुम कभी अपनी समुराळ गयी हो कि नहीं?



रामकली — एक बफा गयी हूँ लेकिन जस्टे पाँच भायी। तब परबाने लाल-लाल छिर मारते है मगर मैं जाने का नाम ही नहीं लेती।

महंत — तुम्हारा बूझा कैसा है? है तुम्हापी मर्जी के माफ़िक।

रामकली — मारो गोली मुए को! बेचारे ने चार हूफ़ अंग्रेजी बना पड़ सी है कि छाछा अंग्रेज बन बैठा है। हर काम में एक न एक अंग्रेज मोहले की बीरती को क्रिभूत मत इकट्ठा करो। किसी के घर बिना बजह मत जाओ। जाया करो। रंगी-बर्ग पढ़ा करो। सौदे-मुसफ़ का इतज़ाम रखो बह न मामूम क्या-क्या अस्लम-मल्लम। मेरी तो नाक में दम आ गया। बिना मर चारबीबारी के बन्दर पड़े-पड़े हीक हो जाटा था और बिना बहने तो नयोंकर। बाकिर कोई सामान भी तो हो। न किसी से हँसना न बोलना नियोजी किताबों को देख-देख मेरी बाँधें फूटती थीं। ज्यों-ज्यों करके चार दिन तो मेने बिठाया लेकिन फिर न रहा गया।

महंत — सूरत शकक कैसी पायी है?

रामकली — छाछा हटा-कटा पोरा खवान है। बेहद मिहायत सकोता है। जिस बिलकुल मुबील। पढ़ने से बाँधे कर कमखोर हो गयी है, इस बजह से खरमा लगाता है। कपड़े मिहायत छादे और बूबसूरत रखता है। फ़िज़्रमतदार इतना है कि बाँध से कौड़ी उठा ले।

महंत — सब सब बतलाओ हम अच्छे हैं कि नो?

रामकली (हँसकर) — इन्साऊ की बात तो यह है कि सूरत-घफ़त में तुम सबके पासंग भी नहीं हो। मगर मुसफ़ी तुम्हापी लाल-लाल अच्छी मामूम होती है। तुम्हारे यहाँ बितनी खराब चाहे पी जावे और बह खराब से इतई तकरत रखता है। शायबियों से कोनों भावता है। बेचारे को पोस्ट के तो नाम से भी परहेज है। अगर कमी पमरी की चीज की भी जरमाइस करे तो मुँह बनाकर कहता है 'मई, इस क्रिभूतखर्ची से तो हज़ते घर में मेरा बीबाला निकल जायगा। मेरे बाड़े पत्तने की कमाई इस तरह फूँ भी जायगी तो मैं कहीं जा न रूँगा।

महंत — हाँ यह तो बतानो पीबिका का सावन क्या है?

## जलदारे मजाबिद

रामकली — बही रेवम की दुबान करता है और कुछ धामदनी हमारे से हो रहती है मगर सर्ब करना जानता ही नहीं। मुनछी हूँ कि कई हजार बैकबर में जमा है। न भानूम कितनी दुकानों में खासा है मगर सर्ब बही बाजिबी-बाजिबी। क्या मजाब कि कोई बेसे की चीज बिना जकरत लपेट ले।

मईत — जानी बातों में बजत जाता है, जरा लुची से एक गुम्मा दे दो।

रामकली — नई मात्र घत है मात्र तो मात्र करो। क्या अपने साथ मुझे भी मरक में मसीटना चाहते हो।

मईत — यह तो मैंने पहले ही समझ लिया था कि साफ़ मुकर जाओगी। बकबिस्ता मोड़ी बेर के बार रामकली अपनी सहेलियों के साथ मुस्कुराती हुई दिखवायी थी। ज्योंही उन सबों ने उसकी छिपी हुई मुरत बेसी आपस में जानों ही जानों में बातें करने लगीं। कोई उसकी तरफ़ देख-देख मुस्कुराती थी कोई उसको देखकर अपनी हमजोली के कान में कुछ कर्ती थी। बूब कानाफुन्की हो रही थी। रामकली गो बीरा जिकेर और खोख बी मगर चर्म के मारे जमीन में पड़ी जाती थी। इस तरह हर हँडिया तो पक रही थी मगर जवान सबकी बंद थी और क्यों न बर होती बाजिर खुद भी तो जली बाट का पानी पी चुकी थीं। बाजिर कार एक धोख चुलबुकी औरत से न रहा क्या बोल ही उठी — बुमा राम कबी इस बजत बेहरा कुछ कृम्हलया हुआ है।

रामकली — आपकी बला से।

बही — नहीं नहीं बाजिर कुछ तो बजह होती। अभी वहाँ से जा रही थीं तब तो यही मुसफ़ा कुन्म की तरह बमक रहा था और अब भी देखती हूँ तो वह बमक-बमक क्या उसका बमबा हिस्ता भी नहीं है। बाजिर इसकी कोई बजह?

रामकली — मेरा बेहरा मुखामा हुआ सही मिट्टी से भी खासा पैसा सही तुमसे बान्ता घरक? तुम्हारा बमकता है तो बाजिर और मेरा जतरा हुआ है तो आपका।

बही सहेली — छप्पा क्यों होती हो बहुत मीने तो दिल्समी की की  
 रामकली — ऐसी दिल्समी की दूर ही से सजाम है। किसी के घीने  
 को दूरियों से जइसी करो और कहे मीने तो दिल्समी की की। नेपुस  
 दिल्समी की एक ही कही। छप्पे इस जगोकी दिल्सगी के।

बही — अच्छा अब छप-छप बटा हो आज कैवी बीवी ?  
 रामकली — फिर तुमने बही छोड़सानी शुरू की ?

बही — इसमें कौन-सी छोड़सानी। आपस में कैवी आज-सर्म ?  
 रामकली — तुम तो बड़ा बड़ा सबास करती हो इसका जवान तो  
 मुझसे न दिया जायया।

बही — और हम सोप बेसमें ने कि जो कुछ तुम पुछती थीं किता  
 छटके बटा देती थीं रती भर न छिपाती थीं।  
 रामकली — फिर तुम झपकने लगीं ?

बही — झपकने की तो बात ही है। हम तो दिन का साठ हाक  
 कह डालें और तुम हमसे हर एक बात छिपाओ। मैं तो जब तक रोज की  
 बीवी किसी सहेली से न कह सुनाऊँ तब तक पेट में पानी नहीं पचता।

रामकली — मीने कौन-सी ऐसी बात छिपा रखी है कि आप छिफना  
 कर रही हैं ?

बही सहेली — अब दूर कहाँ बुँडने जाऊँ अभी तुमसे एक बात  
 पूछ रही हूँ और तुम साछ मुकर रही हो।

रामकली — अरे वह बात भी निमोड़ी मतकाने काबिस हो।  
 बही — कुछ भी क्यों न हो हमको इस बम ककर मतकाना होया।

रामकली — क्या बताऊँ। अच्छा बताती हूँ। नहीं तुम हँसने  
 लमोवी जसम खाओ न हँसुवी।

बही — तेरे घर की जसम से न हँसुवे।  
 रामकली — बटा ही हूँ ? ऐ सो देखो वह तुम मुस्कटावीं। न  
 शर्म के मारे जवान बँब जाती है। किसी दूसरे पकठ कह हूँगी।

बही — सँद, हाँ कुछ और छिफ भी आया था ?  
 रामकली — क्यों नहीं। जब मैं जाती हूँ तभी तो घारे जमाने की

एप उड़ाने समते हैं। अब मात्र बातों ही बातों में कहने सने कि रामदुखारी बाबकस न मालूम क्यों नहीं आती। इस-बाद दिन बीत मये अभी तक पड़की परछाह भी न दिखायी थी। तो मैंने कहा कि बेचारी क्यों जाने क्या जान भायी पड़ी है।

बही — ऐ तो उन्होंने भी तो प्रबब ही कर दिया था चूमते ही गाल काट लिया। शुक्रमात ही प्रसन्न कर दी। वह तो ठहरी बान-वान परबे सिरे की सुकुमार और उन्होंने आठे ही हाथापाई शुरू कर दी। साबिम या कि बरा दो-बार दिन मक्ति भाव की बातें करके परबा सेते जब उसे यहाँ जाने की लठ पड़ जाती तो बो जाहते बह करते। अब तो वह ऐसा बह मयी है कि उसका बंग पर बड़ना बरा टेड़ी खीर है।

दुखरी — बरे वह तो बहो खरिखत ही गयी कि उसने अपने बर पर किसी से कुछ नहीं कहा नहीं तो सेने के सेने पड़ जाते।

तीसरी — उस्टी बातें गले पड़ जाती और सब सेबी किरकिरी हो जाती। (इस छोकरी को बिलोकी ने बेतरह छकाया था।)

बीवी — मपर कोई ऐसी-वैसी होयी तो बकर इसके दम-बापे में पड़ जाती। मपर दुखारी एक बबड़ बसा की निबर है। जब बेसिये मबूरितों की तरह बर का कोई न कोई काम-काज किया करती है।

रामकली — बेचारी का बुद्धा तो है जैसे मुना हुमा बैयन। काले तबे से भी बड़ा हुमा। मपर यह है कि उस पर लट्टू हुई जाती है। जब दोनों मियाँ-बीबी एक साथ बैठते होंगे तो कस्ता भौंवा मालूम होता होगा जैसे चाँद में प्रहण लग जाय।

तीसरी (जिसने बाबा भी के हाथों कुछ मुँह की सायी थी) — बहन मैं तो बगी-लिपटी रखना नहीं जानती कहेगी मुँह ही पर, जाहे तुमको बुरा समे जाहे मला। क्या काले-भुबये धीरे से भी बयाबा सिपाह होयी होगी कोई बीब। मगर उस नियोड़े को देखो कि कमल के फूलों का रस केठा है। जब तक कमल के पत्तों पर मीरा न पूंजता हो उसकी रोमा ही नहीं होयी। तुम ऐसी मोरी चिट्टी हो जैसे पलठा हुमा बंपाए मगर वो तुम्हारे सर पर काले बाल न हों तो इस चाँद से मुसड़े की क्या पठ ही ?

छात्रे बालों में कासी पुठली न हो तो आदमी अंधा हो जाय। मुझं और छात्रे मुझने पर जब तक कासे तिक न हों वह नमकीनी ही नहीं भायी। उनके कायब पर जब तक रोखपाई से न सिखे कायब की कोई भीमत ही नहीं।

रामकसी—मानूम होला है कि तुम्हाय मियां भी काता मुंकापा है, जमी मुजय में लड़ने सवीं।

टीसरी बोली—बहुन बुरा न मानो तो एक बात कइई।

रामकसी—बुध मानने की होयी तो जामसाह बुरी मालम होगी टीसरी—तुम हमारे मियां को एक बछे भी देख पावो तो सच कहती हूँ उस पर मरने लयो।

रामकसी—ऐसा कौन-सा सुझाव का पर लपा है उनमें कि मैं बेतते ही आसिद्ध हो जाऊँगी?

टीसरी—जवान है ऐसा तख्तार है, बिल्कुल मुलं और छात्रे, जैसे कोई बिलालवी साहब।

रामकसी—जमी तुमने बिलोकीगाव को फरवा था। सच कही इनसे बल्ला है?

टीसरी—ऐसे-ऐसे मुम्बों की उसके सामने क्या इस्ती है। वह तो बासा कइया है।

घरक कि यह औरतें पटलकाशिया जड़ावी बली का रही थीं। यह किनारे एक बहुत बुरात ठाकाव बना हुआ था। इस जगह साम के बहुत सरीछ लोप बचरत हुआबोरी और बी बहलाने के लिए भी जाया करते थे। बुनचि इस बजठ भी बहुत से लोप अपनी-अपनी बचि के बनु सार बिस बहलाने का सामान कर रहे थे। कहीं कोई साहब सिधीटी रखे मय बोटने में दिखोबाल से छने हुए, सकई बैठे हुए अपनी ताकत के जोम में बेचाटी मय को पीसे डालते थे। उनके हुवाली मवामी उनको बड़ावा देते पाते थे—बाह मुरु क्यों न हो! इन जन में तो तुम अपने बजठ के उत्तार हो। भाई बाह इस फूर्ती और सझाई के साथ मय काटमा तुम्हाय ही काम है। कोई क्या पाकर मय काटेया। पहले कुछ दिनों

## सतरारे ममाबिद

तुम्हारे सामिची करे तब मग काटने का बाबा करे। खोटी का पसीना एही तक आता है तब कहीं जाकर रंग पड़ता है। इसके लिए बड़ा बिस मुर्श चाहिए। तुमने तो मारि, ह्व कर दी। अब मार लिया है उस्ताद यह निलीटी उठा चाहती है। यह काम तुम्हारे ऊपर खरम हो गया। बतारे की। पहरो की मेहनत अब जाकर कहीं ठिकाने लगी।

एक — मारि, यह बूटी भी ईस्बर ने क्या पीज बनायी है। मच ठी यह है कि तमाम नेमनों की सख्ताइ है और फिर कमलखर्च बासानगीन। बमड़ी की लायत में सकर गठ जाता है। एक साइ छी और मज्ज हीकर तने बैठ है।

दूमरा — बाहुयुक्त लुबक बड़ायी तुमने। इम सूम-बूम के सवडे।

तीमरा — अरे मार, इन मनमोल जबाहर की झीमज कोई क्या लाकर लयायया। तीनों लोक का साम्राज्य एक ठाऊ और यह मेमत एक ठाऊ। मिन बी महाराज ने इसके अनन्त सभों को सभी पहलकों स देख-भालकर तब इस्तेमाल करना शुरू किया था। एक पोसा बटील दिया और मस्त हामी की तरह मूम रहे हैं। क्या मजाक कि रंज और धम धाम पटक सके।

चौपा — गुरु इसकी पोसी बन्धुक की मोली है जो रंज और दुन को ठाक के ऐसा निगाना लमाठी है कि तीर अचूक बैठता है बार सारकी जाना क्या माने। इबर मम की मूल्य देखी जबर तमाम क्रिक और परेया निया हुम दबाकर मारी।

पाँचवा — जिसने चार दिन की जिन्दगी में इमको न चला वह भी कहेया कि मैं बाबमी हूँ। मैं तो उसे अजलअजलनायक समसना हूँ चीनागों से भी पया-मुकरा। बहरी और चीपादे भी उससे अच्छे हैं।

छठवा — और गुरु बेहुरा कौता सात हो जाता है।

सातवा — क्या कहना।

छठव य सोल बेबर की उड़ा रहे थे तापीऊ के पुठ बाँध रहे थे। मम न इमको ऐसा चप पर बताया था कि मामो-मम को ठाक पर रखकर बेदिरद रय उड़ा रहे थे। इमी बीच एक नौखान जटखर्मम तापीऊ मय। बाँधों ने बड़े तपाक स नका स्वायत किया।

पहला — क्यों मियाँ जीहर, यह उल्लसुय ही रक्तमा जानते ही कि कमी कुछ क्या-बहा भी है?

गौजवान (जीहर उल्लसुय) — क्या बताऊँ माद, मेरी उबीयत का घायली से मेस ही नहीं बैठता बर्ना जब तक तुमार के तुमार कह बास्ता। हाँ, तुम्हारे बिलबहलाय के लिए मस में कुछ लिखा है कही तो सुमाऊँ।

बार लोय — बरर सुनासो जब इछे बड़कर कौन नीका हाय बावेया। हम लोग दिलोजान से कान लगाये बैठे हैं।

जीहर (हँसकर) — कान लगाये बैठे ही अच्छा दो खो सुनो —

● तब बापवाने डुररत ने इस बुसयने पैती की मजबूर के पुकोदूटे से मुबयन करके नयी-नवेसी दुस्हम की तरह बापस्ता और क्वायब व क्वागीन की रबिसे काटकर बाये जमत की तरह पीपास्ता कर बिना समाइयो के करिसे दिखाकर हर पीछे को अरखये बिन बना बिना और सहाकारियों की जल्मागुमाई करके हर नयाटी को नमूनए बाये इरम कर दिबाया। बाये दुनिया की हरेक बजा निपली है। हर नयाटी रखे किरबीसे बरी बनी और हर बीबा सानिये पूजा हुआ। अइक के सुधगुमा हीब में इरम का सपछाऊ पानी मुईया कर दिना और रियाजत व उछवीस की दो गालियाँ बना दीं जिनके जरिये से नीनिहाजाने जमन सरसम्ब व पाशव होते रहे। उस बरत तमान बेवता यक जवान व मुसकिरक उप होकर जगदीस्वर की बारपाई अर्धनिपाह में बररत उहनिबत व मुबारकबाद व इजहारे मररत हाबिर हुए।

जगदीस्वर ने आप लोयों की बड़ी तबाओ व तकटीम की। बड़ी परमजोपी से मुसाफिरा किया। तबाबजे रस्मी के बार हरेक महारमा जपने-जपने स्तने के मुजाफिर मुतमकिरक हुआ। जब डुररारे महकिर इरमीनाम से बैठ नये तो जपदीस्वर ने बरुमाते सीटी जवानी व प्रवीठुक बयानी में कररमाना शुरू किया —

मेरे प्यारे बस्तो। मैं आप लोयों के इयमरंजा करमाने का उद्देशित से मघकूर होता हूँ और मुझको तबस्को कामिल है कि मेरी यह बेमहक उचदीहबिही मुजाऊ करमाई पायपी। अहेनचीव मेरे कि आप साहनों ने

## असरारे भवाबिब

बगरब तहनिपयत तपरीकुरमा होकर मुक्तको मरुने मिमत्त किया। मेरे जानोदिक से प्यारे दोस्तो कायदे की बात है कि जो मुहिम बिला मुशीराने सायबुराय ब दानिघामदाने बेदारमम्ब के सलाह ब मराबिरे के इन्सराम पायी है उसमें बबाइसे काइस्मी एक न एक मुक्त एक न एक ऐब बकर काबिले गिरफ्त रह जाता है। बरी बजह जुमला असहाब की खिरमत में इस्तमास है कि आप लोग इस बबूरे और नामुकम्मबसुदा काम को बनबरे और ब तफ्ठहुस मुसाहिबा क्रमायें और मेरे अपुब से मुक्तको मुतगम्बा क्रमायें तारि बकरे इन्साग इसलाह की सम की जाय।

बिष्नु जी महाराज ने जो तमाम बेवतामों पर कब्जीक्य रखते हैं और एबाब ब बिकार की नबरीं से बेबे जाते हैं इस्तबस्ता इस्ताबा होकर बकमाक इन्ब को बबब गुबारिण की — बीगानाय। इस दो मंपुस की बबान में बह कूबते-भोमाई ब खोरे बयीं कुबा कि इस कुवरले कामिला का एक सिम्मा भी मारिबे बयान में ला सके जिसके महब बबना इचारे पर यह गुलबार सरापा बहार बजुरपिबीर हुआ। इस बीबए कोर ने बह तेबिये बिसारल हुआ कि उस सनभते एबरी का मुसाहिब कर सके जिसकी बात ने यह पुनार्गु बिलकल बहुर में आयी। इस तबए बईक में बह बकाबत ब किरासत हुआ की असरारे हकीकी का एक बरी भी इरराक कर सके जिसकी मरंगकारिया एक-एक बरें से मुनकधिऊ हैं। इस चीघए बिस में बह कटाप्रत हुआ कि अनबारे सरमबी का इलाकास कर सके जिसकी तबस्मी से साय बमाना रीघन है और जो बरीले बहाँ पर बकसां मुहीत है। अभी अन्य ही बिनों की बात है कि बजुर सीरा-भो-सार सिला के कुछ नी न बा। मगर बडे कुवरले ने तुर्कतुक ऐम में कुछ से कुछ कर बिलताया। इन बमने बेबिबी को बहमा सिप्रते मौमूऊ ब मब हमा नकायरा मुनरबा ब मुबरी बनाया। पस इस कमतपीन का क्या मुँह है कि उसको बनबरे एबबोई बेबे मपर बूकि अन्तर्पानी महाराज अबल से निपाबमन्ब बीसे कतीकलबबायत मबलकू की बरबबासत किये। आप इससे कि बह बामतकहूत हो या बेमसकहूत समाबतपिबीर हुआ करती है, कमतपीन को कुछ इस्तमास करने की पुरत होती है। इबाबत का मुस्तबी है।



जयदीस्वर — मेरे प्यारे दोस्त मैं तुम्हारे तर्कों-अन्वय से निहत्त  
महजुब हुआ। मेरे हस्तोगोच दुम्हारी कबाने पोहरकार से कुरें बेबहा चुना  
के लिए ह्माठम मुस्ताक हो रहे हैं।

बिष्णु बी — दरहाके कि बकिस्वराजामे रंवारंय जमादात मुनारुं  
नवाठात व नी व नी ह्वालात से मामूर किया जायगा। नवालीव तलाता  
बहूर में जायेगा। ह्वाले नातिङ्क अघच्छुस मज्जकूकात कहलायेवा।  
मज्जकूकात माने नसननुमा के किए तबहहृव व तकच्छुस का होना जमे  
साबदी है। अगर जयदीस्वर इस जभूयितकैय को बनजरे कइ मज्जबाई  
तिदमते रिक्करसानी तच्छबीज प्रारमार्मे तो छाकसार बसिदके विक व  
घरामिये कनास बनबायेकार मज्जुवा में घरयर्म खेसा और अंजामविष्टीये  
खिदमते माहूवा में कोई बज्जीका छोटोगुवास्त न करेया।

जयदीस्वर — मैं इस अन्न का इन्हार बकनास मसरत करछा हूँ कि  
तुमने इस मुहिम की अंजाम रसानी अपने घर पर ली और मुसको जम्मीर  
कनी है कि तुम इस बारे परा को इन्तजामे बूधमससन व तुलने तबबीर से  
हलका बना लोने।

बिष्णु बी की जब यह इत्तदुजा संभूर की यमी तो जन्होने जय लमई  
की सामीधी के बार फिर कहा — मस्तबलसस महापजन। मरबनुय को  
सैराव व लादाव करने का तटीका अछ्चकटपीन यह है कि कुरें से एक नाली  
बनार्मे और हर कपारी में पानी पठ्ठेबायें। अगर हर पीने के लिए एक-एक  
नाली बनायी जाय तो बसत बेइच्छहा और हर्न अजीम बाके ही। यह  
बहुकर बिना जयागत एबही अपने छरीजे से तुनुकरीज होने की काबकियत  
सुर में नहीं पाता। पस जम्मीयकार है कि जो सजावत जर्त बटाव से  
मुजताक है, न कोई जससे मुजताक होता है और न बहु सुर किली से मुस्तप्रिय  
होती है बहुकर की मुईन व मदबपार बनायी जाय। कमठपीन मज्जरे  
जामायक को जाये रिक्क से सैराव करना सजावत का काम हीया। सिहाबा इतकी  
छर्न-छर्न सापाव करना सजावत को जमूरे मुतास्तिका के अंजाम देने में निहत्त  
इमवाव से औरअन्वेस को जमूरे मुतास्तिका के अंजाम देने में निहत्त  
नासानी होयी।

## असरारे मजाबिब

जगदीश्वर ने बिज्जू भी की दरखास्त बकमाक लंदापेघानी मंजूर करमायी और उनके प्रहरे बासा व जकाबते तथा पर बजहव मसरूर व मुबतहिन हुए। बार जबी ब्रह्मा भी महाराज ने मुसहम सर व कर बाड़े होकर मर्मी व सजाबत से बर्ब किया — वीनालाप ! यह बासी भी कुछ पुबारिष किया चाहता है। इजाबते उइबत का मुत्तजी है।

जगदीश्वर ने निहायत कुछ दिखानेवाले कहने में करमाया — ऐ मुजहिने बकक व मस्बने शानिष। ऐ मुसनिऊे बेद व बामिये माऊरीनप्र। ऐ देबताओं के ताबीब व तरबियत के मुजिद। ऐ रसूने इफ की कसीद। मेरे बरमेगोल तुन्हाटी खाने तूतीबयान को मुरू-अऊघानी करते हुए देखने की निहायत घामक है।

ब्रह्मा भी ने बजाघते मुजस्तिम होकर करमाना शुरू किया — बरहाले कि यह माहूदा पेटी बरबाबे कुछ-बरबाह से माबार होयी जिनके बजघाने बजाहपी तसैपूरपिबीर होने जिनको बतकाबाये मखलूकाठ हवाइये बरूरी महसूस होंगे और हयात का बापेमदार कुस्तिमयतन रिस्क पर है। बतयाफ की बाकाई कोसिष बरूर व बरूर कानी होनी। इयाम व बहाये बुनिया के लिए सिलसिलए हयात व ममात बाटी रसना बने साबरी होया। निहाया अगर सिलसिलए प्रना बराबर बाटी खेमा तो मुइते कसीक में यह बुनिया खी-बहूँ से बासी व रीर-बाबाब नबर आयेयी। पस बरी नबर कि यह सिलसिबा मुनकता न हो बसबे हुवाणी की तरकीब रोबमर्त करनी पड़ेगी ताकि बमबात से जिस करर कमी बाड़े हो वीबाइयों से पूरी हो जाययी। यह जानिसार इस बिबमत की तामीक का तकश्रीक होता है और बमुसाबिलते नजाल ऊपइये मुतासिबका को बकमाक अकंरेधी व बाकिखानी बंजाम रेगा।

जगदीश्वर — तुमको नबात की मबर से क्या फायदा मुतलबिब है ?

ब्रह्मा — महाराज बनीए नीम इंसानी में हर शय के बामाक व अऊमाक मुतघाने व ममासिक न होने। कोई तो मुत्तजी व मुतरघाटे, पाक व रस्तबाब होगा और कोई मुत्तपी व बोघसबाब कोई उपब का सबाबार होना कोई सिबाबत का मस्तुबिब कोई रद्रीकुरकस्व होमा और

कोई सच्ची कोई मुसलिम कोई बलील कोई सच्ची कोई मुसलिम कोई नर्म-  
 विल और कोई संग्रहिल तरब हर फर्द बघर के आमाक व जसाइस में  
 बेइतहा इस्लामाक होगा। जिस सलस के औसाफ हमीरा व अठवार  
 पसंवीरा रहे हैं, जिसने बहीनहमात सुब किसी मुतनफिअस को बलीमत नहीं  
 पहुँचायी लपकते नपसानी व तरपीवाते बुनियाबी को पाष फटकने व बिया  
 बादए रास्ती से मुसहरिअ न हुआ और अपनी तमाम हरकात व सलमात में  
 झूठे ईमामिया की हिबामत पर अमक किया वइ शकस इस्बत का गुरे नजर  
 होगा और सामूहिये मुगासिब छोरे नजात रहेगा और जो शकस बसपुरीयिने  
 नजात रहेवा वह शिकसिलए तमामुअ से जतावी पायेवा जनबा व अज्जाम  
 के असबावे ऐशो-इतरत उसको मयस्तर हूनि क्हाली मसरत का मजा  
 सठामेवा बघरियत से अकहवा होकर उलूहियत का बजा पायेवा बाबे  
 नजात उसकी मीरास होगी और खुस्य उसका इन्मामयाह हीमा। पर  
 नजात कमठरीम को इन्तिमाअने नेको-बद में मरद देवी क्योंकि जो नेक है  
 वह नमुहाअिलते नजात बाबे इरम के मन्ने कटये और वह जो बर है वह  
 फिर इसी बुनिया में रवि जाये।

इहा जी की इस्वुमा भी मजूर हुई और वह सुधी-सधी अपनी  
 बगह पर ना बैठे। बाब अबा महाराबा इन्ने ने बुनिया में अन्ने-अमाग  
 कायम रखने का जिम्मा लिया और हुम्मुमवतगी को बठीर मुसिद व  
 मुआसिम तकम किया। उनके बाद भी बन्द देवताओं ने अपनी-अपनी टप  
 बाहिर की मयर शिख जी महापज कोवियों के तरताज आरिषों के  
 सालिक बुनियाबी मकारिअत के सालिक आकिमों के हारी सैर-कुनिन्दे  
 कोह-ओ-बारी बाहियों के उलूमा बरवेधों के मुफिलककुछा फक के मुजिब  
 मैसिदियों के मुरसिद रियाजत के बानी मैसिदियों के हानिद आकिमों के  
 बस्तपीर, आकिमुल्लीब व रीघन-अमीर, देवताओं के सरमायए नाब  
 मुमताअ अज जाओ-नियाम जी घर बमुनुब होकर बैठे तो ऐसे मस्त हुए  
 नोमा मुराकिने में बैठे हैं, बिलकुल बुनिया व माअ्रीहा से बेअबर। बाबिर  
 कार बमपीरवर ने आपकी तरक नजरे अक़्तल्य मबनुस किया और एक  
 सल्लैअ तबस्तुम के साथ अरमाना — बन भोसागाव। हमारे अइनाम ने

## असरारे समाधि

बनकरे रिफाहे खसामक न बहबूदे आम मुताहिब इबाऊं किये हैं और उम्मीद की जाती है कि उनके बज्रपिबीर होने से नारे बुनिया बेचक बहुस्ने तमाम अजाम पायेगा। मगर तुम जो हमारे हबीबे खालिस न दोस्त हो न मामूम क्यों सामोस बैठे हो। तुमको काजिम है कि इजहारे मऽकहत में हरपिब ताखीर न किया करो और बिल इस्तिसास ऐसे भीकों पर जहाँ यही घरब मदेनबर रखी यमी है।

इसके पबाब में पिबजी ने सर को अबे उफ्तकुर से बाहर निकाला और अपने दऊ को बजाकर बलहने दाऊरी न खुश-अलहानी तरभूमपरबाब हुए —

प्रभु तुम मेरे आका  
 मैं हूँ तुम्हारा बाकर प्रभु और तुम मेरे दाता  
 मनमोह, संसार में बासा क्योंकर तोड़ूँ नाता  
 प्रभु, तुम मेरे आका  
 पाप की पठरी तिर पे लबी है मुझ से न निकले दाता  
 हृत्पावृष्टि मुझ पर प्रभु छेरो मुझे अब कुछ न मुमाता  
 प्रभु तुम मेरे आका  
 खोप महाबन प्रभु मोहे बन्प बन्प है बन्प बिबाता  
 जिन प्राणी ने यह बन पाया उसे अब कुछ न मुहाता  
 प्रभु तुम मेरे आका

इस मजन को इस लबी-लहने में अरा किया कि तमाम हाबरीन अथ अउ करने लये। असरर महबाब बज्र में आ गये। कामिल हो बष्टे तक महजिब में मजीब अजबुबरपतपी का आत्म रहा। अब उर होस बरजा हुआ तो सिन भी ने उरमाया — दीनबन्प, आप मेरे सन्त से बाकिऊ है। मुझमें एक ऐब यह है कि साअगो हूँ। परबाबरी से मुझको सलत नऊरत है। मैं हुतरों के ऐब से अरमपोसी और इजमाब करना नहीं जानता। यह जो बह्या बिन्प इन्त्र, कुबेर और बीगरअसहाब ने इसकाहें उरमायी हैं वो मेरी नजयों में सब की सब मजमूम हैं। मैं बैवताओं की सङ्गीर नहीं

करता। वह सोय बरकर बाबिबुलताबीन हूँ मगर जनकी मसकहू-अपे-  
 काविले समाप्त हउदिब नहीं। बुनिया शारे मकाफात है। बुनिया क  
 यो दिन कस्ये हैं। बुनिया माहजार कस्येवादी है। मसकरब इस आखे  
 बरवाह से उस कियबरे अजघाम में वही सोय बापबि जिनका जित्त पुगइ  
 भासूब ही यमा है और जो इस मुकइस सरखमीन में कदम रखने के काविल  
 नहीं हैं। पस जो उमूर कि जलामक के हुसूके मजाते शायी में सदे उह  
 हों वह फरक-निल-इकर मखमूम व मायूब हूँ। इन हउपत ने जो इवाफे  
 करमाये हैं वह सब के सब ईंसान को बुनिया की तरह मायक व रागिब करते  
 बाते हैं। पस मेरी मजहों में होब व पोब। आप पर मेरी तरह मुजातिब  
 ही बाने। जहाँ ईंसान को असबाबे बाहिरी पर क़रेफ़ा व मायक करने  
 के लिए बैदपहा उमूर मुहम्मद व मजमा किये गये हैं वहाँ उसके जयासात  
 को बक़ाये बबदी की तरह क़ु करते के लिए कम बज कम इन असबाबे  
 सबासा का बुनिया में रायक किया जाना जरूरी भासूब होता है — उक  
 इस्तघना व संय और मुसको जम्मीर है कि यही तीनों बीजे बैदपहा तर  
 तीनों की इजतमाई क़वव के मुक़ाबले में इरपिब क़ुबोर या नातवा  
 न थूरेयी।

जयबीस्बर — (कहकहा लगाकर) क्यों मुघकिब मला फ़क व  
 इस्तघना तो जयासाते ईंसानी को हयाते शायी की तरह क़ु करेयी मगर  
 संय से बित्त कित्त का ज़ायदा मसमूब बातिर है?

सिब बी — इस्वुल तक़ीर बाकिने पहारबदन (बह्ला) बुनिया में  
 हर मुतमपिअब के बीबा व किरदार, अउबाल व अतवार में बैदपहा

तक़ानुव रहेया। मैं इसकी ताईद करता हूँ। पस कोई तो मसमूकसहाक  
 और कोई तो कसबे मजास में सरगर्म और कोई तहसीले इतनाथ में मसक़ब,  
 कोई धागिल व जअक़ब कोई काहिल और ऐस्तक़ब। जो सोय कि अउ-  
 कारे बुनियाबी से आबाद हैं वह बजासानी तोषए बाकिर के जमा करते  
 में सरगर्म हो सकते हैं। पर जो लोक कि मुघलिब व क़ेनाक मुतहम्मिले  
 बवाल व अउबाल जाने-सबीना को मुहताब और तहसीले क़अयड में  
 ईरान व सरपदी हैं, उनके तबाये को लरबाते कहानी का मुजबी मका बक़ाने

## मसरारे ममाबिब

क लिए यह भंग अस्मीर सिद्ध होगी। अमीर तफ़्तुल से पीछा छुड़ा कर हम मर के लिए आसमे बाका भी सैर ब तफ़्तुह करने के लिए यह भंग एनुमा होगी और यही भंग उनके दिनों पर मसरारे हकीमी के इन्वाराक करने का बरिया होगी। किसी शायर ने इसके भीषाक को यूँ बयान किया है—

भंग बानिए कबो इच्छा है, भंग हानिए इच्छे यबदा है  
 भंग सख्तबिलों का तोहफ़ा है, भंग ही मुकबिलों का हरिया है  
 भंग है एक अस्मिए उबमा मेमते बेबहा हुई है अता  
 भंग नूरे नजर क़रीबी है भंग कूने बिपर परीबी है  
 भंग ही के तुक़्त से आत्म ताबबर रूया मुही क़ायम  
 भंग से नहन बख़ होता है, भंग से रंज रछा होता है  
 भंग होता मर न बनूबिबीर, सब बलाए अहाँ में होते असीर  
 क़ागी यक़्तत मुनाबिन होती बिन्वातबई भी क़त्मबरम होती  
 ममाबिब का निघान मिट जाता, लख्खे हस्ती से नाम बो जाता  
 अफ़निमा लाबबूर हो जाते, अफ़िबमा एतरबूर हो जाते  
 दावरी का न कोई रूता मुईन, होती बबहुरा दावरी से अमीन  
 इक़तमाते दावराता का ऐसा नक़बन मला कहीं होता ?  
 शायरे क़िक़ कित तख़ उक़ता, तंगए आशियाँ में सर बुनता  
 बुरते तबा नीमदा होती, बुलबुले क़िक़ बेठबा होती  
 रोशनीए तबा हुवा होती तेबिए कित बलाए बा होती  
 रूता बाजी न नाम बाहों का नाम मिट जाता अहले बाहों का  
 भंग का बो कोई अमल करे, खेर बो बेबनक़्त को करे  
 इतका दुनिया में बील्बाला है, इतसे आक़क़ में उजाला है  
 बन क़रन से इतके सब मुक़ है, पर न हो यह तो याँ समी तुक़ है  
 ऐय रीतल क्या है, भंग है भंग, इतने उतका किया है आशियाँ तंग  
 भंग पीकर बो कोई भंग करे, हम में बुरान को अपने रंग करे  
 हो मुक़ालिक़ तनाबर एक बरक़्त बस्तोपा उतके मित्से आशुन सल  
 बन में भंग उतका अंग-भंग करे, तोक़र हाब वीर लंग करे

गार मुञ्जालिङ्ग हो मिलल बिन्वापील, भंग जसको बँचामे रखै प्यौल  
 बर्बो इमराज हो प्ये मायूम भंग की बब से मक रहीं हैं पून  
 इंप ही जसका कुछ निराता है; उसका हृदयर न बैसा माता है  
 एक मायूम शौख-जो-भंग है वे मिलती आशिक से बैविरंग है वे  
 सुनइमजे नहीं वे करती है अपने आशिक का बन मे भरती है  
 वो है मासूम बर वे आशिक है; पार की बलिघार साचिक है  
 इसक में इसके जो हुमा है नयन, योषा उसको मिला है भोग का बन  
 उसते बोखो-मिलार है बिन-रस मुनते हैं उसकी सीटी-सीटी बात  
 उसकी सीइकत से भी बहूर हुमा प्य से उसका बियर तनूर हुमा  
 बयवीनर — बस करो पार, बस करो इतने बीसाज बिसके हों  
 मजा वह कब विछारिक का मुहताज हो सकता है।

मलभरख सिव जी की रसाइए बकाबत की शूब ही पापीय हुई।  
 भंग की मंजूरी हो जाने से लोगों में शून पल्ल मजा तमाम देबठाओं ने  
 इच्छहारे मधरैय किया मलायक ने मुञ्जालिङ्गानी की फूलों की बरसा हुई,  
 गण्यकं व भन्वरा जाये और यह लावनी बलापना मुरु किया —

पियी भंग पर रंग मजामा बाहो  
 से लो हाथ में लोडिया और सर ने सिलीडी से लो  
 रंगझीर जमा के आतन भंग बहो बर रपडो  
 छोड़ के मिर्च बराल इलाची, तपका सन तुम पी लो  
 ध्यान में शिव जी के तब बीठो माता शूब लपो  
 पियी भंग पर रंग मजामा बाहो

मकठरख इस लावनी के बाप तमाम बैवता मुञ्जालिङ्गानी हुए  
 और बलता बरखास्त हुआ।  
 मुंशी बीइर ने अपनी पुरबोर लबीबत का मठौना बारमे पर पहुँचाया।

† इस मकठरख का कोई मिल मुंशीजी की साधारण छईं घँती से  
 नहीं। पारी-भरकन दुर्बीय इजाजतों से भरी हुई आरती से बोसित ऊर्  
 बिघने केवल बिमसिठयां ऊर् की होती हैं किसी समय कायसों की ऊर्

चारों तरफ से ठारियों की सहा बुझन्य हुई। भोगियों ने उनके बिचारों की बुझनी और ठरीयत की सूझ-बूझ की बूझ ठारिक की।

इनमें कुछ लोग नरवारवाणी कर रहे थे। उस मण्डली में से एक महाशय जो अपनी हुस्निया से सरीक और पड़े-सिक्के मासूम पढ़ते थे ममकीन हुस्न के मनों का बड़े बिचार इंस से चित्रण कर रहे थे और उनकी मण्डली के लोग काम लयाकर मुन रहे थे। कुछ डेंडोपेस सङ्गितिये अबाम सैयोट कस कस के ताकाब में बमाभम कूब रहे थे। ठारिक लोग अपने-अपने करतब

की बिरोपता थी। ऐसा लगता है कि इस बेमेल दुकड़े को यहाँ डालने में जिसका मूल क्या से कोई संबन्ध भी नहीं है। सेलक का उद्देश्य कायस्थों की इस उर्दू का मबाक उड़ाना है। यह सोचकर इस पद्यकाण्ड को क्यों का क्यों बना ही ठीक काम पड़ा।

योड़ी-सो बात को डेरों घाड़ों में स्वरत करना यह भी इस धैर्य का एक गुण है। यही बात यहाँ भी बिलामी पड़ती है।

बात इतनी ही है कि जगदीश्वर ने जब यह सृष्टि रची तो ब्रह्मा विष्णु महेश इन्द्र कुबेर आदि देवता जगदीश्वर को बधाई देने के लिए उनके पास पहुँचे। उसी प्रार्थन में उनके बोज फिर मनुष्य के स्वभाव उसकी प्रकृतियों सृष्टि में उसके स्वाभ की लेकर चर्चा छिड़ गयी। उसी चर्चा के बीच से यह प्रश्न पठा कि मनुष्य को सदाचार के मार्ग पर बनाने रखने के लिए कैंता क्या बिबि बिबान हीमा चाहिए। अस्य अस्य देवताओं ने अपने अस्य-अस्य समाधान दिये। पुण्य को पुरस्कृत करने के लिए स्वर्ग और पाप को बंडित करने के लिए नरक की व्यवस्था हुई। उसी प्रकार पापारमाओं के लिए जलम-नरम के जलस्त चक की और पुण्यास्पाओं के लिए मोस की व्यवस्था की गयी। ब्रह्मा विष्णु, महेश इन्द्र आदि ने अपने ऊपर अस्य-अस्य कार्य-भार लिये। शिव जी महाराज ने और सब बातों के साथ-साथ धर्म का राग अलापा।

इन्हीं कुछ बातों को बड़ी लच्छेदार शम्बावली में छोटकर यहाँ पर पेश किया गया है।—अ



दिखा रहे थे। जो लोग दुबकी लमाने की कसा में माहिर थे वो बबकिल-  
 लमा-लमाकर लोगों से उलझ कर रहे थे। कहीं बच्चाड़े में कुस्ती ही खी  
 थी। पहलवान लोग अपने बॉन-यैच सपाकर खोर-बाबमाई कर रहे  
 थे। तमाचाइयों की भीड़ थी। छट के छट लोग जमा थे। यह औरतें भी  
 वहाँ से होकर गुजरीं। याद लोग बाँधें काड़-काड़कर चूरने लगे। जैज  
 लियां उठने लगीं। जो हजरत हुसैन के नमक और रंग की छछेरी के समयों  
 में फँसे हुए थे उन्हें अब रसिकों को मत्पन्न उदाहरण देकर अपनी बात उनके  
 दिमाग में बैठाने का सूत्र मीठा हाथ आया। आपने क्रमामा धुक किया  
 — देखो माई, वह जो मोठी-मोठी लकड़ी बरत चुकते हुए कमर की लक  
 काटी जा रही है, उसके चेहरे पर दर्शन की गमकीनी है। यह रूप खोजी  
 से मिलकर कैसा छवि दिखता रहा है। देखो उसके बाँधें। माकूम होवा  
 है कि तबे में भरी हैं। अच्छा अब उस बयसी का मुजाहिदा क्रमामा  
 जो रूप और बखानी में वह पहलेवाली से किसी तरह कम नहीं मगर चेहरे  
 पर वह नमक कहीं। निकटुल रुखा मुसा हुना! अब तो आप इस महरे  
 पर वह खीमान् अपना बार्धनिक ब्याकमान समाप्त कर चुके तो मारों  
 को साथ लेकर औरतों के साथ ही लिये और फाजिने कवना मुक किया।  
 एक — याद, जो बचपन से कानों मुता करते थे वह आज बाँधों  
 देता।

दूधरा — क्या है माई जरा में भी बाँधें छेकें हैं।  
 तीसरा — आज पार्वती जी की छहेलियां अच्छेपार्यें कैलाश पर्वत से

उठती हैं। निकली दर्शन मिलेना के सब तर बार्धे। हम जोयों का छुर्व  
 है कि बकर दर्शन करे। जो चुके वह बेबकूठ। निकटुल खण्ठी। बस्कि  
 पायल।

चौथा — मारो छ बरख से परियों के बघीकरण का अयक पिबोवान  
 से कर रहा हूँ मगर कमी अकेले में भी देखना मचीन न हुना। आज इत  
 बमल का अघर पड़ा है जाकर। क्यों उस्ताद, क्या छीचे में चताप है  
 इनको?

पाँचवाँ — यह न कहिये। यह तो आप ही की कारस्ताही है। बस्ताह बड़े मूकमूढाक हो।

श्रीपा — बबी यह तो अपने बायें हाथ का करतब है। चुटकी बनाने में हथारों परियाँ हाथ बांधे हाथिर हो बायें ममर घनमें यह ममक और सांगी कहीं।

पाँचवाँ — सादगी! सादगी की एक ही कही। आप इनको सादा मिखाव कहियेना। अरे यह तो खेसी-खायी है। साठ घाट का पानी पिये है। बैसते नहीं तिरछी नबरे, माकूम होता है कि घीये कसेजे में उतर बायेंपी!

किस्ता मुस्तसर यह है कि यह हजरत इबर से उबर बनकर समा रहे के अगर कोई मङ्कीसी सूरत नबर पड़ी तो उसे बुरे कबे। यह बीरतेँ निहायत मान-मान से इस जपह से भी आये बड़ी और ताकाब से कोई हो सी मब के फ़सले पर एक बास में हवा खाने बसी। यह बाण निहायत कुणनुमा बना हुआ था। ठीक बीचोंबीच एक संयमरमर का हीर बना हुआ था। हीर के चारों तरफ़ खूबसूरत कुसियाँ रखी हुई थीं ताकि अगर कोई भसामानस सीरो-तक्रौह की एरब से आये तो उसे बैठने की दिक्कत न हो। जिस बइत यह बीरतेँ उस बाण में बाखिल हुई वो अटिलमन उसी हीर के किनारे बैठे हुए किसी बात पर बातें कर रहे थे।

पहला (बकिम्यानुसी समालात के आदमी) — क्यों हजरत मसा यह भी किसी किताब में मना किया गया है कि बीरतेँ नर के बाहर इबम न निकालें? सब काम नर ही में ही?

दूसरा (दुपरे सुसंस्कृत विचारों के आदमी न तो यह अंग्रेजियत की सेते थे और न पुणगी कबीर के कहीर थे। वो काम करते थे समस-बूझ के साथ) — मैंने तो आज तक किसी प्रामाणिक पुस्तक में ऐसी बात लिखी नहीं देखी जिसका यह विषय और उद्देश्य हो कि बीरतेँ नर के अन्दर ईद कर दी बायें और उनको बाहर निकलने की कठई मन्गही कर दी बाय।

पहला — तो फिर आप लोग इस मसले पर क्यों इतने बीरों के साथ बहस करते हैं?

दूसरा — हम लोगों की यह मता नहीं है कि बीरतों घर में बन्द की जायें। मगर हम लोग इस बात को हर्टमिज मुताबिक न समझे कि हाँसा निकल कर दिया जाय। अगर बीरतों का निकलना इतनी तीर पर बन्द कर दिया जाय तो उससे दुनिया के कामों में बड़ा बिम्ब पड़े और प्रतीक लोगों का काम तो हम भर भी न सके। इसलिए यह ताजिम आया कि बीरतों को बकरतन् और मजबूरी दर्जे घर से बाहर निकलने की इजाजत दी जाय। मगर यह बात ध्यान में रहे कि वे सीमा से जाने न जाते पायें।

पहला — इसको जरा धोखकर बतवाइयेगा मैं ठीक से न समझा।  
दूसरा — मेरे कहने का यह मतलब है कि बीरतों बाहर निकलें बकरतन् मगर मजबूरी दर्ज। सैर-सपाटे के लिए अकेले हर्टमिज नहीं। बिला बकरतन् छुटा साइ को तरह मटरगस्ती करना बहुत बुरा मामल होता है।

पहला — बिला बकरतन् कोई क्यों इतर-उतर नुमने लगा ?  
दूसरा — इसकी क्या ऐसी सकल बकरतन् है कि बीरतों मोर में निरपकर्म से निवृत्त होकर मन्दिरो में पूजा के लिए जाय ? पूजा के लिए नियत की सज्जाई और ध्यान की एकाग्रता घटते हैं। सिर्फ नुमाइश से कुछ हासिल नहीं और बाहर सांसारिक कर्तव्यों के पूरा करने में। अगर पूजा का सब सामान घर के अन्दर इकट्ठा कर दिया जाय तो मेरी समझ में कोई दिक्कत न हो। सब काम बिना संसट चला जायें।

पहला — आपने अभी प्रस्ताव कि किताबों में बाहर निकलने की मनाही नहीं। अगर बीरतों सज्जे बिल से और भी लपाकर पुष्य लटने और मुक्ति प्राप्त करने के लिए मन्दिरो को जाती हैं तो क्या बुरा करती हैं ?  
दूसरा — मगर और करने की बात तो यह है कि मन्दिरो में जाने के बाद भी उनकी तबीयत की सज्जाई कायम रहे सकती है या नहीं।

पहला — मैं तो समझता हूँ कि उनकी नैतिक बधा टोच-ब टोच नुबरेली और अच्छे तरीके देना होंगे।

हूरा — यह आपकी सखी है। हरमिब ऐसा नहीं। मन्दिरो की हाकत इस बयाने में ऐसी है कि कुछ न कहना ही बेहतर है। महर्तों के हथकंडों की चर्चा अपर में बहुत बोझ में ही कर्से तो पोने का पोना हो आम और यह कुछ महर्तों ही की बात नहीं है। जो लोग मुपुत की चर्चातियाँ करेये हूसेरे के सिर पर फुलीदियाँ जार्येये वे आस्तिरकार ऐगपसन्द और आरामतकब हो जार्येये। जिन दिनों ईपलिस्ताम की सम्पदा और संस्ति इस सिरर पर न पहुँची थी वहाँ पर यह रस्म थी कि छाही इस्ताक करने वाले, पादरियों के सिताऊ मूकद्यों की सुनवाई के लिए, अपीम्य समसे जाते थे। पादरी लोग कैसे ही संवीन कुर्म करें, बड़े से बड़ा मुनाह कर बैठें अपर पबर्नरेष्ट कुछ पूछाऊ न करती थी। इन पादरियों के मामलों का ईसका पोप के दरबार से होता था। मगर चूँकि वह सुब भी इसी क्रिऊ के आदमी था और क्रिऊ की बदनामी को करता था इस वजह से अपसर ऐसे लोग भी सजा पाने के इतिरिक् थे वेलाय भूट जामा करते थे। इन लोगों ने ऐसा बन्देरे किया ऐसी ऊजम मचायी कि प्रजा को भयकर कण पहुँचा और यह सब मितकर अपने बक्त के बाबगाह के दरबार में हाजिर हुए और जब की कि हुनूर इन बने हुए पादरी पादरियों के मारे हम लोगों का नाक में डम हो रहा है। उनके अन्याय इस हद तक बढ़े हुए हैं कि बिषकी कोई सीमा नहीं। बच्चा-बच्चा इनके कुत्यों से डुबी है। तमाम सस्तनत में बाबेला मचा हुआ है। अपर हुनूर सुनवाई न करमायेगे तो रिबाया बासी हो जायगी यिरजों को बड़ से लोरकर फेंक देयी महस से महक और ईट से ईट बना देगी उन साधुओं को इत्क करके उनका नायो-निचा इस्ती के सऊ से मिटा देगी। बाबगाह दुरबिष और मामले को समझनेवाला आदमी था ताक गया कि यह सब इस बक्त मस्त्राये हुए हैं अगर कोई बात इनके सिताऊ की मयी ली चकर से चकर बिपड़ जार्येये और चूँकि सुब भी कई बार पादरियों की रसावतियाँ देह चुका था उसने नाबिरयाही हुबम निकाला कि आज से पादरियों को आपसी ईसले का कोई हक न होना। सभी मामले छाही अक्रमरों के हाथों लप जार्येये। पादरियों के काम में इस सबर के पड़ते ही एक सखी-सी मच गयी। प्रीरन जार्ड बिउप आऊ कैप्टरबरी के

वहाँ जमा होकर अपने सबसे बड़े महंत पोप बाइस रोम को इस अपमान के सूचना दी। यह बहुत ही शायद हुआ और इंग्लैंड के बाइसाह को बम कामा। इसके बाद बूधरे देशों के बाइसाहों को इंग्लिस्तान से बड़ाई लेने पर आमाबा किया और लुद भी बूधरे-बूधरे करियों से अपभे-अपवाद को मड़कावा रहा। मगर बाइसाह ने तमाम आइतों को बम के बम में बूर कर दिया क्योंकि रिवाया उस पर आग ल्योलाकर करने के लिए फिर हवैली पर लिने हुए थी। एक इतिहासकार लिखा है कि जिस दिन यह अक्षियार पावरियों के हाथ से निकसा उसी दिन इंग्लिस्तान के उस सांस्कृतिक भवन की नींव पड़ी जो आजकल दुनिया में अविमान की बुी से देखा जाता है।

रिवाया ने भी का चिरास जकाया। बर बर जयन मया। आप इस उदाहरण से यह देख सकते हैं कि इन धानु-संस्थासियों पुरोहितों पावरियों के हाथों रिवाया किन्न ऊपर सूचीबद्ध उठा रही थी। आजकल हमारे पुजा रियों का भी बिलकुल वही हाल है। जमाने भर के मुसलमोर, आहिष ऐसपसन्द लोम इसी करिए से अपनी भीविका प्राप्त करते हैं और भोके-भाके चीने-सादे लोगों को अपनी बराबादियों का सिफार बगते हैं। उनकी नैतिक बया इतनी बिगड़ी हुई है, कि बोबा ही नली। चिरास लेकर बुंदिने मगर तमाम क्रिछे में कोई चीना-उष्वा आदमी न पाइयेया।

पहला — इबल इसका तो किधी काछिर ही को यकीन आवेया कि महंत लोम इतने बरपन होते हैं। आपने तो उनको पाप का पुत बना दिया।

दूसरा — आपको कमी उनसे काम नहीं पड़ा जमी आपको उनके साथ इतनी हमदर्दी है। कहीं एक बछा भी आप उनके छरे में आ मये तो आटे-वाल का भाव मामूम हो जायया। मुमते कहिये तो इसी बज्र ली-बी ली ऐसे लोयों का नाम पिना जाई जो परमे बजों के ऐमाथ हैं, मन्वर एक के बलिम हैं और इल्हा बजों के बैईमाग हैं।

पहला — अर्च कौजिए हम बबर बह भी माग लें कि वह ऐसे मन्कार और फालसाह होते हैं और उनका प्राइवेट प्खना-सहता गिरलत के आवित

होता है तब भी इसका हरगिज यह मतलब नहीं कि उनका पब्लिक करियर भी ख़ाब हो।

दूसरा — बनाबमन माऊ कौमियांग आप शकती पर है। उनके व्यक्तिगत जीवन का असर मौजबाम ठबौमठों पर कितना पड़ता है उसका बन्दाबा करना हम लोगों की शक्ति से बाहर है।

पहला — आपको बातों से यह धार निकलता है, कि स्वाम और पूजा कठई तीर पर मना कर दी जाय।

दूसरा — जब इस बात की कोई शकल नहीं कि जामजाह मन्दिर को जामें (क्योंकि पूजा जहाँ कहीं सच्ची नियत से की जायगी उसका फल एक जैसा होगा) ती बेक़यबरा इतनी सब माधापच्ची से क्या हासिल? कितानों में इसका विक ही नहीं आया न तो मनाही है न इजाजत। इस हासल में हमको यह रबैमा शकियार करना चाहिए जो भीबूबा तहजीब और तरककी की धान के काबिस है, ताकि दूसरी ज़ीमें हमारी टीका टिप्पणी न करें। अगर इस्साऊ की मखर से बेबिए ती मह बुटी रस्म खुब अपनी ही मखरों में बुटी मामूम होती है। कैंची धर्म की बात है कि ऊँचे ऊँचे बनने की औरतें सबेरे तड़के संया-स्नान को जामें तीरंपाया के लिए भी कमर बाँधें ठाकुरजायों में मटरगस्ती करें। आप खुब देख सकते हैं कि आबारा लोगों की बुरा-बुरी बुरे लोगों का सामना जमाने की साकबे और बायना की मुँहजोरियाँ औरतों की स्वाभाविक हवा-धर्म पर कैसा बुरा असर आकती हैं। (इन औरतों को देखकर) तीबिए मुखाहिजा कीबिए। यह औरतें देखने में धरीऊ जामबान की मामूम होती हैं मगर इनसे पूछिये कि यहाँ पूजा को जाने की क्या शकल बी। देखिये कितने बेहूबा निकल्ले इनके साब-साब बले जा रहे हैं। आपस में फबतियाँ कसते हैं। भीका-महक देखकर इन से मजाक भी कर बैठते हैं। मगर यही पूजा ठीक डय से की जाती तो यह भीबत क्यों आती ?

यह औरतें कड़ी होकर हीब में मछमियों को देखने लगीं। इसी बीच यहाँ इस-बाहू कड़के बीड़ते हुए जाये और मछमियों को इपर-उपर फुर कते देखकर बहुत खुस हुए।

एक—बाबा हमें पढ़ने को किताब ले दो।  
बाबा—कौन-सी किताब लोये?

सड़का—क्रिस्ता घेरघाह सूरी की लड़की और ताबा मातबा के लड़के का।  
यह सब एक किताब बेचनेवाले की दुकान पर पहुँचे और किताब लेने की ज़रीरकर उसी हीज पर बाये और लड़के ने पढ़ना शुरू किया—

क्रिस्ता खतपात और कमकसिदा बेयम  
किबक पीलनी मुहम्मद ताहिर ताहिर

एक रोड घेरघाह सूरी अपने तख्त पर बैठा हुआ जमीरों से कुछ बलाह-मघबिरा कर रहा था कि एक खनास महमघरा से पीड़ती हुई निकली और तिहायत बरहवाली से घर के बाक खुले अपना निरम गोपनी-सबोटटी दरबार में पहुँची। बादशाह उसे देखकर बरघ-सा गया और पूछा—

नयों नयों, कैरियत तो है?  
खवास ने रोकर बबाब दिया—

बर्हापनाह कैरियत तो बहुत दूर है, आज मुबहसे कमकसिदा बेयम का पता नहीं है! तमाम महम की अमुक्त-अगुम साक छान डाली।

इन खबर के सुनते ही बादशाह की तो अक्ल घुम हो गयी। फौरन तख्त से उठा और नये पाँव डौडता हुआ महमघरा में बाकिस हुआ। देखा तो वहाँ पिट्टस पड़ी हुई है, कोहणम मचा हुआ है, तमाम बेयमें घर के बाक खोले खुड़ियाँ तोड़े कपड़े-सत्ते बेसुब छापी पीट रखी हैं। बादशाह ने अपनी प्यारी जहेती बेयम को बिलासा दिया और पूछने लगे कि 'बाबिर कुछ माजरा तो कशो इस तरह रोते-बीते से क्या हासिल? उसने जबाब दिया—

या खुबा क्या बनाव दूँ। जमी कछ छाम की मैं अपनी जम्म के साथ बाघ की घेर को गयी थी। वहाँ से बहु मेरे साथ बापय आयी। हाँ बाते ही बज्र उलका बेहण कुछ उठप हुआ था। आज मुबह से पता नहीं है। न मारुम उस बेचारी पर कौन बला जा पड़ी।

इतना सुनकर बाघदाह दरबार में आया और हुकम दिया कि मिलने वाला जामूस इस शहर में है अभी मेरे पास दरबार में हाजिर हों। बुनाब पोरी देर में हवापों जामूस एक से एक बढ़कर हाजिर हुए। बाघदाह ने फरमाना—बाहुजारी का मान मुझ से पता नहीं है। तुममें जो कोई ठीक-ठीक पता लगाकर मय क़री के सबसे पहले यहाँ हाजिर होगा उसे पाँच हजार सोने के दीनार इनाम दिया जाएगा। यह हुकम सुनकर जामूस अपने-अपने साथ-सामान से सैर होकर टोह में निकले। त्रियके त्रिबर सैर समये उबर बना। पर एक बुढ़ा जामूस क़लीदी भेज बदलकर बाहिस्ता-बाहिस्ता इबर-उबर बैलगा भालगा पूरब की तरफ़ चला। कई बड़े ठक वह बराबर बाबा मारे बना गया पर कुछ निदान न मिला। घान के बदन एक यात्र में पहुँचकर उसने बाबार की सड़क पकड़ी। पहुँच कर क्या बैलगा है कि एक नौजवान आदमी तनाम इन्दिारों से लैस हुकवाई की बुकान पर मिठाइयाँ ले रहा है और उसके साम एक और नौजवान शम्स उनके कबे पर हाथ बिसे धड़ा है। जामूस की तेज आँखों ने औरत पहचान लिया कि अब शिकार फँस गया। लिहाजा उसने उनका पीछा किया और यह कहता बना—

मेँ हूँ बिदेसी इक मिजबनपा कोई मेरो पार लगा दे।  
 लौन कपवात किया है हुमने परत सीध नहिँ बाँध दे।  
 दिया हुआय बीका जाता कोई मोहे भोजन करावे दे।  
 गुन हमारी बड़ी स्वार्थी त्पाम बीन देखियाँ दे।  
 सब डाकू मिलि पार गिरायो कोई मेरी सूजा बुसावे दे।

उसने यह उरत मछ हुआ पीठ ऐसी बर्दनाक आबाद में पाया कि यह पारी के बिल में बर के मारे रताई जाने लगी। उसने अपने साथी से कहा—  
 प्यारे रतनपाल यह छठीय क़लीदी भूजा है इसे कुछ चिन्ता हो।

रतनपाल ने जबाब दिया—पहल उससे यह पूछ लेना चाहिए कि इतने बलत कीन-सा उस्ता पकड़ें हमको तो कुछ मामूम नहीं और इस बलत नहीं रह जाना बजुरे से खाली नहीं।



सिन्हावा घट्टवादी ने ऊकीर से पूछा—

मे हैं बिबेती एक मुसाफिर तुम हो बिबेती ऊकीर।  
 क्या तुम्हारी हम घर हों, कोई मोहें बात बता दे दे।  
 तुम से सीधी राह यहाँ हम जाय पड़े मच्छतोस।  
 तुम से कोई अरज हमारी अब मोहें डपर बता दे दे।

यह सुनकर ऊकीर ने कुछ दिल में सोचकर फिर कहा—

पुश्च बिसा में खोर लपट हैं उत्तर बिबि नहिं बाढ।  
 बलिन बिसा में नही पकट है पार न कोई बतावे दे।  
 पच्छिम खोर को जानो मुसाफिर सब कुछ है नरपुर।  
 खोर-बजार न डाकू चूवन कोई नहिं बीच लपाने दे।  
 बचन को मोरी जानो मुसाफिर तो पच्छिम की राह।  
 बोड़ी दूर इक नपर पकट है नां जातन तुम जमा दे दे।

यह सुनकर घट्टवादी ने रोगी सूरत बनाकर रतनपाक से कहा—  
 प्यारे, छठ यही नसर करो मुबह को सीधा रास्ता पकड़ने। इस बकत  
 संबिह बरने में बड़ा डर है। कहीं डाकुओं से मुठभेड़ हो जाय तो ताहक  
 की बहमत हो।

प्यारी अगर डाकू इबार जान लेकर जाने तो एक मी सलामत न  
 से जाये। मगर इस बकत जसे बचमा ही नसकहत है।

वही सोच-समझकर घट्टवादी ने वहीं बिस्तर जमाया। ऊकीर को  
 जिलाया खुद जाया और दोनों आधिर-मासूक यसे निककर छो पड़े।

बब बहु सीने लने तो ऊकीर जूठा और दिल में सोचने स्या इस बेबा  
 की सूरत सीधी प्यारी है। आज मासूक के यसे निक एंड-एंड छो रखा है,  
 कल यही घर सुली पर होमा। आज मासूक की मोर में है, कल सुद मीत  
 की मोर में होगा।

पर जसकी लालच ने उसको न छोड़ा। वह सीधा जाने पर गया और  
 आरोवा से कहा कि दो घाही ऊकीर फला पेड़ के तले पाकिर पड़े हैं, तुम इसी

## अधरारे ममाबिब

बन्त रौंर सेकर बाबो और उनको बाँध लो। सबरवार, होगियार खुना।  
उसमें से एक जवान बड़ा बहादुर है। उसकी बहादुरी की बुन है।

बाबिम धानेवार सवारों समत मीत की तरह सर पर पहुँचा और  
दोनों बहकिस्मियों को डँब करके धाने में लाया। यह सब ऐसी एकजुत की  
नींद सोये बे कि रात को बाबिम भी न सुली। सुबह को इस बला में बिच  
हुमा पावा।

घहबादी ने रोकर छतपाक से कहा —

नाब मेरी मसवार में डूबत है मरुतोत।  
नदी है पहुरी कोई न बिबेया जो बेड़ा पार लगावे रे।  
भाग में मेरे पही लिखा था, भेट सके ना कोय रे।  
लिबेसि बिपाता जो मारये में यह कोई कैसे भिटा रे।  
जान से प्यारे भाँखों के तारे मोरे पीतम प्यारे।  
में हूँ अभायिम एक सिद्धारिम कोई मीत से मोरे भिटा रे रे।

घहबादा छतपाक यह दुखमरा बीठ मुनकर रो दिया और बड़े कठम  
स्वर में बोला —

बीरज भरो मोरि प्राण पियारी, छोड़ो तुम मत जास।  
साँत है अब तक भास लयी है, ईरबर तुमको बचावे रे।  
भाग तो अपना हीन में कैसे रुजूँ ई जान।  
तुम हो हमारी म हूँ तुम्हारा कोई बन्ध से तुमको छोड़ा वे रे।

बसगरज दोनों ने बाबिमरी बीगर किया और मीत के मुस्तबिर हो  
बैठे। बोड़ी बैर में कोसवाल ने दोनों को जुवा-जुवा कटवरे में बन्द किया  
और जापुस के साथ राजबानी की तरह चला।

बाबिसाह ने अपनी लड़की को प्रसन्न की भाँखों से देखकर कहा —  
प्यारी, तुमने अपने बड़े बाप को ऐसा मुक्त किया उनका जण भी ध्यान  
न किया।

लड़की ने रोकर कहा —



## अतरारे ममाबिद

हमको क्या भस्म का होया पञ्च का सामना।  
हाथ से अपने बली बामनी प्यारी हाथ हथ।  
बली बली माँझों की पुतली हाथ हाथ।

इन औरतों में प्रस बरेंनाक किस्से को सुना और धड़कायी की डिस्मस  
पर बड़सोस करती हुई बर्षी मगर ब्रम प्रसूत करने के बास्ते एक पीस बरुपी  
या पस यह नीत जाने सभी —

पिया मोरे बले का हार है, साबन घर आते।

पाठी हुई अपने-अपने घर पहुँची और प्रतिष्ठित बरने की परनिधीन  
औरतें बन बैठी जैसे कुछ नहीं जानतीं।

पिता प्रीत ऐसी बला कि सूझे सब घर-बार।  
यही काठसा विल में छुट है कोई पीतम से निजा है दे।

बारसाह अपनी लड़की के बचाव पर बेहद गुस्सा हुआ और धरनाकर  
उसने हुसम दिया कि जानदान की इस जिस्मन्त को अभी बन्दीखाने में से  
बाबो और जब तक इसका जन्म दूर न होया नहीं पड़ी रहे। इसके बाद  
रतनपाठ की तरफ मुखातिब होकर पुका — क्यों जी तुम कहीं से बाटे  
हो तुम्हारा क्या नाम है और यहाँ तुम्हारा क्या काम था ? तुमने बारसाह  
का क्या भी लिखा न किया और ऐसा सर्मनाक काम किया। अब तुम्हारी  
मही सबा है कि तुम सूली पर चढ़ाये जाओगे और तुम्हारी लाश पीछ-पीछों  
को बिका ही जायगी ठाकि दूसरे इससे गरीब हो लें।

रतनपाठ ने बचाव दिया —

प्रीत की गपटी है बड़ी बाँ नहीं परजा कोई।  
ना कोई राजा राज करे बाँ ना बुझिया को सवाबे दे।

बारसाह ने छोटे छोटे बच्चे सूली पर खिचवा दिया। दूसरी मुबह की  
महकसय से यह आवाज सुनायी दी —

(मावमी नीत)

बल बची आँखों की पुवली हाय हाय।

कुछ न बेबा कुछ न जाला बल बती बहु हाय हाय।

जिन्वमी का पुल न नौगा बल बती बहु हाय हाय।

बल बची आँखों की पुवली हाय हाय।

कँती प्यारी जतकी सूरत कँता जसका रंगे-बन।

बी बनी कोपल बचानी बल बती बहु हाय हाय।

बल बची आँखों की पुवली हाय हाय।

गुब लो प्यारी बल बती पर हुपको बुक बैकर पयी।

सेजे भरमाँ लँकड़ों बुनिया से निकली हाय हाय।

बती बती आँखों की पुवली हाय हाय।

## असरारे अजाबिद

हमको क्या भालूम था होया एबब का सामना।  
हाथ से अपने बच्ची जामवी प्यारी हाम हाम।  
बत्ती बत्ती माँबों की पुतली हाम हाम।

इन बीरतों ने इस बर्बनाक क्रिस्से को सुना और उहूबापी की क्रिस्मत पर अक़सोस करती हुई बत्तों मगर इस प्रकृत करने के बास्ते एक गीत बरूटी था पछ यह गीत पाने सगों—

पिया मोरे यके का हार रे, साजन घर आते।

घाटी हुई अपने-अपने घर पहुँचीं और प्रतिष्ठित बताने की परानधीन अंगरें बन बीठी बीसे कुछ नहीं जानतीं।

रामकली जब वीर-सपाटे करती मकान पर पहुँची तो वहाँ एक नया  
 तमाशा बैठा। उसका चौहर बोली-कहार लेकर उसे स्वसत कप ले जाने  
 को माया हुआ था। यह देखकर रामकली का तो कलेजा मुम-सा हो गया।  
 कभी विल में सोचने कि यह किसका पुत्राने बैतमीजी की तरह बीच में कहीं  
 से कूद पड़ा। इसका तो कुछ धामी-मुमान भी न था। बाहिर कुछ पहले  
 से लिखा-पढ़ी तो की होती। कुछ हुआ। कुछ दिन और भी नीम से कटते  
 फिर देला जाता।

बाहिर बेचारी जब घर में गयी तो पुपचाप मत मारकर बैठ गयी।  
 मैं ने जो देखा कि लड़की मुममुम हो गयी और हावत अभागक कुछ से कुछ  
 हो गयी तो समझी शायद दिन के आँके ने यह कुटी पठ कर दी ही। कुछ  
 देर तक तो रामकली यों ही पालों पर हाथ बिये बैठी रही। बाहिरकार  
 बुखार का बहाना करते बट्वाटी-बटवाटी लेकर पड़ रही। जब उसे लेते  
 देर हुई तो सनको मुमान हुआ कि लड़की खजबजा गयी। पहले तो सोचा  
 कि सोने ही से, शायद इधो से भी इसका ही बाप। मगर मगवान की ही  
 एक ही बेटी न रहा गया। बिस्तर के पास आकर कहने लयी— बेटा  
 रामकली जड़ो कुछ परछाह-बरछाह तो ला लो। कही की कैसा है?  
 रामकली— (भाटी आवाज में) अम्मां हमको बिक मठ करो  
 माँ— तुम जड़ो कुछ बोझा-सा ला लो। देखो कनी बात कं,  
 बात में सर का बरँ बुर हुआ जाता है। मैं तो तमाशारी हूँ कि बाबत के खिलाऊ  
 मुझे खूने से सर भाटी होना। जहाँ तुम जाना आकर कप कैदी नहीं  
 तबीयत हस्की हुई।

रामकृष्ण — क्या कहती हो अम्माँ सर में तो वो दर्द है कि माकूम होजा है फट पड़ेया और हृदय भी हो आयी है। इस वक़्त में घाना-घाना नहीं खाने की।

माँ — अरे और कुछ नहीं सुना वह आये हैं अस्तू महया न।

(यह रामकृष्ण के पीहर का बुकारा नाम था।)

रामकृष्ण — (कुछ धरमाकर) सच।

माँ — हाँ हाँ सच और क्या तुमसे झूठ बोलने जाऊँगी।

रामकृष्ण — अब आये और क्या करने आये ?

माँ — और तो क्या करने आये ! अरे हम लोग तो हरदम मुँह पमारे रखते हैं कि किसी तरह इतर भी आ जाया करें। हरदम उम्ही पर पी बगा रहता है। बुझीपी में नारायण हुआ सुन लेता एक माती दे बेता जरा जलवा भी सुन भोग लेती नहीं तो मन की लालसा मन ही में रह जायगी।

रामकृष्ण — (सँपकर) अब आये ?

माँ — अरे अभी-अभी तो बलती रुपहरिया में बाबा मारते चले आ रहे हैं। कहते थे कि बन्ने को अब की लिबा से जार्ये। तुम्हापी सास जरा बीमार है।

रामकृष्ण — मर भी जाय किसी तरह तो इस आये बिप की बाँता किसकिस से तो छुड़ी मिले ! न माकूम आक़बत का बोरिया बटोरेगी क्या। मैंकड़ों ही बख़्त तो सुन चुकी हूँ कि बीमार हैं मरा चाहती हैं, दम टूटा चाहता है, घुटका लपा है सब-सब हो रही हैं, मगर अब देखो अन्धी-खासी हठी-कट्टी, मोटी-ठाबी चारु-बीबन्द, मोदीखाने की चुहियों की तरह संबा बनी बैठी रहती हैं !

माँ — बस कर छोकरे बसकर, सात की जूब ही इरबत की ! यह भी कबनुप का मुमाब है कि छोकरियाँ अपनी बूड़ी-बड़ी को बूनी बराबर भी नहीं समझती उनके सते से डालती हैं। कोई कसर उठा न रखें और सात मनर को पानी पी-पीकर कोसें। आज अयरकुछ बुरा भला आ पड़े तो बही बूसट बुझिया बाड़े आयेगी। तैरा न माकूम कैसा मुमाब है कि उस बेचापी



का नाम प्रकाश पर आया और तूने बर्ष की तरह घूमकर बर दिया। वह ठो  
 तेरी मुँस साफ़ा करती है और तू घूटे मुँह से बल भी नहीं पूछती। तैप बस  
 बल्ला तो तू कभी का सास का बाप-भ्याप कर चुकी होती।  
 माँ की गयीहवमयी बार्से मुनकर रामकली की कुछ कोर-सी बन गयी और  
 वह और तो कुछ न बोली चुपचाप मुँह फुलाकर लेट रही। माँ का कलेजा  
 मजा कम मानने लगा। आखिर की बेचारी बुर सीड़ी हुई आयी। मजा  
 मनुकर उसे पीके पर ले पयी। सजीब लाना सज्जाई से परवरकर महापनी  
 के सामने बर दिया मपर महापनी बिना भेंट मुँट लिये क्यों सीधी होने  
 लयी थी। रामकली बराय नाम कुछ मुँह जूठा करके फिर अपने बिस्तर  
 पर लेट रही। बन रात के कोई बस बजे होंगे तो लसू मझ्या बने पाँच राय  
 कली के कमरे में जाये और चुपचाप चारपाई के एक कोने पर बैठ गये।  
 रामकली पर कुछ तो दिन भर की पकान सों ही छापी हुई थी उस पर  
 घुर्त मह हुआ कि महुँत भी की सपन ले दिमाघ को फिप दिया ना। इस  
 बजह से वह इस बल्ल अपने हवाश में न थी आज-धरम छोड़ दिय लैला  
 नीर में बेहाल पड़ी थी मपर चूँकि मज सिक्त से दुस्त भी बगल सिपार भी  
 चुन कर लिया ना रंग-रूप भी लच्छा पाया ना और घुरत भी सी-सी सी म  
 एक उसका सीहर नाकनूर उसकी तुनुक निजानी के उस पर सट्टू ना।  
 यो रामकली दो ही चार दिन सगुपस में रही होयी मगर इतने ही दिनों में  
 उसके और लसू मझ्या के बमियान कई बार मनमुटाब का इतझक हो  
 चुका ना। इस बजह से वह बेचारे दिक् ही दिन में कटे जा रहे थे। यो तभी  
 नत के लयावार तकानों से मननूर होकर वह महुँ तक जाये थे लेकिन इस  
 बल्ल दिन बज्ज रखा ना कि कहीं सीने उसकी छोड़ा और उसने ले-ले चुन  
 कर ही तो चुप लैरुवा। खानबदाज तो है ही उसका काम ठिकाना।  
 कोई बाब बल्ले तक तो वह इसी चीज निचार में थे मगर इतनी बेर में उनका  
 सहमना भी कम हुआ और जग्हने बरते बरते उसके जिस्म पर हाथ रक्ता।  
 उस मक्लन जैसे गरम भरे-पूरे जिस्म का हाथ से कूना ना कि जिस्म में एक  
 बिजली-सी सीड़ पयी। सब बल्ल हुआ हो गया और क्यों न होता। आखिर  
 इस बल्ल की ताब कहीं से लाया। इन्तजार ही इन्तजार में छप सीपी पायी

है। इसकी भी कोई हद है। उन्होंने जो रामकली को इस तरह नीचे में मस्त पाया सर के बाल खुले और बिखरे हुए, तो समझा कि यह भी इसकी एक बनोली मरु और माणुकाणा बनाना है। उन्हें इस बतकस्मृती से यह भी बाहिर हो गया कि अब देवता सीधे हो गये। अब उन्होंने खूब ही बाहिस्ता-बाहिस्ता मुद्दुबाना शुरू किया। कोई बाब बष्टे के सगमम तो उन्होंने खूब ही नाबबरबारी की कमी मुद्दुबाया कमी बोसे बिये कमी बाहिस्ता से एक चुटकी भी ले ली। मजबूर होकर पाँव भी बबाये ममर बायना तो बरकिमार, यह मिनकी तक नहीं। तक तो यह भी कुछ मित्रबिबा-सा गया और बरा तेज होकर बोर से सँभोड़ना शुरू किया। मगर यह तो नसे में प्रेम की। बुनिया से बेलबर। अस्तु की यह हिक्मत भी अकारण मयी। लाचार होकर उन्होंने लोटे का पानी खेकर मुँह पर ताबड़ तोड़ कई छीटि बिये। अब दिमाग को सँधी पहुँची तो कुमार भी दूर हुआ और रामकली ने पट से बाँधें लोठ लीं। इन आदुगर मीलों का क्या पूछना। एक तो यह मों ही नरपिछी बाँधोबाली औरत थी बूयरे कुमार की साठी ने और भी सुबब बा दिया था। गोया सोने में सोहणा हो गया। अब तो अस्तु से न रहा गया और यह बट से झुके कि मुँह खूम नूँ मगर बमी उनका मुँह कई इंच के प्रसले पर ही था कि घराब की बदनू और ममक उनके बिमास तक पहुँच गयी। उन्होंने बाँककर मुँह हटा लिया। कुछ सोचकर उन्होंने फिर बोसा सेना जाहा ममर फिर बड़ी गठ हुई। उन्होंने घराब तो कमी काहे को पी ली उसके नाम से भी नकरत थी बल्कि मयस्बारों की सीखत से कोयों दूर रहते। इस बक्त जो बदनू दिमाग में तीर गयी तो लाचार तबीपत मिठसाने लयी और बन्द लमहे में उनको बड़ी बोर से छे हो गयी। रामकली की तो बड़ी गठ थी कि पीर खुप मीरा बरबाह कहीं से सप। खुद ही अछमस्त हो रही थी उसे यह सक्त वहाँ कि तीरों की खोज-खबर केटी। बेचारे अस्तु को बड़ी तकलीकठ उठानी पड़ी। अबी तक अस्तु को इस बात का बहम या सुमान भी न था कि रामकली ने घराब पी ली हागी। लिखाबा उसन उसकी लापरबाहियों को उसका स्थापन समझा। उठ-सी मछली होती है उसक भी पिता होता है बाविर यह बेचार तो भारमी

ही का कहीं तक मुझे को ठंडा करता। इस बेतमक्री को देखकर उसके  
 बदन में आय लय गयी। कोई कैसा ही बीरज और बिनय का पुत्रमा क्यों  
 न हो मगर बीबी को जानिक से ऐसी सत्ताई देखकर मुझे को नहीं रोक  
 सकता। मुझे को रोचना तो बरफितार, उसकी मूर्त से उसे लकलक ही  
 बापयी। लिहाजा वह उठा और मरनि बैठक को गया। मगर कुंडी बाहर  
 से बंध थी। जब करे तो क्या करे न रीत यह यथाय करती थी कि किसी  
 को इतने बल्य मायाय दे जातिर परबाले क्या कहूँगे और न तो तबीयत  
 यही यथाय करती थी कि फिर उसी जगह आय वहाँ से गाराबनी विपत्ता  
 कर बाया है। मगर करता क्या। इसके सिवा कोई चाय न बा।  
 जातिर मजबूरम फिर आकर जयी चारपाई पर बैठ गया। अबकी जये  
 ऐसा मामूम हुआ कि जैसे वह किसी बुईल के साथ बैठा हुआ है।  
 पाठको अब यह कैसी भाँष सोकनेवाली बयह है। सीहर कई मील उप  
 करके बाया है और बीबी साहिबा को सर-नीर की खबर नहीं। कास लल्ल  
 को इतना ही मामूम हो जाता कि उसको इस बल्य कल्पे बड़े की बड़ी है तो  
 वह जये दूर ही से न सलाम करता बाहे को मुपत की जल्लक और सरमाजन  
 करने जाता।

मगर वह तो सीबा-सारा जरीक आदमी का और यो सेन-देन लरीक  
 ऊरोल्ल बनिज-म्बीयार में बड़ा घातिर न बीकस का मगर औरतों के फेर में  
 पदमे का कम इतज्जुल हुआ था। उसने देखा कि यह कम्बश्त दुकुर-दुकुर  
 तक रही है चारपाई पर लेटी है और मुसको इस कैडियत में देख रही है  
 और मुँह से बोसली तक नहीं। जातिर इसकी बजह क्या है बहर इसमें कोई  
 न कोई भेब छिपा है। मगर स्वामिमान वह भी कबूल नहीं करता था कि  
 कुछ पूछें देखें मात्रय क्या है। काचार हीकर चारपाई पर मुँह लपेटकर  
 सी रहा। इन्दीकी बाधना बार-बार जनाइती थी कि इतनी दूर से बाये हो  
 दो नाक ईस-बोल तो सो मगर बाह दे जल्ल बीबी को बलि परकर देना  
 भी नहीं। रामकमी के मुँह से बरबु इस बहर आ रही थी कि साठ सेना  
 दूर ही गया था मगर न कहीं जाने को बयह थी न पाँव ही जल्ले ने।  
 अब तक वहाँ रूह, पड़ा रहा। अपनी क्रिस्वत को हीरुता रूह। कोय

कहते हैं कि बीरत मर्द की शोभा होती है। मर्द अगर फलवार पेड़ है तो बीरत लता जो उस हासत में भी मर्द को बचाकर रखती है जब लुकाव के झकोरे उसको हर तरफ से घोंघोड़कर जड़ से उखाड़कर फेंक देना चाहते हैं। लेकिन इसके साथ ही साथ बीबी का बिलकुल धारोमपार मर्द ही पर है। बिना बीबी के मर्द ऐसा है, जैसे बिना रोपनी का बिपद्य बिना फल का पेड़, बिना नमक का हुस्न बिना हरिबाली का नमन, बिना मगर का पीठ बिना बुधबू का हन बिना फूल-पत्ती का बसंत बिना बार का हृषि मार बिना पुस्तक का धर्म। मगर यहाँ तो मामला बिलकुल टेढ़ा नजर आता है। बीबी भी के कूप्ये की तरह मुँह फुलाने हुए पड़ी है, मियाँ अल्प टिपिपि हुए हैं, न हँसी-मजाक, न झल न बिलसपी न बुधबुध बातेँ न लपावट, न बात न पीठ। ऐसी बेनुकी बीबी पर बुधा की मार और पीतान की पटकार। मैं जानता हूँ कि यह चुईक ऐसी अवा से मिलेगी तो बाहे की जान-बूझकर अपने ऊपर यह बोझ लावता और मुफ्त का दर्द सर लेता मगर बले में डोक बड़ी तो बचाना ही मसकहत है। लोभों का यह भी खयाक है कि मुहम्बत सबसे आला बर्जा मियाँ-बीबी के बनिमान होती है, मगर यहाँ तो मानका ही पीमार है। मैं तो छै पर छै कर रहा हूँ, कमबोपी छा रही है और बीबी साहब है कि पलम से उठरना क्या बात तक नहीं पूछती। मस्तू के दिक् में लयालों का एक दरिया सहरेँ मार रहा था और इटीब था कि उसका नासबर्बदार दिक् रोने लय बाय। चूँकि इस बलत तक रात क्यादा बीत चुकी थी इस बजह से रामकली का नया अर नय था। बाकिर उसने लामोनी दूर की और बोली—यह तुमको नूती क्या कि यकामक शोली-घटोनी केकर सर पर आ बटे। इस बलबाबी से तो साबर मासपुबारी बसूल करने पियादा भी न आता होगा।

रस्तू—और इबार मुक है कि तुम्हारे मुँह में बचान तो है, मैं तो तुम्हारी बचान की रो बीठा था! कहीं बरियत से तो रहीं?

रामकली—बस इनी बिस की पीठ मिली हुई बातेँ से तो मेरा भी जलता है। बाक देक रहे ही कि बदन मारे बुजार के चूँदा आत है,

घर मारे बर्द के फटा पड़ता है, मगर तुम अपनी ठानाबनी से नहीं चुकते।  
हैं रही तो खरियत से क्रमाम्बो क्या क्रमाते हो?

लक्ष्म — तुम्हारे बेहरे पर तो बुकार का लेप नी नहीं है। हाँ  
बाँबे अकबता सराबियों की तरह पड़ी हुई है।

रामकृष्ण लक्ष्म की बगान से घण्टी का लज्ज सुनकर कुछ फट-सी  
पयी। बेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लयीं सब नक्का हिरन ही पया। डरी कि  
कहीं ऐसा न हो कि टाड़ जाय। या मेरी हरकतों से कुछ सटक जाय तो  
नाहक की सन्निध्य ही और मुज्त की विस्तृत हो। उतने शीतल अपनी  
पटीघानी को इमीमान के परों में छिपाया और बोली — मैं तुमसे वह पूछती  
हूँ कि तुमको ऐसी कौन-सी बल्बी पड़ी थी कि मय डोली-कहार घर पर  
बा मौजूद हुए? बाजकक तो यों ही मेरी जान के लाले पड़े हुए हैं। बीच  
में तुम भी बसाने को आ बमके!

लक्ष्म — बाबिर है क्या आप पर ऐसी कौन-सी मुसीबत आ पड़ी  
है कि जान के लाले पड़े हुए हैं?

रामकृष्ण — बही मसक है कि बाके पीर न छटी बिबाई वह क्या  
जाने पीर पटाई। बाँबे कहीं बरने पयी हैं देखते नहीं हो कि सुक के काँ।  
हो नयी हूँ उठने-बीठने की सकत नहीं। नहीं तो भक्ता माँ-बाप मौजूद  
हैं नहीं कुछ होता तो बच मीठी मीठी बार्ते ही करके विक बहला देते हैं  
बच जी को डाइस हो जाती है कि है कोई आने-वीछे बुख-बर्द का साकी।  
तुम्हारे यहाँ तो बही उठते-जुटी बीठते सात। वह जो तुम्हाटी बन्माँजान हूँ  
ईरबर ऐसे आयमी से सातवें बीटी का भी साज न कराये जनका नाम ही  
सुनकर मेरे प्राण सुक पाते हैं। और फिर करेता और तो भी नीम बड़ा  
एक तो ईरबर ने उगहूँ यो ही अपने बास हाथों से रचा है बुखरे बीमारी ने  
जनको और भी बिड़बिड़ा बरमिबाब और मुस्तेबर बना दिया होगा।  
ना मरया मैं तुम्हारे साथ इतमिब न पाऊँगी। माफ करो।

लक्ष्म बेचारे चुपचाप विन्धित मुद्रा बगामे बीठे थे। बीबी का बकना  
बस मया और जनको कुछ-कुछ यकीन हो जक्का कि यह बकर बीमार है।  
बन करें तो क्या करें। कमी सोचते थे कि साओ लिवाटे बमो, नहीं बस के

देख लिया जायगा। फिर सोचते थे कि मुक्त का हृत्कान कौन बच्चा एक मरीचा है जब तो उसकी बेजबान और तीमारदारी मुस्लिम से हो जाती है जब एक छोड़ दो-दो हो जायेगी तो मला कैसे निभेगी? रिश्तेदारों में भी ऐसा कोई नहीं जिसको इस गाड़ बस्त पर ठकसीठ पी जाय। बेचारे इसी हैस-बैस में बड़ी देर तक पड़े हुए थे। आखिरकार उनके सयाहात बल्ले-छिल्ले नजर आय और उनका पक्का इरादा हो गया कि जो हो सो हो इसको सबकी सिचाते बचना ही ठीक है। आखिरकार जो बड़ी कष्ट का सर्वा पड़ गया था वह अकारण क्यों जाय। जब उन्होंने पूरी तरह सोचने-विचारने उलट-फेर, ऊँच-नीच समझने के बाद पक्का निश्चय कर लिया तो रामकली से आकर बोले गी उसकी रक्षाई ने उनके बिस की इस बकर पहुँचायी की मगर यहाँ पर बेमौजा और बेमहल समझकर वह उसको बाहिर करना ठीक नहीं समझते थे।

कस्तू — क्यों तुमको मेरे यहाँ चलने में कोई उज्य है?

रामकली — सरासर। उस बूढ़ी बपट के साथ तो मैं भी बसायी एकदम न चलेगी। दिन रात तू तू में मैं बीबीसों बड़ी की है है की खी बर्बात करने के लिए तो मेरे विभाग में कूबत नहीं। बच्चा भर तो बिन से बैठना नमीब न होया। दिन रात उन्हीं के तखने सहलाते बीतेगी। बाब बायी रहते।

कस्तू — भाई, मुजामसे की एक बात हमसे सुनो। हममें और तुममें जो वास्तुछ है उसका तकाबा यही है कि तुम अम्मा की खिरमत में हरदम लयी रहो उनकी दरबत अपनी माँ से भी स्वाहा करो उनकी मसकहतमयी मसीहतों और सिखावन की बातों को सर और बाँधों पर बजाओ। समुदास में बार बात सहकर रहना होया है। तुम्हाएँ जवान हो टरें सजा गज की उस पर तुर्प यह कि माँ-बाप के लाड़-प्यार ने तुम्हारे पिताज में एक खिसम का तनतना और घमण्ड पैदा कर दिया है। इस बजह से तुमको उसकी सीबी बात भी टेढ़ी मालूम होती है, नहीं तो जो कुछ वह कहती है तुम्हारे ही मसे को कहती है। उसकी जिन्दगी का सब बासरा ही गया। इज में पाँच सटका ही बीठी है आज न मरी कस मरी

किस न मरी परतों मरी। फिर अगर इस बस-बसाव के बहुत उसकी  
 बापम न बोयी तो उसको क्या मानूम होना कि बेटे-बहू से कौन-सा  
 पुत्र मोचना होता है। समझेगी कि ऐसी अनहोनी बीकार के बदले काय  
 पत्थर बनी होती तो अच्छा होता। बसो तुम्हारे मित्रान में कुछ लड़कपन  
 की नु बनी बाकी है। तुमको बनी मानूम नहीं कि लड़कों पर माँ-बाप  
 के हक कितने बराब होते हैं। मेरी बात मानो अबकी मेरी जातिर से  
 बकी बसो। परा अम्मा को बहुत से हूब बरीरू देने का ब्याज रखना।  
 बीर पूवप काम ही क्या है। कुछ तुम्हीं जलेली तो नहीं ईश्वर की कृपा  
 से बो-पीन लौडियाँ भी भीनूर हैं। ऊपर का काम-काज तो सब बही  
 कर लेती हैं। तुम्हारे रहने से अम्मा को परा डाइव होयी रहेगी बस बीर  
 कोई बात नहीं।

रामककी — यह सब तुम्हारी चिकनी-नुपड़ी बातें ही बातें हैं। इन  
 वाली-सूची बातों से क्या हासिल? बहू तो ऐसी मुलायमित्व से कह रहे  
 हो बहू पहुँचने पर हर बात में एक न एक चुनड़ निकाला कटोये बवा  
 क्यों नहीं बी बयी हकीम साहब क्यों नहीं मुलाये बने यह क्यों नहीं किया  
 यह क्यों नहीं किया। यह तो मैं जानती हूँ। तुम्हारे घर का कारखाना  
 तो कुछ ऐसा बियड़ा हुआ है, कि उसमें हान डालने को बी नहीं चाहता।  
 लौडियाँ बिलनी हैं इस्ताबिल से जातिर — बवानरपण मुहब्द, तड़  
 तड़ बात पकटने के सिवा बीर कुछ जानती ही नहीं।

अन्त — यह सरावर मूळ इस्बान है। हमारे यहाँ की लौडियाँ  
 हउमिद ऐसी नहीं हैं। उन पर इस्बाम लगाना बाँर पर बूकना है। (इस  
 मिसाज पर कुद ही मुस्कणकर) सब की सब नमकहलाक ईमानदार  
 बाबछा बहुत-बहुत दो-बार लकड़-मुस्त भी कह बी तो बय न से। रही  
 यह बात कि यह क्यों नहीं किया यह क्यों नहीं किया। अगर तुम सब काम  
 मेरी मर्जी के मुआजिल कटोबी तो मैं ऐसा कहने ही क्यों लगा? बीर बिल  
 अर्ब अगर दो-बार बातें ठाकीदन कह भी बीं तो बवा बिरम में बाव लय बया।  
 तुमको तो यह बातें बाबुरु की लपट होनी चाहिए। फिर ऐसी हरकत ही  
 क्यों करे जो बात मुमने की नीकत बाये। बेटियाँ बहुरे कुछ बड़ी-बूड़ी तो

होती नहीं कि उनकी इच्छा और वाणीय बुजुर्गों की तरह की बात हर एक उनके सामने सर मुकाय। उन्हें तो नाठनुबँकार और नादान समझकर घर घर के लोग सिखावन की बातें कहते हैं, तो इसमें कुछ मानना क्या।

रामकृष्ण — कुछ मैं ऐसी बनीसी नौ नहीं हूँ। यह तो मैं साझ-साझ समझती हूँ कि बहु को छाबिब है कि सास-जनर का बाहर भाव करे, उनके चरण जो-जो पिये मगर अब यह इस छाबिब हों भी। यह तो मऊस के पीछे लट्ट लिये बीड़ रही हैं और मारे तानों के कलेजे को छेर रही हैं, और हम हैं कि उनके कदमों पर पिये जाते हैं। मात्रिर उनको भी तो यह भक्त होनी चाहिए कि यह बेचारी इस कबर चौतरका श्राद्ध मुता करती है इसे अब क्यादा न बलामो। ऐसी सास जाय बूम्हे में जो हर वनन पछी-कृती मुताया करे, ऐसी जनर जाय भाड़ में जो बात-बात पर भाक भी सिकोड़ा करे, ठाने मारा करे। मेरा कलेजा तो ऐसा पक गया है कि अब उस घर में कदम रखने का साहस नहीं होगा।

बलप्रसाद बाबी रत तक उन दोनों में यही हुज्जत और तकरार, बहन और मुबाहिषा होजा रहा। कस्तू उसको ऊँच-नीच मुताते प कर्तव्य और बीचित्य क मसले उसके लिल की पटिया पर अकित करने की कोशिश कर रहे थ। मगर वह भी कि अपनी हठ भी कर्तव्य कीन बीड़ है। हठवर्मी से बाब नहीं जाती। सब कुछ हुजा-हुबाया मगर मनीजा बही टोप-टोप चिस्स।

कस्तू — मता अब तुम मेरी मुनीबत में ह्राप न बटाओपी मेरी पुत्पी न मुक्तामोपी मेरे अले-बुरे के नबवीक न फटकोपी मेरे घर स कोई बास्ता-सरोकार न रखोगी तो मुझे तुम्हारे होने से प्रयदा मेरे नब बीक तो तुम्हारा होना न होना दोनों यकसा है। जैसे कृता घर रहे बीसे रहे बिरेस। सैर, अब इस मामले में मैं तुमसे किञ्चुल सरमणवन नहीं किया चाहता। तुम जाहे मानो, जाहे न मानो सबेरे तड़के मैं तुम्हारे बाग से इस बात का कठई क्रीसता कर लूँया। मगर इस मर्तबा जन्मोन उइनबाई बलकापी टाकमटोठ किया तो बन्दा फिर कमी स्त्रसठी करने न बापेगा। ठक लाकार होकर गले जपाडे फिरेदि।



मेरा कसेजा भी ठप्पा हो। तुम्हारे बिना मुझे छन मर ती चीज जाने का नहीं कमी भीतर कमी बाहर बीजभायी हुई बीजा कसेवी। हमारे सारे अरमान तुम्हारे ही साथ जुड़े हुए हैं। ईश्वर वह दिन लाया कि हमारी बास भी पूरे हो जाती। बेटा रंज मय कटे हँसी-मुर्गी जाओ। कुछ काफ़े कोठ तो है नहीं ईश्वर चाहेगा तो हम इसी जठनारे में तुमको कुछ काफ़े भेजेंगे। अब तक हमारी जान में काग है तब तक तुमको सब छोड़ेंगे। हाँ अब जोस पूरा भूनी तब मजबूती है। सब है, परामी छिरिया में कोई बस नहीं नहीं तो हम तुम्हें साथ जनम तक छोड़ते ही नहीं।

यह कहकर वह बेचारी निरुत्थ विमलकर रोने लगी। अब ती राम कली ने यह पाकण्ड मचायी वह फरफरे रहे कि पुत्रा की पताह। कमी तो बाप के कदमों को पकड़कर आसुओं से ठर कर लेती थी कमी माँ के दसे मिळकर खूब गला फाड़-धर के मयान करती थी। मयता की माटी माँ भी जाठ-जाठ आसू रो रही थी। बाप की आँसों से भी आसुओं की नहीं जाती थी। अज्ञोस-पज्ञोस की बीरतों आँसों की सुनकी मिटाने क बास्ते पहुँच गयी थी और ज्यों-ज्यों दिन बढ़ता जा बीरतों की ताबाद जाता होती जाती थी। कोई सर के बास समझलगी बुध पीते बच्चे को मोर में खेलाती जमी जाती थी कोई लहरियादार बुपट्टा पकड़लगी मकान में बालिस ईंती थी। बुद्धी औरतें मय सुनने पर भी बीरतों के बली आ रही थीं। घरक दि बोड़ी देर से वह मकान रंकी हुई मुडियों से भर गया। कोई अपने बच्चे की ताटीछ करती थी कोई अपने खेबपठ की ताटीछ से सरगर्मी थी। गरज कि बोड़ी देर के बास्ते वह मकान उपखाना बम मया।

एक बुद्धी औरत (मूठमूठ आसू पोंछ के बीर ताक साठ करके) —  
 पुत्र हो रही बहिली बुध हो रही। ईसवी-बेसगी अपने पर को जाओ कि हँसते ही पर बठते हैं। अरे यह मुसीबत मियोड़ी कुछ तुम्हारे ही अर मनी-मनी तो जाती नहीं। हमने म सबको एक बच्चा यह मुसीबत उठानी पड़ी।

बुनपी औरत — क्या कपेनी रो-रो क बेटा हमने गुरबज में न माकम

कौन-सा ऐसा पाप किया था कि आज तक उसकी सजा भोग रही है। बचपन से ही माँ-बाप की घोर म पासे-पौसे मये। जब जरा मछा-बुरा बनना-पठना समझने के शक्ति हुए तो अपने ही घरवालों न दुस्मन बनाकर निराश्रित किया। क्या करोगी यह रिवाज निगोड़ा तो पूछन जानने में चला आता है।

तीसरी बीरत — मुहम्मद भी कौनो बुरी बीरत है। अब बिचरिया माँ पत्थर का कलत्रा करके सब बखसत करेगी। कौनो दाह होगी है बीरत की। माँ ने सात-आठ उपवास बनन करके तो उनको अपने बचकर दिया उनके पीछे रात को रात और दिन को दिन न समझा उनका आचम में बनना आराम और उनके दुख में अपना दुख ममसती रही उनकी लबीत जरा भी पड़बड़ हुई कि सब बचारी माँ क घरार में कौनकौनो आ गयी भोजन को बुलाओ सूखा को दिखाओ इनको बुलाओ उनको बुलाओ भड़ाओ, पृष्टाओ। अब इतना बनन करके बच्चे को बड़ा कर दिया तो नाउपय ने माँ-बेटी को जनम भर क लिए बिछड़ा दिया। अब अयर एसा ही अबन्दस्त नसीबा हो तो आपन में मुठाकात हो।

चौथी — (माँयू बहाकर) कौनो चीनी-सखी मिथलसार और सबको प्यारी लडकी थी बेचारी। जाहूँ कौनो ही रंज कौनो म हूँ लेकिन बहूँ उसका हँसमुख बेहूँ देना कि सब दुख-दर्द भूक जाता। अब इनी घर पर निवापा छा आपणा। यहीं पर हमबानी सखियों-सहेलियों का एक जमबट रहा करना का मगर अब तो घायर कोरँ मुसकरन भी हबन न आवेगा।

पाँचवीं जा कि एक पीरबान बुरमुरत बीरत थी बनन पाप की एक सीरन में बाहिना बाहिना कहने लगी — बहिनी यह सब तो रस्नी रोना है यह भी काई रोना है। बाँछे तो बिली जाती होंगी कनेना हाबों उछलना होपा कि अब कोई वम में नदे स बँन उड़ाऊँगी। मगर बना करे बचारी दिनाके के लिए इतना भी न राये। मुसको तो इयकी आवाज पाऊ-छाऊ बनाबट की-सी मामूम पानी है।

छठवीं — नाउपय सातवें बीरत को भी बीरत क बिछड़न का दुख न दे।

बाप—सैर, जेकर ही बे अपर कोई सड़ा खे पया तो उसका रौना नया। जिन्यी बाकी है तो बीसे जेकर फिर बन रह्ये। कुछ उन्हीं से छावमा तो हो नहीं बना। मैं तो समझा कोई आप्त नाबिल हुई कि मकायक बर नया मातम का बर हो गया।

माँ—तुम्हारी बहल तो पाट पयी बीमक। आज ही तो उसकी बिवाई की साइत टहरी और बाप फरमाते हैं कि जिन्यी रही तो फिर बन रह्ये। बह तो बनते-बनाते रह्ये मगर जो खटराग इस बहुत पैसा हुआ है, उसे तो सुलझाओ। जो मसला इस बकत वरपेल है उसे तो हल करो।

बाप—अब इस बकत में खड़े-कड़े क्या हो सकता है? इकवारपी मेरा क्या तो कुछ नहीं हो सकता। स्वसत कर दो अपने ही बर तो बा रही है, किसी बेगाने के बर तो जा नहीं रही है। हम बहुत जल्द इसका इन्तजाम कर देंगे।

माँ—इसी से तो कहती हूँ कि बुझीटी में तुम्हारी बहल बीमक पाट पयी। अरे इतनी बड़ी तो हुई, कुछ नहीं तो हजारे ही बहुरे, लड़कियाँ भीतर-बाहर भाते-जाते देखी होंगी। मला कोई भी ऐसी कुछमुछ दीब पड़ी। बहन पर मामूली भी तो महुने नहीं जिनका-जिनका तक भाइ के पया बाकीजार। ईस्बर करे आज ही उसकी मीयन निकसे! जैसे उसने मेरी बच्ची को बलाया है, बीसे ही बेबी माता उसको जसाये।

(आइल में १ सितंबर १९४४ का अंक न होने से उक्त अंक में प्रकाशित क्रिस्त न बी जा सकी।)

दुसारी — क्या? कौन खीरियत तो है?

रामकली — भाव मैं जब त्रियेवरनाथ के मन्दिर तक जाती हूँ  
तुम भी मेरे साथ चली चलो।

त्रियेवरनाथ का नाम सुनते ही रामदुसारी के चेहरे की रगत कुछ  
की कुछ हो गयी। कहाँ तो वह इस बैतकल्की से बुरबुर की तरह चहक  
रही थी कहाँ इस नाम से समझो बिलबुल समझने में बाध लिया। उसकी  
नज़रें नीचे की तरफ़ पड़ गयीं और उस पर धर्म के मारे कहीं पानी पड़  
गया। वह सोंप के मारे सर नीचा किये चुपचाप बड़ी हो गयी।

रामकली — क्यों बहान चली हो न? चलो सधरे-सधरे लौट  
याँ।

दुसारी — बहान मुझको माऊ रखो। मैं मन्दिर इन बकन न ज डींगो  
ल न-बुझा से खरिय हो चुकी हूँ।

रामकली — बस धक लनी न तू मन्गुर्णों की तरह नज़रे बजारने  
बल उठ इत्तर जमे सभी लौट यँये।

दुसारी — तुम तो बहाँ जाती हो वहीं की हो रानी हो। वहाँ  
लभोगी इतर ग़र की बातें करने और मुझे बेर होयी।

रामकली — बाह रे बेरवाली एक तू ही तो अगोजी लकी है।  
नाथ बमाना बावा है तो नहीं बेर होयी इनको बेर हो जायगी साऊ  
माऊ क्यों नहीं कह देती कि हन नहीं जायँये।

दुसारी — बहान तुम तो नाहक नाचड होयी हो। दादा जी वाली  
बेर में भाते होंपे। मम्मा की तबियत जब बीली है नहीं तो बलने में  
कील उबर या अब चहवी लौटती।

ईश्वर जाने आज तुमने वह सितार किया है कि जानों को देखने से भी नहीं मरता।

रामकमी — कम तो मैं एक मूसीबत में पँस गयी थी। मगर वह तो कहो खीरियत हो गयी नहीं तो अब तक अपनी समुदास में होती।

बाबा जी — हाँ? वह कैसे?

रामकमी — कम यहाँ से आकर क्या देखती हूँ कि वह मय डोमी लटोमी स्वसत कराने के बास्ते आये हुए हैं। बस कुछ न पुछो। मेरी कह ही प्रना हो गयी। हाव-वैर समझनाने लये और इस तबाल से कि अब तुम्हें देखने को जानें तरन आयेंगी दिन की कुछ अत्रव कीरियत हो गयी। अम्मा भी स्वसत कर बेने पर जभार आये बैठी थी। कितनी आरपू मिमत की कि अम्मा बोड़े ही दिन और रत को मगर अम्मा मे एक भी न नानी। आखिर साचार होकर मैंने वह पाल बची कि सब के सब भीचक मये। एक तारे से सबकी अकल बंग हो गयी।

बाबा जी — सब कहो कौन-सा जाहू पूँका? कैमी बात भी नई कि घर घर के छक्के छुड़ा दिने?

रामकमी — मैंने देखा कि इन सबों को इन अकल सस्य समामा हुआ है। इस अकल मेरी एक भी न बलेमी। बस मैंने यह हिकमत की कि तमाम खेबर और कपड़े एक पुराने बटके में रग जायी। जब अकरत अ बकल सोज होने लगी तो एक का भी पता नहीं। अब तो सब के सब अकराये। घर की बंगुल-बंगुल जमीन छान डाली मगर वहाँ हो अब तो न पता लये। अम्मा बेचारी तो छाती पीट रही थी। बीतरफ्त तलासम-तलासा मची हुई थी और मैं बिल में जगकी बेबकूची पर हँस रही थी। आखिर जब बहुत हाव-वैर पलककर द्वार खरी और कामबाबी न हुई तो रो-पी-पर बैठ गयीं। तबस्तर तो अम्मा की मुट्टी में पड़ा है। वह भसा मुझको इन तरह लकी-मुँडी बरतत करती? जब कुछ न हो सका कोई मूल न निकमी तो साचार स्वसती मुस्तबी की गयी।

बादा — बाहू जानी बाहू ! क्या काम किया तुमने कि जी चाहता है मुझे चूम सँ।

स्वामी — यहाँ पर तो हम भी तुम्हारा लोहा मान गये। वह ठोंग रचा है कि बेमक्तिमार ठापीऊ करने को जी चाहता है। मगर हम कहते हैं कि तुमको एसी बेइजब कैसे मूस ययी। बेजने में तो ऐसी मोली मामूम होती हो मगर तुम्हारे पेट में बड़े-बड़े गुन भरे हैं। भाई, सच कहता हूँ कि अगर मैं लड़की होता तो मुझे हरगिब ऐसी हिकमत न मुत्तामी पड़ती। बकल काम ही न करती तो करता क्या। मगर यह तो बताओ क्या किनी ने उस मटके में नहीं भुँडा ?

रामकली — वहाँ किसी के ऊरिले सँ को भी खबर नहीं थी कि उस मटके में पोन्सी पड़ी है। अपनी-अपनी ठाई चावल की सब अलग अलग पिचड़ी पकाते थे मगर वहाँ तक किसी की अकल न बीड़ती थी।

छरब कि रामकली की इस हिकमत की भोगों ने खूब ठापीऊ की। महत जी ने जो बेता कि यह लड़की मुस पर बाकमी लण्ट हो रही है और भरे पीछे बर-बार तब बेने को तैयार है तो उनके जी में यह बुन समायी कि इसे किनी तरह बुन देकर इसके तमाम खेबरोँ पर हाम साफ करो। उसके बाद इसे यहाँ से बुतकार बताओ। इन हबरेत को बुछ देने क प्रन में खूब कामास हासिल था। बकि यों कहता चाहिए कि इसमें कोई उनका मुकाबला न कर सकता था। आपने किनी ही तातबुँकार सङ कियों को इस बात उत्तर दिया था। वह पहले चिकनी-बुपड़ी नमक मिर्च लपी हुई बातों से लड़कियों को अपना भक्त बना सेता था और फिर जाने माने उमुसों से बीरे बीरे उनके मौजवान बिरु पर इजबा जमा सेता था। जब उसे मालूम होता था कि मुहम्बत का जाहू उन पर अच्छी तरह चल गया शोत्र-बसमी और बीचा-दिलेरी का क्रातिस जहर उनके माबुक भिस्म में बसूबी फैल गया और वह अब उससे हरगिब उबर नहीं सकती तो फौरन शीब बाग लगाकर उनका मात-मता छीन-छान सेता था। मगर इन ऊरेब के बाबजूद लड़कियाँ उस पर जरा भी धक न करती थीं क्योंकि वह मोठी छूरी बनकर गहरा बज्जम लगाता था और कमी-कमी उनके साम

इस तरह सज्जु करता ना कि उनके आँसू पँसने से और उन्हें थिकने थिकामय का कोई मौका न मिलने देता बा। यही तरीक उतने इस मयी आशना के साथ करनी बाही। इसके महाँ का डंग सारी सुबाई से नियला पा। सामरी की दुनिया में कमघार के पड़ जैसी कम्बी-सरहरी बरद मुखियाँ थिकारी मानी मयी हैं और आभा हुमास करके छोड़ दिने बने आधिक उनके थिकार। उनकी जूलों बह बास हैं जो जकूती थिकिया को हवा से उतार सेती हैं और आधिकों के थिक के पंकी को मुसीबत का कँरी बनाकर और दुख ब मम में मुबतिसा करके बर-ब-बर जंपलों और ऐजिस्तानों में आबारों और पाबलों की तरह थिकारी हैं। इहाँ सिबसिमेवार जूलों के पंच में बड़कर बेचारे कूटे हुए तबाह आधिकों के थिय दुनिया की मैमलों से मचा उठाना हरम हो जाता है। उनकी कमानीदार भर्ने बी असअहामी तकवारें हैं जिनमें आधिकों को तड़पा-तड़पाकर कलक करने का माहा आप से आप मौजुद है। उनकी पलकों की नोक बह छुटी की नोक है, जो आधिकों के थिक में जुमकर ऐसा बई पैबा करती है कि बेचारों की थियबी घुमरही जाती है। मुक्तसरमह कि उनका हरमंग मसकहतान् इसी तरह से बनाबा मया है कि बूसरों की अपना सीबाई बनाकर आथिरकार उनकी बधा से उनका बर-बार छुड़ाकर उनको इपर से उपर माउ-माउ थिकबाये। मयर यहाँ पर मामला थिककुड उस्ता बा। यहाँ पर थिकारी का सार्थिफिकेट बजाय नानुकबदन हलीनों के महंत की जैसे अकतड़ सूरटि आबमी की मिला बा। थिकुवार जूलों के बजाय उनके पास थोके-छरेक का सबसे बड़ा पाक बा जिधसे बहु बजाय आधिकों के मायुकों का थिकार करता बा। बजाय कमानीदार भर्ना के यहाँ पर कँबी की तरह चलनेवाली बजाय थी जिधसे बहु जुब बातें बनाया करता बा। बजाय पलक की नोक के यहाँ पर बेबड़क नोक-सोंक और बेतककक हँसी-मबाक पा जो उठती पबानी की लड़कियों की जान की बसा होकर आथिरकार उनको बरनाम करता बा। कित्सा कोलाह यहाँ का डंग ही नियला बा। जिनोकीनाथ थिकारियों का भी थिकारी बा।

पहुंके जब रामकली कवरे में पालिक हुई, उत बजा यहँत की बरने

बालों को सजाने में व्यस्त थे और बहुत खुश नजर पड़ते थे। मगर एका एक उनका चेहरा कुम्हला गया पेसानी पर बस पड़ यसे जो उनकी अम्ब बनी परेशानी का पता दे रहे थे। मुँह की रंगत कुछ उतर-ची गयी जिससे उनकी चिन्ता टपकती थी और वह उस ब्रह्म किती उबेड़-बुन में फँसे हुए थे।

रामकृष्ण — क्यों भई, यह सिमापा कैसा छाया हुआ है? क्या भाव निर्वला बत है?

महंत जी — नहीं तो प्यारी भाव तो ठबीबत सुस्त है।

रामकृष्ण — बाबिर मैं भी तो सुनूँ कि वह निगोड़ी ठबीपत कैसी है जो अब भी सुस्त है।

महंत जी — क्या बतलाऊँ बागी अबब मामला है, न कहते बन न न कहते बने एक सकल बाफ़्त में फँसे जाते हैं मगर कुछ करते-बने नहीं बन पड़ता। अबब संसट में जान पड़ी हुई है।

संजी-साथी तो पहले ही से सभे हुए थे। प्यो ही इन बुर्ग में अपनी हैरानी और परेशानी का बिच छोड़ा त्यों ही एक साहब अच्छी-खासी छुट्टी कराधी सूरत बनाये हुए आये। उनको देखते ही निकोकीनाप बेबलितनार उछक पड़े। निहायत गर्मजोशी से भाव भगत किया जगवानी की इन और इकामची से साठिर की। रस्मी परिचय के बाद वे एक खास बपह पर बैठे। अब रामकृष्ण पर तो भारे धर्म के बड़ों पानी पड़ गया। न बहूँ से हट सकती थी न कोई ऐसा मोट ही था जहाँ छिप सकती। बेचारी बड़े समेले में फँसी। महंत जी ने उसकी अम्बस्नी हमबळ को ताड़ किया और बरा इस्मीनान देनाके कम्बने में मुस्कराकर बोले — मबरामा नहीं यह तो हमारे सँपोटिये बार देख ईदू खाँ हैं। इनसे कीम-सा परा। यह तो हमारे लम्बे हमबर्ब और उबदार हैं। मेरे पेट की बात तक तो इनसे छिपी नहीं। इतना कहकर वह फिर देख थी की तरऊ मुखातिब हुए और एक असर करनेबासे और मतलब मरे अंदाज से उनकी तरऊ देखा। देख थी कुछ देर तो बाधनिकों की तरह इबर-उबर तकते रहे इसके बाद आपने कम्बे चीड़े मैदान में अपनी बवान के बोड़े को इस तरह छोड़ा — बाबा जी आप तो महाँ बैठे हुए परियों के



जमकट का मजा सिबा करते हैं तमाम बज्रुत राम रंग ऐसी-आनन्द में खर्च करते हैं, आपने इलाके की तरफ से कुछ ऐसा मन खींच सिबा है, ऐसा काम में तेज डाके बैठे हैं कि पीते आपको इलाके से कोई वास्ता ही सरोकार नहीं मला इस भुलककड़पने से इलाका कितने दिनों तक चलेगा? आपकी इस बेखबरी से तो हम लोगों के बिरु में भी यही इन्वाहिम होती है कि सब छोड़-छाड़कर बैठ रहें। मगर नमक के हक इतने बयादा है कि क्या करूँ कुछ कहते-सुनते नहीं बगता।

मईठ जी — देख जी तुम तो इस बज्रुत मीलनी बन गये। मेरे मई, यह सब तकल्लुक बाकाये ताक रखो और जो कुछ कहना हो, कहो।

घोस — घामद आपने नहीं सुना है —

बुलबुला मुकदये बहार बियार  
खबरे बब बबूमे भूम मुबार

(ऐ बुलबुल बहार की खुलखबरी का। बुटी खबर मगहूस उल्लू के लिए छोड़ दे।)

मह्व — यह तो आपने बूब डरमाया। मेरे घर में जाब खमी हुई है तमाम मान-मता पलकर छाक हो च्छा है और मुझको खप भी खबर नहीं। तो क्या इन्वामियत और बोस्ती का तकाजा यही है कि खबर को मेरे कान तक पहुँचाने में इतनी देर की जाय कि मेरे मकान में एक छत्ता भी बाकी न रहे? बाह, अच्छा बोस्ती का हक क्या किया!

घोस — अच्छा फिर कसेमे को मजबूत कर रखिये। यह तो आपने सुना ही है कि रम्जन मिसराणी ने आपके नाम को हज्जार रुपये की डिपटी करवावी थी। उस भुकबरे में हम लोगों को खिचनी तकलीफें उठानी पड़ी थी वह हरगिज न भुंसे। कौसी-कौसी मुठीबतें झरनी बड़ी कि अल्काह की पनाह। एक दम भी बीन से बैठना मशीब न होता था। उची दुखन ने अब डिपटी खारी करमे की वरवी की है। एक हस्ते के अन्दर ही अन्दर एक बाई हज्जार का किमी न किसी तरह खबर बम्बीबस्त हो आना चाहिए, नहीं तो सारा बना-बनाया खेत बिगड़ जायगा।

स्वामी — मई, तुमने तो बहुत मयातक खबर सुनायी कि बाई हज्जार को फौज सखे वहाँ ली बाई ली का भी कोई ठिकाना नहीं। यहा बुरा बस्त आ पडा है। अब इस बगन चारों तरफ बँबेरा नजर आता है कोई हामी और मरबमार नहीं विलायी पड़ता।

महंत — कुछ खया इलाके से क्यों नहीं बसूल कर लेते माई ?

पेख — इलाका तो ऐसा कंमाल हो रहा है कि इस बस्त एक पैसे का भी निकास नहीं।

महंत — वो मुससे क्या कहते हो माई, क्या मैं खुद खया हो जाऊँ ! नहीं कोई बन्दोबस्त हो सकता तो खूने ही से इलाका ही न नीलाम होना हो जाने से। अब मैं इस क्लिक में कहाँ तक जानूँ।

पेख — तुम्हारी बीबा में तो सरसों फूसी है जब देखो इलाके के पीछे पड़े रहते हो। इलाका न होगा मियाँ तो कमबख्त सेबर दरबाजे-बरबाजे घूमते फिरोने।

महंत — जब खये का बन्दोबस्त हमारी ठाकुर के बाहर है तो इसके सिवाय और क्या धारा है ?

पेख — हाँ इसमें भी कुछ पक है मगर जिस दिन इस हज्जार की आयदाव एक हज्जार पर नीलाम हो जायगी तो बीजे लुक जायेंगी। अब तब यह सब ऐसी-आराम मूल जाइयेगा। माया अस्माह् आबकस आपकी किशामतघारी भी तो हद तक बड़ी हुई है कि खुदा की पनाह खासे बँबूस हो गये हो। कसम तुदा की मति कमी किसी अमीर-कबीर के दरबार में ऐसा दर्जा नहीं देला। मगर खये और यही नकला खा तो खुदा ही हाकिम है। अभी इस क्लिक की मालगुबारी मध्ये बड़ी हुई है और फिर बड़े क्यों न खया तो आपके मारे बचता ही नहीं। आज अमर किधी इलाके का मुनासिब इम्तबाम होजा तो एक पल में बह हज्जार का बन्दोबस्त हो जाना कोई बड़ी बात न थी। मगर हो तो कहाँ से बितने नीकर चाकर हैं सबको अपनी-अपनी पड़ी है दिनके इन्से में जो बीड है वह खनी डिठाई से उसको अपने काम में ला खा है। आप हैं कि अपनी तरलोज की नीद से चौकते ही नहीं।

महंत भी — माई, मसीखों और खपेखों का तो फिर भी बीका मिल

पामया। मगर मगवान के लिए इस बन्ध छुटकारे की कोई तरकीब निकासो। किसी तरह इस बन्ध से छुटकारा मित्र पाय तो जान में जान पड़े।

खेस — अगर तबदीर छुटकारा पाने की है तो यही है कि नियत ठाटैस पर डारि ह्जार इस बन्ध के बाकू सिक्के उसके सामने जगानन्द गिर दिये जावें। इसके सिवाय तो और कोई तबदीर समझ में नहीं जाती।

बधाबाचक — बाहू खेस की कपडाबी से हर्तगिब न चूकियेगा।

खेस जी का रस्ता और ध्यंगारमक उत्तर सुनकर त्रिलोकीनाथ बड़से झीकने लगे। इन साहब ने भी वह रहा कथा अरब और गरीबत का वह बफ्तार खोजा कि अगर कोई कैसा ही गुरुबन्धाक क्यों न होना बेहूत पढ़ने-बाखों का कोई बन्धी-वीरम्बर ही क्यों न होवा मयर वह भी बस्तों में आ जाठा खतिया थोखा सा जाठा मसा रामकली किस मितठी में थी। उसके दिव में यह खयाल पक्का हो गया कि यह मुसकमान त्रिलोकीनाथ का भला बाहुनेवाला है। अब इस बन्ध जो वह नखर उठाकर देखती थी तो सब की सूरत से फटकार बरसती थी। स्वामी जी बड़े ही बिन्बाबिक और आराम परसद आरमी थे। इस बन्ध बुटनी में घर दिये बीठे थे बेहरे से मायूसी झककती थी। खेस जी बिनके बेहरे से बाहिर होता था कि परछे सिरे के मुस-बुसबाळे और आसा दबे के मुसबिमकार है खैरबन्देची में टाक, मसाइव में बाकू बाकी बक्राक माही फिराक इन्तहाये सरी में बमबिका बकमाक लिहते मरब में हुरबाक, मजममे बसक्राक व मम्बये बजसाक है और त्रिलोकीनाथ के अहबाब की नाक है इस बन्ध जैसे नीची किमे गाक पर हाथ घरे, एक मजीब बबची के बन्धाब से बीठे हुए थे।

इन सबों की यह हुस्मिया कुछ उन मासमी बरों के झोक मनानेबाखों की थी थी जहाँ कोई होनहार जवान उठती जवानी में इस हुनियाए छनी से कृष कर जाठा है या उन मुसीबत के मारे हुए टूटे हुए दिवबाळे ध्योपरियो की-सी थी बिनका जहाब झीमती थीथों से मसा हुमा किती गैर मुस्क से जसा आ रहा था मयर रास्ते में तेब और नामुआफिक हुबा के बयेड़े उसे दरिया में बुबो बें या उन मामूम कैदियों की-सी थी बिनके मुकरमे की मुनवाई पूरी हो चुकी है और मुम्बिक कायब हाथ में केकर अभी-अभी झंसल

मुनाया चाहता है या उन लामुछब उबड़े हुए, दिलबले नीम बिस्मिस बासिनों की-सी भी जिन्होंने बड़ी मुह्त के बाब इस बकत मौका पाकर पिमा-मिलम की बरखास्त की है मगर आगा और मम से मिसी हुई गबर उनकी तरफ फेरते हैं और उनके बेहरे पर मुस्कराहट के चिह्न न पाकर कुछ ऐसे निराश हो जाते हैं कि बिजलिखित-से ठपे-से रह जाते हैं।

रामकली ने जो उन सबों को यों मुहर्मी घूरत बनाये हुए बैठे देखा तो उसके दिल में तरस पैदा हुआ। उसने सोचा कि ममी कल तक मैंने इसी जिलोकीनाथ के यहाँ खूब-खूब मजे उड़ाये हैं अब जो उस पर इस पड़ी मूसीबत आ पड़ी है तो इन्सानिमत का यही ठकावा है कि मैं भी उसके दुख-दर्द में पचीक होऊँ। बाबिर बोस्ती इसका नाम तो नहीं कि जब तक बोस्त का इकबाक अँबा रहा तब तक तो उस पर आन तक छिन्ना कर देने को मुस्वीह के लेकिन जहाँ बेकारे पर कोई मूसीबत पड़ी बहीं पर्यंत छाड़कर बलग ही पये। मेरे पाठ इस बकत कुछ नहीं तो सोने-बाँदी के मिलाकर कोई अँद-दो हबार के बेबर होंगे सी-पचाध रुपया गजब भी मीजुब होगा। अगर इनके होते हुए इस बेकारे के हाथ इस बकत न बटाऊँ तो मुझसे बढ़कर तोला-बबम और एहसान-अरामोय कोई न निकलेपा। इस बकत मुझे भी लाजिम है कि अपनी धना-जुगत इसके सामने छाकर रस हूँ। इस बकत अगर इसकी बकरत मेरी बात से रजा हो मयी तो फिर अपनी बाँदी है। यही जिलोकीनाथ मेरे एहसान को याद करके मेरा बर भर बैगा। यही सब सोच-बिचार करके वह मौझे का इस्तबार करने लगी कि बरा यह सब अपनी-अपनी राह कमें तो मैं अपना बिक छोड़ूँ। पारों ने उसके सयासात का बन्धावा कर छिमा और छीरत एक-एक करके बिसकने लगे। जब एकान्त हो गया तो रामकली ने मह्त जी से कहा — क्यों जी इस बकत तुम्हें फितना रुपया मिले तो तुम्हारा मला कूट पामे ?

मह्त जी ने बीनी आबाब से बबाब दिया — क्या कहूँ बानी कोई पाँच सी रुपया तो तहबीस में है बाकी अगर दो हबार कहीं और हो तो हियाब बेमाक होता है। वह कहकर उसने बेहरे को ऐसा गम्भीर और संजीवा बना लिया कि जैसे वह अपने दिल के जोष जाते हुए भावों को रोक

रहा है और बावजूब ऐसी बाड़ी मुसीबत बा पड़ने के पीरब को हाथ से नहीं जाने देता।

रामकली का 'अगर मैं कोसिस-पैरबी करके दिखानूँ तो ? यह जुमला सुनकर बिछोकीनाथ के चेहरे पर यकायक लुची की सानी रीढ़ पयी भाँबे बनक उठीं गोया मासूम होला बा कि बेचारे बूबते हुए को ठिनके का घहरा दे दिया। सूबे भाल में पानी पड़ गया। मगर इस असाधारण लुची को (जो सोलह आने बनाबटी थी) छियाकर उसने चदासी से कहा — तुम कहाँ से दिखाना दोसी भला ? जल्दस तो तुम खुद अपनी मासिक नहीं होयम इतनी बाड़ी रकम कोई महाजन बिना मुनासिब कारबाई के देने ही क्यों लया ? बमड़ी की हाँड़ी तो सोग लूब ठोंक-बजाकर लेते हैं, उसे तो तोड़े का ठोका गिनता पड़ेया !

रामकली — तो आखिर इसमें हर्ज ही क्या है ? अक्सर ठाकुरदेवार महाजनों से हर्ज लिया करते हैं। उनको तो तीसों दिन स्पये-पैसे का काम लया रहता है। अगर महाजन न हों तो जमीन्दारों का तमाम कारबार बाक में मिस जाय। तो फिर तुमको इसमें क्या पसोपेस है ?

महंत — (ठण्ठी साँस भरकर) भाह कास मुझको भी बाड़ी जाबाबी हासिल होटी। मैं तो कामबों की मजबूत बजौतों में बकड़ा हुआ हूँ। अगर कहीं महाजना साहब को बह गुन-गुन मिस बपी कि यहाँ हर्ज लेने की नीबत बा पहुँची तो सबब ही हो जायगा।

रामकली — और अगर सिर्फ बस्त के एतबार पर मिस जाय तो ?

बब तो हजरत ने ऐसा चेहरा बना लिया कि जैसे कोई अपत्याधित संपदा हाथ लग गयी।

महंत — इससे बड़कर और क्या हो सकता है। बिचगी भर तुम्हारा बिनचामों बुकाम बना रहूँगा। अब तक इस ठग में जान रहेगी तुम्हारा गुन गाया कहूँगा।

रामकली — भाई सुनो बस्त यह है कि महाजन-बहाजन मेरे लड़ा किये तो होने से रहा मगर मेरे पाब बेबर इतने हैं कि अगर उनको बेचूँ तो वो हजार से कम किसी तरह न मिले।

राजकली की बचाम से इत बात का निकलना था कि मईत जी उभारे में आ गये लकड़ा-सा हो गया। ऐसा मान्य होता था कि कोई बुरी मुताबती शारी भी जिसके सुमने से उनका दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया।

मईत जी — मऊसोस राजकली तुम इतने दिनों से यहाँ आ खी हो मपर तुमने मुझको बन्धी तरह न पहचाना ! तुमने मुझेको ऐसा बेहया समझ रक्खा है ? बाहे इलाका कीड़ियों के मोल बिल आय में लँस जाई, मगर पेटी डेरत इसको हरबिल न ड्यून करेगी कि ऐसी बलीक धीर कूर भरब हिकमत काम में लाई। तुम्हारे बेबर और मैं उनको बेचू ? राम राम यह तो मुलते बीते-बी हो ही नहीं सकता।

राजकली — बेदक तुम ऐसी बलीक हिकमत को काम में लही ला सकते क्योंकि मैं तुम्हारी मबरों में इत डबर बलीक हूँ कि तुम मेरे बेबरों को हाव सपाना भी मपनी धान के शिजाऊ समझते हो ! इस डेरत की मैं भी लपैऊ कसैगी कि फाँसी पही हो मपर

मईत — (बात काटकर) तुमने जानी इमारत मतलब नहीं समझा।

राजकली — जी मैं कूर समझे बीठी हूँ। भला तुम्हीं मपने दिल से लोको कि इससे तुम्हारी इरकत में लीम-सा बड़ा लज बावगा। क्या मैं तुम्हारा मधा चाहनेवाली नहीं हूँ ? माल मगर तुम्हारी होती तो क्या तुम उसके बेबर को काम में न लाते। मैं कहती हूँ बकर माते। फिर तुमको मेरे बेबरों को काम में लाने में लीम-सी बात बावक है ?

मईत — प्यारी तुम तो ऐसी लह की बात कही हो कि लीमे कलेजे में डवर जाती है। मैं और तुम्हारी मबर को बलीक समझूँ ! मपर मुझे बार-बार यह बयाक होता है कि यह बेबर तुम्हारे लपैर की लोमा हैं, इनके तुपको लस मुहल्लव होपी और लूँकि मैं तुमको जान से जी बचावा प्यार करता हूँ मैं नहीं चाहता

राजकली — (बात काटकर) फिर नहीं लख। न मान्य क्या तुमको लस लना पया है। मेरे माई हम बल्ल ली धिप्यावार को लार पर रख ली। बिल तरह बने मपना मला लुड़ा ली। फिर लब इमीनाम से बीटना ली मुकिया मंग कर लेना।

महंत भी — मेरी पीछ तो किसी तरह इसे झुका नहीं करती कि ऐसे धर्मनाक धरिये से अपना गला झुकाऊँ मगर कुछ तो तुम्हारा हठ और कुछ तुम्हारे माराब हो जाने का डर मुझे मजबूर करता है। तुम तो ऊँची मानुष-मिथ्या कामिनी बात-बात पर बुचकड़ निकालती हो। कहीं कन्ध को यह न कहने लयी कि तुमने भेरे खेबरों से गऊछ की और उन्हें पत्नीक समझकर झुका करने से इमकार किया। क्या क्यामक्या में जान पड़ी है।

यह कहकर त्रिलोकीनाथ सन्मोक्ष हो गया। यह-रहकर कमी-कमी रामकली की तरफ तिरछी नजरों से देखते बाठे थे और नजरों ही नजरों में छसका चुम्बिया भी बढा करते थे। रामकली को यह पूरी तीर पर मामूम हो गया कि यह कितना सुसंस्तर सीबा-सच्चा और ऊँचे हीसके का बाबमी है कि बाबबुद इसके कि ऐसी गम्भी मूचीबल आ पड़ी है, सच्चाई के रास्ते से इबर-उपर नहीं हो रहा है। बोड़ी बेर के बाद यह धाम के बहुत खेबरों के साथ जाने का बाया करके घर को बनी। रास्ते मर बुस-बुस बनी आ रही थी। जब घर पहुँची तो निहायत बेकपटी के साथ सूरज के डूबने का इन्तजार करती रही। इबर सूरज डूबा छबर उसने पीटनी लिकास बइस में दबायी और सबकी नजरों से बचकर मन्दिर की राह ली।

सरस्वती महाशयनी महूठ जी की माण्डूकाए बेमिसाल हूरे तिमसाळ बस्कि सामिये हूर दरजमाळ जो ऐसी उलझी-उलझी बर पहुँची तो समाजियो ने बबराकर कहा — क्यों बी यह इम तरह बरहुबास और बबरायी हुई क्यों मजर पड़ती हो? हाँक रही हो, बेहूय पसीने-पसीने हो रहा है यह माजठ क्या है?

सरस्वती — क्या कहूँ उस निगोड़े स्वामी ने हत्ये पर टोक दिया नहीं तो आज पाला मार दिया था। बरसों की मेहनत का इनाम आज उकर निकल गया होता मगर अऊसोय।

समाजी — क्यों उसने क्या किया?

सरस्वती — अभी उसी ने तो सब कुछ किया। मैं बातों में लगाकर बिलोकी को मूख बरें पर लायी थी और कटौत था कि आपस में बातें परकी हो जायें मगर उसने बंया-फसाद मचाकर तमाम नकसा बिगाड़ दिया। बल्गाह मूख बाँध पर चड़ाया था अब एमा मीका सायद ही जाये।

समाजी — मगर मुट्ठी तो कुछ न कुछ बरकर ही यर्म हुई होगी। बच्चे मियाँ बीउती को अश्रीम की पड़ी है, आली बिबिया लिये हुए रो रहे हैं मैं अब तक कुछ नहीं तो बरम के बीसियों ही बम लगा चुका होता मगर आज एक बम की भी इमम जाता हूँ। अब तबीयत उषाट हो रही है।

सरस्वती — अभी तुम लोगों की तो हमेसा से ही आपठ है कि रोया करते हो। तुमको बरम की मूज रही है बीउती अश्रीम अश्रीम चित्ला रहे हैं मला किसी को यह भी खबर है कि बाबर्षीआने में आप जली बा नहीं? मेरा तो मारे मूख के कुछ हाथ है। मन्दिर ही में अँतड़ियाँ घम नाम अपने



कपी थीं। क्या कहीं कित-कित मुदिकों से इस भूख निवोड़ी को मिन रोका है। मगर भाई, जब मेरे रोने को नहीं रुकती कुछ रक्खा हो तो लामो जरा धान में धान पड़े।

जुमेराती — रक्खा क्या है। सुबह जो की रोटी और मसूर की दाल पकी थी वह खीराती भनेरू मकोस से मये न जाने पेट है कि बंबक हमें तो जाल में लगाने तक को भी नहीं मिछी जब से अभी तक तक रहे हैं। हाँ बोपहर को ख्याम के सस्ता चने नूनवाकर खावे के मगर उँट के मुँह में खीरा भला कहीं उससे भूख जाती है।

सरस्वती — और बी मिन अपने किए बेसनी रोटियाँ पकवाने के किए बेसन और तेल संगबाया या वह क्या हुआ ?

जुमेराती — हुआ क्या क्या मैं पी गया। इन्हीं मियाँ खीराती को गुस्सा करने की सूझ मयी बेसन तो उन्होंने बोप किया मयेरू के बाल कई दिन से सूख पड़े थे उन्होंने तमाम तेल घर में बाछ किया। बेसती नहीं हो अभी तक तक नु रहा है।

सरस्वती — (भस्माकर) तुम लोग परसे सिरे के नमकहराम हो।

जुमेराती — नमकहराम होंगे तो खीराती और भनेरू मिन क्या किया जो नमकहराम बनूँ। हाँ इस बकत के बास्ते जो बोड़ा-सा बोस्त बाया हुआ या वह मिन उबाझकर अपने बुसबुल को खिला दिया। जो बचा है वह बेसन में सालकर हुआ खिलाये के बास्ते रक छोड़ा है।

सरस्वती — या बल्साह गोस्त भी मकोस मये बेसन भी सफ़ाचट कर मये तेल भी पेट में उँडेल किया न मामूम यह पेट है निवोड़ा कि बल्सा मियाँ का दोख बफर के सब मरते भी नहीं।

जुमेराती — बीबी चाहे मुसको इबारों ही यास्वियाँ बे लो, जूठियों से पीट लो मगर खबरदार, मेरे बुसबुल की धान में एक बात भी खिलाऊ न निकसे नहीं तो बल्साह जानता है मुससे बुरा कोई नहीं है। जुवा जुवा करके तो वह बेचारा जिया है और उस पर अभी से यास्वियों की भरमार शुरू हो मयी। न मामूम क्यों बेचारा सबकी नजरों में कटि की तरह खटकता है। खीराती उसके नून के व्यासे भनेरू उसके जान के याहक और तुम तो

## मत्तपारी मजाबिद

जैसे जैसे कोसने पर उठाक हो गयी हो। मगर माद रसना जमार के कोसे बरू नहीं मरता।

सौपती — के बस बुमेपती बाँच सम्हालो नह मूरा रूंगा कि छठी का पूज याद आ बापगा। भैडमा नहीं तो। पहर भर से अनाप-सनाप जो कुछ मुँह में आता है बकता आता है। जून का भूँट पी-पीकर रह ममा हूँ नहीं तो बचा आज तुम भी माद करते कि किससे पाठा पड़ा बा। क्यों के रोटियाँ मिन आ सी खुद तो हड़प कर गया और उस्ता इकठाम मुज पर, खुद तो काम करता है और मुज छुड़ा दूसरों पर रखता है। और यह तो बेसो इस बेहपा को धरम नहीं आती कि खुद तो नमकहलाल बनता है और सबको नमकहलाल बनाता है। नमकहलाल तू ही होमा बलिष ठैय छाप बपगा।

सरस्वती — अरे मारो क्यों नाहक आपस में लड़े-मरे करते हो चाहे किसी ने रोटियाँ खा ली अब उसके पेट से तो बाहर निकलती नहीं अब उसमें चाहे का टंटा-बबेड़ा है। रहा यह कि अब इस बन्ध रोबा खोलने का कोई बम्बोबस्त होगा कि नहीं या इस बन्ध भी ऊँके ही की छूरेपी ?

बुमेपती — क्या बतलाऊँ, इस मामले में तो मेरी भी अड़क बनकर ला रही है। भूख की तकलीफ तो बर्बात होगी मगर नहीं आती। माबिर होमा क्या ? घर में आटा-दाल नाम को नहीं बनिया जो है नह मरखुब उसका न माखूम कितना जबाबदारी पर पड़ा है। उसके तलाकों के मारे तो और भी नाक में बम है। अब बेसो मीठ की तरह घर पर मौजूद और इन्साफ तो यह है कि बावालिखाफी की भी कोई हब है, कोई साल भर से टालमटोल आज तक ही रहा है। यह तो कही बप बबता है नहीं तो अब तक कम का मालिष पास बुको होता। स्वमे-सैसे का हाल ऐसा है कि कुछ न कहना ही बेहतर है, कौड़ी कलम को मौजूद नहीं खुदा न करे आज अगर मीठ या आद तो कलम को कोन दे, मिट्टी भी न मिसे।

सरस्वती — मगर मैं तो अब भूख बर्बात नहीं कर सकती। माखूम होना है कि पेट में कोई पेंड रहा है। या अस्ताइ कील-सरा बम्बोबस्त करे।

बुमेपती — मिन तो एक बाल सोपी है, मगर वहीं सोपी पड़ गयी तो फिर बी-भार रोब के किए निरिबन्ध हो जायेंगे।

सरस्वती — क्या है चरा में भी दो मुर्तु।

जुमेराती — वह जो तुम्हारे गले में कंठा है नहीं वह कमीज का बना हुआ है। उसमें और असली में कितना कम फर्क है कि कोई कंठा ही परखने वाला क्यों न हो हरगिब पहनाम नहीं हो सकती। सोना है आजकल मर्दोना इतने सोने की कौमल कम से कम बड़े ही स्वये होगी। अगर घटते घटाते ही स्वये को भी बिका तो खयाल करो कंठा पैग होना। महीने भर तक तो हम ही हम होंगे।

सरस्वती — जी बना बहुत दुस्त। अब आपने मेरा कंठा टाक लिया। जाने में बड़े हातिब हो मगर कमाने को कौड़ी नहीं। जानते भी हो कि वह किसका तोहड़ा है। मगर अब इस बक्त तो मजबूती है, मे जानो इसी को मुनासिब ज़ीमत पर अब जानो। मगर देखो चरा मानला कंठा हुआ रहे।

जुमेराती — बहुत खूब।

अब जुमेराती खींचती, मयेरु और सिगुटी इन चारों आदमियों ने बहुत खुशी-खुशी कंठा हाथ में लिया अपने-अपने साज-सामान से लैस हुए, तर पर टोपी टेढ़ी रखी और फिर क्यों न रखते जमाने की खतर ही टेढ़ी है। बिस्व की तरह सिमटा हुआ मंयरसा पहना पाँवों में जम्बा खुदरेप, तरह तरह की पूती पहनी हाथ में एक-एक सेंटा लेकर उस कंठे को कूड़ा कर देने के बास्ते रवाना हुए। रास्ते में खीराती को खयाल आया कि मारो, इस बक्त अभीराना साज-सामान से तो हम लीम लैस जरूर हैं, मगर एक कसर रह गयी है, वह यह है कि पान हैसियत-निघाम तमठए साहिबे तमोली चौहुकए बरबेसा इस बक्त मुँह में नहीं है। जो कोई बेजता होगा जरूर कहता हीया कि यह लोग कंठे फीक रईम हैं कि मुँह में पान तक नहीं। भई, पहले इस बात का बन्दोबस्त कर लो तो जाने कबम रखो बना बरा बाठा है। झाका मंजूर, मगर अपनी हूँटी कौल कराये।

जुमेराती — मैं भी इस बात की ठाईब करता हूँ। अब आज देखो कि पान का कितना आन रिबाज हो गया है। जो आदमी दिन भर में दो मग्गे कमाता है वह भी एक घेला तमोली की मजर करता है। बदन पर देखो, तो कुर्ता तक ताबूत नहीं मगर मुँह में बीड़ा मौजूब और जो इ साऊ से देखो

## असरारे ममाबिब

तो उस बीड़े ही की बदीस्त उनका घुमार भी रईसों में होता है। इन लोग तो बल्साह के फ़नक से अमीरना ठाट-बाट रखते हैं मगर उस्ताद इन बफ़्त पात्र के न होने से मजा किरकिरा हो गया। तुमसे किसी तमोली स आन-पह रान तो नहीं ?

खैराती — जरे बार मेरे, क्या बतलाऊँ, वह एक जगी-जपी तमोली बच्चा था नहीं तो उसमें और मझमें खूब बुटती भी मैं उसे ठेका यजाना सिखाया करता था और वह मुझे पान खिलाया करता था। उस्ताद उस बफ़्त ईशानिक को वह पैन था कि क्या करूँ, अब देखो मुँह लाल अभी एक बीड़ा मुँह में लिये हुए हूँ मगर बूछप तैयार। अब से वह बेचाप यह घहर छोड़ गया है, मुझे पान खाना मयस्सर ही नहीं हुआ। यह भी कोई खाना है कि दूसरे-तीसरे बस-बीच बीड़े का लिये। पान खाना तो इसे करते हैं कि हर बफ़्त मुँह गप हुआ हो। उस्ताद, देखो जब किसलिए बनाया गया है? आखिर इसीलिए न कि उसमें खया-मिहा रक्खा जाय? जिस बफ़्त जब खाली रहता है किन्तनी तकसीऊ होती है। इसी तरह मुँह भी पान खाने की घरब से बनाना गया है। जिस बफ़्त मुँह में पान नहीं तो मुँह की नहीं हैसिबत है, जो खाली जब की।

जुमेरती — छो यादो, अब बाजार भी कटीब जा गया, मारे धर्म के तो मेरा इन्म अब जाने नहीं बड़ता। तुम खोम जाये-जाये जलो, पीछे-पीछे मैं भी चलता हूँ।

भयेरू — यादो तुमको पान ही की किकिर पड़ी है और मैं और ही सुधीबत में पँखा हूँ।

खैराती — वह क्या ?

भयेरू — मेरे पाशाने के इबारबन्ध में कुबियों का गुच्छा नहीं है, इस कम्बस्त खयाल को क्या करूँ। अब मुझसे जाये नहीं बड़ा खाना। जाबो चर लौट चलें। मैं कुबियों का गुच्छा से बूँसा तुम सौग पान का लेना बस फिर जाये।

खैराती — मगर पानखान में तो पान इसी तरह खायब है जैसे गबे के सर से सीब।

अपेसू — बसबाहू अभी बो-लीन बीजे हूँगे। तुम लोगों को तो काफ़ी है। रहा मैं मैं न खाऊँगा।

सरस्वती कि बहुत खवाल-बवाल के बाद वह बाठ तय पायी कि डैरे को लौटें। लिहाजा वह लीज इवम बड़ाते हुए मकान में दाखिल हुए। यहाँ सरस्वती ने मारे मूख के परीधान होकर भुमेरती की बुझ्बुस की खुरक बट कर ली। तबीयत जो खरा मितलमपी तो उसमें पानदान खोला और खुज्जिस्मती से एक सड़ा हुआ टुकड़ा पाकर उस पर संतोष किया। जब वह लीज बटपट करते हुए दाखिल हुए तो उसने समझा कि कानवास हो गये। बस उसमें यह भी न पूछा कि कहाँ बिका कितने को बिका पहला खवाल बही या कि बाजार के कुछ खाला-बाला भी सेठे आये हों ?

भुमेरती — क्या खुर ही खाला हो जाई ? अभी बाजार तक जाने की तो मौजत ही नहीं आयी।

सरस्वती — अरे लुधा का खवाल अभी तुम सब बाजार ही नहीं गये ? यहाँ बैठे-बैठे आलमान और जमीन एक कर रहे हो।

भुमेरती — जब हम लीज कुछ परीज-मुझ्जिस भूजे-जिये तो हैं नहीं कि यों ही उटकरकैस भूना करें। जिन बजाशरी को जब तक बिबाह साये उमे यों छोड़ें। बिना पान खाये हुए आज तक कभी बाजार में निकलने का संतोष नहीं हुआ था। अगर आज बो-बार मार-बोस्त देसते तो बाखिर बकर उँगली उठते उस बजत खामबाह खुला पड़ता। रोबे और मागम का दिन भी नहीं उह्य कि उठी का बहाला करके टाकते। बाखिर करते तो क्या करते।

सरस्वती — लुधा की पमाह हम बजाशरी पर लागत। यहाँ मूर ने काम तमाम कर रक्ता है और तुम लीज बजाशरी पर मर रहे हो। अरे बाली पात्रो भी लुधा के लिए, देर मर करो कहीं ऐसा न करना कि विरियाह अह इराक आबुर्दा खबर मारे बड़ीया मुर्दा खबर। बस कुने की पाल पात्रो विस्वी की पाल आत्रो।

भुमेरती ने पाकर पानदान खोला तो क्या देसते हैं कि वहाँ पान का निदान तक नहीं। जब लीज जब मयेस पर मूख जल्ताये और अगर वह कुजियों

का गुच्छा लेकर पहले ही से रफूबकर न हो गया होता तो बेचारे की सोपड़ी पिलपिली हो जाती। खूब ही मार-पीट की ठहरती मगर वह एक काइयाँ मत्ता वह कब स्कनेवाला था।

जुमेराती — कहीं ममा वह मरक मयेकू ? देखो न निकक भागा बेहया कहीं ना देखा तो सीराठी किबर को मामा है मरक, बरा रुपक के बर तो तो बचा को, तो इस बेवकत की रासिनी का खूब मत्ता बसाई !

सीराठी — मरे वह बाजार में होया इस बस्त बेहूदे को अपने काम से काम था कुबियाँ लेकर लडक दिया।

जुमेराती — अच्छा बचा कहीं तो मिसैये जहाँ मिसैये जहाँ ठीक बनाओगा।

सीराठी — और ओ कहीं सरे-बाजार मुठयेइ हो गयी तो क्या करोगे ?

जुमेराती — वहीं पर बचा को बो-बार पटकनियाँ डूना भुरकुस न निकाल किया हो तो नाम नहीं !

सीराठी — मगर उस्ताब सोय देखैये तो क्या कहोगे ? यही न कि ये सोम रईस होकर रईसों का नाम बदनाम करते हैं और बाजार बदनामों की तरह बाजारों में सड़ते-फिरते हैं।

जुमेराती — याद तुम भी निरे बम्बूइ ही निकके पहले में उस हुरामबाबे की भी मरकर मरमत कर चुकता तो बाह को देखा जाता। मगर अब तो तुमने याद दिला दी मत्ता कीन अपनी दरबत के पीछे पड़ेगा।

सब कि यह बैरंग बापस हुए। जब बाजार के ऊरीब पहुँचे तो क्या देखते हैं कि मयेकू मूँह में पान ठूँसे बड़े गर्ब से उनकी तरफ देख रहा है। अब इन सबों को बितना गुस्सा आया होया उसकी कल्पना करना कठिन है। बरा इन हजरत की कारस्तानियों को मुसाहिबा करमार्ये। अपने साबियों को हाँसा-मट्टी लेकर डेरे पर किया से गया जहाँ से खूब तो कामयाब होकर लौटा और वह सब के सब भापूस होकर एक-एक पान को पीते रहे मगर उतने बने के बीड़े मूँह में भर लिये। जुमेराती तो बैठ किटकिटाकर रह गया। सीराठी की आँसों में खून उतर आया। तिसुटी (जो निहायत संजीरा आदमी था) की ल्योटी पर भी बस पड़ गये और अगर इन तीनों को दरबत

का खयाल न होता तो मियाँ भयेसू की खेरिखत न थी। चकर सोपड़ी रैपी जाती। ऐसी बेमान की पड़ती कि होघ पटर हो जाते। मगर खेरिखत हो गयी। अगर कुछ हुआ तो इतना हुआ कि इन सबों ने मुस्से से मयी हुई प्रथम की आँखों से उसकी तरफ़ देखना शुरू किया। मगर वह एक छँटा गुर्पा बला का अंसिबाब खुद तो सबों के आये-आये सरबारों की तरफ़ भीड़े बजाता मूँछों को ताब देता बला और यह सब बिल ही बिल में बल्लते मुनते सुरमन को बुरा मला कहते उसके पीछे-पीछे इस तरह पर बले कि जैसे इस बल्ल उधको सरवाटी का कोई बात हूऊ हासिख है जिसके सबब से यह सब बेचारे बिना कान हिछाये बसे जाते हैं, नूँ तक नहीं करते। जब बाजार में पहुँच गये तो सबसे पहले यह राय इतर पायी कि लस्सू साहु की दुकान पर बजो। बेहो वह क्या कहता है। अगर राबी हो गया तो क्या कहना बनी बूखप बरबाना देखिये।

साहु भी मसनब सगाये बैठे हुए थे। माथे पर चन्दन का टीका बिराज रहा था। बले में एक माछा पड़ी हुई थी। हाथ की छिँगुली में कुछ नहीं तो एक बर्जत अलग-अलग छिस्मों की खँगुलियाँ सुघोमित थीं। पैर क खँगुठे में चावी के छस्से पड़े हुए थे और भीमान के घटीर का क्या पूछना छाये बूह के बूह थे। कोई बूर से बेलें तो उसे मही मुमान हो कि हाथी का बन्धा जा रहा है। सामने पीतल की एक बड़ी-सी बजात तरकजे (लम्बाई-चौड़ाई सब बराबर) का इंसम टोन की छोटी-सी बिम्बी में बामू जो स्माहीसोल्न का काम देती थी यह सब तरखीबबार सलीके स जगनी-अपनी मुनासिब जमहों पर रने हुए थे। बल्ल में मुनीम भी शोभायमान थे और हाथ में एक तमरनुक छिये पड़ रहे थे। दो-चार बस्ताभेमें रेहननामे बरीरह इबर-उबर फैसे हुए थे। साहु भी इबारत को और से मुमते जाते थे और बीच-बीच में बिरह भी निकाल देते थे। जब यह लोग दुकान पर जा सके हुए तो उसने उनकी तरफ़ आँस उठाकर देखा और पूछा— क्या चाहिए ?

इबर तो पहले ही से यह राय तप पा चुकी थी कि भयेसू इस जमात का बकीर इतरा दिया जाय नूँकि वह रईसी और बमीरी की तमाम जरूरी तरकसुऊ की चीजों से सँस था। इस बल्ल सरवाटी उसी को फवती भी थी।

किन्नाया उसने बेगरब कइय में जबाब दिया — हमारे पास एक कंठा बिकाऊ है, बकरत हो तो से लीजिए।

साहू — कैसा माल है जरा हाथ में देना देखूँ तो।

उसने उस बेबर को हाथ में लेकर धीरे से देखा और बोला — ना बाबा ऐसा माल हमारे यहाँ नहीं सिमा बाता और दरबाजा देखिए।

जब यहाँ से नाकाम वापस हुए और जिस मोठी की तलाश थी वह हाथ न समा तो सब बकराये कि जब कौन-सी हिकमत काम में सामी जाय। अपनी-अपनी राय हर जाबमी देने लया। मायाजलसाह भगेरू एक ही बालसाह विक्रमी जाबमी बा — मुनो बाणे यों तो यह बिकने-बिकाने का नहीं हम खोप बनर अपना पुपता ठरीका अस्तित्पार करें तो मुमकिन है कोई जाल का मंषा गाँठ का पूरा फेंत जाये।

सबों ने उसको सूझ-बूझ की बूझ ही दाब दी और योजनानुसार मिस्टर मयेरू दूसरी बुकान पर गये। पहल बकील साहब अकेले दुकान में बासित हुए। यहाँ इस बकत साह बी कुछ पतपिमाव करने गये हुए थे और मुनीम भी जो एक गौबवान और नातनुबेकार जाबमी थे बैठे हुए थे। उनकी बघल में एक और साहब बिराज रहे थे। अछा हमने इनको पहचान सिमा यह तो बही हमारे सिनेस्वरनाथ के मन्दिर के स्वामी जी हैं। स्वामी जी ने अपनी लम्बेदार बावों से उधे धीसे में उठार सिमा बा।

मुनीम — क्यों बाबा जी आप तो ऊरमाते हैं कि बचीकरण बहुत बासान है भका हमको भी तो कोई छोटा-मोटा लटका बताइये।

स्वामी — मुनो भाई, बचीकरण सीखना बहुत ही सुगम है। कोई कठिनाई नहीं मपर हम लोगों को किसी अनसिखिया से अप्पुठ व अजम्ना-कारण कार्यों की जमी कोई बातचीत करना बहुत बजित है। सिखा है कि अपने पिता से भी ऐसी बात न कहो। परन्तु तुम्हारी निरन्तर चिन्ता व सेवा सं मेरा मन बहुत समुष्ट हो गया है। मैं बहुत बेग से तुमको एक जगया हुमा मंष बताऊँगा ईस्वर चाहेगा तो तुम्हारे समाम मनोरम सिख हो जायेंगे।

मुनीम — बाबा जी कहीं ऐसा हुआ तो बीते-बी क्रम न छोड़ूँगा।

स्वामी — अरे मित्रवर, कइ तो दिया कि होना और बीज खेत में होमा।



अकडिस्ता इतनी बातें करने के बाद मुनीम जी ने मियाँ की तरफ देखकर पूछा — क्यों साहब यह माऊ जितने में जायेगा ?

मगेरू — जितने का तौल से ठहर जाय कुछ भटककमचू पीड़े ही बेचगे।

मुनीम — (तीसकर) यह इस बक्त नी स्वये का ठहरता है। क्यों स्वामी जी है न ?

स्वामी — सत्य है तो सब कुछ है। यही अपने साथ बामगा बन्वा। मेरी समझ में तो पत्रह स्वये का माऊ होता है।

यह खोग जमी भापस में मोल-तौल कर ही रहे थे कि मियाँ जुमेराठी हाँफते हुए जाये और फरमाने लगे — बाहू रै मियाँ जमानुहीम (मगेरू) तुम भी कुछ मजीब कड़े के जावनी हो। अकलू साहू जितना पुकार के हार गया और तुम खान के मारे न पये। सीबा इस बेराजी से नहीं चुकता।

मगेरू — अकलू साहू में कौन-सा खाँद लग गया है कि खामखाह नहीं जाऊँ। यह तो बिलपटे का सीबा है न बहाँ डूवरी बगह सही। कुछ बह मुज्त तो स्वया रंगे नहीं जो माऊ ठहरेया खरी की क्रीमत हर बगह मिलेगी। बह समझते हैं कि एक बक्रा खाँद -पट्टी देकर सी का माऊ इस में मार लिमा बीसे ही हर बक्रा कर लूँया। मपर बन्दा अब इस बकमे में हरमिब नहीं जायेया।

जुमेराठी — बरे याद, यह तो मुसीबत सब कुछ करवा रही है नहीं तो क्या ऐसी-ऐसी नायाब चीजें बेचने काबिल बी। जमाने के इन्कलाब ने हमें इस हाल को पहुँचा दिया कि अब गली-पसी बेबर बेचते फिरेते हैं। खैर, इस पर भी सब करना हम लोगों का फर्ज है। हाँ यह तो बतघाबो कुछ बाम-काम हुआ या नहीं या बस्टी से मों ही बारहबाई सड़े हो ?

मगेरू — तुम तो गया है मुनीम जी नी स्वये का जाँफते हैं।

इस नी स्वये का नाम सुनकर जुमेराठी ने ऐसा चेहरा बनाया कि जैसे उसे बड़ी खोर की हँसी आ रही है मगर वह बड़ी-बड़ी कोपिस से इसको रोक रहा है।

जुमेराठी — सब बहो बजी नी स्वये। नहीं रिस्तगी करते हो।

भयेसू — इसमें दिखानी क्या है अरीदार तो सामने ही बैठा है, तुम्हीं पूछ लो न ?

जुमेराती — खर तो मालूम हो गया। इसी से मैं कहता हूँ कि कस्तूर बड़ा मुनी आदमी है। छोटे-खरे माल का बूज परखना माला है और ऐसा चापकर दाम लगाता है कि चापत से कुछ यों ही थोड़ी-सी कमी होती है। अगर पचास का माल बेचने जाओ तो उसकी दुकान पर चासीस से कम किसी तरह न मिलेगा। और फिर वह अपना महाजन ठहरा बसत बेवकत गी-बेगी सौ-पचास रुपये के लिए नहीं नहीं करता। उसने इस कठि को देखकर ही कह दिया था कि साठ से क्याबा मिले तो और जगह देना नहीं तो मेरी दुकान पर जाना। मला कहाँ साठ और कहाँ नी। चमीम और आसमान का फर्क है। बामो लौट चलो।

यह लोप अभी बातों ही में लगे थे कि मियाँ खरखरी अकड़ते-बरखते जा मौजूब हुए।

खरखरी — अस्वाह मियाँ जमानहीन अभी तुम यहीं बाड़े हो ? क्यों क्या हुआ इस बारे में ?

भयेसू — क्या बतायें मेहरबाज यह अजीब सभेले में जान पड़ी है। कस्तूरमल इसका दाम साठ रुपया माँफता है और यह मुनीम भी नी रुपया। मेरी अकलमन्दी तो देखो कि मैं उसकी दुकान को बुलकार बठाकर यहाँ आया मगर यहाँ तो बही असल है, ठेकी दुकान फीका पकवाल। मुनीम भी को छोटे-खरे की ठमीब नहीं अब वीरठ नहीं गबारा करती कि जिस दुकान पर ऐँड़ी-बैड़ी सुनाकर जाये है फिर मुँह सेकर बायें।

स्वामी भी ने इन लोयों की बातचीत वीर से सुनी और समझ गये कि वह सब लडकी माल को खान खसाकर असली कर दिखामा चाहते हैं। उन्होंने ऐसी-ऐसी हजाराँ चामें चली थीं। उनको मालूम हो गया कि यह बेल मुडे चढ़ने की नहीं। मुमकिन है कि इसकी डीमत कुछ पयाबा कम जाय मगर ऐसा अन्धा कौल होना जिसको छोटे-खरे की पहचान न होगी। उन्होंने जुमेराती को अकय बुलाकर कहा — मियाँ खर मनाओ मैं अकमा देकर पन्नाह रुपये दिसबायै देता हूँ। बाबे मेरे हूँपे और बाबे

तुम्हारे। और जो तुम यह चाहो कि इसको असली करके बेचो तो भाई दूसरा दरबाना देखो। आज वहाँ तक चलो जहाँ तक गिरफ्त के इलाक़ न हो। अब यह खेबर तो खासा पीतल का बना हुआ है, मुसम्मा तक नहीं माला किसकी बाँस में धुन बासोमे और किसका रुपया पड़ा हुआ है जो यों पानी में डालेगा। बहमी बाँस छोड़ो आबो हाब पर हाब माटे पन्द्रह रुपये लाटखाही बिलाये देता हूँ।

और, मानसा तय पा गया। स्वामी जी ने बाँसों ही बाँसों में उसकी झीमठ पन्द्रह रुपया लया बी। सीबा चुक गया। यह सब तो अपनी-अपनी राह लये स्वामी ने मुनीम को बहुत-सा तखपञ्जी विलासा दिया और दूसरे दिन गूर के तड़के चकरी सामान के साथ जाने का वादा करके चलते हुए। रास्ते में मियाँ सोर्गों से आबा हिस्ता पटना लिया और मूँछों को टाब देते हुए चलते फिरते नबर माये। जुमेराटी वगैरह इस खेबर को बेचकर मारे बूझी के फूँसे न समाते थे। बाँसों सिन्धी चाटी थीं। समझते थे कि बय पीत लिया।

जुमेराटी — मई बाहू क्या खूब नी जाने का माल पन्द्रह रुपये भर।

मगेरू — क्यों उस्ताद न कहोये यह बन्दे की कारस्तागी है वना उसको तो कोई कौड़ियों के मोल भी न पुछता।

खैराटी — बेचक उस्ताद तुमने वह काम किया है, कि फ़्तम से भी न हीगा। मगर वह पुजाटी न होता तो तुम सोर्गों के तमाम बकमे खाक में मिल जाते। उसने उस मुनीम पर न मालूम कौन-सा बाबू फूँक दिया कि जानन-खानन उसकी अक्स सब हुर्र हो यमी और इस खातिरपने को दखो कि बम के बम में सन्ने साथ रुपये बना लिये।

जुमेराटी — यह सब तो होता ही रहेगा अब यह तो सोचो कि कैसे क्या सोचे लयीदने हैं।

खैराटी — याटे मैं तो डेढ़ तोला अज़ीम खरूर लूँगा और चार जाने की रेवड़ी।

जुमेराटी — और मैं तो अपने बास्ते चाँदू और अपने मुल्मुस के बान्हे पोस्त और बेसन खरूर लूँगा।

## असतारे नभाबिह

मगसू — तो बाटे में मैं ही रहा। क्रिया-बरा मेरा और मास मारे आप सोच।

जुमेराठी — नहीं नहीं तो उस्ताद मसा यह कब मुमकिन है। तुम भी अपनी क्रमाहस करो।

मगसू — अच्छा तो मेरे लिए दो बोटमें वराब की और सेर-बाध सेर उम्बाकू और सफेद पके हुए पाग खरीद लेना।

मिगुरी — सब लोग तो बुदी-बुरी क्रमाहस कर चुके अब इस घटीब की भी कोई मुकता है ?

जुमेराठी — हाँ हाँ मार्ले, तुम क्यों फिदाबूरी रहे बाटे हो तुम भी क्रमाहस करो।

मिगुरी — उस्ताद मेरे लिए इस बजत सेर भर पुरियाँ और सेर भर मिठाइयाँ काट्टी होंगी। और कुछ नहीं चाहता।

घराब सबने अलहदा-अलहदा क्रमाहस की। साँडे साठ रुपया कुछ कार्से का खजाना तो है नहीं कि चाहे बिठमा सड़ाटे कार्से ज्यों का त्यों बना रहे। जब अपनी-अपनी मर्जी के मुमाहिक धीरे खरीद चुके और हिसाब लयाया तो मीजान की बूस ठीक न बँठी। कोई बाब बन्टे के बाद हिसाब पूरा हुआ तो कुछ छ. पैसे बच रहे। अब तो हर सफस के बेहरे का रंग छुड़ हो गया। खिसिमाने होकर एक-दूसरे का मुँह तकने लये।

जुमेराठी — मार्ले, यह तो बड़ा बेडब हुआ। हम लीयों ने तो अपनी अपनी क्रिक कर ली मगर उस बेचारी के बास्ते कुछ भी न छोड़ा। जब यह बेड जाने पैसे बच रहे हैं छोड़ा-सा सतू और मुड़ से लो इस बजत मुबर-बमर हो जायगी सुबह को अस्ताह माकिक है, कहीं न कहीं ठिकाना लग ही खेया।



# ہم خرمًا و ہم ثواب

اک رکبہ ناول

مصنفہ

عائشہ بیگم صاحبہ صاحبہ صاحبہ صاحبہ

۱۹۴۱ء میں لکھی گئی

پہلی بار شائع ہوئی

۱۶۱



## सच्ची कुर्बानी

घाम का बकत है। मुख्य होनेवाले बाइटाब की मुनहरी किरनें रंगीन चीखों की जाड़ से एक अंग्रेजी बच्चा पर सबे हुए कमरे में छाँक रही है जिससे तमाम कमरा झुंझमूँ हो रहा है। अंग्रेजी बच्चा की खूबसूरत तसवीरें वो दीवारों से लटक रही हैं, इस बकत रंगीन सिबास पहनकर बीर भी खूबसूरत मालूम होती है। ऐन बस्ते कमरा में एक खूबसूरत मेज है जिसके इबर-उबर नर्म मञ्जमली गद्दों की रंगीन कुत्तियाँ बिछी हुई हैं। इनमें से एक पर एक नीबवान शास्त्र सर नीचा किये हुए बैठा कुछ सोच रहा है। निहायत बजीह-बो-बाकील आदमी है जिस पर अंग्रेजी तरास के कपड़ों ने राजब का फजल पैदा कर दिया है। उसके सामने मेज पर एक कागज है जिस पर वो बार-बार निगाह डाल्ता है। उसके बुधरे से बाहिर हो रहा है कि इस बकत उसके जयालात उसे बेचैन कर रहे हैं। एनाएक वो उठा बीर कमरे से बाहुर निकसकर बरामदे में टहलने लगा जिसमें खूबसूरत फूलों और पत्तियों के समसे सजाकर बरे हुए थे। बरामदे से फिर कमरे में आया कागज का टुकड़ा उठा लिया और एक बरहबाबी के मास्म में बँपसे के अहाते में टहलने लगा। घाम का बकत पर। भाती फूलों की बमारियों में पानी बे रहा था। एक तरफ़ साईस घोड़े को टहला रहा था। ठंडी-ठंडी और मुहानी हवा चल रही थी। बासमान पर शक़र फूली हुई थी मगर वो अपने जयालात में ऐसा घबँ बा कि उसको इन दिखबसियों की मुतलक खबर न थी। हाँ उसकी गर्दन पुर-ब-शुद हिलती थी और हाथ कुछ इतारे कर रहे थे पोया वो किसी से बातें कर रहा है।



इसी बसना में एक बाइसिक्लिस् फाटक के अन्दर बाबिल हुई और एक गौबवाग कोट-पतलून पहने चस्मा भयाभे सियार पीता बूटे चर-मर करता उतर पड़ा और बोला—मुझ ईशानिय मिस्टर अमृत राम ।

अमृतराम ने चौंकर सर उठाया और बोले — ओह आप हैं मिस्टर बानगाव । आइए, तलछीऊ लाइए । आप आज बत्तसे में मबर न जाये ?

बानगाव — कैसा बकसा ! मुझे तो इसकी खबर भी नहीं ।

अमृत — (हैरत से) ऐं ! आपको खबर ही नहीं ? आज जायरे के लाल अमृतबापीभाऊ साहब ने बड़े मार्के की तलछीर की । मुलातिअमि के बौत खट्टे कर दिये ।

बान — बसुवा मुझे जरा भी खबर न थी बर्ता में बकर जलसे में सरीक होता । मैं तो जाना साहब की तलछीरों के मुने का मुस्ताह हूँ । मेरी बकलिस्मती की कि ऐसा नाबिर मीका हाथ से निकल गया । मजमूम क्या था ?

अमृतराम — मजमूम सिवाय इसकाहै मुजाशरत के और क्या होता । जाना साहब ने अपनी जिन्दगी इसी काम पर बकल कर दी है । आज ऐसा पुरखोष बाबिले क्रिम और बाबतर सल्ल इन सूबे में नहीं । ये और बात है कि लोगो को उनके अमूमों से इस्तबाफ ही मगर उनकी तलछीरों में ऐसा जाहू होता है कि लोग बुब-ब-मुझ सिचते चमे जाते हैं । मुझे जाना साहब की तलछीरों के मुने का बापहा क्रम हासिल हुआ है मगर आज की स्पीच में कुछ और ही बात थी । इस शकस की खबाव में जाहू है, जाहू । बलकाव बही होते हैं जिनको हम रोजमरती की मुक्तपू में इस्तीमाक करते हैं खयालात बही होते हैं जिन पर हम लीय बकजा बैठकर अकसर बहव किया करते हैं । मगर तजें बयाग में कुछ इस खजब ना बसर है, कि बिलों की कुमा रेखा है ।

बानगाव को ऐसी नाबिर तलछीर के न मुने का सल्ल अख्योस हुआ । बोले — बाह, मैं बड़ा बकलिस्मत हूँ । अऊतोह अब ऐसा पीका हाव न जायेगा । क्या अब कोई स्पीच न होगी ?

## हमधुर्मा व हमसबाब

अमृतदास — उम्मीद तो नहीं क्योंकि आला साहब आज ही स्वतंत्र  
ठपटील से जा रहे हैं।

दाननाथ — कमाल अफसोस हुआ। अगर आपने उस ठपटीर का  
कोई जुवासा किया हो तो मुझे दे दीजिए, बरा देतकर तस्कीन कर लूँ।

अमृतदास ने वही कागज का टुकड़ा जिसको बार-बार पढ़ रहे थे  
दाननाथ के हाथों में दे दिया और बोले — असलामे ठपटीर मे जो हिस्से  
मुझे निहायत अच्छे मालूम हुए उनको नकल कर लिया। ऐसी खानी में  
लिखा है कि शामद बजुर मेरे और कोई पढ़ भी न सके। बसिए हमारे  
रखना व मुक्तिवापाने क्रीम की छफ़कट व बेपरवाई को क्या बयान किया  
है—

‘इबरात! सब सराबियों की बड़ हमारी सापरवाई है। हमारी  
हाकत बिकरुकुल भीमवान मरीज की-सी है जो बवा को हाम मे लेकर  
देखता है मगर मुंह तक नहीं ले जाता। हाँ साहबो हम आँखे रखते हैं  
मगर धन्ने हैं, हम कान रखते हैं मगर बहरे हैं, हम खदान रखते हैं  
मगर गुँये हैं। अब जो जमाना नहीं है कि हमको अपनी मुजाधरत के नका  
इस मगर न जाते हों। हम तमाम अच्छी बातों को जानते हैं और मानते  
हैं मगर जिस तरह मसाइखे इस्तलाही पर ईमान रखकर भी हम गुमराह  
होते हैं, लुबा के बजुर के क्रायक होकर भी मुन्किर बनते हैं उसी तरह  
इसलाहे तमरबुन के मसाइस से इतफ़क़ रखते हैं मगर उन पर अमल नहीं  
करते।

अमृतदास ने बड़े पुरजोश लहजे में यह इबारात पढ़ी। जब वो खामोश  
हुए तो दाननाथ ने कहा — बेचक खूब फ़रमाया है बिकरुकुल हमारे हस्के  
हाल।

अमृतदास — बनावमन मुझको सटत अफ़सोस है कि मैंने साठी  
ठपटीर क्यों न नकल कर ली। उर्वू खदान पर ऐसे ही बक़्त मुस्ता आता  
है। कागज अंधेरी ठपटीर होती तो मुबह होते ही तमाम रोजाना मसबारों  
में धाया हो जाती। नहीं तो शायद कहीं जुवासा रिपोर्ट छपे तो छपे।  
(एक समझे की खमोसी के बाद) कैसे यर्म अक़धब में तहटीक की है कि

जब से जबसे से बापा हूँ वहीं उभाएँ बराबर काम में मूँज रही हूँ। माई डिमर दानमात्र भाप मेरे ज्ञयाभात से बाकिफ हूँ। भाव की स्वीच के उन ज्ञयाभात की अयसी सूरत बहिष्यार करने की चुरबठ की है। मैं अपने को झीम पर कुर्बान कर बुँया। जब तक मेरे ज्ञयाभात मुज ही तक से अब वह बाहिर होये। अब तक मेरे हाव सुस्त के यनर मैंने उनसे काम लने का कसदे मुसम्मम किया है। मैं बहुत बाबकिबहार घबस्त नहीं हूँ मेरी ज्ञयाभात भी कबीर नहीं मगर मैं अपने को और अपनी सारी ज्ञया की झीम पर कुर्बान कर बुँया। (भाप ही भाप) हाँ मैं वो पकर निहार कर बुँया। (जोय से) ऐ बककर बैठी हुई झीम! से ठेठी हाकठ पर ऐने-बासों में एक और इजाऊ हुआ। भाया इससे तुसे कुछ प्राबवा होया वा नहीं इसका ऊँसका बकत करेया।

मह कहकर अमृतदाय जमीन की तरफ देकने लये। दानमात्र, जो उनक बचपन के साथी के उनके निजात्र से बूब बाकिफ ये कि जब उनको किसी बात की मूज सवार हो जाती है, तो उसको जिला पूरा किये नहीं छोड़ते। बुनाये जम्हेने जैब-नीच सुझाना शुरू किया—मैहरबाने मन मह ज्ञयात्र वो कौबिए कि भाप बीसा कतरलाक काम अपने जिम्मे से रहे हैं। भापको अभी नहीं मामूम कि वो उस्ता साज्र नजर आ रहा है वह कौटों से भरा हुआ है।

अमृतदाय—अब तो हर से बाबा बाद। मैं बूब जानता हूँ कि तुसे बड़ी-बड़ी दिक्कतों का सामना करना होया। मगर नहीं मामूम कुछ अर्थ से मेरे दिल में कहीं से कूबत आ गयी है। मुझे ऐसा मामूम होता है कि मैं बड़े से बड़ा काम कर सकता हूँ। और उसको बजाय तक पहुँचाकर मुझे कई हासिल कर सकता हूँ।

दानमात्र—जी हाँ जोयी जोयी का हमेशा यही हाक होता है। अब जरा ज्ञयाभात से हटकर बाकबात पर जाइए। भाप जानते हैं कि मैं माहर बिवाकल और उस्तझापरस्ती का मरकज है। नये ज्ञयाभात यहाँ हरगिज नरबनुमा नहीं वा सनटों। अकबरा बयी भाप बिठपुल ठगहा है। वो ज्ञयाबरेहिमाँ भाप अपने तर केते हैं उनस जहाँ तक मेरा ज्ञयात्र है

आपके हुस्मन क्यावा हो आर्ये और घायब बहुबाब भी किनाराकपी करें। आप अकेले क्या बना लेंगे।

अमृतदास ने बोस्ट की बातों को सुनकर सर उठाया और बड़ी संजी रपी से बोले— दानगाप ये तुमको क्या हो गया है? मर्दे खुदा तुम करते हो अकेले क्या बना लोमे! अकेले आबमियों ने सस्तगते फ़तह की है, झीमों की बुनियादें बाली है। अकेले आबमियों ने तारीख के सफ़हे पकट दिये हैं। पैतम बुद क्या बा। महब एक बादियामर्ब फ़लीर बिसका घारे बमाने में कोई मारो-मपबगार न था। मगर उसकी बिन्दमी ही में आबा हिस्बोस्तान उसका मुरीब हो चुका था। आपको कितनी मिसासैं हैं! झीमों के माम तनहा आबमियों से रीघन हैं। आप जानते हैं कि अफ़सातून एक बड़ा आबमी था मगर आपमें कितने ऐसे हैं जो जानते हैं कि वह किस मुस्क का बाराग्या है।

दानगाप बीफ़हम आबमी के समझ गये कि इस बकत बोध ताबा है, मजेब-जो-फ़राब सुझाना फ़िन्क है। पस उन्होंने फ़हमाइस का गया ईब बलिमार किया बोले— मच्छा मीने मान लिया कि अकेले लोगों ने बड़े-बड़े काम किये हैं और आप भी झीम की भलाई कुछ न कुछ कर लेंगे मगर इसका तो खयाल कीजिए कि आप उन लोगों को कितना बड़ा सरमा पहुँचायेंगे बिनाको आपसे कोई तास्कु है। प्रेमा से बहुत अस्ब जानकी घायी होनेबाली है। आप जानते हैं कि उसके बाल्विन परसे सिरे के कट्टर हिन्दू हैं। जब उनको आपके अंप्रेजी बबा-जो-कठा पर एतराब है तो फ़रमाइए जब आप झीमी इसफ़ाह पर क़मर बाँबेंगे तो उनका क्या हास होया। गालिबन आपको प्रेमा से हास बोना पड़ेगा।

यह तीर कापी क्या। दो-तीन मिनट तक अमृतदास जमीन की तरफ़ टाफ़ते रहे। बाद इसके उम्होंने सर उठाया— बाबें मुर्ख पीं आसू नमू बार ये मगर झीमी फ़लाह ने नफ़स पर झाबू पा लिया था। बोले— 'हबरत झीम की भलाई करना बासान नहीं। जो मीने इन बिफ़रतों का खयाल पड़ेके नहीं किया था ताहम मेरा बिल इस बकत ऐसा मजबूत है कि झीम के लिए हर एक मुसीबत सहने को तैयार हूँ। प्रेमा से बेचक मुझको

घायबाना मुहम्मद भी मैं उसका पीछाई वा बीर अगर कोई वो जमाना जाता कि मुझको उसक पीहर बनने का प्रयत्न हासिल होता तो मैं साबित करता कि मुहम्मद इसको कहते हैं। अगर अब प्रेमा की मूरत मेरी निगाहों से घायब होती जाती है। यह वैसिए वह छोटी है जिसकी मैं जब तक परस्तिष किया करता था। अब इससे भी किनाराकण होता हूँ यह कहते-कहते उन्होंने उसबीर केब से निकाल ली और उसके पुर्बे-पुर्बे कर वाले प्रेमा को अब मासूम होगा कि अमृतदास अब डीम का आधिक हो गया और सत्क का फिर्दाई, उसके बिल में अब किसी नाइनीन की जपह बाझी नहीं रही तो वो मेरी इस हरकत को मुजाऊ कर देनी।

बाननाथ — अमृतदास मसको सस्त आइसोस है कि तुमने उस नाइनीन की उसबीर की यह पत की जिसको तुम खूब जानते हो कि तुम्हारी बिलबादा है। प्रेमा ने अइद कर लिया है कि बनूब तुम्हारे किसी बीर से घायी न करेयी। और अगर तुम्हारा हाकिमा काम बैठा हो तो सोचो तुमने भी इस क्रिम का कोई बाबा किया था या नहीं। क्या तुमको नहीं मासूम कि अब घायी का जमाना बहुत करीब आ गया है। इस वक्त तुम्हारी ये हरकत उस मासूम लड़की की क्या हासल कर देनी।

इन बातों को सुनकर अमृतदास बाकई कुछ पजमुर्बा हो गये। हाँ बराबर यही कहते रहे कि प्रेमा इस लता को जरूर मुजाऊ कर देगी। इन्हीं बातों में आइस्ताब मुकम हो गया। बाननाथ ने अपनी बाइसिकल सम्हाली और चलते चलते बोले — मिस्टर राय खूब लीज को अभी से बेहतर है इन पराबंदा लमाकात को छोड़ो। आबो आज तुमको बरिपा की सैर करा छाये। मैंने एक बजरा के रखा है। चौदनी रात में बहुत सत्क आयेगा।

अमृतदास — इस वक्त आप मुझ मुजाऊ कीजिए। कस मैं आपसे फिर मिलना। इस पुणतु के बाद बाननाथ तो अपने मकान की तरफ चली हुए और अमृतदास उसी अँपेरे में बेहिस-बो-हरकत जा रहे। वो नहीं मासूम क्या सोच रहे थे। जब अँबेरा हयादा हुआ तो दरखतलू यह जमीन पर बैठ गये और उस उसबीर के परीमान पुर्बे इकट्ठा कर लिये

उनको अपने घीने से लमा किमा और कुछ सोचते हुए अपने कमरे में चले गये।

बाबू अमृतराय शहर के मुमकिन न रऊआ में समझे जाते थे। आबाई पेसा बकाअत था। कुर भी बकाअत पास कर चुके थे और गो ममी बका अत खोर्ते पर न थी मगर आगवागी इक्तिबाए ऐसा जमा था कि शहर के बड़े से बड़े रऊआ भी उनके सामने घरे नियाज खम करते थे। बचपन ही से अंग्रेजी कालिबों में ठानीम पामी और अंग्रेजी ठहबीब और ठर्से मुबा शरत के दिसदादा थे। जब तक बासिद बुजुर्गवार जिन्दा थे पासे बरब से अंग्रेजियत से मुहतरिब रहते थे। मगर उनके इस्तकाल के बाद कुछ लोके। सफे कसीर से ऐन हरिया के किनारे पर एक नजीस बैपला ठामीर करपा था और उसमें रहते थे। इमारत के उस सामान मौजूब थे। किसी बीब की कमी न थी। बचपने ही से इस्म के दिखवादा थे और मित्रान भी कुछ इस किस्म का बाहे हुमा था कि जिस बीब की बुन खबार हो जाती बस उसी के हो रहते थे। जिस जमाने में बंगसे की बुन खबार थी आबाई मरानात कौडिमों के मोल करोख कर दिये थे। इकाहे पर भी हाप छाऊ करने का इरादा था मगर किस्मत अच्छी थी बाप का जमा किमा हुमा कुछ खया बैक में निकल आया।

मिस्टर अमृतराय को किताबों से उरऊत थी। मुमकिन न था कि कोई नयी खयनीऊ छाया हो और उनके बुलुबखाने में न पायी जाये। अलावा इसके फूटने कठीका से भी बेबहर न थे। पान से खबीयत को सास एखत थी। वह बकाअत पास कर चुके थे मगर जब तक छापी नहीं हुई थी। उन्होंने ठान लिया था कि ताबक्ते कि बकाअत खोर्ते पर न हो बाप छापी न करेगी। इसी शहर के रहसि आबन सासा बपरीप्रसाद साहब उनको कई बरस से अपनी इकसीठी छड़की प्रेमा के बास्ते चुने बैठे थे। इसी जमाने में कि अमृतराय को इस छापी के करने में कोई एतखज न हो प्रेमा की ठानीम पर बहुत लिहाज रखा गया था। मुंसी साहब की बर्बा के सिखाऊ प्रेमा की खसबीर भी अमृतराय के पास मित्रवा ही मपी थी और बकतु ऊमफतनु बीनों में खतो-किताबत भी हुमा करती थी क्योंकि प्रेमा अंग्रेजी ठानीम पाने

से छटा आबाबमिजाब हो गयी थी। बाबू दाननाथ बचपने ही से अमृत राय के साथ पढ़ा करते थे और दोनों में सच्ची मुहब्बत हो गयी थी। कोई ऐसी बात न थी जो एक दूसरे के लिए उठा रहे। दाननाथ अर्से से प्रेमा की दिस में परस्तिप्त करते थे। मगर चूंकि उसको मामूम था कि बातचीत अमृतराय से हो गयी है और दोनों एक दूसरे को प्यार करते हैं इसलिए खुद कभी अपने समासात को बाहिर नहीं किया था। उस माधुक के फ़िराक में जिसके मिसने की मरकर भी उम्मीद न हो उसने अपने इरमीनाम की पढ़ियां तस्स कर रखी थीं। सैकड़ों ही बार उसकी नफ़सानियत ने उभारा था कि तू कोई नाम बहकर मुंशी बहरीप्रसाद को अमृतराय से बहजन कर दे मगर हर बार उसने इस नफ़सानियत को बवाने में कामयाबी हासिल की थी। वह माका बर्जे का बाइसछाक बादमी था। वह मर खाना पसन्द करता बजाय इसके कि अमृतराय की निस्वत कोई पसठबयागी करके अपना मतलब निकाले। यह भी न था कि वह अमृतराय से सच्ची इमदर्दी ब बम छाबी का बर्षाव न करता हो। नहीं बरअक्स इसके वो इर मीले पर अमृत राय को तसपक्षी ब विमासा दिया करता था। बखरर उसी की मार्छत दोनों दीवाइयो में तोहफे-तहाइफ़ भेजे गये थे। अतो-क़िताबत उसी की मार्छत हुमा करती है। यह मीले ऐसे थे कि बबर दीनानाथ चाइता तो बहुत खस्य चाहेबालों में निआक़ पैदा कर देता। मगर ये उसकी फ़िखरत से घईव था।

बाबू भी जब अमृतराय ने अपने इरादे पाइरि किये तो दाननाथ ने बिका कम-ओ-कास्त सब बिकर्रों बयान कर दीं। उसका बिस कैसा उछस्रता था जब वो ये खयाल करता कि अब अमृतराय मेरे लिए खपाइ खाली कर रहा है। मगर ये उसकी छराफ़्त थी कि उसने अमृतराय को उनके इरादे से बाबू रखना चाहा था। उसने कहा था कि बबर तुम रिअ्त में-में के जुमरे में शामिल होमे तो प्रेमा रो-रोकर जान दे बेवी मगर अमृतराय ने एक न सुनी। उनका इरादा मुस्तक़िठ था जिसको कोई तरगीब दिया नहीं सकता थी। दाननाथ उनके मिजाज और धुन से खूब बाहिफ़्त थे। समसत गये कि अब ये उड़ते हैं और चड़कर रहेंगे। चुनाये अब उनको

## हमधूर्मा व हमसबाब

कोई बजह न मासूम हुई कि मैं बसल बाक्या बयान करके क्यों न प्यारी प्रेमा के शौहर बनने की कोशिश करें। यहाँ से खाना होते ही वो अपने घर पर आये और कोट-पतलम उतार धीमे-सादे कपड़े पहन साठा बबरी-प्रसाद साहब के बीसठबाने की तरफ खाना हुए। इस बकल उनके दिल की वो कैफियत हो रही थी उसका बयान करना मुश्किल है। कभी तो खयाल आता कि कहीं मेरी यह हरकत पल्लवहमी का बाइस न हो जाय लोग मुझको हासिय व बदब्याह समझने लगे। फिर क्या आता कहीं अमृतराम अपना इरादा पलट वे और क्या तान्मुब है कि ऐसा हो जाये तो फिर मेरे लिए डूब मरने की आ होगी मगर इन खयालात के मुकाबिले ये जब प्रेमा की प्यारी-प्यारी सुरत गबर्ते के सामने आ गयी तो ये तमाम भीहाम रफा हो गये और बम-बे-बम में वह साठा बबरीप्रसाद के मकान पर बैठे बाते करते शिबामी दिये।



## हसद बुरी बला है

भावा बरहीप्रसाद साहब अमृतदास के बाल्य मरहूम के दोस्तों में से और खाम्बानी इकितदार, तमम्बुक और एबाब के लिहाज से अगर उन पर कौडियत न रखते तो छो हेटे भी न थे। उन्होंने अपने दोस्त मरहूम की बिन्याही ही में अमृतदास को अपनी बेटी से छिपे मुन्तखब कर सिमा बा और अगर वो दो बरस भी बिन्या रहते तो बेटे का छेहूट बेब सेते। अगर बिन्याही ने बका न की चल बसे। हाँ बने मर्म उनकी बाबिरी नसीहत ये थी कि बेटा मैंने तुम्हारे बास्ते बीबी तजबीब की है उससे बरूर सारी करणा। अमृतदास ने भी इसका पक्का बाबा किया बा अगर इन बाबिरी को बाब पाँच बरस बीठ चुके थे। इस बसमा में उन्होन बकाकत भी पास कर भी थी और अच्छे खासे अंग्रेज बन बीठे थे। इसी तजबीबे तर्जे मुबाधरत ने पब्लिक की मजदूरों में उनका बिकार कम कर दिया था। बर अस इसके साना बरहीप्रसाद पफके हिन्दू से छाल मर बाबिरी मास उनक यहाँ भागवत की कबा हुआ करती थी कोई दिन ऐसा न जाता कि मंजारे में छी-पचास छाधुबों का बेबनार न बनता हो। इन फ्रम्याबियों ने उनकी सारे शहर में हरबिल-जबीब बना दिया था। हर रोड अमस्सबाहू को पैदल गया थी के स्नान को बाया करते और रास्ते में बितने बाबमी उनकी बुबुर्माना मूत बेसते सरे नियाब लम करते और बापस में कानाफुस्की करते बकत हुआ करते कि यह सपैबों का दस्तगीर हमेशा बूँ ही छरसम्ब रहे।

वो मुंशी बरहीप्रसाद अमृतदास की अंग्रेजियत को बिस्वत ब दिखारा

की नियाहों से देखत व और कई बार उनको समझाकर हार भी चुने वे मगर बुँकि उनको अपनी बात से बड़ीब बेटी प्रमा के लिए मूलतब कर चुके व इच्छाए मजबूर वे क्योंकि उनको उस शहर में ऐसा होनहार, सुसरु बाबबर और बहुते-सर्वत बामाद नहीं मिळ सरता वा और दूसरे शहर में वो अपनी कड़की की घादी किया नहीं चाहते थे। इसी समाक से कि कड़की समुत्पन्न की मर्जी के मुआकिल हो उसको बघेबी व कारसी और हिन्दी की बोड़ी-बोड़ी तालीम दी ययी थी और उन इस्तसाबी कमाकात पर क्लिउरती मतिपात गोपा सोने में सुहाबा थे। सारे शहर की बहोबीरा और मुत्तारस मुत्तकिकुक्त बयाल थीं कि ऐसी हबीन व सुधरु कउकी आज तक देखने में नहीं आयी। और जब कमी वो सिगार करक दिती तकरीब में जाती थी वो हबीन औरतें बाबबूर इस्तद के उसके वरों तक कीर्ने बिस्तती थी। इम्हा-बुम्हन रोगों एक-दूसरे क आसिजे पार थे। इपर एक साल से रोगों में खतो-किताबत भी होने लगी थी। वो मुपी बररीमसाद साहब इस बिठिनाब के सलत बरखिलाऊ के मगर अपने बड़े बेटे की सिप्ररिष से मजबूर रहते वो नौजवान होने के बाइस इन चाहने वालों के खयालात का कुछ बराबा कर सक्ता वा।

इस घादी का खर्चा अर्से से सारे शहर में वा। जब जब मलेमानम इकट्ठा बैठते तो बातचीत होने लपती कि क्या लाला साहब अपनी बेटी की घादी उस ईसाई से करेये? क्या बूसरु बर नहीं है? मगर जब उनके बयबरबाले बरागों को पिनते तो मापूस हो जाते। जब घादी के दिन बहुत कपीब वा यये थे। लाला साहब ने समुत्पन्न को मजबूर किया वा कि अब मैं कुछ रम का और मेहमान हूँ मेरे बीते-बी तुम इस जवाहर की अपने कब्जे में कर लो। समुत्पन्न ने भी मुस्वीरी जाहिर की थी वो ब बाद वाप लिया वा कि मैं बेमाली रस्मियात में से एक थी व अवा कर्किया। लाला साहब ने तुबन् व करहन् इस बात को भी मजबूर कर लिया वा। तीबारिया ही रही थी। बरूमठन् आज लाला साहब को मोतबर खबर दिती कि समुत्पन्न ईसाई हो गया है और किसी देम से घादी किया चाहता है।

जैसे किसी हरे भरे वरुण पर बिजली गिर पड़ी यही हाह काका साहब का हुआ। पीरानासाली की बजह से माया मुबमहिल हो रहे थे ये खबर मिली तो उनके बिल पर ऐसी चोट लगी कि सदमे को बर्हास्त न कर सके और पछाड़ा बाकर गिर पड़े। उनका बेहोश होना था कि सारा भीतर-बाहर एक हो गया। तमाम नीकर-बाकर, खेड बो-अकारिक इधर उधर से जाकर इकट्ठ हो गये। क्या हुआ? क्या हुआ? जब हर खसब कहता फिरता है कि अमृतराय ईसाई हो गये हैं उसी सदमे से काका साहब की ये हाहल हो गयी है। बाहर से दम के दम में अन्दर खबर हो गयी। काका बरवीप्रसाव की बीबी बेचारी बरसे से बीमार थी और उन्हीं का इसरार था कि बेटी की शादी जहाँ तक बन्द हो जाय अच्छा है। जो पुराने खयालात की औरत थी और खाली-भ्याह के तमाम मरुसिम और बेटी की हया व धर्म के पुराने खयालात उनके दिख में भरे हुए थे मगर जब से उन्हीने अमृतराय को एक बार छहन में देखा सिमा था उसी वकत से उनको ये गुन खबर थी कि मेरी बेटी की शादी हो तो उन्हीं से ही। बेचारी बीठी हुई अपनी प्यारी बेटी से बर्से कर रही थी कि बअजतन् बाहर से यह खबर पहुँची। गुनते ही तो माँ के तो होश उड़ गये। जो बेचारी अमृतराय की अपना बामाद समझने लगी थी। और कुछ तो न हो सका अपनी बेटी को मले लगाकर बार-बार रोने लगी और प्रेमा भी बाबबू हवार कोशिस के खल न कर सकी। हाय उसके बरसों के अरमान इकबारगी लार में मिल गये! उसको रोने की ताब न थी। एक हीलदिल-सा हो गया। अपनी माँ को छोड़ जो बीड़ी हुई अपने कमरे में आयी चारपाई पर गिर पड़ी और उसके मूँह से सिर्फ इतना निकला — नाउयब कैसे जिऊँगी! यह कहते-कहते उसके भी होग जाने रहे। तमाम बर की लीडिया इकट्ठी हो गयी। पला सला जाते सला। अमृतराय की ऊर्धी हिमाहल पर भीतर-बाहर अज्जोस किया जा रहा था। प्रेमा के माई साहब की इस बात का इकबारगी यकीन न हुआ मगर भूँकि ये बात बाबू बामनाथ की खबानी सुनी थी और बामनाथ की बार्ता को हुमेसा से सच मानते आये थे दाक का कोई मीजा न

रह गया। हाँ इतना बलबलता हुआ कि जरा से बाह्ये ने हवाओं बबानों पर धारी होकर और ही घुलत बकिततार कर ली थी। बाननाय ने सिर्फ इतना कहा था कि बानु अमृतपय की नियत कुछ बाबाबोछ मामूम होती है। जो रिक्कम की तरफ मुके हुए हैं। इसी एक साथी-सी बाठ को कासा बरतीप्रसाद ने ईसाइयत समझ लिया था और बर मर मे इसी पर कोह राम मचा हुआ था।

जब इस हापसे की लबर मुहस्ते मे पहुँची तो हमबदी के सिहाब से बहुत-सी औरते इकट्ठी हो गयी मयर किसी से कोई इलाज न बन पड़ा। बकजतम् एक नीमबाम औरत जाती हुई बिलामी थी। उसको देखते ही धारी औरतों ने मुक मचाया — जो पूर्वा मा गयी। जब बकपी बहुत बन्द होस में आयी जाती है।

पूर्वा एक बाह्यपी थी। बरछ बीस एक का सित था। उसकी धारी पसतकुमार से हुई थी जो किसी बपबकी दफ्तर मे बतक थे। दोनों मियाँ बीबी पकोस ही में रहते थे और बस बने दिन को जब पबित जी बपतर बने जाते तो पूर्वा उनहाई से पबराकर प्रेमा के पास बली जाती और दोनों में राबो-नियाब की बातें धाम तक हुआ करतीं। पुनाचे दोनों सखियों में हब बने की मुहबत हो गयी थी। पूर्वा जो एक बपीब बराने की लड़की थी और धारी भी एक मामूसी जगह में हुई थी मयर कितरतनु निहायत ससीबामन्द बुर-अहम संबीया-मिबान और हरबिकबबीब औरत थी। उसमे जाते ही तमाम औरतों से कहा — हट जाओ अभी हम के दम में उनको होय जाया जाता है। मजमा हटाकर उसने औरत प्रेमा को बतरियात सूबाने केवड़े और गुबान का छीटा मुँह पर बिलाया बाहिस्ता-बाहिस्ता उसके तकने सहसाये। धारी बिड़कियाँ सुकना थीं। जब बिमाप पर सदीं पहुँची तो प्रेमा ने बाँसँ खोल ली और इधारे से कहा — पुन लोप हट जाओ मैं बकपी हूँ।

औरतों के जान मे जान आयी। सब अमृतपय को कोसती और प्रेमा के सोहाय बड़ने की बुबा करती अपने-अपने बर को बिभापी। सिर्फ पूर्वा रह गयी। दोनों महेत्तियों में बाँसँ होने लयीं।

पूर्णा — प्यारी प्रेमा अर्धें लोखो ये क्या मठ बना रक्की है ?  
प्रेमा ने निहायत गिरी हुई आबाब में जवाब दिया — हाय सती  
मरे तो सब अरमान ज्ञान में मिस गये।

पूर्णा — प्यारी ऐसी बातें न करो तुम जरा उठ थो बैठो। ये।  
अब बताओ तुमको ये खबर कैसे मिली।

प्रेमा — कुछ न पूछो सती मैं बड़ी बबकिसमत हूँ (रोकर) हाय  
दिल भर जाता है मैं कैसे बिऊँगी।

पूर्णा — प्यारी जरा बिस को ढाड़स बो। मैं जनी सब पता छपाये  
देती हूँ। बाबू अमृतराय के निस्वत जो कुछ कहा गया है वो सब झूठ है  
किसी अनवेक ने यह पाखण्ड फैलामा है।

प्रेमा — सती तुम्हारे मुँह में जी-सककर। ईस्वर करे, तुम्हारी  
बातें सब सच हों मगर हाय कोई मुझको उस जालिम से एक बम क  
लिए भिजा दे। हाँ सती एक बम क लिए उस कटकलेज को पा जाऊँ  
तों मेरी बिन्यमी सुफस हो जाय फिर मुझे मरने का यक़सोस न रहे।

पूर्णा — प्यारी ये क्या बहकी-बहकी बातें करती हो। बाबू अमृतर  
राय ने हरगिब ऐसा न किया होगा। मुमकिन नहीं कि वो तुम्हारी मुह  
खत न करें। मैं उनको खूब जानती हूँ। मैंने अपने घर के लोपों को  
बार-बार कहते हुए सुना है कि अमृतराय को अगर बुनिया में किसी से  
मुहम्बत है तो प्रेमा से।

प्रेमा — प्यारी अब इन बातों पर बिस्वास नहीं आता। मैं कैसे  
जानूँ कि उनको मुमसे मुहम्बत है। आज चार बरस हो गये हाय मुझे  
तो एक-एक दिन काटना डुमर ही जाता है और वहाँ कुछ खबर ही मही  
होती। अगर मैं खूदमुक़्तार होती तो अब तक हमारा रब गया  
होता। बनी उनको देखो कि छाकों से टाकते जैसे आते हैं। प्यारी पूर्णा  
मुझे बाबू बहुत उनक इस टाकमटोल पर ऐसा मुस्सा आता है कि तुमन  
क्या कर्हू मगर यक़सोस दिब कम्बहत बेहया है।

यहाँ अभी यही बातें हो रही थीं कि बाबू कमलाप्रसाद (प्रेमा के  
भाई) कमरे में दाखिल हुए। उनको देखत ही पूर्णा ने भी बूँबट निकाल

## इनजुर्मा व हमसनाब

मी और प्रेमा ने भी अट आँखों से आँसू पोंछ लिये। कमलाप्रसाद ने बाते ही कहा — प्रेमा तुम भी कभी नादान हो। ऐसी बातों पर तुमको यकायक यक्रीण क्योंकर आ गया ?

इतना सुनना या कि प्रेमा का बेहतर बख्साग ही गया। छत्रों पुत्री से आँखें बमफने छपीं और पुर्जा ने भी आदिस्ता से उसकी एक डोपनी बबायी। अब दोनों मुस्तजिर हो गयी कि ठाबी खबर क्या मिलेगी।

कमलाप्रसाद — बात सिद्ध इतनी थी कि अभी कोई दो बच्चे हुए, बाबू हाननाब तपरीक साने थे। मुझसे और जमसे बाते हो रही थीं। अचानक तक्रार में धादी-आह का बिक छिड़ गया तो उम्हाने कहा कि मुझे तो बाबू अनृतगम के इरादे इस साल भी मुस्तकिस नहीं मालूम होते हैं। वो घानव रिफार्म पार्टी में बाबिक होनेवाले हैं। अब इतनी-सी बात का दोनों ने बर्षपड़ बना लिया। साका भी खबर बेहोस होकर गिर पड़े। अब अब तक उनको सम्हानूँ सम्हानूँ कि सारे घर में ईसाई हो गये ईसाई हो बने का मुझ मज गया। ईसाई होता क्या कोई बिलखी है ? और फिर उनको खबरत ही क्या है ईसाई होने की ? पूजा-पाठ वो करते ही नहीं सपाब व कबाब से उनको कतई नफरत नहीं है तो कुछ पूँ ही-सी रघबत है। बँगले में रहते ही हैं बायर्नी का पकाया बाते ही हैं कूत-बिचार मापते ही नहीं तो अब उनको क्या कुत्ते ने काटा है कि सामकाह ईसाई होकर नरकू बनें। एठी बेसिरपैर की बातों पर यकीन न करना चाहिए। लो, अब रज-ओ-कुलफ़्त की वो डालो। हँसी पुत्री बातचीत करो। मुझे तुम्हारे इस रोने-बीने से बहुत अफ़सोस हुआ। ये कहकर बाबू कमलाप्रसाद बाहर खके गये और पुर्जा ने हँसकर कहा — मुना कुछ ? कहती थी कि ये सब लोगों ने पाण्डक कैलाया है लो अब मुँह मीठा करामो। प्रेमा ने छत्रों मसरीठ से पुर्जा को सीने से ब्याकर खूब बबाया बसके बखमारों के बोदे लिये और बोली — मुँह मीठा हुआ या और लोमी।

पुर्जा — इन पिठाइनों से बाबू अनृतगम का मुँह मीठा होगा।

ममर सबी इस मनहूस खबर ने तुमको धोड़ी देर तक परेधान किया तो क्या तुम्हारी ऊर्ध्व क्षुब्ध मयी। सारे मुहल्ले में तुम्हारे बेहोश हो जाने की खबरें उड़ रही हैं और नहीं मालूम उसमें क्या-क्या काट-छाँट की गयी है। बर्ष, अब तो न होगी दून नौ। अब मात्र ही में अमृतघन को सब बातें लिख भेजती हूँ। देखो कैसा मजा जाता है।

प्रेमा — (शर्मकर) अच्छा रहने बीजिप ये सब दिखनी। ईश्वर जाने ममर तुमन आज की कोई बात कही तो फिर तुमसे कभी न बोलूँगी।

पूर्णा — बला से न बोलोगी कुछ मैं तुम्हारी आशिष तो नहीं बस इतना ही लिख दूँगी कि प्रेमा

प्रेमा — (बात काटकर) अच्छा लिखियेया तो देखूँगी। पण्डित जी से कहकर वह दुर्घट कराऊँगी कि सारी शराउ भूल जाओ। पण्डित जी ने तुमको सोच बना रक्खा है बर्ना तुम मरी बहन हींती तो पूब ठीक बनाती।

सभी बानों सखियाँ भी भरकर क्षुब्ध न होने पायी थीं कि बातमान ने फिर बेवफाई की। बादू कनकाप्रताप की बीबी अपनी मनप से बुधा बास्ते को जबा कटती हैं। अपने मास-समुर हता कि धीहर से भी नाराज रहतीं कि प्रेमा में ऐसे कौन से चाँब लपे हैं कि सारा कुनबा उन पर क्रिया होने को तैयार है। मुझमें और उनमें फर्क ही क्या है? यही न कि वह बहुत मोटी हैं और मैं सतनी मोटी नहीं हूँ। शकल-बो-मूरत मेरी उनसे खराब नहीं। हाँ मैं पढ़ी लिखी नहीं हूँ क्या मुझे नीकरी-आकरी करना है। और न मुझमें कस्बियों के-से कपड़े पहनने की आदत है। ऐसी बेचैयत लड़की बनी शारी नहीं हुई मगर आपस में बिट्ठी-वत्तर हीठा है तस्बीरें जाती हैं ठोहके जाते हैं, हरजाइयों में भी ऐसी बेसमी न होगी और ऐसी ही कुलबन्ती को सारा कुनबा प्यार करता है। सब बंधे हो गये हैं।

इन्हीं अवसाह से वो शरीर प्रेमा से जला करती थीं। बोलती थीं तो तंडन्। ममर प्रेमा अपनी क्षुब्धिबाबी ने उनकी बातों की ध्यान में नहीं लाती थी। हतुरुबसा उनको गुण रचने की कोसिस करती थी।

## हमदुर्मा व हमसबाब

मात्र जब उसने मुना कि अमृतपाय ईताई हो गये हैं तो जाने में पूनी न समायी। बाबू कमलाप्रसाद ज्यू ही घर में आये उसने उनसे सच्ची हम बर्षी बाहिर की। बाबू साहब बेचारे बीबी पर धँसा बे। रोब ताने मुनते से मगर सब बर्दास्त करते से। बीबी की जगाम से हमदर्दिना बातचीत मुनी तो सुन गये। तनाम बाह्या जो कुछ शानमाच से मुना का बेकम जो-कास्त बयान कर दिया। उस बेचारे को मालूम न था कि मैं इन बदन बड़ी प्रकृती कर रहा हूँ। मुनाबे बहु बपती बहुत की तयारुधी करके बाहर आये तो सबसे पहला काम जो उन्होंने किया वो ये था कि बाबू अमृतपाय से मुलाकात करके उनका इशिया लें। वो तो उबर रवाना हुए इतर उनकी बीबी साहबा जगामा-जगामा मुस्कराती हुई प्रेमा के कमरे में बापी और मुस्कराकर बोली — क्यों प्रेमा आज तो बात पूट गयी।

प्रेमा ने यह सुनकर समझकर घर मुका लिया मगर पुर्षा बोली — सारा माँका पूट गया। ऐसी भी कि क्या कोई लड़की मरों पर किससे। प्रेमा ने लजाते हुए जबाब दिया — जामो तुम लोगों की बछा से। मुससे मत जलतो।

मात्र — (जरा संजीवनी से) नहीं-नहीं विस्मयी की बात नहीं है। मरुए हमेशा से कठकलेजे होते हैं उनके दिल में मुहम्मद हीवी ही नहीं। उनका जरा-सा सर बमके तो हम बेचारियाँ जाना-पीना त्याग देती हैं। मगर हम मर ही ज्यू न जारें उनको जरा भी परबाह नहीं होती। सब है मर का कलेजा काठ का।

पुर्षा ने जबाब दिया — मापी तुम बहुत ठीक कहती हो। मरें सबमुच कठकलेजे होते हैं। मेरे ही मरें देखो महीने में कम से कम दस बारह दिन उस मुए साहब के साथ बीरे पर खते हैं मैं तो अकेले मुसजान घर में पड़े-पड़े कुड़ा करती हूँ वहाँ कुछ खबर ही नहीं होती। पूछती हूँ तो कहते हैं पोता-माता औरतों का काम ही है। हम रोवें-मारें तो दुनिया का काम कैसे बने।

मापी — बीर क्या। पोया दुनिया बढेके मरों ही के जाने तो



धनी है। मेरा बस जैसे तो इन मर्दों की तरफ झपट उठाकर भी न देखूँ। जब आज ही देखो, बाबू अमृतराय की निश्चल बारा-ची बात फैल गयी तो रानी ने अपनी क्या गत बना डाली। (मुस्कराकर) इनकी मुहम्मद का तो ये हास है और वहाँ चार बरस से घाबी के लिए हीला-हवाला करते जैसे जाते हैं। रानी तब्रन न होना तुम्हारे बात पर उठ जाते हैं, मगर सुनती हूँ वहाँ से धामर ही किसी बात का अभाव जाता है। ऐसे आदमी से कोई क्या मुहम्मद करे। मेरा तो जमसे भी जलता है। क्या किसी को अपनी सड़की घाटी पड़ी है कि कुएँ में फेंक दे। बच्चा से कोई बड़ा माकवार है बड़ा कुबसूरत है, बड़ा इस्मबाला है जब हमसे मुहम्मद ही न करे तो क्या हम उसके बन-बीकत को लेकर चार्टें। दुनिया में एक से एक नाम पड़े हैं और प्रेमा जैसी दुस्मन के बास्ते इन्हों का नाम। प्रेमा को धामी की यह बातें निहायत मामवार मुजरीं। मगर पासे अदब से कुछ न बोझ सकी। हाँ पूर्णा ने जबाब दिया—महाँ धामी तुम बाबू अमृतराय पर बड़ा कुस्म कर रही हो। मुझे कुब माकूम है कि उनको प्रेमा से सखी मुहम्मद है। उनमें और इंसारे मर्दों में बड़ा ऊँच है।

धामी—पूर्णा अब मुँह न खुलनाओ। मुहम्मद नहीं सब करते हैं। माना कि बड़े अपेजीदा हैं, कमसिनी में घाबी करना पसन्द नहीं करते। मगर अब तो बीनों में से कोई कमसिन नहीं है। जब क्या बूढ़े होकर व्याह करे। असल बात ये है कि घाबी करने की नियत ही नहीं है। टासमटोल से काम निकालना चाहते हैं। यही व्याह के सख्यन है कि प्रेमा ने जो तसबीर मेजी थी वो कल पुब-पुब करके पीरों तसे कुचल डाली। मैं तो ऐसे आदमी का मुँह न देखूँ।

प्रेमा ने अपनी भावज के मुस्कराकर बात करते ही समझ लिया था कि खीरियत नहीं है। जब यह मुस्कराती है तो खर कोई न कोई भाव कमाती है। वो उनकी गुफ्तगू का बदला देकर सहमी जाती थी कि नारायण खीर कीजो। धामी की बात तीर की तरह सीने में चुभ गयी। हजटा-बकका होकर उसकी तरफ टाकने लगी। मगर पूर्णा को बिलकुल धकील न आया बोली—ये क्या कहती हो धामी! भइमा अभी आय

## हमधुर्मा व हमसपाव

के उन्होंने इसका कुछ भी बिक्रम-मजकूर नहीं किया। पहली बात की तरह ये भी झूठी होगी। मुझे तो यकीन नहीं आता कि उन्होंने अपनी प्रेमा को तस्वीर के साथ ऐसा चमूक किया होगा।

सामी — तुम्हें यकीन ही न आये तो इसका क्या इलाज। ये बात तुम्हारे मइया खुद मुझसे कह रहे थे। और भी धक रखा करने के लिए वो बाबू अनूठपय के यहाँ गये हुए हैं। अगर तुमको अब भी यकीन न आये तो अपनी तस्वीर माँ भेजो देखो क्या जबाब देते हैं। अगर ये खबर झूठी होगी तो वो जरूर तस्वीर भेज देंगे या कम-अक-कम इतना तो कहेंगे कि ये बात झूठी है।

पूर्वा जामोस ही पसी और प्रेमा के मुँह से आहिस्ता से एक आह निकली और उसकी आँसों से माँसुओं की सकिमा बहने लगी। सामी साहबा के चेहरे पर तनद की यह हालत देखकर शमुफ्तगी तमूवार हुई। वो बर्हा से जटी और पूर्वा से कहकर जरा तुम यहीं रहना मैं अभी अभी अपने कमरे में बसी आयीं। आइये मैं अपना चेहरा देखा — सोच कहते हैं प्रेमा खूबसूरत है। देखूँ एक हस्ते में वो खूबसूरती कहाँ जाती है! जब यह जन्म मरे कोई दूसरा तौर ठेक रकभूँ!

बानू अमृतराय रात भर करबटें बरसते रहे। जूँ जूँ वह अपने गये हाथों और गये हीसलों पर घीर करते तूँ तूँ उनका दिल और मजबूत होता जाता। रीघन पहलुओं पर घीर करने के बाद जब उन्होंने तारीफ़ पहलुओं को सोचना शुरू किया तो तबीयत खरा हिचकी। प्रेमा से ताल्लुक टूट जाने का खिशा हुआ मगर जब उन्होंने सोचा कि मैं अपनी छीम के लिए अपने धरमानों का खून नहीं कर सकता तो ये खिशा भी खत्म हो गया। रात तो किसी तरह कानी सुबह होते ही हाथी का कपड़े पहन और बाइसिकिल पर सवार हो अपने दोस्तों की तरफ़ रुक किया। पहले बहस मिस्टर हजारीलाल बी ए एक एक बी क यहीं दाखिल हुए। बकील साहब निहायत जाला जवाबदारी के आबमी से और रिफ़ार्म की कोशिशों से बड़ी हयबती रखते थे। उन्होंने जब अमृतराय के इराबे और उन पर कारबन्ध होने की तबतीजें सुनीं तो बड़े खुस हुए और फ़रमाया — आप मेरी जानिब से मुतमइन रहिए और मुझे अपना सच्चा हमदर्द समसिए। मुझे निहायत मसरत हुई कि हमारे शहर में आप जैसे ज़ाबिस सक्स से इस बारे गरी को अपने जिम्मे किया। आप जो जिबमत मेरे सपुर्ब करें मुझे उसके बजा जाने में मुतसक पसोपेश न होवा बल्कि मैं उसको बाइसे फ़य समझूंगा। अमृतराय बकील साहब की बातों पर लट्टू हो गये तहे दिक् से उनका खुशिया बसा किया और खुस होकर कहा कि अच्छा सुपुन हुआ। इन शहर में एक हमलाही अनुमन कायम करने की स्वाहिदा जाहिर की। बकील साहब ने हमको

पहले किया और मुबारकत का सच्चा बाबा ऊरमाया और बाबू बमूत राम कुप-कुप बाबू बामनाथ के दीलतखाने पर जा बसके। बामनाथ बैठा हम पहले बड़े बड़े हैं, बमूतराम के सच्चे दोस्तों में से। उनको देखते ही बड़ी गर्मबोसी से मुताअर किया और पूछा — क्यों बलाब क्या इरादे हैं ?

बमूतराम ने संजीदगी से जबाब दिया — इरादे में आप पर सब बाहिर कर चुका हूँ। और आप जानते हैं कि मैं दुकमुल्यकीम आदमी नहीं हूँ। इस बदन में आपकी खिदमत में से पूछने भाया हूँ कि इस कारे और में आप मेरी कुछ मदद कर सकते हैं या नहीं।

बामनाथ की उम्मीदबदलियों के लिए बकरी या कि बो इस तहरीक में घटीक न हों बनी काला बदरीप्रसाद प्रीरन उससे बहपुमान हो जायेंगे क्योंकि उसके पास न बो खाम्बानी अजमत थी न बो जाह-बो-तमसुन त्रिस पर बमूतराम को अरु था। इसलिए उसने सीबकर जबाब दिया — बमूतराम तुम जानते हो कि तुम्हारे हर काम से मुझको हमदर्दी है मगर बात ये है कि अभी मेरा घटीक होना मेरे लिए सडन मुदिर होया। मैं अपने और पैसे से मदद करने के लिए तैयार हूँ मगर पीपीश तीर पर। अभी इस तहरीक में एतानिया घटीक होकर मुझसात उठाना मुनासिब नहीं समझता बमुसन् इस बजह से कि मेरी तिरकत से इस बंमुजन की बरा भी तकबियत पहुँचने की उम्मीद नहीं है।

बाबू बमूतराम ने उनकी सलाह पसन्द की और उनसे हमदार का बारा लेकर अपनी कामयाबियों पर खुम होते हुए निस्तर बार० की घर्मा के दीलतखाने पर पहुँचे। साहिबे मीमूऊ बिरहजन से और अपने कृषण बाला और अजमत के एतबार से घहर के मुअरिखजीन में समझे पाये थे। उनके मजहूरी और इज्जतारी खयालात से अभी तक बमूत राम की बरा भी बाक्रीकियत न थी मगर अब जहूँनि इस बंमुजन की तबदीर बेम की दो पंडितजी उछन पड़े और ऊरमाया — निस्तर बमूतराम, मुझे तुम्हारे खयालात से निहायत मसरत हुई। मैं बुर इसी तरह की एक तबदीर बहुत बल्य पैस खरलेबाबा या भापने मुझे कुंठ

बे दी और मुझे कामिस उम्मीद है कि आप इस कारे अमीन को मेरी निश्चिन्त में बेहतर तरीके पर अंजाम देंगे। मुझे इस अनुमति का मेम्बर उम्मीद है।

आज अमृतनाथ को पंडितजी के महीं ऐसी बारीक कामवादी की उम्मीद न थी। उन्होंने सोचा था कि पंडितजी अगर उम्मीद इच्छा न करेंगे तो अभी मुकुन्दजी वगैरह का बकर उद्योग करेंगे मगर पंडितजी की गर्म हृदयों व दिव्यशक्ति ने उनका हौसला और भी बढ़ाया। अमृतनाथ यहाँ से निकले तो वह अपनी ही मजदूरों में दो इंच ऊँचे मामूम होते थे। यहाँ से सीधे कामवादी के बोम में आँदते हुए एन जी अवरवाला साहब की निश्चिन्त में हाजिर हुए। मिस्टर अवरवाला मसाला अच्छी अंग्रेजी इस्तेबाद रखने के बजाने सस्कृत के भी अर्थ बालिम के और आस-ओ आस में उनका बड़ी इच्छा थी। उन्होंने भी अमृतनाथ की उम्मीद से सच्ची दिक्कतों की। अमृतनाथ जी बजते-बजते अमृतनाथ सारे सहर के सरवरबाबुर्वा व नयी रीघनीवाले असाहब से मुलाकात कर आप और कोई ऐसा न था जिमने उनके अवरवा से निश्चिन्त न बताया हो या मजदूर देने का बारा न किया हो।

तीन बजे के बजत मिस्टर अमृतनाथ के बंगले पर एक ऐसे व्यक्ति के इनफार्म की तैयारियाँ होने लगी जो अनुमति का बाकायदा तौर पर मुम्बई करे। उसके इच्छा के लिए बसुर उम-अमल तैयार करे और उसके अवरवा ओ मकासिद पब्लिश के रूप में पैस करे। कामवादी के बोम में लूब तैयारियाँ हुई अर्थ-गुरुवा कजाये बजे भाङ्ग-कानून में व कुसियाँ सजाकर धरी गयीं। हाजिरी के पूर्व-ओ-मोघ का भी इच्छा किया गया और इन तरबुदात से फुर्मत पाकर अमृतनाथ उनके मुँहबिह हो बैठे। दो बज गये तीन बज गये मगर कोई साहब तपरीक न लाये। चार बजे मगर किसी की सबादी नहीं आयी हाँ इज्जियर साहब के पाम से एक नौकर यह सवेसा सहर आया — इस बजत में हाजिरी से इन्फार्म है। अब तो अमृतनाथ का इच्छिन्त बड़ने लगा। अर्थ-अर्थ देर होती थी उमका दिन बैठ जाता था कि कहीं कोई साहब न

बाये तो मेरी सख्त तबहीक होगी और चारों तरफ नाबिम होना पड़ेगा।  
 बाहिर इतबार करते-करते पाँच बज गये और अभी तक कोई साहब  
 नबर न आये। तब तो अमूठराय को यह कामिल सखीम हो गया कि  
 हजरत मे मुझे बोका दिया। मुंसी पुरुबाटी सास से उनको बड़ी उम्मीद  
 थी। चुनाबे अपना आदमी उनके पास बीबाया। एक लम्हे के बाद  
 मामूम हुआ कि वह नहीं है, पोसो खेसने तसरीक से गये। इस बकत तक  
 छे बने और जब इस बकत तक भी कोई साहब न आये तो अमूठराय  
 निहायत दिसधिक्स्ता हो गये। कुछ गुस्ता कुछ नाकामी कुछ अपनी  
 ठीहीन और कुछ हमबदों की सर्भमेही ने उनको ऐसा परीखान किया कि  
 घरे घाम चारपाई पर सेट रहे और लबे सोचने — कहीं मुसको नादिम  
 तो न होना पड़ेगा। अख्तोस मुसे इन हजरत से ऐसी उम्मीरें न थी।  
 अगर न जाना ना तो मुससे छाफ-साख कह दिया होता। जब कल तमाम  
 शहर में ये बात मसहूर हो जागगी कि अमूठराय तमाम रईसों के घर  
 बीइते फिरे मगर कोई उनके दरबाजे पर बात पूछने को भी न गया।  
 में जससे की तजवीरें न करता मुस की नबामत तो न ठठमा पड़वी।  
 बेचारे इन्हीं तफनकुरत में छोटे चाठे बे। अभी नाजबान आबमी से  
 और पो बात के बनी और बुन के पूरे बे मगर अभी तक पबकिक का  
 सर्भमेही और मुजाबिनीन की नाहमबरी का तनुर्वा न हुआ ना और यह  
 तनुर्बेदापी भी बुदा जाने फियने पुरबोख बिसों को सर्भ कर बेटी है उनके  
 इरादों को भी इममपाने सगी। मगर ये बुबदिली के जयाकाठ महब एक  
 हम के लिए था गये बे। जब जरा जान की नाकामी का अख्तोस कम  
 हुआ तो इरादों ने और भी मुसकिस सूरत पकड़ी। जगने बिल को घम  
 सामा — अमूठराय पू इस जरा-जरा-सी बातों से मापूस या दिसधिक्स्ता  
 मत हो। जब तूने सखीन जठायी तो नहीं मामूम तुसको क्या-क्या कुर्बा-  
 निया करमा पड़ेगी। अगर तेरी हिम्मत बही रही तो कौमी काम  
 मुससे हो चुके। बिल को मजबूत कर और कमरे-हिम्मत को चुस्त  
 बाँध।

सिन्हा और बाग की खिचों में टहलने लगे। खिचनी छिटकी हुई थी हवा के भीरे-भीरे झोंके आ रहे थे सन्धे की मजमसी प्रथ पर बैठ गये और अपने इरादों के पूरा होने की तरकीबें सोचने लगे। मगर बहुत ऐसा मुहाला था और संबर ऐसा तबल्लुकबेज कि बेवक़्तियार ज़याल प्रेमा की तरफ़ आ पहुँचा। अपनी जब से तसबीर के पुर्वे निकाल लिये और खिचनी रात में उठे बड़ी बेरतक़ गौर से देखते रहे। हाय-हाय औ नाकाम अमृत राय तू क्योंकर बल्ल करेगा। हाँ जिसके फ़िराक़ में तूने ये चार बरस रो रोकर काटे हैं उसी के फ़िराक़ में सारी ज़िन्दगी क्योंकर काटेगा। हाय हाय वह गरीब जब तेरे इरादों का हाक़ सुनेगी तो क्या कहेगी। उसको तुमसे मुहम्बत है। कम्बलत वह तुम पर जान देती है, बेखता नहीं कि उधने बहुत जोसे मुहम्बत से कैसे भरे होते हैं। तब क्या वह तुसे बेबख़ा आसिम मक्कार न बतानेगी। क्या तू चाहता है कि अमृतराय जब से भी भक्ता बने अभी कुछ नहीं बिगड़ा। इन सब फ़िन्सुल समाकाल को छोड़ो अपने अरमानों को आक में न मिलाओ। दुनिया में तुम्हारे जैसे बहुत से पुरजोस नौजवान मौजूद हैं और तुम्हारा होना न होना दोनों बराबर है। आला बरदीमसाद मुँह लोठे बैठे हैं, सारी कर सो, प्यारी प्रेमा के साथ ज़िन्दगी के मखे कूटो। (बेकरार होकर) मैं भी कैसा नादान हूँ। इस तसबीर मे क्या बियाड़ा था जो आमलाइ इसको फाड़ बाका। ईस्बर करे अमी प्रेमा वह बात न जानती हो। बानू साहब के दिख में यही खयालात आ रहे थे कि खिदमतियार ने हाथों में एक खत बिया। बबराकर पुछा — किसका खत है? नीकर ने जबाब बिया — आला बरदीमसाद का आरमी लाया है।

अमृतराय ने कौपते हुए हाथों से खत सिन्हा को यह तहरीर थी —

बमुल्हाज़िबाए खनाब मुँठी अमृतराय साहब जाब नबाज़िसाहू —  
हमको मोतबर खराब से खबर मिली है कि अब आप सनातन धर्म से मुन्हरिफ़ होकर उस ईसाई अमात में बासिम हो गब हैं जिसको इस्ती से इसलाहे तमद्दुम सं मसूब करते हैं। हमको हमशा से यकीन है कि हमारा

हमधुर्मा व हमसबाब

तब मुआघरत बेर मुझइस के बहुकाम पर मबनी है और उसमें रहोत्ररत  
तमीपुर-ओ-तबदुल करनेवाले असहाब हमसे कोई ताल्मुक पीदा नहीं कर  
सकते।

बयटीप्रसाद

इस मुस्तसर तुम्हारे को अमूठराम मे दो बार पड़ा और उनके दिल मे  
बब एक बग पुरू हो गयी। तफ्सातियत बहूती भी कि ऐसी गाबनीत  
को हाम से न जाने दो अभी कुछ नहीं बियडा है। और जोये कौमी  
कहता ना कि जो इरपा किमा है उस पर ज्ञायम र्हो। खिस्गी बढरोडा  
है। उसको दूसरों पर कुबनि कर देने से बेहतर कोई तरीका उसको मुजा  
रने का नहीं है। कमी एक छठीक शक्ति आता ना कमी दूसरा छठीक।  
तझई का फ्रीला भी दो हुकूत लिखने पर पा। आखिर बहुत रहो कब के  
बाद अमूठराम मे बक्स से कायब निकाला और उस पर बनाव यों लिखा  
हुम्मे कौमी ने तफ्सा पर चलवा पा किना या—

किबला ओ काबा बनाव मुंशी बयटीप्रसाद साहब  
दाम इकबाछरू

इफ्तखारनामे मे सादिर होकर मुस्ताब किया। मुसको शरू अफ्मोस  
है कि आपने उत तम्मीर को जो मुहव से बंधी हुई थी मकायक मुन्बता  
कर दिया। मपर बुकि मुसको मकीम है कि हमारा तब मुआघरत बहुकामे  
बेर से मुतगाकिस है और जिसको चलती से सतावन बर्म कहते हैं वो पुपाने  
भीर बोधीदा बवाल के लोगों को जमाव है जो मबहब के परें में जावी  
अफाह हुंइते हैं। इसकिए हमको मजदूरत उससे किनाचकप होना पड़ा।  
मपर इस हैसियत में आप मुसको छर्बन्दी में कुबूल अरमारें तो और बर्ग  
मुसे अपनी बहकिस्मती पर अफ्मोस भी न होया।



बैठती होती तो पूर्णा से वह सुन्नत पड़वाकर सुनती और रोती। हाय उसने अपने बिस पर ये जूझ किये मगर बुबुआरी भी ऐसी निबाही कि जो उसी का हिस्सा था। उसने इस आखिरी छत के बाहर लम्बतण्य को एक छत भी न बिना। घर के लोग उसके इसाज में स्पया ठीकरियों की तरह चढ़ा रहे थे मगर कुछ फायदा न होता था। उसकी छापी की बातचीत भी कई जगह से हो रही थी। मुंशी बदरीप्रसाद साहब के जी में बार-बार ये बात आती कि प्रेमा को जमूठराव से ब्याह में मगर सुमातले हमसाया के खयाल से इरादा पकट बैठे थे। प्रेमा के साथ-साथ बेचारी पूर्णा भी मरीजा बनी हुई थी।

आखिर होसी का दिन आया। शहर में चारों तरफ कबीर और होसी की आवाजें आने लगीं। चौतरफा खबीर और मुसल उड़ने लगे। आज का दिन बेचारी प्रेमा के लिए बहुत आनमाहस का था। क्योंकि सबेरे ही से इराबतमन्नों के यहाँ से बनानी सवारियाँ आना शुरू हुई और उसको तुबान जो करहुन पुरतकस्तुऊ कपड़े पहन कर मेहमानों की बिया प्रत करनी और उनके साथ होसी बैसनी पड़ी। मगर हाय उसके चेहरे से आज जो हसरत बरस रही थी जो इससे पहले कभी नजर न आती थी। रङ्-रङ्कर उसके कमेजे में कसक पैदा होती रङ्-रङ्कर फुलें इतराव से दिस में बर्ब उठता मगर बेचारी बिसा जवान से उऊ किये सब कुछ सह रही थी। रोड अकेले में रोया करती थी बिससे कुछ तसदीन हो आया करती थी। आज मारे सर्म के रोये क्योंकि। सबसे बड़ी बिकरत ये थी कि रोड व रोड पूर्णा बैठकर तदाफ्ज़ीजामज बाते करके उसका दिल बहलाया करती। आज वो भी अपने घर त्योहार मना रही थी।

पूर्णा का मफाम पड़ोस में बाड़े था। उसके चौहर बसन्तकुमार एक निहायत हकीम-उच्च-बिबाज मगर चौकीन व मुहम्बतपित्रीर तबीयत के मौजवान थे। हर बात में उसी की बात पर अमल करते। उन्हींने उसको घोड़ा-सा पढाया भी था। अभी अभी हुए दो बरस भी न बीतन पाये व और म्यून्वू दिन गुजरते थे दोनों की मुतम्बत और लाबा होती जाती थी। पूर्णा भी अपने चौहर की आसिद्धे चार थी। अपनी भीनी मोली बातीं

और अपनी बिसरबादाता बदाओं से उनका धम धम्ट किया करती। जब कभी वो दीरे पर बने जाते तो वो रात भर बमीन पर पड़ी करबटे बदनती और रोती। पंडितजी ठीक रुपये से ज्यादा मुघाहिरेशार न से मर पूर्ण इस पर जाने थी और अपने को निहायत बुपाक्रियत औरत सयाक करती थी। पंडितजी तहतीसे बर के लिए बेइतहाह कोधिये करते सिर्फ़ इसलिए कि पूर्ण को बच्चे से बच्चे कपड़े पहनाये और बच्चे-बच्चे यहाँ से बापस्ता करें। पूर्ण हरीस न थी। जब पंडितजी उसको कोई तोहफा देते तो जाने में फूली न समाठी मर कमी उसने अपनी ब्याहियों को पंडितजी से बाहिर नहीं किया था।

हउ तो ये है कि सखी मुहम्बत के मुक़ारिले में पहनने-ओड़ने का चीक़ कुछ में ही-ता रह गया था। होली का दिन आ गया। आज के दिन का न्या पुछना। जिसने साक़ नर चौपड़ों ही पर बसर किया हो वो भी आज कई शम बुँडकर जाता है और सुगिया मगाता है। आज कोय लैपाटी में धाय बेलते हैं। आज के दिन रज करना गुनाह है। पंडित बनम्बुमार को घासी से बाप यह पूसरी होली थी। पहली होली में बेचारे तिहीदस्ती को बजह से बीवी की कुछ बागिर न कर सके थे। मर इस होली के लिए उन्होंने अपनी हैसियत के मुक़ादिक़ बही-बही हैपारिया की है। ती डेड ती रुपये ओउनल्लाह के मलाबा पनीना बहा-बहाकर बमुक़ किये ये उनमें अपनी प्याटी पूर्ण के लिए एक बुबमूरत क्या बनवाा था। निहायत मज्जीस और सुमरये सादिया मोर लाय थे। इसके बलाबा नर होम्नी की दासत भी की थी और उनके बाने कई क्रिम के मुरम्बे बचार लौबिनाय बरीरह मुहैया किय था। पूर्ण आज नरि कुशी के धाम में फूली न समाठी थी। उसकी नक़रों में आज अपने से न्यास बुबमूरत बुनिया में को- औरत न थी। वो बार-बार घीहर की ठरछ प्यार मरी निगाहों में देखती और पंडितजी भी उसके तिनार और फजल पर आज ऐस वीसा हो रहे थे कि बार बार में आते और उनको गले से स्याते।

कोई इस बजे हुंमि कि पंडितजी घर में आये और पूर्ण को बुक़कर बुक़पते हुए बोले—प्याटी आज तो भी बाहवा है तुमको मँती में दिख ली।

पूर्णा ने आहिस्ता से एक ठोका बेलर और प्यार की निवाहों से बेलकर कहा — वह बेसो मैं तो पहले ही से बैठी हूँ।

इस मन्त्र पर पंडितजी वज्रतुंडरफूटा हो गये। छट बीबी को पत्ते से जमाकर प्यार किया। चरा और बेर हुईं तो पूर्णा ने कहा — अब बस बजा चाहते हैं। चरा बैठ जाओ तो तुमको उबटन मछ डूँ। बेर हो चायगी तो खाने में बेर सबेर होने से सरदर्द हो चायगा।

पंडितजी ने कहा — नहीं-नहीं रहने दो मैं उबटन न मछकेझंगा। सामो बोली दो महा बाऊँ।

पूर्णा — बाह उबटन न मसबायेने। जाब की रीत ही यह है। जाकर बैठ जाओ।

पंडित — नहीं तुमको सामबाह तकलीफ होगी और इस बस्तु गर्मी है बी नहीं चाहता।

पूर्णा ने स्मरकर सौहर का हाथ पकड़ लिया और चारपाई पर बैठकर उबटन मछने सपी।

पंडित — मगर भई, चरा जल्दी करना। आज मैं पमाजी महाने जाया चाहता हूँ।

पूर्णा — अब दोपहर को गंगाजी कहाँ जाओगे। महंटी पानी चायेगी मही पर महा लो।

पंडित — नहीं प्याटी आज रांया में बड़ा कुत्तु जायेगा।

पूर्णा — अच्छ तो चरा जल्दी लौट आता यह नहीं कि इबर-उपर तीरने लगे। महाने बस्तु तुम बहुत दूर तक तीर जाया करते हो।

बोड़ी बेर में पंडितजी उबटन मछवा चुके और एक रेशमी बोली सामुन लीकिया और एक कमडल हाथ में लेकर महाने चक। वह बिस-उमूम घाट से चरा बस्तु महाने करते थे। पहुँचते ही महाने कने मगर आज ऐसी पीसी-पीसी हवा चल रही थी पानी ऐसा छाऊ और बापकाऊ था उनमें हलकारे ऐसे भसे मामूम होते थे और बिल ऐसी जमंगों पर था कि बेजलियार पी तीरने पर समचाया। वह बहुत अच्छे तीरकों में थे सभे तीरने। और गुच्छैकिया करने। रफ्तकतन उनको बीच चारे में दो मुर्ख पीजें बहती गजर

बानी। पीर से देखा तो कबल के फूल थे। दूर से ऐसे बुजनुमा मामूम  
 होते थे कि बसन्तनुमार का जी उन पर बहपया। सोचा अगर ये मिल जाय  
 तो प्यारी पूर्वा के कानों के लिए मुमका बनाऊँ। कहीम व गहीम बाबनी  
 ने हठारों बार बटों मुतबाठिर तीर चुके थे। उनको यहीने कामिस या कि  
 फूल का सकता हूँ। दूर से फूल साक्षित मामूम होते थे चुनचि उनकी तरफ  
 रज किया मगर र्यू-र्यू बो तीरों से फूल भी बहते जाते थे। बीच में कोई  
 रज ऐसा न था जिस पर बैठकर दम लेते। छतों जोध में उनको ये खयाल  
 मुबार कि अगर बाबा फूलों तक पहुँचते-पहुँचते शक हो मये तो लूया क्याकर।  
 पूरे जोर से तीरला शुरू किया। कमी हार्यों से कमी पीरों से जोर मारते-मारते  
 बड़ी मुफकिलों से बाटों तक पहुँचि मगर उस बख्त तक हाय पाँव दोनों बक  
 गम से हया कि फूलों के लेने के लिए जो हाय लपकाना चाहा तो बो कानू  
 म न थे। जब तक हाय पीसायें कि फूल एक दो कयम और बड़े और फिर उनके  
 पीछे चल। जात्रिर उम बख्त फूल हाय लगे जब कि हाथों में तीरने की साह्य  
 मुनकर न बाड़ी रही थी। हाय फूल दाँतों से दबाये बीच सले से जग्होनि  
 किलारे की तरफ देता तो ऐसा मामूम हुआ पोजा हठारों कोस की मबिक  
 है। उनका हीसला पस्त हो गया। हाथों में बर भी सकत न थी। मामूम  
 होजा था कि वह जिसमें है ही नहीं। हाय उस बख्त बसन्तनुमार के बेहूरे  
 पर जो हसरत न बेबसी छापी हुई थी उसको खयाल करने ही सं छाती फटती  
 है। उनको मामूम हुआ कि मैं हुआ जा रहा हूँ। उस बख्त प्यारी पूर्वा का  
 खयाल थाया कि बो मेरा इत्तबार कर रही होपी। उसकी प्यारी  
 प्यारी मोहनी मूख नजरों के सामने सड़ी हो गयी। जग्होनि चाहा कि  
 बित्काई मगर बाबनुद कोधिय के खयाल से आबाज न निकली। अंतों  
 से बासू बाटी ही मये और अफरीस एक मिनट में गंयामाता ने उनको  
 हमेया के लिए पीर में से किया।

अगर का हाल मुनिए। पंडितजी के बले जाने क बार पूर्वा में बड़े  
 तकल्लुफ से पाले परतीं। एक बदन में मुकाल बोली उसमें दो बार इतरे  
 सुगबुपान के टपकाये। पंडितजी के लिए संदूक से नये कुर्ते निकाले टोरी  
 बड़ी लुबी से चुनी। आज पेगानी पर बाफुरान और बख्त मामूम मुबारक

समझा जाता है। चुनचि उसने अपने नाजूक-नाजूक हाथों से चन्दन रगड़ा पान लगाये मेरे सरीसे से कतर-कतर ठसठरी में रखे। राठ ही को प्रेमा के चर से सुघबुघार कसिमां सेठी आयी थी उनको ठर कपड़े से ढाँककर रख दिया था इस वक्त खून खिच बयी थीं उनको ठामे में गूँधकर सुबसूरत हार टीयार किया। अपने घौहर का इत्तबार करने लगी। उसके बंधाव के मुताबिक उस वक्त तक पंडितजी को नहाकर आ जाना चाहिए था। मगर नहीं बनी कुछ बेर नहीं हुई, आठ ही होपि एक दस मिनट और रास्ता बेस नई। अब इन्तिबार हुआ। क्या करने लगे। बूप सक्त हो रही है। झींठे वक्त नहाया बेतहाया एक हो आयया। क्या जाने मार-बोस्तों से बाटें करने कम मये हों। नहीं-नहीं मैं उनको खूब जानती हूँ बरिबा नहाने जाते हैं तो तैरने की सुसती है। आब भी तैर रहे हूँगी। ये सोचकर उसने कामिल आब घटे तक घौहर का और इत्तबार किया मगर अब बे अब भी न आये तब तो उसको परा बेधीनी मासूम होने लगी। मइठी से कहा — बिस्को परा दीइो तो जाओ बेसो क्या करने लगे।

मइठी बड़ी मेकबस्त बीबी थी। हर महीने में बिस्का मगि तगन्बाह पाठी थी और घायब ही कोई दिन ऐसा जाता था कि पूर्ण उसके घाप कुछ सलूक न करती हो। पठ को उन बोनों को बहुत अबीब रखती थी औरन लपकी हुई गंगाजी की तरफ बनी। बहाना जाकर क्या देखती है कि किनारे पर दो तीन मस्काह जमा हैं। पंडितजी की घौठी-ठीकिया बघैरह किनारे बरी है। ये बेसते ही उसके पैर मन-मन मर के हो मये। दिल बड़-बड़ करने लगा। या नारायण यह क्या सबब हो मया। बर हवासी के आसम में तबदीफ पहुँची तो एक मस्काह ने कहा — काहे बिस्को तुम्हार पंडित नहामे जावा रहेन ?

बिस्को ने कुछ अबाब म दिया। उसकी आँसों से आँसू बहने लगे। सर पीटने लगी। मस्काहों ने उसको समझाया कि अब रोये पीटे ना होत है। उनका पीत्र बस्त केब और चर का आब। बेचारे बड़े मस मगई रहेन।

बघाँपि बिस्का ने पंडितजी की आँसों की और रोती-पीटती चर की

तरफ़ जाती। ज्यू-ज्यू को मकान के ऊपर जाती थी ल्यू-ल्यू उसके ऊपर पीछे को हटे जाते थे। हाथ नारायण पूर्वा को पीछे से खबर सुनाई। उसकी क्या पता होगी। बिचरिया सब तीसरी क्रिये शीहर का इत्तजार कर रही है। ये खबर सुनकर बेचारी की छाती फट जायगी।

इन्हीं क्षणों में उन्हें बिस्को रोटी घर में बाधिल हुई। तमाम चीजें जमीन पर पटक दीं और छाती पर दुहलक मार हाथ-हाथ करने लगी।

घटीव पूर्वा आज ऐसी लुच थी कि उसका बिल आज उमरों और ज़रमानों से ऐसा मच हुआ था कि यकायक इस समय बाकाहू की खबर ने पहुँचकर उसको मकसूत कर दिया। वह न रोयी न बिस्कायी न बेहोश होकर गिरी पड़ी लड़ी थी वहीं दो तीस मिनट तक बेहिस-ओ-हुरकत लड़ी रही।

यकायक उसके हवास बरबाद हुए और उसको अपनी हाकत का जम्बाजा करने की काबलियत हुई और तब उसने एक चीख मारी और पछाड़ जाकर गिरने लगी थी कि बिस्को ने उसको मोर में सेमाज किया और उसको चारपाई पर लिटाकर पंखा चलाने लगी। इस पंद्रह मिनट में पास पड़ोस की सदहा औरतें खबर जमा हो गयीं। बाहर भी बहुत से मर्द इकट्ठा हो गये। तबचीख हुई कि बाल बलवाया जावे। बाबू कमलाप्रसाद भी तयरीक जाये थे। औरत पुत्तिय को इतिला करके मदद माँगवायी। प्रेमा को ज्यू ही इस हादसे कष्टर्षा की खबर मिली तब से सिद्धी निकल गयी। औरत बादर जोड़ ली और बरहवास जीने से उठयी और गिरती-पड़ती पूर्वा के मकान की तरफ़ जाती। हर बंद माँ ने रोका मपर उसने न माना। जिस वक़्त प्रेमा पहुँची है पूर्वा के हवास बजा हो गये थे और वो निहायत बिल हिला देनेवासी जाबाब में रो रही थी। पर में लकड़ों औरतें जमा थीं मपर कोई ऐसी न थी जिसकी बाँधों से बाँधू न बह रहे हों। हाथ घटीव पूर्वा की हाकत बाकई काबिले तरफ़ थी।

जमी एक घंटे पहले वो अपने को दुनिया की सबसे लुचकिस्मत् औरतों में समझती थी मपर हाथ जब उठता-सा बदनचीख कोई न होगा। बेचारी समझने से बच जामोज हो जाती मपर ज्यूही कोई बात याद का जाती ल्यूही फिर बिल जर्मंड जाता और बाँधू की लड़ी लप जाती। हाथ क्या

एक-दो बात जगन की थी। उसने दौ बरस तक अपने प्यारे शौहर की मुहम्मत का मजा कूटा था। उसकी एक-एक बात उसको याद आती जाती थी। आज उसने चम्पे-पसाते कहा था — प्यारी पूर्णा थी चाहता है तुझको आँखों में बिठाऊँ। अफ़सोस अब कौन प्यार करेगा। उस देखती बोली और तौस्मिने की तरफ़ उसकी निगाह गयी तो बड़े खोर से चीख़ पड़ी। यकायक प्रेमा को देखा तो झपटकर उठी और उसके पल्ले मिस्रकर ऐसे बिलखाराण क्यूबे में रोपी कि अन्दर तो अन्ध बाहर मुसी बघरीप्रसाद साहब बाबू कमलाप्रसाद और बीगर हज़रत आँखों से जमाल दिये बेयस्ति यार रो रहे थे। प्रेमा बेचारी का महीनों रोठ-रोठे बका बैठ गया था। हाँ उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। पहले वो समझती थी कि मैं ही सारे जमाने में बरकिस्मत हूँ मगर उस वक़्त वो अपना दुस भुस गयी और बड़ी मुघकिक से ख़ुश करके बोली — प्यारी पूर्णा ये क्या शक़ब हो गया।

बेचारी पूर्णा की हालत बाक़ई दर्दनाक थी। उसकी जिनगी का बेड़ा पार जगानेवाला कोई न था। उसके मने में बजुब एक बूड़े बाप के और कोई न था और वो बेचारा भी आज-कल का मेहमान ही रहा था। समुदास में छिछै शौहर से माता का न सास न समुर, न ख़ोश न अकारिब कोई खुस्मू भर पानी देनेवाला न था। असासा भी घर में कुछ न था कि जिनगी भर को काफ़ी होता। बेचारा शौहर जनी कुछ वो बरस से पीकटी कर रहा था और आमदनी से ख़र्च किसी तरह कम न था। ख़या कहीं से जमा होता। पूर्णा को जनी तक ये सब बातें नहीं सूझी थी। जनी उसको सोचन का मीका ही न मिला था। हाँ बाहर मरनि मे लीय आपस में इत जग़ पर बातचीत कर रहे थे।

दो डार्ड घटे तक तो उस मक़ान में औरतों का ख़ुब हुजुम था। रोना पीटना मचा था मगर राम हीठे-हीठे सब औरतें अपने-अपने घर गयी। बेचारी प्रेमा को उस पर उस जाने सगे थे इच्छिए लीय उसे बहाँ से पालकी पर उठाकर ले गये और जिया में बली पड़ते-पड़ते उस मक़ान में बजुब बिल्लो और पूर्णा के कोई न था। हाय यही वक़्त था कि बसन्तकुमार

## हमधुर्मा व हमसबाब

रफ्तार से आते। पूर्वा उस बकुर दरवाजे पर खड़ी उनकी राह देखा करती थी और उनको देखते ही लम्ककर उनके हाथों से छठी के सेटी थी। एक उनके सिव जलेबिर्मा छाकर पर देती थी। जब तक वो मिठाइयाँ खाते थे वो अटपट पान के बीड़े लगाकर देती थी। वो आधिके आर दिन भर का बफा-माँदा बीबी की इन छातिरो से अपनी तमाम तकलीफों को भूल जाता। कहीं नह मसूरतजळवा सिबभव और कहीं आज ये समटा। तमाम घर नीम भाँव कर रहा था। बीबारे काटने को बीबती थी। मामूम होता था कि बगे-बीबार पर हसरत छापी है। बेचारी पूर्वा आमन में सामीश बैठी है। उसके कलेजे में जब रोने की कृत नहीं। हाँ आँखों से आँसू के धार जाते हैं। उसका मामूम होता है कि कोई दिल से लून बूच रहा है। उसके महसूसत्व को बयान करने की इमारी खबाग में कृत नहीं। हम इस बकुर पूर्वा पहचानी नहीं जाती। उसका चेहरा कई हो गया है। होंठों पर पपड़ी छापी है। आँखें सूज आयी है। सर के बाम बुझकर पेशानी पर आ गिरे हैं। रेहमी साड़ी फटकर धार-धार हो गयी है। जिस्म पर बेबर एक भी नहीं है। बुद्धिवाँ टूटकर बकनाभूर हो गयी है। वो हसरत हिमामसीबी मातम की मुबस्वम तसबीर हो रही है। उसकी ये हासत और भी नाकामिसे बरमिस्त हो रही है क्योंकि कोई उसके तसकीन बेनेबामा नहीं है। ये सब कुछ हो गया है मगर पूर्वा अभी तक कुस्ती ठोर पर नाबूच नहीं हुई है। उसके कान बरबाबे की तरफ सने हैं कि कहीं कोई धनके सही व सलामत निकलने की खबर न लता हो। बकमजवा दिनों का नहीं हाक होता है। उनकी आस टूट जाने पर भी बेबी रहती है।

घाम होते-होते इस पुच्छरत बाक्ये की खबर सारे सहर में पूँच जटी। वो मुतवा वा अफसोस करता था। बाबू अमृतदाय कचहरी से आ रहे थे कि रास्ते में उनको माह खबर मिथी। वो बरसतकुमार को बकुरी खानते थे। जहाँ की सिञ्चारिष से पंविठजी को रफ्तार में वो बमहू मिली थी। सफ्त अउसोस हुआ। मकान पर आते ही कपड़े बदल बाइसिकिल पर सवार हो पूर्वा के मकान की तरफ पहुँचे। आकर देखा तो पीतरज्ज समटा छाबा हुआ है। बरसे-बीबार से समटा बरस रहा है। पूर्वा ऐसी ही आबाबों के



खुद रोने लगती थी। इस बजह से अब उभर न जाती। हाँ घाम के बरत को महताबी पर जाकर बकर बैठती इसलिए नहीं कि उसको सर्मा सुहागा मामूम होता था या हा हावे जाने को जी चाहता था। नहीं बल्कि सिर्फ इसलिए कि वो कमी कमी अमृतराय को उभर से पूर्वा के घर जाते देखती। हाय जिस बरत को उनको देखती उसका दिव बस्किर्मो उछलने लगता। जी चाहता कि कूब पड़ और उनके कब्रों पर जान निसार कर दूँ। जब तक वो नजर आते वो टकटकी बाँधे उनको देखा करती। जब वो नजरों से छुप जाते तब बेजलियार उसकी आँसों में आँसू भर जाते और कलेजा मधोसने लगता। ऐसा मामूम होता कि बिल बैठा जा रहा है। इसी तरह कई महीने बीत गये।

एक रोज को हस्ब-मामूम अपने कमरे में खेटी हुई करवटें बरत रही थी कि पूर्वा अन्तर आयी। हाय उस बरत ऐसा मामूम होता था कि उसने किसी मुहम्मिक आरखे से शिका पामी है। बेहरा खरं का और उस पर एखब की पखमूर्दनी छापी हुई थी। उसखारे पिचके हुए ने और आँसू जिनमें अब अखत-फिरत बाड़ी न रही थी अन्तर खुसी हुई थी। सर के बाल सार्गों पर बेतरतीबी से इखर-उभर बिखरे हुए थे। नहने खेर का नाम न था। सिर्फ एक मैनसुख की साड़ी पहने हुए थी। उसको देखते ही प्रेमा चौङकर उसके यसे से चिमन यमी और उसको लाकर अपनी चारपाई पर बिठाया।

कई मिनट तक दोनों सन्धियाँ खामोश थीं। दोनों के दिलों में खयालात का खरिया उमड़ा हुआ था। मगर खबानों में यारए बोवाई न था। आखिर पूर्वा ने कहा — प्यारी प्रेमा क्या आजकल तबीयत खराब है? बिलकुल बुझकर काँटा हो गयी हो।

प्रेमा ने मुस्कुराने की काँधियाँ करके कहा — पूर्वा तुम भूमी जाती हो, मेरी तबीयत अच्छी कब थी। तुम तो खैरियत से रही?

पूर्वा — (खरमे पुरखान होकर) मेरी खैरियत क्या पूछती हो सखी खैरियत तो मेरे लिए गुपना हो गयी। तीन महीने से खयाला हो गये मगर अब तक मेरी आँसू नहीं खपकीं। मामूम होता है मीव आँसू होकर बह गयी।

प्रेमा — सखी ईस्वर जानता है मेरा भी यही हाल है। अगर तुम ब्याही बिचका हो तो मैं कुँबाटी बिचका हूँ। हमारी-तुम्हारी एक ही पथ है। हाँ सखी मैंने ठान लिया है कि अब इसी घीम में बिच्यपी काटूँगी।

पूर्णा — कौसी बातें करती हो प्यारी मैं जमायिनी हूँ मेरा क्या बिठमा मुस मोपमा मेरी किस्मत में बदा बा नोग चुकी। मपर तुम अपने को क्यों बुसावे डालती हो। प्यारी मैं तुमसे सच कहती हूँ बाबू जमूतराय की हालत भी तुम्हारी ही-सी है। वो मेरे यहाँ कई बार आये थे निहामत मुवअकिफर माकूम होते हैं। मैंने एक रोड देस छिया बा वो तुम्हारे काड़े हुए क्पाल किये हुए थे।

प्रेमा का बेहरा यकायक सिख गया। उर्वे मसरय से आँखें जगमगाने लगीं। उसने पूर्णा का हाथ अपने हाथ में से लिया और उसकी आँखों से आँखें मिलाकर बड़ी संजीवपी से पूछा — मेरी जान सच बताओ कमी उनसे इबर की बातें भी आती हैं?

पूर्णा — (मुस्कराकर) क्यों नहीं कई बार बात चली। मैंने उनसे कहा — आप अपनी छापी क्यों नहीं करते। मगर उन्होंने इसका कुछ जबाब न दिया। हाँ बुसरे से माकूम हुआ कि इस किस्म की बात उनको तापवार पुबरती है। इसी क्पाल से फिर यह ठजकिरा छेड़ते डरती हूँ।

प्रेमा — तुम उनके सामने निकलती हो?

पूर्णा — क्या कहें बिना सामने आये काम ठो नहीं चल सकता और सखी अब उनसे क्या पर्या कहें। उन्होंने मुस पर जो-जो एहसान किये हैं उनसे मैं कमी उरिग नहीं हो सकती। पहले ही बिग जब कि मुस पर यह बिपत पड़ी उची रात को मेरे यहाँ जोटी हो गयी। जो कुछ बसबाब बा बालिमों ने मुस लिया। सच मानो उस बज्र मेरे पास एक कौड़ी भी न थी। बड़े डेर में पड़ी हुई थी कि अब क्या कहें। बिपर नजर बीड़ापी अँबेरा नजर आठा बा। उची दिन बाबू जमूतराय आये। ईस्वर उनको बुग-बुग सत्तामठ रकवे-उन्होंने बिल्लो की तनसाह मुनरर कर दी और मेरे साथ भी बहूव कुछ सुतुक किया। मपर उस बज्र आड़े न आते तो शायद अब तक बिना घाला मर गयी होती। सोचती हूँ कि वो इतने बड़े आदमी

होकर मुझ मित्रारिणी के दरवाजे पर जाते हैं तो उनसे क्या पर्दा करें। और दुनिया ऐसी है कि इतना भी नहीं देख सकती। वो जो पड़ोस में पड़ाइय रूठी है, कई बार मेरे मकाम पर जायीं और बोली कि सर के बाल मुड़ा लो। बिपबाधों को सर के बाल न रखने चाहिए। मगर मैंने अब तक उगका कहना नहीं माना। इस पर सारे मुहल्ले में तरह-तरह की बातें मेरी निस्वत की जाती हैं। कोई कुछ कहता है कोई कुछ। जितने मुंह उतनी बातें। बिस्को आकर सब कहानी मुझसे कहती है। सब सुन लेती हूँ और रो-बो कर चुप हो रूठी हूँ। मेरी किस्मत में कुछ भोगना भोगों की बसी-कटी सुनना न किस्ता होता तो वे भाऊ ही काहे को जा पड़ती। मगर बालों ने क्या क्रमूर किया है जो उनको मुड़ा लूँ। ईस्वर ने सब कुछ तो हर ही किया अब क्या इन बालों से भी हाथ बौड़ें।

ये कहकर पूर्वा ने धानों पर बिखरे हुए कम्बे-कम्बे बालों को बड़े इत्मीनान की निगाहों से देखा। प्रेमा ने उनको हाथ से सम्हालकर कहा — नहीं प्यारी पूर्वा तुम्हें इमारी कसम बालों को मत मुड़ागा। पंदाइय को कहने दो। हु बाल मुड़ा लो। ईस्वर धाने किस खूबसूरत बाल हैं और गो तुमने कभी नहीं की है ताहम बहुत खूबसूरत मामूम होते हैं। मुधीबत तो जो पड़ पसी उसे बिल ही जानता है। बालों के मुड़ाने से क्या फायदा। ये बेलो नीचे की तरफ जो खम पड़ गया है कसा खुसनुमा मामूम होता है।

ये कहकर प्रेमा बठी बक्स में स खुशबूदार तैल निकाला और जब तक पूर्वा हाथ-हाथ करे कि उसने उसके सर की चादर लिचकाकर तैल डाल दिया और उसका सर खानू पर रखकर आहिस्ता-आहिस्ता मसने लगी। पूर्वा बेचारी इन नाचबंदवारियों की मुतहम्मिल न हो सकी। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। बोली — प्यारी प्रेमा ये क्या बडब करती हो। अभी क्या कम बदनामी हो रही है। जो बाल सँवारे निकरुंबी नहीं मामूम सब क्या कहेंगे। अब तुमसे क्या बिल की बात छिपाऊँ सखी ईस्वर जानता है मुझे ये बाल खुद बोल मामूम होते हैं। जब इस सूरत की देखनेवाला ही बहान स उठ गया ता ये बाल किन काम क। मगर मैं जो इनको रतकर पड़ासियों के सहने सहती हूँ तो सिर्फ इस खयाल स कि सर

के बाळ मुझाकर मुझसे बाबू अनूतराय के सामने न निकला जायगा हाय सर मुझाकर मैं उनके सामने कैसे बाजेंगी और वो अपने दिल म क्या समझे। ये कहकर पूर्वा फिर चरमे पुरजाब हो गयी और प्रेमा ने बाहिस्ता-बाहिस्ता उसके सर में तेल मला। उसके बाद कंधी ली। बेचाटी पूर्वा तो मुह्व से इन आराइशों व बत्ताबटों को औरबाब कह चुकी थी। इन हमदर्दना दमसाबियों ने उसके दिले बर्बन्स को मघोचना शुरू किया मगर प्रेमा ने निहायत मुहम्मतबामेज अन्दाज से उसके बाळ गूँसे और तब बाहिस्ता से एक मारना लाकर उसके सामने रख दिया। हाय पूर्वा ने तीन महीने से मारना नहीं देता था। उसको मालम होता था कि मेरी पूरव बिलकुल उतर गयी होगी मगर आज वो देखा तो सिबाय इसके कि बेहरा बर्ब हो गया था और कोई तबबीली न मालम हुई। बल्कि सादगी हसल और मामूली ने एक नई कैक्रियत पैदा कर दी थी। जाँचों में धामू मरकर बोली — प्रेमा ईश्वर के लिए जब बस करो। मेरी छिस्मत मे ये सिघार बरा ही नहीं है। पड़ोसी देखेंगे तो उनकी छापी फटेयी नहीं माकूम क्या ल्यायें। ये कहकर वो जामोय हो गयी। और वो यादपारें जिनको मुझने की वो कौघिस कर रही थी ठाना हो आयीं। प्रेमा उसकी पूरव को टकटकी बाँककर देख रही थी। उसको पूर्वा कमी ऐसी हछीन न माकूम हुई थी। उसने प्यार से उसे गसे लया लिया और बोली — पूर्वा क्या हर्न है अगर तुम मेरे यहाँ उठ जाओ। हम-तुम दोनों बिबबा साक-साक रहेंगे। तुम्हें मेरी छसम। इन्कार मत करो।

पूर्वा — प्यारी इससे बढ़कर मुझे क्या सुखी हासिल हो सकती है कि मैं तुम्हारे साक-साक रहूँ। मगर हाय अब तो मुझको पूँक-पूँककर पैर परना पड़ता है। नहीं माकूम जमाना क्या कहेगा? अक्काबा इसके इन मामले में बाबू अनूतराय की सलाह की थी अकरत है बिला उनकी मर्जी के कैसे जा सकती हूँ। जमाना कैसा बंधा है। एस रहमबिल और गरीब परबर एक्का को तोय करते हैं कि ईमाई हो गया है। कहेबालों के मुँह से न माकूम कैसे ऐसी मूठ बात निकलती है। मुझसे वो कहते थे कि मैं बहुत बस्त एक ऐसा स्वान बनवानाका हूँ जिसमें साबारिस बिबबाएँ

बा जिससे तुमसे उड़ रही थी। सुसूजन बानी रंग की रेखमी चापर जो उनके बले में पड़ी हुई थी हवा के नर्म-नर्म झोंकों से कहरा-कहराकर एक कैफियत दिखाती थी। जूते की आवाज सुनते ही बिस्को ने बाबू साहब को कमरे में बिठा दिया।

बमूतराय — क्यों बिस्को खैरियत ? (खैरियत ?)

बिस्को — हाँ सरकार, सब खैरियत।

इसी असमा में तिघास्तगाह का अन्धकनी बरबाबा जुला और पूर्णा निकली। बाबू बमूतराय ने उसकी लच्छ देखा तो हृत्त में आ गये और तिगाह कुछ-ब-कुछ उसके बेहरे पर बम गर्मी। पूर्णा माने बर्म के पड़ी जाती थी कि आज बर्मा मेरी तरफ इस तरह टाक रहे हैं। उसको नहीं मालूम था कि आज मैंने बालों में तेल डाला है कंबी की है पेशानी पर छेंदुर की एक बिन्दी भी पड़ी हुई है। बाबू बमूतराय ने उसको इस बनाव बनुबा के साथ नमी नहीं देखा था और न उनको कमी खयाल हुआ था कि वो एमी हुसिन होगी। बन्द मिनट तक तो पूर्णा सर नीचा किये लड़ी रही। यकायक उसको अपने गुंभे हुए बालों का खयाल आ गया और उसने झीरन शर्मा के गर्दन नीची कर ली। पूँचट को बड़ाकर बेहटा हुआ किमा और यह खयाल करके कि घामर बाबू साहब इस बनाव-सिपार से माराज है उसने तिहायत भोलेपन के साथ यूँ माजल्ल की मैं क्या करूँ आज प्रेमा के बर गयी थी उन्होंने अबर्दस्ती सर में टैक डालकर बाल पूँच लिये। मैं कल सब बाक कटवा डालूँ ये कहते-कहते उसकी आँसा में आँसू भर आये।

एक तो उसके बनाव सिगार, दूसरे उसने भोलेपन ने बाबू साहब का जुमा किमा। बेभक्षितवार बोल उट्टे, नहीं नहीं तुम्हें मेरे सर की ब्रसम ऐमा हरगिज न करना। मैं बहुत खुश हूँ कि तुम्हापै सजी ने तुम्हारे ऊपर यह मेहरबानी की। अबर इस बन्ध जो यहाँ होती तो मैं उनका इस एहसान के लिए शुक्रिया अदा करता। पूर्णा पड़ी किस्ती औरत थी हिन्दी के मुस्लिम बोहुरों के माने तिहाक सेठी। इम इघारे को समझ पयी और झेंकर गर्दन नीची कर ली।

प्रेमा का नाम सुनकर बाबू साहब को इबाहिम पीदा हुई कि जरा उसकी

निश्चय कुछ और हास्य मास्य करें। बोले — तुम्हारे सभी प्रेमा हैं तो अच्छी तरह ?

पूजा — अच्छी तरह क्या है आज उनको देखकर मैं अपनी मुसीबत भूल गयी। वो बिलकुल सुनकर कटाई हो गयी है। महीना से खाना-पीना बराबे नाम है। दिन भर पसीम पर बड़े-बड़े रोया करती हैं। परवान कात्र समझाते हैं नहीं मानतीं। आज मुझे देखकर बहुत खुश हुई और बड़ी बेर तक अपने कुछ-बर्ष की दास्ताग सुनाती रहीं। आखिर में उन्होंने कहा — पूजा अगर बेटी बनूँगी तो बाबू अमृतराय को बना चुँकारी रखूँगी।

इस खबर को सुनकर अमृतराय क चेहरे पर एक हठरत-सी का गनी। बोले — तब ?

पूजा — जी हाँ उनकी हास्य निहायत मासुक है। मुझे बार-बार पूछती थी कि तुमसे बाबू साहब स कभी इतर का बिक बाता है ? मैंने कह दिया कि वो तुम्हारे छिराक में बहुत बेचैन है। इस पर बहुत खुश हुई।

अमृतराय — तुमको कैसे मासम हुआ कि मैं प्रमा के छिराक में बेचैन हूँ। कोई जमाना वो या अब मैं उनका छिराई या और उनसे छापी करने का बरमान रगता या मगर अब वो बातें पुबर गयीं। मुँही बरती प्रबाद में मुझे इन एबाब के काविक नहीं समझा। मुझे यह सुनकर सल अऊसीस हुआ कि प्रेमा अभी तक मुझको याद करती है।

पूजा — बाबू साहब सौँडी की गुस्ताही नुभाऊ। मुझे तो मकीन नहीं आता कि प्रेमा की सुहृदत भापके रिक में नहीं है। लोग कहते हैं, सुहृदत एक ही ही नहीं सकती। ईतर वाले आज अब मैंने उनसे भापका बिक किया तो पूल ही तरह बिल गयीं। चेहरे पीसत हो गया मुझ पले सपाकर कहा — सभी जगने कह देता कि अगर अब भी मुझ पर तरस न बापे तो मैं जकर उतर का चुँपी।

अमृतराय — पूजा इतकी सक अऊसीस है उनकी हास्य पर — इसमें कोई तक नहीं कि पहले मैं उन पर शीषा या मगर मैंने कामयाबी को कोई उम्पीर न देखकर ही रोकर इक भाप को बुलाया। अब इतके बभाप कोई

संगीतकारण

इसकी ही समझ वैसा ही बनी है और अगर ये भी पूरी न हुई तो यकीन जानो कि मैं बिल ब्याहा ही चूँगा। ये कहकर जो यकीन की तरफ घाटने लगे।

पूर्वा का खयाल था कि बाबू भगुलदास की सारी प्रज्ञा से हो या न हो जो उसकी महत्वात्त बकराकले है। मगर जब उसकी माकूम हुआ कि उनकी सारी कर्तौ और होमेवाली है तो उनकी बातों पर बलीम का पया। मगर मैं बीम देया रईम है जो बाससे मया कला फरक न समझता हो। मगर इस काम में मझसे कोई छिदमन बजान या जायेती तो मैं अपने को निहायत सुशक्तिमत्त धनमूर्ती। जो काम मेरे कानिक हो बी फरमा रीजिय, मैं बनरोषम बबा काठेरी।

बागुलदास — (मुकदवार) तुम्हारे बिका तो इस काम का बजान पामा ही महत्क है। कनिक तुम्हारी रवानगी पर इस समझ का बारी-मवार है।

पूर्वा बड़ी खुश हुई। पूकी न समझी कि मैं भी जब उनका कुछ काम कर सकेगी। उसकी समझ में इस जुमल के माने न माने तुम्हारी ही खामकी पर इस समझ का बारीमवार है। उनसे इन बलकल का मतकब नामा-जो-नयाय का काम छुकर होला। उससे इन बलकल का मतकब का मतकब के मझसे के बकरही बकर बकली तरफ समझ लिया था। बाबू भगुलदास कुछ देर तक यहाँ और बैठे। उनकी सबसे बाज बेकलियार मगर उपर न मुकद बाती और पूर्वा के बेहरे पर मड़ जाती। जब तक जो बैठ रहे पूर्वा को मारे मारे के सर उठाते की मुकद नहीं हुई। मरुपुरा उठे और पलते बल बोले — पूर्वा मैं ये यकता बाज तुम्हारे बान्ने लामा हूँ। उन्मीर है कि इस इनको मुकद करपी। देयो कैसा तुम्हारा बया हूँ। यह कहकर उठेले हाथ से बकर उनकी तरफ बजया। पूर्वा मलहवार ही गयी। बाज देयामारी कागिर कैनी ? एक मिलात तक उनके बिल में पयोमेज हुया कि मैं या न मैं। उन सबतों का खयाल बाया जो उनके बपने पीहर के लिए होनी के बिल बजाये थे। फिर मेया

की कल्पियों का खयाल जा गया। उसने इरादा किया कि मैं न हूँगी। खदान ने कहा 'मुझे मुआफ़ रखिये। मगर हाथ एक बेजस्तिपाटी ठीर पर बड़ गया। बाबू साहब ने जुग-जुग गजरा उसके हाथ में पहनाया। उसको खूब नजर भरकर देखा। बाद मन्दी बाहर निकल आये बाइ सिक्स पर सवार होकर खाना हो मये। पूर्वा कई मिगट तक मन्धे तसबीर बनी लड़ी रही। उसको खबर न थी कि मेरे हाथ में गजरे कैसे जा गये। मैंने तो इनकार किया था की जाहा कि फेंक दूँ मगर फिर खमाक पकट गया। उसने मन्धे को हाथ में पहन लिया। हाथ उस बफ्त भी उसकी समझ में न आया कि इस जुमले का क्या मतलब है, 'तुम्हापी ही खामन्दी पर इस तमन्ना का बारोमबार है।

खबर प्रेमा महताबी पर टहल रही थी। उसने बाबू साहब को भाते देला था। उसकी बजा उसकी नजरों में खूब गयी थी। उसने कमी इस मनाब के साथ नहीं देला था। सबसे ज्यादा ताज्जुब उसको इस बात का था कि उनके हाथों में नजर क्यों है। वो उनकी नापसी का इन्तजार कर रही थी। उसका भी भ्रमकाटा था कि वो आज इतनी देर क्यूँ लगा रहे हैं। क्या बर्ते हो रही हैं। बफ्ततग बाइसिक्स नजर आयी। उसने फिर बाबू साहब को देखा। बेहूत शिमुपता था। हाथ पर नजर पड़ गयी। ई, ये मन्धे क्या हो गया।



## मुप पर सौ दुने

पुनीं जे बबरा पहल दी किया मगर रात भर उलकी बोलों में बीच  
 नहीं बानी। उलकी संजस में यह बात न जाती थी कि बाबू अमृतदास जे  
 उमकी बबरा क्यों दिया। उसे मागलू होला बा कि पंडित बालमुनिमार  
 कि बबरा उदार कर केके रूँ। मगर नहीं मागलू क्यूँ उमके हाथ करीले  
 हने। घाटी रात उलके बोलों में काटी। मुबद हुई कनी पूरक भी न  
 निकला बा। परदारन न बीबासन और बाबू कमलासमाद की पुत्री मरु  
 पंडित मर सेठानी जी और कई दूसरी औरों के मुनीं के प्रकार में वाकिल  
 हई। उनसे बने बबरा से लकरी निकला। एकटे करव एए। बाद बबरा

पंडित मर सेठानी जी और कई दूसरी औरों के मुनीं के प्रकार में वाकिल  
 हई। उनसे बने बबरा से लकरी निकला। एकटे करव एए। बाद बबरा

पंडित मर सेठानी जी और कई दूसरी औरों के मुनीं के प्रकार में वाकिल  
 हई। उनसे बने बबरा से लकरी निकला। एकटे करव एए। बाद बबरा

पंडित मर सेठानी जी और कई दूसरी औरों के मुनीं के प्रकार में वाकिल  
 हई। उनसे बने बबरा से लकरी निकला। एकटे करव एए। बाद बबरा

पंडित मर सेठानी जी और कई दूसरी औरों के मुनीं के प्रकार में वाकिल  
 हई। उनसे बने बबरा से लकरी निकला। एकटे करव एए। बाद बबरा

है। हाँ किसी सुहाय्य या किसी बँचारी कम्प्या के ऊपर तुमको अपना सामा नहीं बासना चाहिए।

पंदाइन आमीश हुईं तो मुंशी बदरीप्रसाद की महारजिम फ़रमाने लयीं — क्या बतलाऊँ, बड़ी सरकार और हुस्न बोनो कल चुन का भूँट पी के रूख़ बयीं। बड़ी सरकार तो ईस्वर जाने बिच्छर बिच्छर रो रूख़ी थीं कि एक तो बेचारी लड़की के यूँ ही जान के सले पड़े है दूसरे अब रीढ़-बेबा के साथ उठना-बैठना है, नहीं मामूम ईस्वर क्या करनेवाले हैं। छोटी सरकार मारे मुँसे के काँप रूख़ी थीं। बारे मैंने उनको समझाया कि मात्र मुमाफ़ कीजिए। अभी वह बेचारी बच्चा है। रीत-म्योहार क्या जाने? सरकार का बेटा जिसे जब बहुत समझाया तक जाके मानी। नहीं तो कहती थीं कि मैं अभी जाकर खड़े-खड़े तिकाक़ बैठी हूँ। वो बेटा अब तुम सोहाबिनोँ या कम्प्याओँ के साथ बैठने खोल नहीं रूख़ीं। अरे ईस्वर ने तो तुम पर बिपत डाल दी। अब तुम्हारा बर्म यही है कि चुप चाप अपने घर में पड़ी रहो। वो शुक़ मयस्वर हो आम्ने-पियो और सर कार का बेटा जिसे जहाँ तक हो सके बर्म के काम करो।

पुर्बा ने चाहा कि अब की कुछ जबाब दूँ कि चौबाइन साहबा ने पर जो-नसायिह का बफ़्तर तोला। वे एक मोटी मबेसल और मबेइ औरत थी बात-बात पर साँसें मीचा करती थी और जाबाब भी निहायत करक़ थी — मला इनसे पूछा कि अभी तुम्हारे दून्हे को उट्टे तीन महीने भी नहीं बीने और तुमने अभी से आइना कंभी जोटी सब करना शुरू कर दिया। क्या नाम कि तुम अब बिबबा हो गयीं। तुमको अब आइना-कंभी से क्या सपेकार है। क्या नाम कि मैंने हुमारों औरतों का बेसा जा पति के मरने के बाद पहना-पाठा नहीं पहनतीं। हँसना-बीसना तक छोड़ बैठी हैं। न कि आज तो सोहाग उठा और कल खियार-पिटार होने लगा। क्या नाम कि मैं लल्लो-मत्तो की बात नहीं जानती। कहुँगी सब चाहे किसी को टीठा-कपे या पीठ। बाबू जमूतराय का रोब रोब यहाँ माना टीक़ नहीं है कि नहीं सेठनी जी?

उस पर सेठानी जी ने हाँक़ लनाबी — (वे एक निहायत छरबा-सँदाज

## मंगलाचरण

मोटे मोटे बबली बहनों से कभी हुई बुरी थी। मोर के गोपने लड़कियों से कल्प होकर लीके लटक रहे थे। इसकी भी एक बहू बेबा हो गयी थी जिसकी बिलपती हमने कबीराल कर रखी थी। इनकी भावना थी कि बात करते बहाने हमने कबीराल को मटकवाया करती थी। हल हल जो बात जब होती जब कोई कहोया मला किसी ने कभी रोड़केबा को माये पर बिपयी बिपया है मगर उनको बाज ठक मला तो टीका कैसा। मेरी भी एक बहू मायूम इन ओकरियों का भी कैसा है कि बिपया हो जाने पर भी निवार पर लकवाया करता है। मरे उनको बाहिर कि बाबा जब हम रोड़ हो गये हमको जिनोड़े सिवार से क्या कैसा है।

मैठाली जो एक छोटी सरकार का बेटा जिसे गुम बहुत ठीक कहली हो तो पारी ठक रहे गयी। सरकार का बेटा जिसे गुम बहुत ठीक कहली हो उससे भी ठीक बिना की बिपया बाहिर। गुम जब बबला नहीं हो। समत गुमकर काम करना बाहिर। गुम जब बबला नहीं हो। गुमका कर पुरा कैसाही कैसी बिपुल रही थी और बहु सब बेहदम जीतले उनको के दे कर रही थी। मैठाली जो बिपुल की बार कुछ उख-माबतल करे मगर कोल गुला है। मैठाली जो बिपुल की बार कुछ उख-माबतल करे कोई कहोया। गुम क्यों हो पदायल? इनके नियम जब कोई रह-बादल

मंगलाचरण — क्या नाम कि सोच को सोच नहीं। दुखल को बाहिर कि मारते पहले ये कल्प-कल्प किंच लटका बालें और क्या नाम कि गुमको के पर बला बला छोड़ दें।

बंगलाचरण — और बाबु बंगुलाल को यहाँ रोड़ रोड़ माला क्या प्रकर ? महारजिब — सरकार का बेटा जिसे मैं भी यह बाल कहतीबाली थी। बाबु माहल के जाने से बरगामी का कर है। बाल और निवारल की बातें करते ये मंगुलालें यहाँ से उधरौक के

मयीं और महाराजिन भी मुसी बढरीप्रसाद साहब के बहूँ जाना पड़ने मयीं। उनसे और छोटी सरकार से बहुत बमती थी। वो उन पर बहुत एतबार रखती थी। महाराजिन ने जाते ही उनसे सारी बधा खुब खो-खोमन नमक-मिर्चें लपाकर बयाग की और छोटी सरकार ने इस बाक्य को प्रेमा के प्रकाने और मुठगाने के लिए मुनासिब समझकर उसके कमरे की तरफ रख दिया।

मूं तो प्रेमा हर रोज सारी रात जाया करती थी मगर कमी-कमार बटे-आब बष्टे के लिए नींद आ जाती थी। नींद क्या आ जाती थी एक झयी-सी झारिज हो जाती थी। मगर जब से उसने बाबू अमृतराज को बगाधियों की बधा में देखा था और पूर्वा के घर से बापस जाते बकत उनकी कलाई पर उसको गबर नजर आया था उस बकत से उसके पेट में खल-बली पड़ी हुई थी कि कब पूर्वा जावे और कब सरा हाक मालूम हो। रात तो बड़ी बेचैनी से उठ-उठ पड़ी पर नजर बीड़ली इस बकत जो उसने पैरों की बाप सुनी तो समझी कि पूर्वा आ रही है। उठें इस्तिमाक से लपककर दरवाजे तक आती मगर ज्यों ही अपनी भाबज को देखा ठिठक मयीं और बोली — कैसे चलीं भानी ?

हुम्त साहबा तो चाहती थीं कि छेड़-छाड़ के लिए कोई जरिया हाब आ जाय यह सबाब सुनते ही तुनकर बोली — क्या बतलाऊँ कैसे चली ? अब से अब तुम्हारे पास आया कसैमी तो इस सवाल का जबाब सोचकर आया कसैमी। तुम्हारी तरह सबका खुन थोड़ा ही सजेब हो गया है कि चाहे पी का बड़ा डलक जाये घर में आग लयी है मगर अपने कमरे से क्रम बाहर न निकाले।

वो छोटा-सा बुमका प्रेमा के मुँह से मूं ही बिलग किसी जयाक के निकल आया था। उसके जो वे माने स्याये यये तो प्रेमा को मिहायत नायबार बुजरा। बोली — मामी तुम्हारी तो नाक पर गुम्हा खूवा है, परा-सी बात का बर्तपड़ बना देती हो। भला मने कौन-सी बात बुरा मानने की कही थी।

नाथज — कुछ नहीं तुम तो जो कुछ कहती हो सोया मुँह से फूज भादवी

मौलानावरण

हो। तुम्हारी जवान में जकर बनी हुई है। तुमिया में मिलने है उनको  
 नाक पर बुझा रहता है और तुम बनी सीता हो।  
 प्रेमा — (सालाकर) म बब इस बज्ज तुम्हारा निवाज विमवा  
 को रो रही हूँ। मगर के निम्न मुझे दिक् मत करो। मैं तो वही बपती जाम  
 हुआ है।

भाबब — (पटककर) हूँ पानी केरा तो निवाज बियाबा हुवा है  
 सर फिरा करती तकरीदे प्रेमा करती मंगुळियाँ का बरक-बवल करती  
 पर किया करती तकरीदे प्रेमा करती मंगुळियाँ का बरक-बवल करती  
 तो मैं भी हीसियार रोने लगी। भाबब के उरको रोते देवा  
 तुम जाल बिछियाँ कियो काय बलग करो मगर वो मोग की बिछिया  
 हाथ बागैबागो रही।

दिक् की बीतल भी और मरुलों के खोज न हो सका। देवारी बजबोर  
 भी एक मया वा बेसकियायार रोने लगी। भाबब के उरको रोते देवा  
 तो जाँने बगमना यदी। हारदे की पूँ सर करते हैं तीर को। बोली —  
 बिक की बीतल भी और मरुलों के खोज न हो सका। देवारी बजबोर  
 भी एक मया वा बेसकियायार रोने लगी। भाबब के उरको रोते देवा  
 तो जाँने बगमना यदी। हारदे की पूँ सर करते हैं तीर को। बोली —

बिछियाँ किया करती भी अब जाम दिन रहते उन कइया पूजा के  
 पर माना है और पछो बही रहता है। तुमनी हूँ फल के बबदे काय  
 निरहला है। पायब दो-एक बीतली जेकर भी दिवे है।  
 प्रेमा इनमे ख्याबा न कर लगे निरनिवाकर बोली — भाबब  
 मैं तुम्हारे वीरो पवटी हूँ मम पर दया करो। ममे जो जातो बहू को।  
 (रीफ्त) बरी ही मारपीट को। मगर किनी का नाम केकर और उन  
 पर छदे राबकर मेरे करीब दिक् को मन बजाओ।  
 प्रेमा के तो निहायल सजावन से ये बालकब बहे मगर छोनी मर  
 बार छदे एकबर पर बखतेपला हो यदी। पसककर बोली —  
 मैं तो तुम्हारे वीरो पवटी हूँ जो छदे लपती हूँ। ममे तुम्हारे मानके  
 मरे मे मिलाई मिलनी है न? तुम्हारे मानके गठ बो-नी तो

तुम सोने के तख्त पर बिठा बोनी। मगर मैं एक मूठी हूँ सारा जमाना तो नहीं मूठा है। आज सारे मुहल्ले में बार-बार यही चर्चा हो रहा है। बहुत तो पढ़ी-लिखी हो भला तुम्हीं सोचो एक तीन बरस के छोटे मरदुए का पुर्बा से क्या काम है। माना कि वो उसकी मदद करते हैं। मगर ये तो बुनिया है। जब एक पर आ पड़ती है तो दूसरा उसके भाड़े जाता है मगर तारीफ़ आदमी इस तरह दूसरों को बहकाया नहीं करते। और उठ डोकरी को क्या बहकायेगा कोई वो तो आप ही ताठ नाट का पागी पिये है। मैंने जिस दिन उसकी तसवीर देखी थी उसी दिन ताड़ पयी थी कि एक ही बिम की बाँठ है। अभी तीन दिन भी बूझे को मरे हुए नहीं बीठे कि सबको समझड़ा बिलाने लयी मोन्या बूझा क्या मरा एक बच्चा दूर हुई। कल जब उसके सम्ब क्रम वहाँ भावे ली मैं बरा बाल नूचा रही थी नहीं तो ज्योड़ी के पीठर ली इतम बरले ही न बैठी चुईल नहीं ली! यहाँ बाबर तुम्हाटी सहेली बनती है, इसी ने अमृतदाय को अपना जोबन दिखा-दिखा के अपना लिया है। कल कैसा लचक-लचककर तुमक तुमककर चलती थी। पेच-पेच जी बसता है, हज्जार्द नहीं ली। सबर वार जो अब कभी तुमने उम चुईल को यहाँ बिठाया। मैं उनकी मूरठ नहीं देखना चाहती।

जबान बह बला है कि मूठ बात का नी यकीन दिला बैठी है। बह माहबा ने ली जो कुछ फरमाया हर्ज़-बहर्ज़ सही वा भला उसका मगर क्यों न होता। पहले ली प्रेमा ने उनकी बातों को लडो व सराएतआनेब लयाल किया मगर बादिर लयाल ने पसटा जामा। भाबज की बातों में रसती की मलक बायी। यकीन आ पया। ताहम ली ऐसी मोछी नहीं थी कि उसी बरस अमृतदाय और पुर्बा को कोसने जगती। हूँ वा नीने पर हाव बरे यहाँ से उठकर बली पयी और छोटी सरकार भी जारामा जारामा अपने कमरे में तसरीफ़ लयी। जाहने में लडे मनबर को मुखा हिया किया और आप ही आप बोली— लोय बूठे हैं कि मुससे कूब मूरठ है, अब वो कूबमूरती कहाँ पयी?

प्रेमा को ली परस पर नेटकर भाबज की बातों को बाक़यात से मिलाने

### संस्काराख्य

विजित, हम मन्त्रों में बनें। यहाँ कुछ और ही एक लिखा हुआ है।  
मिथुन के सात की पूरपूरत आकीन जिन्ही हुई है। गुरु और बुधियों  
हरे बच्चा की करीने से लगी हुई है। शीघरें पूरपूरत तबकीरी से मुकम्मल  
है। पंजा सता जा रहा है और मुसी बरही प्रसार साहब एक कुसी पर  
बैठे हुए बच्चा कमाने एक बखवार पढ़ रहे हैं। उनके दावें-बायें की कुसियों  
पर बह बीपर बसुहाब रोजक बजरोख है। वो घामने की तरफ मुसी  
मुकम्मलीलाक है और उनको बघल में बाबू घामनाब। वाहिने काबिब  
बाबू कमलाप्रसाद मुंसी संज्मलाक से कुछ कागा-पूरी कर रहे हैं। बायी  
काबिब दो जनहाब और एकबा बजरोख है जिसको हम नहीं पढ़नामते।  
कई मिगट एक मुंसी बरही प्रसार साहब बखवार पढ़े रहे। अंगुर  
उरुहि घर उठाया और घनीरली से बोले — बाबू बभुलराय की हरकने  
अब बरसि से बाहर वीली जाठी है।  
बुलबारीलाक — बरसि जगाब अब उनकी घरीरों और तकरीरों  
से यहाँ की सोलायटी की सल लीलीन हो रही है। हमारा सब बीपी है  
कि अब हम उनके नसे को जगाले की फिक करें।  
बाबू कमलाप्रसाद — केचक बाबू बहुत दुखसा डरनामते है। हमारा  
ऊरें बा कि इतिहा ही से जगकी फिक करने साहब अभी कुछ नहीं  
बिगबा है।  
सामजलाक — अगर बिगबा है तो इतिहा है कि एक और  
काबिब के बन्धनों में उनकी वीली अलिबवार की है और प्रसाद बम्बई  
के बन्धन बरसि वीली। शीघर, इन बखवार में जेबे तो फिर बाते बलबर बनी  
है। अगर हम बहुत अरु उनकी खबर न जेबे तो फिर बाते बलबर बनी  
उन्के मजामीन पाया हो रहे हैं और उनके सरी रोसनीकाके छोटे बाब  
पाम के ईदुली में बुल मनाते फिरते हैं। ये मजली गरी है कि ईदुली  
प्रसाद कमबदल इमामब होने हैं। क्या ठाकुर है कि उनकी बागो पर  
उन्के के लिए मुलीर ही जयें। बाबू बभुलराय से गाबू फिली फिम

## हमकुर्ना व हमसपाह

की किमाकत हो या न हो इसके इमकार नहीं किया जा सकता कि उनकी बकाकत अंशानुश बड़ रही है। मुबकिकनों को ठी को शरुष चीसे में उतार केटा है।

**मुसबारीकाल** — सबसे पहले हमारा काम ये होता चाहिए कि उनकी दरखास्त को कमेटी में पेस की गयी है उसे मंजूर करा दे।

**बाबू बामनाथ ने जो इन मुबाहिसों में बराये नाम हिस्वा लिये हुए थे पूछा — कैसी दरखास्त ?**

**मुसबारीकाल** — क्या आपको मामूम नहीं हजरत बाहूते है कि जो दरिया के किनारेकाला सरसम्ब खिटा हाज बा बाम। सामय नहीं एक बीराउखाना ठामीर करायेंगे। मुनता हूँ उसमें बेबाएँ रखी जायेंगी और उनकी बुरिध-बोधिष का इत्तजाम किया जायगा। मगर ऐसी बीमती और कायदे की जमीन हरगिज इस तरह छाया नहीं की जा सकती।

**मुंशी बरठीप्रसाद** — नहीं नहीं ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। बक्या (कमलाप्रसाद) तुम आज उसी जमीन के लिए एक दरखास्त कमेटी में पेस कर दो हम नहीं ठाकुखारा और बर्मछाका बनवायेंगे।

**मुसबारीकाल** — हमको ये कोधिष करनी चाहिए कि अगर प्रेसी डेप्ट साहब बाबू बमूठराय की तरफ्जारी करें तो उनके मुबाकिक फँसला न हो। उम्होंने अयेजों से पूछ इतिबात देबा कर रक्की है। क्या रायों की तादाय हमारी तरफ् बिमादा न होगी ?

**कमलाप्रसाद** — इसमें कोई शक मी है, यह देखिए मेम्बरों की प्रेहुरिस्ता कुल सताईस हजरत है, उनमें साठ बसहाब नहीं रीकक अफरोख है। साम्मतकास — हमको इतने ही पर बस नहीं करना चाहिए। इन

मजामीन का इंवांशिकम जबाब देना मी बकरी है। मीने मोठबर खबर सुनी है कि काला बमुबबारी साहब फिर लघरीफ ला रहे हैं। हमको कोधिष करनी चाहिए कि पब्लिक हास में लकरीर करने का मीका उनको न मिले।

यहाँ ये हजरत बैठे हुए थे जेमीयोइयां कर रहे थे कि यकायक एक बारमी ने जम्बर आकर कहा — बाबू बमूठराय लघरीक छाये हैं।



## मैलाचार्य

बभ्रुवर्य का नाम मुझे ही इतने-इतने मुझ हृदय के बेहरी पर  
बेहरे का रस छूने लगी। धुनवान मुझे मुलबाटीलाव और बाबु बालाव के  
की होती तो वो बीनों बरकर छु जसे। बालों सीकने लगे अरु कोई जगह छुने  
वे भी अपना म्हात्म्य निकालने के लिए मुझे बभ्रुवर्य के हलदों और लैलाव  
बाला वाक कर दिया था।

एक लम्हे में बाबु बभ्रुवर्य कोट फलन पहले सोला हूट बनाते  
बभ्रुवर्यवाह वाह के और सब हृदयवा वाजीमू उठ जाते हुए। बभ्रुवर्य  
ने जाते ही बिका समझाव के लिए बालिक हुए। उनको देखते ही बभ्रुवर्य  
कि मैं आप महाराज की विद्वान में इतनी ही बहरी लावारिस होतो की परवारि  
इतिहास वेस कहें। आप लोगों पर रोधान है कि इन वाह में कभी एक  
कोई ऐसा पनाह का मुकाम नहीं है वही लावारिस होतो की परवारि  
ब परलाल का इतनाव ही मने। ऐसी बीलों को वाहों पर बने हालो  
इस उबर मादे-मादे कितने देखता बाहों निश्चय बरना बन्ना है। इन मुने  
है। इनमे हमारी पठवीर पर एक निश्चय करती बाही कि अरु मय  
के बने बने वाहों में कौमी मुनेयों के इन कौमी बरना को पूरा किया  
है। उन्हीं की बन्ना देखी मने भी यह कोचिस करती बाही कि अरु मय  
काम ऐसा नहीं है कि मुने-मे देवनीच ब इतनाव से अरु मय  
वाकते कि आप हृदयवा पर एक निश्चय करती बाही कि अरु मय  
बन्ना बीला है। मने अन्वी कर्मिक है कि येने मने पर अरु मय  
अन्वी अपना और देवनीच है कि येने मने पर अरु मय  
कर्मिका है कि मने एक लैलावला के इतनाव ब इतनाव के  
मनात्मिक वाजीच वेस की जयवी और उन पर हरियाले कोम की रावे  
एक की जयवी।

और बिला किसी को आपस में मखरबाबियाँ या सरपोधियाँ करने की मोहकत दिये हुए उसको मुँची मुल्-बायीलाक छाहब के सामने पेश कर दिया। अब मुँची भी सख्त बजाब में मुबतिला हैं। एक हम्मा बेने की नीयत नहीं है मगर यह खीऊ है कि कहीं और हबरात कुछ छम्पाबी विजायें तो मैं खामसाह मफ्कू बनूँ। अलावा इसके आप मिस्टर अमूतराय के सख्से हमदबों में से और उनके इससाह के मशरफात से बड़ी विलखस्वी फताते से। उन्होंने एक मिनट तक तबन्मुक किया चाहा कि इधर-उधर से कुछ इसारे किये पा जायें मगर अमूतराय पहले से होधियार से वो उनके सामने निपाह रोक्कर बड़े हो गये और मुस्कराकर बोले— सखिए नहीं मुझे आपसे बहुत कुछ उम्मीद है।

बाहिर मुँची मुल्-बायीलाक ने कोई मऊर न देखकर छेपते हुए अपने नाम के मकाबिल पाँच सौ रुपये की रकम तहरीर छरमायी। अमूतराय ने उनका शुक्रिया अदा किया और वो और हबरात कुछ कानाफूनकी करने लये से मगर इसका कुछ खयाल न करके उन्होंने पेश्रिस्त बाबू दाननाथ के सामने रख दी।

हम पहले कह चुके हैं कि बाबू दाननाथ अमूतराय के मकाबिल से इतफ़ाक़ रखते थे। मगर पहले जब उन्होंने चन्दे की पेश्रिस्त देखी तो बड़े पसोपेश में से कि क्या करें अगर कुछ देता हूँ तो धायद मुँची बवरी प्रसाद बुरा मान जायें। नहीं देता तो अमूतराय के ताराब हो जाने का खौफ़ है। इसी ईस-बैस में से कि बाबू मुल्-बायीलाक की मुबाहिरत ने उनको बुरमत बिलायी। औरन अपने नाम के मकाबिल एक हबार की रकम लिखी। अमूतराय को उनसे इतनी उम्मीद न थी। बड़े गर्मजोशी से उनका शुक्रिया अदा किया। अब ये तयबीश हुई कि पेश्रिस्त किसके सामने पेश की जाय। अगर मुँची बवरीप्रसाद की खिरमत से पेश करें तो धायद वो कुछ न दें और उनका बुरस दूसरे असहाब को भी मुठासिर करेगा। अगर किसी दूसरे छाहब को बिलावा हूँ तो धायद मुँची छाहब बुरा मानें कि येटी तीहीन थी। एक लम्हा तक यह इसी सोच में रहे मगर अला के हाबिरबजाब आयी से। बिमाघ के औरन छैसका कर लिया।

## मंगलाचरण

अधुनि अंग्रेजिल की बरब से मुंशी बरटौमवार की खिरमल से येन करके  
 भई — मंग भासले चाप एखाल की बकरल है। न निरुं से कि जाप  
 भेरे बजबंवार है बरिफ एजबीर है कि मे इमाल नामे गाती से तामीर  
 करावी बाबे। मने कमिलार माहूर को बनिपावी पत्कर रखने पर  
 खामाव्य कर किया है।

मुंशी बरटौमवार जहाँदीरा मारवी से मगर उन बल एखा बा  
 मये। देवा कि दो भागुली बलीमें से एक एक हबार एखे दिसे हैं और  
 बलावा इले कमिलार चाहूर भी एकसे में एखीक करके। इमाल भेरे  
 ही नाम से तामीर होनी और उखको एखीक में नामे का बरिफार भी  
 ममको होवा। यही तोखे-बिचारे अपने नामे गाती के रूपक हो हबार  
 दुन हाबिरील के अपनी बपनी है। फिर क्या बा तिलियन टूट ग  
 रम मिगट में कोई सोखू मतह हबार एखे नामे गाती के रूपक हो हबार  
 मंगुएख को अपनी हिकमतें अपनी से कामयाबी की उम्मीर तो एखर  
 भी मगर इन हू तक नहीं। हो मारे मुंशी के उखके वाते से। इन  
 पर मतबको कामयाबी से बेहरा मुयन की एखर हक एहा बा। बने  
 की अंग्रेजिल के में बानिज करके होके — जाप बजबंवार से भेरे कर  
 बरा एखाम किम और भेरे कर बरा पाहूर की बेमन दुनिया बेबाकी  
 पर। मने उम्मीर है कि अब जाप लोको से गाती एखाल करवावी तो  
 कर बल करवावे। मंत्रिस्टे माहूर से अपना मरका बने दिया बा।  
 अद्युनि एखामा कि इन बल शोधें एखाल हो रही है ऐसी बीमारी और  
 नाम एखे की उमील किम मुसाबके के गृही है एखती। मने भी उनसे  
 बने की कि करु अनेके इतुन बनने से मने कोई उख न होवा। मने भी उखे  
 अनेदी बनेकी उखके इतुन बनने से मने कोई उख न होवा। मने भी उखे  
 बीमन बना करने को तैयार है। मगर मुने बानिज एखको है कि अब  
 आपने भेटी इमवार ऐसी बनिपावी से की है तो इन बनील को हाबिज  
 में भी कामिग करवावे।

## हमजुर्मा व हमसवाब

ये कहकर बानू अमूठराम यहाँ से तयरीज़ ले गये। मगर अफ़सोस उन्हें बना मालूम था कि उस पर्ये की आड़ से जो मुंजी बदरीप्रसाद की कुर्सी के पीछे पड़ा हुआ था और जहाँ से बालाखाने पर जाने का रास्ता था कोई बैठा हुआ एक-एक बात को सुन रहा है। बानू साहब को आते प्रेमा से देख लिया था।

आज से कभी मंदिर न जाऊँगी

बेचापे पूर्ण पधारत न बीबासन बड़ीपुत्र के बने जाके के बाब लेने लगी। बी सोचती थी कि हुय मर में ऐसी मनुहुय समती जाती हूँ कि किसी के साथ बैठ नहीं सकूँगी। अब लोगों की मेरी मूरल से मडलल है। बनी गही मालम क्या-क्या भोगना भाव में बरा है। या मारपण पू ही मुम बुधिया का केडा पार बना। मेरी घामल बायी थी कि घामलाड मर में तेज बरना मिया। यही बाल कम्पल न हूँले तो काहे की बाब बना कड़ीना होना। यही बालों का घवाल करले-करले जब यह मुमला मार मा गया कि 'बापू कमतराय का रोज रोज माला ठीक नहीं कर लेते मर पर हाय मारकर कहा — मैं तो उनका दिया खानी हूँ। तो उनके हूँ तो मैं कैसे मना करूँ। मैं तो उनका और कोन हूँ। उनसे मैंने कहा कि मुम मल आनो। और फिर उनके बातें से हूँ ही क्या है। बेचापे मीसे काहे मरिफ्त बावली है। कुछ दोहरे नहीं बाबागानही फिर उनके बातें से क्या हूँ है। नहीं-नहीं मुमने मना न किया जावेला। अब तो मुम पर मुनीबान मा ही पड़ी है। अब जिनके जो से जो बाबे बहे। तही मालम कल मुमने क्या ही मना। क्या मय या मयी की कि मना के पहले जोकर मयद हुय प्यारी मैना के बने बहोर खोकर पूरा जयला। मैं न जानती थी बीो बाबने निम में क्या ममतेबी। ममतेबी क्या उनको मा से उनको पहले ही में मना कर दिया होना।

इन बजाकों से फुरसत पाकर उसने हस्ते मामूल मंगानी का इस्तेफिया। जब से पड़ितनी का इन्तकाल हुआ था वो रोड बिला नासा मंसा नहाने जामा कग्गी थी। मपर मुंह अँबेरे पाती और मूरज निकलते निकलते झीट जाती। बाब्र इन बिनबुलाये मेहमानों की बजह से बेर हो गयी। बोड़ी दूर पत्नी थी कि रास्ते में सेठानी जी की बहू से मुलाकात हो गयी। उसका नाम रामकली था। बेबापी हो बरस से रँबापा भोग रही थी। उसका सित्त भी मुस्किफ से सोलह-सबह बरस होमा। बेहरा मोहरा भी बुरा न था। छरी-छाक निहाबत दिलफोरब। अगर पूर्वा आम की तरह पर्व की तो उसका बेहरा जोये जबानी से मुलाबी हो रहा था। बाब्र मे तेक न था। न बीसों में काबल। न मांग में सँकुर। न दाँतों पर मिस्ती। ताहम उसकी आँखों में वो सोझी थी चाल में वो लकड़ और हँडों पर वो तबस्तुम जिनसे इन बनावटी बाराइमी की करूरत बाकी न रही थी। वो मटकती इबर-उपर ताकती मुस्कराती बसो पा रही थी कि पूर्वा को देखते ही ठिठक गयी और बड़े बराब से हँसकर बोली—बामो बहम बामो। तुम ऐसा बकती हो जानू बताये पर पैर पर रही हो।

पूर्वा को ये जुमला नापबार मालूम हुआ। मपर उसने बड़ी बर्मी से जबाब दिया—स्वा कल्ले बहम, मुससे तो और तेक नहीं बसा धाता।

रामकली—सुनती हूँ कल ह्यारी आपन कई चुइसो के साथ तुमको बसाने गयी थी। मुझे सताने से बर्मी तक जी नहीं भण। क्या कर्हू बहम! ये सब ऐसा दुस बैती हूँ जि थी चाहता है बहर बा कूँ। और मपर यही हाल रहा तो एरु न एरु बिन यही होना है। नहीं मालूम ईबर का क्या बिगाड़ा था कि एक दिन भी जिन्रयी का मुख न जोयने पायी। मसा तुम तो मंगने पति के साथ वो बरस रही थी। मने तो उसका मुँह भी नहीं देखा। जब तमाम औरतों को बनाव सिगार किये रूँधी-खुसी बकले-फिरते देखती हूँ तो छाती पर साँप छोटेने लगता है। बिबबा क्या हो गयी बर मर की लीकी बना भी पकी। वो काम कोई न कर बी में कल्ले उन पर रोड उठने जूती बैठते कात। काबल मत तपामो

## मंगलाचरण

मिस्त्री मत समाजो बाक मत मुंसाबो खील मारियां मत पहलो पाल  
 मत बाबो। एक रोब एक मुलाबो घाड़ी पहन की थी तो वह बडैत  
 मारले उठी थी। जो मैं तो बापा कि घर के बाक रोब में। मगर  
 बहर का बूट पो के रू मयी और वो तो वो उनकी बेदियां और दुपटी  
 बहुत भेरी मूल से मजबूत रहती हैं। मुबइ को कोई मरप मूइ नहीं देखता।  
 अभी पबोल ही मैं एक घायी हुई थी। घर की मर मरुते से रुद-रुद बानी  
 बजती मयी। एक में ही बमगित घर में पड़ी रोली रही। मला बहुत  
 जब बहुत तक कोई बख्त रहे। बाकिर हून भी तो बादमी हैं। हुमाटी  
 भी तो प्रबानी है। हुमाटी की मयी बहक-पड़क देव घामजहद दिव म  
 हीनके होते हैं। अब मूल लगती है और माला मही मिलना तो बोटी  
 करना पवती है।

ये कइकर रामकली ने पूर्वा का हाव अपने हाव में के दिया  
 और मुक्कपकर बाहिस्ता-बाहिस्ता एक गीत मगवाने लगी। पूर्वा को  
 ये शैतकलीकियां मल गमवार मालम होती थी मगर मजबूत थी।  
 पार्ले में हुवाटों ही मारवी मिले। घरकी मजबूत इन दोनों औरों  
 की तरफ फिरोती ही न थी। हां रामकली बकबता मुक्कत मक्कराकर  
 मगर उठली ही न थी। हुं रामकली बकबता मुक्कत मक्कराकर  
 मापुशाना बंदाब मे इपर उबर देली थी। एक बाप बजलला उबाव  
 भी दे रही। पूर्वा जब मजक पर मरुं को पड़े देगली तो बचाके मकराकर  
 निकल जाती मगर रामकली को उनके बीच में मुक्कर निकलने की ज़िद  
 थी। एक मंदाब मे मोगली थी। इनी तरह बरिवा किनारे की ज़िद  
 हुवाटों में और औरों की उरके बीच में मगर बार उरक वाली जिनको  
 रामकली को शेरते ही एक पंडित ने कहा — इपर देलनी ची इपर।  
 मंगा — (बुरकर) यह बीन है ?  
 रामकली — (जाने मक्कर) कोई हौनी। क्या तुम मरुं न।  
 क्या ?  
 मंगा — जब माल तुम के माल तुम मरुं न।

रामकली — वे मेरी सखी हैं। इनका नाम पूर्वा है।

पद्मा — (हँसकर) महा इत क्या बच्चा नाम है। हैं भी तो पूरन चन्द्रमा की तरह। बच्चा जोड़ा है।

पूर्वा बेचारी खेपी। ये मन्नाड़ उसको निहायत नाबखार मानूम हुआ। मगर रामकली ने अपने घर की लट एक हाथ से पकड़ और दूसरे हाथ से छिटकाकर कहा — बबरदार, उनसे विस्मयी मत करना। ये बाबू अमृतपत्र च पुत्रवाणी हैं।

पद्मा — ओ हो हो कृप कर साकम है। हैं भी तो चन्द्रमा की तरह। बाबू अमृतपत्र जी बड़े रसिबा हैं, कर्म-कर्म वही बसे बाते हैं। वो बेलो जो नया बाट बन रहा है वो बाबू साहब बनवा रहे हैं। छिद ऐसी मनोहर सुरती का दर्शन हमको कैसे मिलेगा।

पूर्वा दिख में उल्ल पसेमान की कि काहे को इसके साथ मायी अब तक ती महा-बो के घर पहुँची होती। रामकली से बोली — बहुत महाना ही तो महानो; मुक्तो बैर होती है। मगर तुम अभी देर में बाजी ती मैं मनेकी बाईं।

पद्मा — नहीं-नहीं रानी हम छटीयों पर इतनी खया (अप्य) मत होओ। यामो सेठानी जी इनको महाना बाओ। कुनता हूँ मान कचहटी बन्द है। बाबू साहब घर पर हयि।

पूर्वा ने चाकर उठारकर घर की ओर धाड़ी लेकर नहाने के लिए उठना चाहती थी कि यकायक सब पंजे उठ-उठकर जाड़े होने लगे। और एक समूह में बाबू अमृतपत्र एक धारा कुरछा पहने साथी टोपी घर पर रहे अरमा लपाये हाथ में पैसाइस का प्रीठा लिये चन्द ठेकेदारों के साथ इबर बाते दिखायी दिये। उनको देखते ही पूर्वा ने एक लम्बी मूँच निकाल ली। उसने चाहा कि नीचे के नीचे पर उतर जाईं। मगर पनों-सुवा ने उसके पैरों का बही बाँध दिया। बाबू साहब को इन चीजों की चौड़ाई-कम्बोई तापता थी। चुनाये वह पूर्वा से वो कपड़ के कासले पर जाड़े होकर नरवाने लगे और कासल बेमिल पर कुछ लिखने लगे। लिखते-लिखते बाबू को इरम जो बड़ाया तो पैर नीचे के नीचे आ पड़ा



मंगलाचरण

भीर झटके बाकि बो भीमे मुँह बितें और उठी बहल बल कीलती जिखती  
 का छातया हो पाय कि पूर्णों के मरठकर उनको घाटका किया।  
 बाबू घाहुर ने चौककर देखा तो बाहिला हाथ एक माउलीन के हाथ में  
 है। जब तक पूर्णों अपना मुँह बड़ाये हो उवको पहुचान नये और बोले

—अप्याह पुन हो पूर्णों। जब तक बाबू घाहुर न दिया बलिं घर नीबा किये हुए बंले  
 से उतर गयी। जब तक बाबू घाहुर वैभारवा करवाने रहे हो गया  
 की ठाण्ड चल किये खड़ी छठी। गुलने मेरी पाल बचा ली।  
 हुई वाली और बोली — बहल बाबू तो गुलने बाबू घाहुर को बिले  
 बिले बचा लिया। मात्र से तो वो भीर भी गुलने देतो पर घर लगे।  
 पूर्णों — (कड़ी निपाहों से देखकर) रामकी देवी बालों न करो।  
 मुझे देवी किमूल बिलकी भली नहीं मानूस होली। बावनी बावनी के  
 काम वाला है। अगर भीर उनको बचा किया तो हमने क्या मालोकी बाल  
 ही गयी।

रामकी — दे नो, पुन तो जाये से बाहर हो गयी। बस गयी  
 बरत-भी बाल पर।  
 पूर्णों — गरी मैं मुझे में नहीं हूँ। अगर देवी बालें ममको बळी  
 नहीं लगती। के गहाकर बळीभी या मात्र घाटा रिल नहीं विगाळी ?

रामकी — जब तक बरत-उबर जो बहले बळ्या है। पर पर  
 विषाय पहले मंगारों के और क्या रक्खा है।  
 कुछ कर के दोनों मजियां यहाँ से लाना हुई तो रामकी मे

भया — हूँ बहल पूजा कले न बळी ?  
 पूर्णों — गरी तारी मने बहल कर हो जावनी और न मैं क्यो

मदरों से पूजा कले गयी हूँ।  
 रामकी — मात्र गुलको बळ्या परेमा बरत देतो तो कैदी बरार  
 की जबह है। अगर हो-बार रिल जात्रो तो फिर किना मने लवीला न  
 माले। गरी रो-नील मने बहल कर हो जावनी और न मैं क्यो  
 है। बाकी रिल रल विषाय गानी गुलने के और कोई काम गरी।

सुर्मा—तुम जाओ। मैं न चाहूँगी। जो नहीं चाहता।

उमरुमी—बनो-बनो नखरे न बबारे। हम की वम में तो लगे बाते हैं।

रास्ते में एक तमोली की दुकान पड़ी। बाठ के बीनेनुमा ठन्ठो पर बड़ा कपड़े वाली से मिमाखर बिछाव हुए थे। उस पर बैंगला बेनी व मर्बई नाम बड़ी मजदूर स बुने हुए थे। सामने दो बड़े-बड़े चीन्हेदार भारने बने हुए थे और एक छोटी-सी चीकी पर पुष्पबुवाठ की घोंघिया और पसालों की डिबियां खुबी से सजाकर बट्टे हुई थीं। तमोली एक मर्बाला बबाम था। सर पर दुपल्ली टोपी बुनकर कम रखी थी बरल के आगे रवा का बुनठ पड़ा हुआ कुर्ता था। यक में सोने की लारीजें आँखों में सुर्मा बेगानी पर मुक टोका होंड पर पाल की बाली मनुहार। इन दोनों मीठों को देखते ही बीआ — सेठानी जी सेठानी जी आओ पाल खानी जाओ।

उमरुमी ने बट सर से बाहर लिसक्य थी और फिर उसको एक अन्दाज से बोड़कर और दिक्कबायाता अन्दाज से हँसकर कहा — ममी ठाकुरजी का परछाव नहीं पाया है।

तमोली — माओ यह भी तो परछाव के रूप नहीं है। सनों क हाथ की चीज परछाव से बड़कर होती है। आजकल तो कई दिन से तुम्हारे बर्पन ही नहीं हुए, ये तुम्हारे साथ कौन सखी है।

उमरुमी — (मटककर) ये हमारी सखी हैं, बेइम ताक रहे हो। क्या कुछ भी लकवा रहा है।

तमोली — वो तो हमारी तरछ ताकती ही नहीं। हाँ माई, बड़े पर की हैं। हम जैसे तो सलमों से सर रपड़ते होंगे।

ये कहकर तमोली ने बीड़े बयारे और एक पत्ते में लपेटकर उमरुमी की तरछ तकलक से हाथ बड़ाया। जब उसने कले के लिए अपना हाथ फैलवा तो तमोली ने अपना हाथ खेंच लिया और हँसकर बोला — तुम्हारी सखी लें तो हैं।

उमरुमी — लो मखी पाल जाओ।



रामकली — (मुस्कुराकर) चुप ऐसों भी कोई कहता है? मही देवी का मन्दिर है। वो महंत जी बैठे हैं। देवती ही कैसा खर्चाला बचान है। आज सोमवार है। हर सोमवार को यहाँ कर्मियों का नाच होता है।

इसी बसना में एक बलन्द कामत घुस आता दिखायी दिया। कार्ड क फ्रीट का कद था और निहायत लचील-सो-सहीम। बालों में कपी की हुई थी मूँह पाज से भरे, माथे पर समूत रमाय भले में बड़े-बड़े बालों का ब्रह्म माला पहने धारों पर एक रेशमी दोपट्टा रखे बड़ी-बड़ी और मुँह आँसों से इधर उधर ताकता उन दोनों औरों के करीब आकर पडा हो गया। रामकली ने उसकी तरफ एक संभाव से देखकर कहा — कर्न बाबा इन्द्रवत कुछ परधार-बरसाद नहीं बनाया?

बाबा इन्द्रवत ने ऊरमाथा — तुम्हारे खातिर सब हुआ है। पहले बलकर नाच देलो ये कंपनी का मीर से बुलायी गयी है। महंत जी बंदव पीसे हैं। एक हजार रुपया इनाम दे चुके हैं।

रामकली ने यह सुनते ही पूर्ण का हाथ पकड़ा और आराधनी की गरज बनी। बिनाही पूर्ण जाता न चाहती थी मगर वहाँ सबके सामने इम्कार करत भी न बन पड़ता था। आकर एक किमारे लड़ी हो गयी। बैममार औरत बना थी। एक से एक हनीन महने से गोंडनी की तरह लड़ी हुई थी। बैममार मई से। एक से एक लुधक धाँडा दर्जे की पोनाके पहने हुए, सब के सब एक ही जगह मिले मुँह लड़े न। आपस में नजरबाजियाँ हो रही थीं। नजरबाजियाँ ही नहीं बल्कि दस्तदरबाजियाँ भी होनी जाती थीं। मुस्कुरा-मुस्कुराकर राजी-नियोज की बातें की जा रही थीं। मीरों मही में मई औरतों में ये मेकबोल छिन्न-विछन्न पूर्ण को कुछ ठाम्बुबबेब मालूम हुआ। उसकी हिम्मत अम्बर घुसने की न पड़ी। एक कोन में बाहर ही दबक गयी। मगर रामकली अम्बर घुस गयी और वहाँ कोई आप बटे तक उसने लुध मुँहचरें उड़ाये। जब वो निकली है तो पसीने में लई थी। तमाम रूपड़े मछक गये थे।

पूर्ण ने उसे देखते ही कहा — कर्ण बहन, पूजा से लार्डी हो गयी? अब भी घर बलोयी या नहीं।

मंगलाचरण

राजकनी — (हँसकर) अरे तुम बाहर ही क्यों भी क्या? अंदर बाहर देना क्या बाहर है। बाहर जाने सेकनी जाती क्या है फिर मंगला लेती है। अब आज जलकी बोधी है। दुबारा सवे ले जाओ।

राजकनी — वहाँ भी क्या या माना ही तुमकी रही? फिर कहने से क्या है। तुमारे मास न लेनी तो कही बटो में पर जाता। बाबा सुन्दर राय ने देना लकीर परचाय दिया है कि क्या बाबाई।

राजकनी — (हँसकर) बलात्क का बाबा है — भय।

राजकनी — ये है तुमने सब पी की? बलात्क का बाबा है देवी की का इसके पीने से क्या हुमें है? मनी पीने है देवी की को बलात्क भी बली है। कही तुमको सिलाके?

राजकनी — मही बहल मने मुजाऊ एकको।

राजकनी — मही बहल मने मुजाऊ एकको।

राजकनी — मही बहल मने मुजाऊ एकको।

राजकनी — मही बहल मने मुजाऊ एकको।

राजकनी — मही बहल मने मुजाऊ एकको।

राजकनी — मही बहल मने मुजाऊ एकको।

## माठवाँ घास

बेचो तो बिलखरेबिमे भंवाजे नरुतो पा  
मोमे कराम धार मी क्या गुल बतर गयी

बेचाठी पुर्वा मे क्या पकड़े कि अब मन्दिर कनी न जाऊँगी। एम मन्दिरों पर इन्दर का बख भी नहीं मिरता। उम दिन से वो सारे दिन पर ही पर बैठी रहती। बख बटना बहाइ हो जाता। न किसी के यहाँ जाना न जाना। न किसी से रज-बख न कोई काम न बंधा। दिन बटे तो क्यूँकर? पड़े तो बख, मपर पड़े क्या? वो बार बिसर-बहाणियों को कितारें बंधित भी के बमाने की पड़ी हुई थी मपर उनमें अब भी नहीं लगता था। बाबार बापेबालम कोई न था जिससे बिलारें मँगवाती। बुन बरी हुए उदकी कइ प्रजा होती थी। बिलो इम काम की न थी। और सीमा-मुकद तो वो बाबार से लारी मपर प्रतीक कितारों का मोल क्या जाने? वो-एक बार भी में आया कि कोई कितार प्रेता के घर से मँगवाऊँ मपर फिर कुछ समझकर सामोष हो रही। गुल-बूटे बमाने उनको बले ही न थे। सीमा जानती थी मपर मिये क्या? ये रोड की बेघरली उदकी बहुत खरती थी और हररम उदका मुतक़रिन्-ओ मधमूम रखनी थी। बिलो का बसता सामोषी के साम बहुत बख बटाता था। ही कमी पंडाइन न बीबाइन नय मपने केके-बापड़ों के माकर कुछ निदानन की बाधे मुतावी जाती थी। अब उनको पुर्वा से कोई निदानन बाड़ी न रह गयी थी बहुत इसके कि बाबू बभुनराय क्यूँ आया करते हैं। पुर्वा ने भी बलम-बुस्ता कइ दिया था कि मैं उनको जाने से रोक नहीं सकती। और न कोई ऐसा बर्तार कर सकती हूँ जिससे उनको माकम हो कि वेरा जाना इधको मापवार माकम होता है। सब तो यह

मंगलाचार्य

है कि पूर्वा को जब इन मुलाकातों में मरा जाने लगा था। हुज्जे पर किसी  
 समय की मूल मरद न अली। किसी से हीकर बोलने को भी ठाठ  
 की कैबारिया होने लगती। किसी बड़ी दरिद्री से घाट मंगल घाट कहली  
 दरवाजे के मकानिल का सेहल भी घाट किमा अला। इमरे मुगिलों  
 तनवीरे बहुत इतने जगती। मुगल भी घाट किमा अला। हुज्जे पर का बना हुआ मरदों  
 मुबार पूर किमा अला। मुगल मुद भी मंगल से कल्ले और घाट कल्ले  
 पहली। ही घर में ठेक बाकले या कारला-कमी करते हुए ही बरती थी।  
 पर बाबू मंगलपत्र आ अले तो मही मालम मूँ मुगल का मडम केदर  
 मुगल की तरह समझे कल्ला। उनको घाटी मूल और विद्यार घाटी  
 मालम होने लगती। अब तक बाबू बाहुर के घरों से मुगल को घाट कल्ले में  
 प्युती कि मरा बाल कल्ले बिल्ले के घरों से मुगल को घाट कल्ले में  
 जानिर से हुंछली देखली। बाबू बाहुर ऐसे हुंमगुल से कि देखे को भी  
 एक बार उकर हुंसा रहे। बहो को मूर हुंमगुल की तरह कहल्ले। इतने  
 देनी माल न कले बिल्ले के रिक में देनी माल का घाटेबा भी  
 जगल ही अली। बाबू बाहुर हुंको लान अले और मही मालम मूँ मुद  
 अउ देर और बिल्ले। बाी तरह कमी-कमी बरते रहे। पर बिदल  
 देर तक रुद उबर बीकलाली हुं मुगली। ओ-ओ बले हुं देनी जगले  
 राय के रिक में भी की कल्ले उनको एक बिल्लुपुम लान ना मालम देला।  
 मालम होने मरा कि मेरे रिक में उनको मुदुम मंगली अली है। अब  
 बिबारी मुगल मूँ महीरे मुद मरे और बाउदिल जो बाल मूँ मुद  
 अउर द्या एक बार मूँकल कले से वेद भी बहो मरा जो हुं देनी  
 मुगल मोक ली। ओ बहुत कैशिया इलाी कि मंगलपत्र का ठपाल रिक  
 में न अले वले मगर हुं माल न बनजा।

अपने दिल की हासत के अन्दाज करने का उसको पूर्व मीका मिला कि एक रोड बाबू बभूतराय बने मुबम्मना पर नहीं आये। सोड़ी बैर तक ठो बसत किये उनकी राह देखती रही मगर जब वो जब भी न आये तब उसका दिल कुछ मसोसमे बना। बड़ी बेसबी से बीड़ती हुई दरबाने पर बापी और कामिल बाबू बभू तक काम सपावे लड़ी रही। इत्य पर कुछ बड़ी कैड्रियत तारी हुईने लमी को पंडित जी के बीरे पर जान के बहुत हुवा करती। सुबहा हुआ कि कहीं बुसमनों की तबीयत नासाब तो नहीं हो गयी। मौसी में जाँच कर आये। माहरी से कह्य — बिल्लो बरत बाबी देखो तो बाबू साहब की तबीयत कैसी है ? नहीं मामूम खुँ मेरा बिल बँठा जाता है। बिल्लो को भी बाबू साहब के बरताने मे मिरबीरा बना किया बा और पूर्वा को तो वो अपनी लड़की समझती थी। उसको मामूम होता जाता बा कि पूर्वा उनसे मुहम्मत करने लपी है। मगर उसकी समझ में नहीं जाता बा कि इस मुहम्मत का नतीजा क्या होया। बही सोचते-विचारते वो बाबू साहब के दोस्तबाने पर पहुँची। मामूम हुआ कि वो आज दो-तीन खिदमतगारों को साथ लेकर बाजार गये हुए हैं। अभी तक नहीं आये। पुराना बुड़ा कहार जो बाबनूर बाबू साहब के मुतवातिर तकाबो के भापी टाँगकी बोली बाबता बा बोला — बेटा बड़ा सराब जमाना जाता है। हजार का सीसा होय तो बुह हजार का सीसा होय तो हम ही लियाबत खेत। बाब बुहु बाय गये हैं। मला इतने बड़े बाबमी का बस चाहत खा। बाकी फिर जब बँधेजी जमाना जाता है। मसंजी पड़-पड़ के बीन न बुह बाय तीन बबरज नहीं है।

बिल्लो बही से कुछ-कुछ बड़े कहार के चिर हिलाने पर हँसती हुई बर को बापत हुई। इबर जब से वो बाबी की पूर्वा की बजब कैड्रियत हो रही थी। किसी पहरू चीन ही न बसता बा। उसे मामूम होता पा कि बिल्लो की बापसी में भी बैर हो रही है। इसी बसता में जूतों की बाबाब नुनापी थी। वो बीड़कर दरबाबे पर बापी और बाबू साहब को टूलते हुए पाया तो मौसा उसकी नेमत मिला गयी सटपट अन्बर से दरबाबा बोला दिया, कुर्ती करिने से रख बी और बन्बन्नी दरबाबे पर सर



मंगलाचरण

गीता करने लगी ही गयी। बाबू साहब काया पाहने हुए थे। एक मुनी पर लखाया लखा और बोले— बिल्ली कहीं गयी है क्या?

मुनी — (कजले हुए)

मुनी — आपके जाने में बहुत देर हुई तो मैंने समझा थायें तुमलौ की तबीयत कुछ गंवार ही गयी हो। वरतों जेना कि अकल देक बा। मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

मुनी — (जवाब में) मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

मुनी — (जवाब में) मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

मुनी — (जवाब में) मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

मुनी — (जवाब में) मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

मुनी — (जवाब में) मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

मुनी — (जवाब में) मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

मुनी — (जवाब में) मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की? मुनू कोरे उबकल की?

अमृतराय — (हँसकर बनी जवान से) वो सब कहार मेरे नीकर हूँ। मेरे लिए बाब र से बँचें लाते हैं। तुम्हारी सरकार का मैं नीकर हूँ।  
 बिल्को यह सुनकर मुस्कराती हुई अम्बर बनी गयी तो पूर्वा ने  
 कहा — आप बजा करमाते हैं, मैं तो खुद आपकी छीछियों की लीडी हूँ।  
 इसके बाद चन्द और बावें हुई। मास-पुस का बमामा था। सर्ती

सल्ल पर रही थी। बाबू अमृतराय ब्यादा देर तक बैठ न सके। बाठ  
 बबले-बबले बीलपुञ्जाने की टपक रवाना हुए। उनके जाते ही पूर्वा  
 ने छौं इस्तिपाक से लोहे का समूह लोका तो ब्य रह गयी। उसमें जवान  
 सिगार की समाम बीचें मौजूब थी और वो बीब थी आषादरें की —

गुधनुमा आइना कभी सुसबुदार तेसों की धीछियाँ मुजाऊ हापों के कपत  
 और गले का हार बडाऊ, लपीनेशर बुझियाँ एक तिहायत लखीस पानदान  
 कटुपरबर इतरियात से मरी हुई एक छोटी-थी समूकभी सिक्कने-पवने

क सामान चन्द क्रिस्ता-बहागी की कियारें अलावा इनके चन्द और  
 ठकसुठगत की बीचें छरीने से सजाकर बटी हुई थीं। कपड़े लोस तो  
 अच्छी से अच्छी साझियाँ नजर आयीं। धरंती मुलगाठी धानी गुलाबी  
 उन पर रेसमी मुलबूटे बने हुए चापटें, गुधनुमा बापीक, गुधबजा—  
 दिस्को इनको देख बैस जाने में फूली न समाती थी — बहू ये सब बीब  
 अब तुम पहनोपी तो रानी हो आओपी रानी।

पूर्वा — (गिरि हुई अजाब से) कुछ भय ला गयी हो क्या बिस्को  
 मैं ये बीचें पहनूंगी तो जीवी बचूंगी! बीबाइन व सेठाइन ठाने बे-देकर  
 मार डालेंगी।

बिल्को — ठाने क्या रेंगी कोई बिस्सनी है उनके बाप का इचमें  
 क्या इजाज। कोई उनसे कुछ मगिने जाता है।

पूर्वा ने बिस्को को हीरा और इस्तेबाब की तिपाहों से देला। यही  
 बिस्को है वो बसी हो बघ्टे पहले बीबाइन और पंडाइन की हमसमाक  
 थी मुमको पहनने ओड़ने से बार-बार मना किया करती थी। यथापक  
 य क्या कायापकट हो गयी बोली — मगर बमाने के तेको-बद का भी  
 तो सपाठ होता है।

### मंगलवार

पूर्वा के अब कोई बात न देना तो बूढ़ी और घर्म से घर मुकदमे और मुकदमे निकाले बाल को सुपारी कजली बल वाली एक हाथ में धरत होकर देना। जोक बुनिया रही। एक क्यूहे तक तो महजिबत का आलम पाये रहा। बाद अब मुकदमेकर बोले — बसे रह डर।

पूर्वा — (कजली डूरे) निबाम तो आपका बच्चा है?  
अमृतपय — (उरली निबामों से देखकर) अब तक कच्चा था।  
घर अब औरियत नहीं कर जाती।

पूर्वा के घर्म से मुँह केर लिया। बाद अमृतपय का मुँह से: ओरे ओरे हीरियत बाव ही पयो है। मौली — बसे लिने का बरा बलक?  
अमृतपय — बरा जान से किली को कामवाह की दुपारी है।  
पूर्वा की वलक चार की निबामों से देवा। उनको हीरियत बावो उनको बलक पायो। कुछ देर तक और देवे ही लखनियत वाली का मुँहा छेले

पूर्वा को भी कपल न बा कि मेरी दे केवलककी और बरकलमो अरे लिपू मौजू नहीं है। उनको इस बरान न पराल का ठीक बा न परो लियो का बर। बालों ही बालों में उनमें मुकदमेकर अमृतपय से मुँहा — आपकी आजकल योना की कुछ उबर उनकी मुँहा उबर नहीं थी।

अमृतपय — नहीं पूर्वा मुझे बर उनकी मुँहा उबर नहीं थी।  
हो इमान बरबराता जाता है कि आपका बलक से बराल की बलकही हो रही है।  
पूर्वा — मुँहा बरबराता है कि उनकी बलक से बराल की बलकही नहीं किला है। अगर उनका योरे है तो बाव ही से। ही बालो मो तो कही बलकही हो रही थी। अरवापर मो कोम उपलकीव है। मो दिज जब जाना कि मैं आपकी न पूना में मिलनी।

अमृतपय — (मुँहालाल बूढ़े से) क्यूहे अब बिगल पाये बलको है। किये बलकी कोयिना में तो कुछ उबर नहीं रसना।  
पूर्वा — तो बरा उबर ही नो निबाम ही उमरुन है।

अमृतराय — नहीं पूर्वा में क्या बदकिस्मत हूँ अभी तक कोई कोपिष्ण कारगर नहीं हुई। मगर सब कुछ तुम्हारे ही हाथों में है। अगर तुम चाहो तो मेरे घर कामवासी का सेहरा बहुत जल्द बँध सकता है। मैंने पहले कहा था और अब भी कहता हूँ कि तुम्हारी ही रजामन्वी पर मेरी कामवासी का शरोमबार है।

पूर्वा ईरत से अमृतराय की तरफ़ देखने लगी। उसने अब की बार भी उनका मतलब धाँक-धाँक न समझा। बोली — मेरी तरफ़ से भाग खातिर क्या रखिये। मुझसे जहाँ तक हो सकेगा उठा म रलूंगी।

अमृतराय — इन मलझब को याद रखना पूर्वा, ऐसा न ही कि मुक्त जाओ। नहीं तो मुक्त बेचारे के सब ज़रमाने जाक में मिल जायेंगे।

ये कहकर बाबू अमृतराय उठे और चलते बड़ा पूर्वा की तरफ़ देखा। बेचारी पूर्वा की ज़ाँतें डबडबायी हुई थीं योया इस्तिजा कर रही थीं कि क्या बैर और बैठिये मगर अमृतराय का कोई बकरी काम था। उन्होंने उसका हाथ आहिस्ता से से मिया और डरने-डरते उसको धूमकर बोले — प्यारी पूर्वा, जगली बालों को शर रखना।

ये कहा और बम के दम में शायब हो गये। पूर्वा खड़ी रोती रह गयी और एक दम में एसा माकून हुआ कि कोई बिलबुलफुन कराव वा जो ज़ाँत खुलते ही शायब हो गया।

मंगलाचार्य

है। अगर वह मुझे न रोना। अरे दिल में मुद्रकत कर है। मुझे बाप  
वक रोना मुद्रकत किती और की नहीं मान्य हूँ। अगर मुझे मुद्रकत  
की वाशिर रोगा बना पर न उठवा जायता। अरे सुणी तो हलत है  
कि उनको अगर पर के रोना कमे और उनकी उलत की मुद्रकत  
पया कमे। अगर हलत इस कल के आशिर मुझे सब के हैं। कही  
अरे रिकार से उनके मुसली का बाक तो पीया हुआ तो मैं रोना न  
बाडेकी। या रिकार में क्या कमे। अरे तो कुछ कफक काम नहीं  
काली।

बस भी उस की पर मुकी तो उलो पूका — सूर् सु सु क्या लिखा है ?  
मुर्ना — (सोचता मानस हो) क्या बलाडे क्या लिखा है ?  
बिलो मुर्ना के कहते ता अगर उठार बने और से देख रही थी।  
मुर्ना — हाँ बिलो इससे बियाबा मुदी मुगली हो ही नहीं सकती।

अपनापन कहते हैं कि मुझे  
उलते और मुक न कया गया। बिलो मानस नहीं अगर बही तक  
मुर्ना मुदी एक उलकी मुक के मर ही। जो अनापय की बली हुई  
मुद्रकत की देख कर बलिने। मुर्ना उनसे मुद्रकत काली है। उन पर बात  
को बने पर उकर बलिने। मुर्ना उनसे मुद्रकत काली है। उन पर बात  
उलते सेकनी रहनी को रोगा या कि मारनी कसरिनी को पर बात  
लिखा करते हैं। आशिर इन हलत में भी रोना हीना। इनसे उनको को  
बास काली नहीं मान्य हीना। अगर आशिर मान काली।  
आर मुर्ना से काली मुद्रकत काली है। मुर्ना के बादे निवास इसके और  
अरे ही क्या नखे है कि उनको बर में बाक में। मुर्ना के मर उनके मुर्ना  
को रूर् बने काले रोगा तो वाक बनी कि आशिर का मोक है। जो  
वागली की कि अगर मुर्ना पायी हूँ तो उनको बलिना बिलो बने  
आपन से बडेकी। बाप गावर भी मिरक ही पाविक और में बने भी  
अपनी बोलन बापन बडेकी। अगर बही उनसे रिकार लिया तो रोना

की विधायी उस्त हो जायगी। यह बातें सोचकर उसने पूर्वा से पूछा —  
तुम क्या जवाब दोगी ?

पूर्वा — जवाब इसका जवाब सिवाय इनकार के और ही क्या  
सकता है। मला विधवाओं की छापी नहीं हुई है और वो भी बरहमनी  
की छपी है। मैंने इस क्रिम के किस्ते उन किताबों में पड़े थे जो बानू  
बमूतराय मुझे दे गये हैं। मगर वो किस्ते हैं, तुमने कभी ऐसा होते भी  
देखा है।

बिस्लो धमती की कि बानू बमूतराय उसकी घर डालने की कोशिश  
में हैं। छापी का तबकिया मुला तो ईच्छ में जा गयी। बोली — मला  
ऐसा नहीं भया है। बाल सफेद हो गये मगर ऐसा ब्याह नहीं देखा।

पूर्वा — बिस्लो, ये छापी-ब्याह सब बहानेबाजी है। उनका मतलब  
में समझ ली। मुझसे ऐसा न होगा। मैं बाहर जा रूमी।

बिस्लो — बहू ऐसी बातें बवाल से बठ निकालो। वो बेचारे भी  
तो अपने दिल से भावार है, क्या करें ?

पूर्वा — हाँ बिस्लो उनको नहीं भाकूम क्यूँ मुझसे मुहल्लत हो गयी  
है। और मेरे दिल का हाल तो तुमसे छिपा नहीं मगर काय वो मेरी बात  
सोपते ती मैं अभी से बैठी। ईसकर जानता है, मैं उनके जण से इधारे  
पर अपने को निधायर कर सकती हूँ। मगर वो जो चाहेते हैं वो मुझसे  
नहीं होयें का। उसका जवाब कप्टे ही मेरा कलेजा काँपने लगता है।

बिस्लो — हाँ मलेमालुषों में तो ऐसा नहीं होता। कमीनों में डोला  
जाता है। मगर वह सब तो मझ है, अगर तुम इनकार नदोयी तो उनका  
दिल टूट जायगा। मुझे तो डर है कि कहीं वो आम घर न चेर जायें।  
और वे तो मैं कह सकती हूँ कि उनसे विछड़ने के बाद तुमसे एक दम बेरोये  
न रहा जायगा। चाहे तुमको कुछ लये या मला।

पूर्वा — बहू सब तो तुम सब कहती ही घर बाहिर में क्या करें।  
वो मुझसे झूठ-सच छापी कर लिये। छापी क्या करेने छापी का नाम करिये।  
मगर जमाना क्या क्यूँबा। लोग अभी से बसपाम कर रहे हैं तब तो नहीं  
मानुम क्या ही जायेगा। सबसे बेहतर यही है कि जान दे दूँ। न रहे

मंगलाचार्य

बोले ठाक भी। उन्होंने उसकी तरफ देखा। वेदरे से दूरल बरल पड़ी थी। दोनों निगाहें मिलीं। अमरराज ने बहिलापापना बोधते उसकी तरफ बढ़े और उसका हाथ लेकर कहा—पूनी, शिवर के लिए मुझ पर ध्यान करो।  
 उनके मुँह से कुछ और न निकला। भाषाव हलक में कैमकर रह गयी।  
 पूनी को खुदापी आज तक कभी ऐसे इतिहास में न पदी थी। उनसे ऐसे ऐसे अपना सार अमरराज के कंधे पर रख दिया कुछ कहना चाहा मगर भाषाव न निकली। हाथ खुदापी का बाँध टूट गया और वह तनाव में आने लगे।  
 पूनी ने कहा हुआ था उबरक पना। अमरराज सबके सन्तुष्टता के साथ बने कि सब भेरा मौका है। उन्होंने दोनों के शरीर से बिलको घटा भी न मिलायी। उनके हाथों में शेरल पशुपना। पूनी ने कहा भी हाथ न खींचा। वह अमरराज ने मुद्रक करके उनके हाथों को बन् लिया और उनकी आँसू मारे पूनी के अगलाने लगीं। रोती हुईं पूनी ने मुँह इस मन्त्रमुक्त आदरर ही।  
 वारें अमरराज

तबर्से की बात है कि मध्या औछात बेबुनियाव सबरें दूर-दूर तक मयदूर हो जाया करती है, वो मध्या भिस बात की कोई असम्भित हो उसको जवानबरे हट छाखोभाम होने से कौन रोक सकता है। चारों तरफ मयदूर हो रहा था कि बाबू ममूतयम इस बरहमनी के घर आया-जाया करते हैं। सारे घर के लोग हुलक उठाने की तैयार रहते कि दोनों में नाबामब टास्मक है। कुछ अर्से के बीबाइन व पंडाइन ने भी पूर्वा के पीको-सिभार पर हाथिया बड़ाना छोड़ दिया था। चूंकि वो बब उनकी दारिस्त में उन कुमुद की पाबन्द न थी भिनका हर एक बेबा को पाबन्द होना चाहिए। वो लोग टालीमवाफुता से बीर हिन्दुस्तान के बीबर पूबेबात की भी कुछ खबर रखते थे वो इन क्रिस्ती को मुक-मुककर खयाल करते थे कि चायद इसका तरीका नकली थादी होमी। हजारों बाबसर मयबाब बात में थे कि अगर यह हकपत एत की पूर्वा के मकान की तरफ जाने लगे तो शिन्दे मापद न पायें। मगर कोई अभी तक ममूतयम की भीपत की सझई पर एतबार करता था तो वो प्रेमा थी। वो बेबाटी मझबर लड़की सम पर घम भीर बुल पर पुल सही थी। मगर ममूतयम की मुहम्बत उस पर सादिक थी। उसकी बास अभी तक बेपी हुई थी। उसके दिल में कोई बीटा हुआ कहता था कि तुम्हारी धारी ककर ममूतयम से होमी। इसी उम्मीद पर वो जीती थी। और जितनी सबरें ममूतयम की निस्वत मयदूर होती थीं उन पर वो कुछ यूँ ही-सा मझीन समी थी। हाँ कभसर उसको यह खयाल पैदा होता था कि वो पूर्वा के



मंगलाचरण

पर बार बार क्यों करते हैं? और बार बार देखते रहते अपनी भावना और  
 गार बार की बारें सुनते सुनते यह भावनाएँ को बंधन-को-बदलकर चलाते  
 लगी है। मगर कभी एक उनकी मुहकत उनके रिक्त में बहिष्करी सोचने  
 की। और उन लोगों में की जो एक बार रिक्त का दौरा चुका लेंगे हैं तो  
 फिर कल्पना नहीं करते।

बार बार अनुपम मुक्ति के बोलने पर लुके होते कि उनकी  
 भारी की छत्र के रही छत्र का से सुनने बाल बैठने लगी। और बार होने  
 होले गारे छत्र के रही छत्र का से सुनने बाल बैठने लगी। और बार होने  
 प्रभाव न करता और जब उनकी इस छत्र की ठहल का यकीन हो जाता  
 तो अनुपम को समझते मुलगा। पर तो किसी ठाँव क्यो। सुबह  
 होले ही मुनी बहरीमात्र साहब के बोलवाते पर बार के मुलम न  
 अपना उनका न बुझा मर कई हजार बहुराते और सोहरों के जना हुए  
 और लक्ष्मी होने लगी कि ये भारी बहुराते और सोहरों के जना हुए  
 पवित्र मुलम — निबना बिबाह बजिल है। और सुनते साकाब  
 कर के।

कई भावनों के निरकर होके लवली — ही उलर घालावे  
 ही। अब बार उलर के बीकरी निबल बिबायी बालों में लोभितो बबावे  
 पर लवले भीषण कथि पर लने मुँह में लवाक की गरे एक जा जना ही  
 नये और भाव में मरफक होने लगी कि उलर घालावे ही। अब  
 लोके पूछ जावे और उनके प्रभाव का यों प्रभाव घालावे ही। अब  
 प्रभाव में साकल की एक बहली की निकले तो फिर लवह हवावे हाब  
 है। बहल के बहलुले में बार की ली जलम में लोके भीकर घालावे  
 बिबाया पूरे है। बरदीयार गाहन प्रदीयार बावली के। अब उन बार  
 नियों को घालावे पर भावना रेना ही कल्पना किना घालावे घिना  
 जलना। माल ही यह घालावे न करे लव ?  
 केड डूरीकल — बिना घालावे किने बाहू कर ली ?  
 गदगदकट) — बने में लव कर ली ?

(कैसे)

## हमकुर्मा व हमसवाव

ठाकुर खोरावर सिंह (मूर्खों पर ठाव देकर) — कोई बूढ़ा है म्याह करना। सर काट लूंगा। लून की गरिया बह जायेगी।

राव साहब — बारात की बारात काट बाकी जायगी। उस बकुर सैफुर्को बाबारा घोहदे नहीं आ डटे और बाप में ईसन लपाना शुरू किया।

एक — बकर से बकर सर काट डालूंगा।

दूसरा — घर में आम क्या रहे बारात की बारात बस-मुन जायगी। तीसरा — पहले उस बीरत का पत्ता पोंट लेये।

इसपर तो ये हड़बौंग मन्ना हुआ था चास निवस्तप्राह में बोकला बैठे हुए छावी के नाबामव होने पर कानूनी बहस कर रहे थे। बड़ी पर्मी से बखीम जिस्कों की बरक-पिरबानी हो रही थी। साम्रा सामकी पुणनी नबीरें पड़ी या रही थी ताकि कोई कानूनी निरिफ्त हाथ आ जाये। कई बच्चे तक यही बहस-पहल रहा। बाकिर लून सर लपाने के बाद यह राय हुई कि पहले ठाकुर खोरावर सिंह बमूठराय को बमका दें। बमर सो इस पर भी न मानें तो बिस दिन बारात निकले सरे बाबार मारपीट हो और ये रेञ्जोकूशन पास करने के बाद बखसा बखसि हुवा। बामू बमूठराय छावी की तैयारियों में मसरुञ्ज से कि ठाकुर खोरावर सिंह का चुनका पहुँचा। किता था —

बमूठराय को ठाकुर खोरावर सिंह का सलाम-बदनी बहुत-बहुत तरह से पहुँचे। बाये हमने सुना है कि आप किती बिबवा बरहमनी से म्याह करनेवाले हैं। हम आपसे कहे देते हैं कि मूखकर भी ऐसा न कीनिएगा बर्ना आप जानें और आपका काम।

खोरावर सिंह बसावा एक मुठमन्निछ और बाबसर भावनी होने के सहर के लठैयों और सोह्रों का सरदार था और बाच्छ बड़े-बड़ों को नीचा बिबा चुका था। उसकी बमकी ऐसी न थी जिसका बमूठराय पर कुछ असर न होता। इस सन्ने को पढ़ते ही सगके बेहरे का रंग उड़ गया। सोचने लगे कि उसको किती हिकमत से फेर लूँ कि एक दूसरा चुनका फिर पहुँचा ये मुमनाम था और मखमून भी पहले ही सन्ने

## मंगलवाचक

से मिलना-जुलना था। उसके बाद आज हीसे होशे हवाओं ही गुमान  
पुले जाये। होशे बहना या अगर फिर ब्याह का नाम किता तो  
पर में आज तथा होशे कोरें नर कष्टों को घनकाता है। कोरें से में तथा  
मौक्तो के लिए तैयार रीता या कोरें कोरें मुक्त के बाल उलाको के लिए  
बटाकियो नम कर रहा था। अनुपपय से ही जानते थे कि यह बालों  
मुजाकिल्ल उबर करिये नार दस किस्म की मुजाकिल्ल का उनको बहो-  
मुमान भी न था। इन बर्तकियों ने उन्हें बाकर्स अकिल्ल कर दिया था  
और अपने से विवाहा बदेसा उनको मुक्त के बादें में था कि कहीं बाकिल  
उस बेबापी को कोरें अजीबत न पड़ेगा हैं। मुनाके को उस कुन कपडे  
पहन बावलिजिल पर लवार ही बटपट मजिस्ट्रेट की डिपलत में होकर  
और अपने से विवाहा बदेसा उनको मुक्त के बादें में था कि कहीं बाकिल  
अच्छा मूलक था। न इराकिय कि जो मुसामरी से बलिक्स इवलिय कि  
ही रोसाकपाल और साकरो से। उनो टागरी अवासी और उगी कन पुन  
बजलाक से केव जाये। उनो टागरी अवासी और उगी कन पुन  
रिस्टेडेट पुलिस को तहरीर किया कि आप बहू अनुपपय को मुह  
किज्म के लिए पुलिस का एक माल रवाना कर दें और साकरो कि  
घारी न ही आज खबर कैसे रहे ताकि मारपीट और पुन लपका  
अमात उनकी मदद के लिए का कयी किमें से पाके मजबूत और  
अमीन अवासी को अनुमति मुक्त के मजल की हिल्लवत के लिए रवाना  
कर दिया।  
मजबूतलानो ने जब अनुपपय की वेपबर्नियो कयी तो मिहारत कर  
ही डिपलत में होकर हीकर अरिवाल अवासी कि अमर मरफार हीकर  
मारा ने इन अवासी के रोको को कोरें अजीबत न किया ही बलवा ही  
को निगी पाल के केंद्र में बलाबापी कला मरूर नहीं है मरकर  
कि अवाल को इन अवासी कोरें मुमान न पड़े। मर टबा मा अवासी

पाकर मुझे भी बहुत महजुब हुए। वहाँ से बल-मुतकर मकान पर आये और अपने मुसीबों के साथ बैठकर इतई ऊँसला किया कि जिस बन्त बापत बने उसी बन्त पचास आदमी दूट पड़े। पुसिसवालों की भी उबर लें और अमूतराय की इद्दी-मसली भी लोड़ के बर हें।

बाबू अमूतराय के लिए बाबई यह नामुक बन्त था मगर बा ड्रौम का दिरुवादा बड़े इस्तिफसास व आक्रियानी से ठैमारियों में मसकूठ था। शाही की शाहीख आज से एक हुरते पर मुकरर की ययी थीकि बिनाश ताबीर करना सतरे से साधी न था और यह हुस्ता बाबू साहब ने एसो परेशानी में नाटा जिसका सिऊँ कयाल किया जा सकता है। अस्मवाह दो कानिस्टिबिलों के साथ विस्तीलों की बोड़ी लगाये रोब एक बार पूर्णा के मकान पर आते। पूर्णा बचारी मारे डर के मरी जाती थी। बां अपने को बार-बार कोसती कि मैंने क्या उनको उम्मीद दिलाकर उहमत मोस की। अगर कालिमाँ ने कही उनके डुरमनों को कोई मबन्द पड़े चाया तो उसका कठकाठ मरी ही सर्वेन पर हाया। गो उसकी मुहाक्रि-पत के लिए कानिस्टिबिल मामूर के मगर को रात भर बागा करती। पता भी सहकटा तो यह थीककर उठ बैठती। अब बाबू साहब मुजह को आकर उसको ठसकीन बैठे तब जरा उसके जान में जान आती।

अमूतराय ने अनुत इमर-उमर रबाना कर ही दिमे ये शाही की शाहीख से चार दिन पहले से शुरुआत आन शुक हुए। कोई बम्ब से आता था कोई मशास कोई पजाब कोई बंगाल से। बनारस में रिफ्तम से इन्दिहा बर्बे का इच्छतिनाऊ था और सारे हिन्दोस्तान के रिफ्तमरों के भी से लगी हुई थी कि आहे जो हो बनारस में रिफ्तम को रोसनी ऊँसाने का ऐसा नाबिर मीका हाय से न देना चाहिए। गो इतनी दूर को मजिसे तम करके इनीलिए आये ये कि शाही को कामयाबी के साथ अंजाम तक पहुँचायें। गो जानते ये कि अबर इस शहर में ये शाही हो गयी तो फिर इस मुने के घुसरे शहरों के रिफ्तमरों के लिए बड़ी आसानी हो जायगी। अमूतराय नेहमानों की आबमगत में मसमूक से और उनके पुरबोय पैरी मिनकी ताशाद कालिब के बस-बाहू तुषबा पर महजुब

मंगलाचरण

की माल-मुण्टी पोसाके पहले देखल पर आकर मेहुनाओं की चक्रीयों  
करले और उनके पचावो-चक्रीय में बड़ी छापनी दिलावे के। घाटी  
के किन तक घाटी कोई डेह की मुछा मुजला हो गये। अरर कोई घाल  
दिखावलान की रोचना हुमुक बलनी ब जोसे औभी को सकजा देखना  
बाहला वो रन पुल बाबु अमुण्टल के सकल पर देख सकला वा। बाबल  
के पुणजे लबाकाले बबहाब रन तीयारियों और मेहुनाओं की अमल को  
के देवाकर रिक में ईरण होले के। मुंवी बरटीअकार घाह और उनके  
बल देवाकर रिक में ईरण होले के। मुंवी बरटीअकार घाह और उनके  
बाबलदे उरोकाकर वा।

हमउमाक आरियों में कई बार मानदे हर और हर बार क्येई केलन  
हमा कि बाहे को ही मार मारपीट अकर की बाब। मुनाके घारा बहर  
के पुणजे लबाकाले बबहाब रन तीयारियों और मेहुनाओं की अमल को  
के देवाकर रिक में ईरण होले के। मुंवी बरटीअकार घाह और उनके  
बाबलदे उरोकाकर वा।

मुना के सकल पर घुंके और बहो उनको बाउलियों की बाउलिन ब  
उनाको करले के तिय मानु किना। बाब क्यो मुना के घाल गये। को  
उनाके देखले ही आकरीबा हो गयी।

मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर

मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर

मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर

मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर  
मुनाके घारा बहर

पक्षे से झिपट गयी और बोली—प्यारे अमृतदास तुमको मेरी इतना इन कालियों से बचते रहना। बरबाहों को सुन-सुन के मेरी स्तुति करना हुई जाती है।

अमृतदास ने उसके सीने से समा लिना और तपपञ्जी व दिवाला लेकर अपने मकान को रवाना हुए। राम के बक्त पूर्वा के मकान पर कई पवित्र जिनकी धरु से सराफत बरत रही थी। रेशमी मिर्चियाँ पहले पक्षे में फूलों का हार डाले जाये और वेद की रीति से सम्राट बना करने लगे। पूर्वा बुद्धि की तरह सजायी गयी। भीतर-बाहर पैस की रोशनी से मुन्यर हो रहा था। कानिस्त्रिभुव दरवाजे पर टूट रहे थे। वो नये नून और नयी रोशनी के तुलना जिनको अमृतदास मही पर टीनात कर मये थे। टीमारियों में मसक के। दरवाजे का सेहन साफ किया जा रहा था। छत दिवाला जा रहा था। बुद्धियाँ जा रही थी। घाटी एत इही टीमारियों में कटी और अस्त्रबाहू भारत अमृतदास के घर से रवाना हुई।

माधेवत्ता क्या महारज्य भारत की और किसे महारज्य भारत की न बाहों का यह-वह पड़-मड़ न विगुलों की धों-ओ पों-पी न पाकियों का मुग्ध, न सजे हुए बोड़ों की चित्तों न मस्त हावियों का रेल-पेल न बर्दीपोष असावरवारों की क्यार, न गुल न मुकदस्त। बस्कि सछेदपोषों की एक बमात थी वो बाहिस्ता-बाहिस्ता बहुतकदमी करती अपनी सजीवा एतार से अपनी मुस्तिकिनिबाजी का सुबूत देती हुई बनी जा रही थी। हाँ ईबाह यह भी कि पोस्या जमी पुक्ति के जादमी बरियाँ दाँते छोटे किये लड़े व। सड़क के इतर-उतर जा-जना मुंड के मुंड बादमी काठियाँ किये जमा मकर भाते थे और भारत की तरफ देख-वेइकर दाँत पीसते।

मगर पुक्ति का वो रोव था कि किसी को इतना हिलाने की बुर बात न पड़ती। भारतियों के पचास इतम के प्रासवे पर रिजबे पुक्ति के सवार हथिबारों से लैस बोड़ों पर राजपटरी जमाये भाते जमकते और बोड़ों को जमानते जने जाते थे। ताहम हर क्यहा वे बन्देगा या

मंगलाचरण

किन्हीं पुस्तक के शीर्षक का मैं विचित्र दृष्ट न कर। भारतीयों के चरित्र से भी सामिक प्रतीतिगत नहीं बाधित होता था और वस्तु अनुपात को इस वस्तु निहायल सुसुझात बना की शेरवानी रहने हुए मैं शीर्षक-श्रीक कर शब्द-उपार देखने के। अट भी चटपट होती थी। उसके बाद मैं समादा का क्या मार विविधटी पुस्तक में निकल मार्ग किया। और दस के दस में सब सोचगुनों की बसली मूल में आने का मुझे मिला और दस के मुकविचारवर्षकी की बसली मूल में आने का मुझे मिला और दस के मूल में अल गया हुआ था। मुनिवां करेके से बरी हुई थी। बार मुदा बार पचासी बरहुसल एक का जोड़े हुए बरहुस करने में मरकक से और कर के बरं जिसे बरु पठिन ठीके हुए बरु के पलोक बरी तथाकथनी में निकले मालों में सुसुझात और पल्लाये बने। बार मुदा मुदा मुदा ही पुरा का रस पाठकोवाला कोई न था मिके बिल्लो मंगला का आय भी बरली और अजीब का थी। अरर तो गान्नी हो रही थी बाधित हजरायें हरु मरकक के जिसे एक हलका बोधे चडे के। पुनिनबाके उनको रोके से। रही बलना में पुस्तक का इत्याय भी का मुझे। उसके आने ही होय किया कि भीर हल ही मार और दस के दस में पुनिनबाकों के गरीब में मार मालर का मुकले केमलीकी को हलगा मुक किया अती पुस्तक में बरुके के निय बरुके की हो बार बाधे लका में मार कर भी। अर रस का भीमलप मरकर मर गयी। मर हुमें उली बरु उरुमर औररर निरु शीर्षटी विस्वाक बोधे मरर गया। उनको मुँठे गये थी। अती

से हमारे उड़ रहे थे। उसको देखते ही वो बेकायदा बमामत जो तितर बितर हो रही थी फिर जमा होने लगी जिस तरह सरकार को देखकर मागती हुई डीम दम पकड़ के। एक समझे में कोई हुआआ भावनी इकट्ठा हो गये और दिशाबर ठाकुर ने खुद ही एक माघ माघ अब हुन-यी की खुद ही सारी बमामत के दिनों में मोया कोई ताबा रुह आ यनी। जोस भड़क उठा। जून में हरफ्त पैदा हुई और सब के सब दरिया को तरह समझे हुए भाये को बड़े। मिळिटरी पुलिसवाके भी सगीने लाके हुए कठार के कठार हमले के मुन्तबिर बड़े थे। औररका एक खौफनाक समाटा छामा हुआ था। बड़का छमा हुआ था कि अब कोई दम में खून की नदी बहा चाहती है। पुलिस कप्तान बड़ी पामरी से अपने आदमियों को उमार रहा था कि बफज्यान् विस्तील की आवाज आयी और कप्तान की टोपी बमीन पर गिर पड़ी मगर खत्म नहीं गया। कप्तान ने बेख खिया था कि वे विस्तील बौराबर सिंह ने छर किया है। उसने भी बठ अपनी बन्धु सम्भानी और बन्धु का छाने छफ जाना था कि ठाकुर बौराबर सिंह चारों छाने जिल बमीन पर आ रहा। उसका गिरना था कि दिशाबर सिपाहिमी ने भाषा किया और वो जमाठ बदहवास होकर भायी। जिसके बहाँ सींग समझे बक निकला। कोई जाब बधे में बिहिमा का पुत भी न दिखायी दिया।

बाहर ती यह सुझाम गया था बन्धर दुस्तर और दुस्हन मारे डर के लूके जाते थे। पूर्वा दर-दर काप रही थी। उसको बार-बार येना माता था कि वे मुख बमामिनी के लिए इतना पून-सन्धर ही रहा है। बमउराय के उपाकात कुछ और ही थे। वो खोबते थे कि काठ में पूर्वा के साथ किसी तरह बखीरियत मकाल छफ पहुँच जाता तो दुपमनों के हीठले पस्त हो जाते। पुलिस है तो काड़ी। बरे ये बन्धुके बन्दे लयीं। सीजिए, बेबाय बौराबर सिंह माघ गया। जाब बधे के ही बन्धर, जो समुठपव को कई बरसों के बरबर माकून होता था जिया-बीबी हमेघा के लिए एक-दूसरे से निजा दिने गये और तब यहाँ से बाराठ की रुह छती की छूटी।



मंत्राचारण

पूर्वा एक क्षितिज में बिछावी बनी और शिव ठण्ड बाणल बानी बनी  
 बनी ठण्ड रहना हुई। जब की मुञ्जालिनी को तर उठाने की मुल  
 इस आंग को बहते थे। एकर उपर से एकर भी बहते जा रहे थे  
 एकिनी बानी का रही की मुँह बिजाया जा रहा था मगर उन रात  
 एकी से एके मुञ्जालिनीवार रिछमोटे की मीरीबनी में था ठण्ड का  
 मकान था। हो बहर क्षितिज में हीठी हुई पूर्वा रो रही थी। आकिन्न  
 बसकिय कि ठुल्ल ठुल्ल के बर जले बहर उठर देया बनी। बाटगिली  
 बुवा-बुवा बरके बाणल छिकने पहुँची। बुवा उलाटे बनी। बाटगिली  
 की जाल में जाल बानी। बगुलाम की पुली का था मुकान। सो रोष  
 दोष मने होब मिलने मिले थे। बाँठे तिली जाली थी। बाटगिली  
 उस राते हुए बमरे में रोक बसके बनी — जाली को तर  
 एना हुना का अमरण में बाँकर बनके बनी — जाली को तर  
 बोटियल पहुँच बने। दो पुन की रो रही थी मरु बने हुए उठाने बमर  
 से अमक आँसू रोके और उठको मने से बमर।  
 ब गुरु मरु बनी। अने अमरण का हाँक पकड़ लिया और मीनी —  
 ब यही मेरे पाम रूँडिय, बाणको बाहर न जाने देनी। सोष बाँधियां  
 ए मरारक रात के बर बाटगिली से बने की ठपारियां हाँक  
 लीं। मगर मने रगार किया कि बाबा बगुलारीका मरको अमरी  
 एकर से एक बार वीदुवाक बने। बुलाके मुने रिल अमरण में  
 बने के मरारिल्लाने गेबन म एर पागिलाना मगर इपया और बने  
 मुपाम का अकान हुना। हो बमोधार एकरे ही कि मीना भा  
 मियो के मुल दूट गये। एक मने की कामबारी के रिमल बानी को  
 अमने और हुए और ही कामबारी के मर। मर एर दूट गला था।  
 मुल्ल का इएवर अमरम एर। बनी लोक की एक तिलाम के रिमल  
 मारियां लिये हुए के बाब एर एकरो की और ये मुने के और बने

बल्ब गो उम बातों पर अमल करने के लिए तैयार न हों मगर इतना जरूर कहते थे कि याद, यह सब बातें तो ठीक कहते हैं। इन बातों के बाद दो बेबाजों की भीर छादिपाई हुई। दोनों दूधे अमृतपत्र के पुरबोध परबों में से वे और दुस्दनों में से एक पूर्वा के साथ यथा महानेवाली रामकली थी। चौथे दिन तमाम हजरत खसत हुए। पूर्वा बहुत कली काटवी फिरी। मगर ताहम बापदियों से मिजाजपुरी करना पड़ी और सासा अनुबधारी ने तो तीन दिन माध-माध बच्चे तक उसको बखलाती ललकीन की।

घारी के चौथे दिन बार पूर्वा बीठी हुई थी कि एक औरत ने आकर उसको एक सर-ब-मोहर सिध्दपत्र दिया। पढ़ा तो प्रेमा का खत था। उसने उसको मुबारकबाद भी थी और बाबू अमरताम भी वह उसबीद, जो बरसों से उसके गले का हार थी पूर्वा के लिए भेज दी थी। उस खत की खानिरी सतरे ये थी —

सखी तुम बड़ी माम्बवान ही। ईबरत सब तुम्हारा मुहाप कायम रखे। मेरी हजायें उम्मीरें इस तसबीर से बाबस्ता थी। तुम जानती हो कि मने उनको जान से डियाबा अबीर रता मगर अब मैं इस इतिबिह नहीं कि इसको अपने सीने पर रखूँ। अब ये तुमको मुबारक ही। प्यारी मुझे भूखना नठ। अपने प्यारे पति का मेरी तरफ से मुबारकबाद देना। अबर डिला रही तो तुमसे जरूर मुखाकात होपी।

तुम्हारी अमापी सखी

प्रेमा

पूर्वा ने इसकी बार-बार पढ़ा। उसकी बाँधों में अश्रु भर आये। इन तसबीर को पले में पहन लिया और मिहमत हमबर्दाना सहजे में इस खत का जवाब लिखा।

अक़्तोस आज के पन्तहवें दिन बेचारी प्रेमा बाबू बालनाम के गले बाँध दी गयी। बड़े भूमधाम से बारात निकली। हजायें बपमा लुग दिया गया। कई दिन तक सारा घहर मुंगी बरतीप्रसाद साहब के दरवाजे पर नाच देखना रहा। कावों का बारा-प्यारा ही गया। घारी के तीसरे ही दिन बार मुसी भी राहिय मुस्के बहना हुए। बुरा उनको मरफिटा करे।

ग्यारहवाँ बाब

दुस्मान के कुन्द सु मोहरवाँ बाबाद दोस्त

मोहरवाँ की एकसरी के बाब है जमीर की बली थी कि मुजाफि  
और जब घर न उठलिये। बुझल इन बन्द से कि उनकी वाञ्छ मुनी  
बरीअलम और ठाण्ड कोरावर सिंह के घर जले से निकालत करबोर  
थी हो रही थी। अगर बाबाक में बनी करबल है। एक हला भी न मुबल  
पाया बा बरिका कुण्ड-मुण्ड बन हो बला बा कि एक रोच मुब को बाबू  
अनुपराव के समान बाबिलेसे उनकी खिमत में हरिदर और  
बने किया कि हमार इलीका से लिया बाब। बाबू बाबू बाबू बाबू  
से बहुत बच्चा बाबिलेसे। पल उनकी रा बाबू बाबू बाबू बाबू  
बाँके — दुस लोग ब्या बाहेले हो? हूँ इलीका से हो?  
बाँकेर — जब दुबूर हुस लोग बाँकेरी न इरिये।

अनुपराव — बाबिलेसे बाबिलेसे। अगर कोई हुनसे निमाल  
लगावह बन हो तो बसुयी न गकती है। ये इलीके की बाबिलेसे भी और फिर  
हो तो एका भी न गकती है। अगर कोई हुनसे निमाल  
बाब के लब एक बाब।

बाँकेर — हुन लगा की हुनको अत भी निमाल नहीं। हुन  
तो हुनका गार्द बाब की लख गाल है। मुग बाब हमार कुण्ड बन गली।  
जब हमार निपारटी बाब ने बाबू बना है हुनका-गाली बन बला है  
बाबू अनुपराव बाब की लख लख बाबू। अनुपराव ने बाब  
और कोई बाब बनना न देलख गाली बा से बन निकाला है। बाँके —

## हनहुर्मा व हंसबाब

हम तुम्हारी तनकाह डूनी कर देते अगर अपना इस्तीफा खेर छोड़े।  
बर्मा तुम्हारा इस्तीफा नामंजूर, ताबकते कि हमको भीर कहीं खिदमत  
मार न निक बायें।

गौकर — (हाम बोड़कर) सरकार, हमारे खयर मेहरबानी की  
जाय। बिचदरी हमको आज ही सारिज कर देगी।

अमृतराम — (बोड़कर) हम कुछ नहीं जानते जब तक हमको  
बीकर न मिलेते हम हरपिज इस्तीफा मंजूर न करेये। तुम सोम अमे  
हो देखते नहीं हो कि बिछा गौकरों के हमारा काम ब्यूँकर जलेमा।

गौकरों में ऐसा कि ये इस तरह हरपिज छुड़ी न देये बुनाये उस बकल  
तो कहीं से चले जाये। दिन भर सूब दिस सगाकर काम किया। माठ  
बजे राठ के इरीब बब बाबू अमृतराम सीर करके जाये तो कोई टमटम  
चामनेवाला न था। जायें तरह बूम-बूमकर पुकारा। मगर सबाये ना  
बरखास्त। समझ गये कम्बळों ने बोधा दिया। खुद बोड़े को खोजा,  
फेरके की कहीं फुरसठ। साज उतार अस्तबस में बाँध दिया। अन्दर  
गये तो क्या देखते हैं कि पूर्वा बँठी जाता पटा रही है और बिन्की  
इबर-उबर बीड़ रही है। गौकरों पर बाँठ पीसकर रह गये। पूर्वा से  
कहा — व्यापे आज तुमको बड़ी तकलीफ ही रही है, कम्बळों ने सक्त  
बोखा दिया।

पूर्वा — (हँसकर) आज आपको अपने हाथ की रसोई खिलाऊँगी।  
कोई भापि हमाम दीबिएगा।

अमृतराम को उस बकल दिखली कहीं सुझती थी बेचारे चाबक-दास  
घाला मूक गये थे। करमीटी बरहमन मिहायत मझीस खाने तैयार करता  
था। उन घहर में ऐसा बाहुगर बाबर्नी कहीं न था। कितने पुरछा उसकी  
गौकर रसाने के किए मुँह फँकामे हुए थे। मगर कोई ऐसी बरियादिली से  
तनकाह नहीं वे तकता था। उसके जाने का बाबू साहब को सत्य अफ-  
सोस हुआ।

बीबी से पूछा — ये बरमास तुमसे पूछने भी जाये थे या यूँ ही चले  
गये ?

### मंगलाचरण

पूर्वा — मुझे तो कोई भी नहीं मूखों माना। मरुटाच अलगावा  
 माना और टीका था कि मुझे लोक मानने को माना रहे है।  
 मनुष्यत्व — (मुझे से साथ मरुकर) नहीं मानने से वाकिल बना  
 करनेवाले है। वे मरुकर बाहर जाने करने उतारे। कहीं तो रोख निक  
 मरुटाच मरुकर करने उठाया था उसे बोझला था हुए मुझे बुझला और  
 ही गया। बेकार मान-नौ सिकोने मरुट रकला और कहीं यथायक काम मरुटाच  
 उनकी मरुडि मरुट ही ही और निक में पुस भी की कि मान मने  
 वाकिल बना मानना जमान दिले है। मरुट मरुकर तो मने के मार ही —

मनुष्यत्व — (मुझे को बला करके) नहीं मानने विलो से उठती  
 सोचो की उतरा है। उठी बालियो में समान मरुटो को उयाकर बना  
 कि मने मरुट में कोई मरुटो हुमारे पदों मरुटो को मने तो लीफ के  
 मरुट पर से कहर में मने ही मानना मने करनेवाले है। मने तो लीफ के  
 ही मने मरुटो के मने ही मानना मने करनेवाले है। मने तो लीफ के

मनुष्यत्व — (मुझे को बला करके) नहीं मानने विलो से उठती  
 सोचो की उतरा है। उठी बालियो में समान मरुटो को उयाकर बना  
 कि मने मरुट में कोई मरुटो हुमारे पदों मरुटो को मने तो लीफ के  
 मरुट पर से कहर में मने ही मानना मने करनेवाले है। मने तो लीफ के  
 ही मने मरुटो के मने ही मानना मने करनेवाले है। मने तो लीफ के

मनुष्यत्व — (मुझे को बला करके) नहीं मानने विलो से उठती  
 सोचो की उतरा है। उठी बालियो में समान मरुटो को उयाकर बना  
 कि मने मरुट में कोई मरुटो हुमारे पदों मरुटो को मने तो लीफ के  
 मरुट पर से कहर में मने ही मानना मने करनेवाले है। मने तो लीफ के  
 ही मने मरुटो के मने ही मानना मने करनेवाले है। मने तो लीफ के

किया था कि परा अपने उन के नीहुर दिखवायेगी चीजों के न मिलने से दिल में ऐंठकर रख लगी। नाचार सारे खाने पकाकर घर दिखे।

इसी तरह दो-तीन दिन सुबरे। चौथे दिन बाबू साहब के इलाके पर से बन्द मोटे-साबै हट्टे-कट्टे कहार बाये जिनके मदे मदे हाम-यौन और पूठे हुए कबे इस आविक्त न वे जो एक सहजीबपान्ता अदुम्बैत की सिवमत्र कर सकें। बाबू साहब उनको देखकर खूब हँसे और कुछ सारे-पहू देकर उठे इरम बापस किया और उसी बग्न मूमी धनुसभारी काम के पास टार देखा कि मुसको बन्द सिवमत्रगारों की बसद उकरत है। मुंघी जी साहब पहले ही से सोचे हुए थे कि बनारस जैसे शहर में जिस इतर मुखातिब हो बोडी है। टार पाते ही उन्होंने अपने होटल से पाँच सिवमत्रगारों की खाना किया जिनमें एक काश्मीरी महुराज भी था। दूसरे दिन वे बने खादिम जा पहुँचे। सब के सब पंजाबी थे जो न बिच बरी के गुलाम थे और न जिनको बिरादरी से खारिज होने का खौफ था। उनको भी मुखातिबनीन मे बरअभिकता करना चाहा। मगर कुछ शैव न बला। गौकरों का इन्तजाम वो इस तरह हुआ। सीदे का ये बन्दोबस्त किया गया कि लखनऊ से तमान रोडाना बकरियात की बाँवें इकट्ठी रँया लीं जो कई महीनों के लिए काडी थीं। मुखातिबों के अब देखा कि इन सारा खों से बाबू साहब को कोई नज्द न पहुँचा वो और ही पाक बले। उनके मुखकिल्लों को महकाना शुक किया कि वो तो ईसाई हो पये हैं। विषया विवाह किया है। सब जानवरों का मोस्र खाते हैं। सून बिभार नहीं मानते। उनको बूना बुनाह है। वो देहात में भी रिषमर्न के लेखर दिखे पये थे और अमूतराय के पुरबीय पँरी मुवबातिर वीरे कर रहे थे मपर इन लेखरों में अभी तक विषया विवाह का बिच मसकहतन नहीं किया गया था। बुनावे अब उनके मुखकिल्लों ने जिनमें बिवाशातर राम पूत और भूमिहार थ थे हालात मुने वो इतम खाई कि उनको बरना मुकद्मा न देवे। राम-राम विषया से विवाह कर लिया। अतकरीब दो हज्ते तक बाबू अनूतराय साहब के मुखकिल्लों में वे बारी रँधीं और मुखातिबनीन न उनके खूब खान मरे जितका नतीजा के हुआ कि बाब



पर रखे हुए) ही जान तो ऐसी पढ़त है। जब बाबू साहब जैसे सापन तो जब साहब बोलते कि आप बैसा कहेपि बैसा किया जायगा।

ठाकुर—कब कही अमृतराय समान बकौल पिरदोर्मा नाहीं वा बाकी फिर ईसाई होय गवा राँव से बियाहू किहेति।

मिम बी—इतनी तो पेंच पड़ा है। हमका तो जान पढ़त है कि जरूर मुकद्दमा हार जाये। इतना बकौल होते बाकी उनको बाउबटी कोऊ नाहीं ना। कइस बइस करत है, मार्गो सरसुठी बिन्ध्या पर बैठी है। सो अयर उनका बकौल किये होइत तो जरूर हमार जीत हुइ बात।

इसी तरह की बातें दोनों में हुई और चिराफ जलते-जलते दोनों बाबू अमृतराय के पास जाये और मुकद्दमे की शर्वाद बयान की और अपने कताबों की मुवाझी चाही। बाबू साहब ने पहले ही समझ लिया था कि मुकद्दमे में जान नहीं है ताहम उन्होने उसको क लिया और दूसरे दिन एमी पुरखोर और नुरसूल बइस की कि ऊँके सानी के बोकला खड़े मूँह ठाका किये और घाम होठे-होठे मैदान अमृतराय के हाथ था। इन मुकद्दमे का बीतना कहिए और कचहूटी बज्जैस्त होने के बाद जब साहब का उनको मुबारकबाद देना कहिए कि घर जाठे-जाठे बाबू साहब के दरवाजे पर मुबलिक्को की भीड़ लय गयी और एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर उनकी बकालत हुनी जाबो-ताम से बमकी। मुवाकिलों को फिर नीचा देवना पड़ा। सब है, खुदा मेहरबान हो तो कुरु मेहरबान।

इसी मसभा में जो घाट जो बाबू साहब सरफे कवीर से बनवा रहे थे तैयार हो गया और मुवाकिलों को भी मजबूरम मोतरिख होना पड़ा कि ऐसा मुबमूरत घाट इस मूबे में कहीं नहीं। बीतरऊ संमीत पारसीबाटी बिची हुई थी और हरिया से महर्षों के रास्ते पानी अस्ता था। अताया लय भी तैयार हो गया। अल्ला कैरी आलीघान पुल्ला इमारत थी। ऐन हरिया के किनारे पर। उसके चारों तरफ महला बेरकर लून गया दिया था। घाटक पर संमरमर के दो लक्रे बस्त किये हुए थे। एक पर उन अलहाब के मसमाये गिरामी खुदे हुए थे दिनकी प्रम्पाजी से जो इमारत तामीर हुई थी और दूसरे पर इमारत का नाम और उसके





## हुमबुर्गी व हुमसबाब

पूर्या — ईस्वर आपके दरवाशों में बरकत दे। अभी आप न मामूम क्या-क्या करोगे।

अमूठराय — तुमको इस अमावास्या की निगरानी करना होगी। क्यों बच्चा होया न ?

पूर्या — (हँसकर) तुम मुझे सिखा देना।

अमूठराय — मैं तुमको लेकर मद्रास और पूना चर्कूया। वहाँ के औरतबाशों का इल्जाम बेर्कूंगा। और बरकत के मुमाकिर तरमीम करके वही इनाइत यहाँ भी जारी करूँगा। प्यारी कछ स तुमको मिस बिस्मियम नामा सिखाने आया करेगी।

पूर्या — (हँसकर) तुम मुझे क्या-क्या सिखलाओगे। मुसदे ब्याह करने में तुमने बोत्ता आया।

अमूठराय — बेसक घोखा आया। मुहम्मद की बत्ता अपने सर छी। इसी तरह बेर तक बाते होती रहीं। आज से दोनों मियाँ-बीबी बड़े

बैन से बसर करने लगे। ज्यू-ज्यू दोनों की छिठरती कुबियाँ एक-दूसरे पर बाहिर होती थीं उनकी मुहम्मद बड़ती जाती थी। बीबी घीहर की आधिक और घीहर बीबी का दिरशाबा दोनों एक जान दो कालिब से। अब बाबू अमूठराय कचहरी बाते तो पूर्या नामा छीपती। जब वह कचहरी से भा बाते तो उनको पाना मुनाती। बाद अहाँ दोनों घाम को बाघ में सीर करते। इसी तरह हँसी-सुसी एक महीना तप हो गया। सुसी के अम्माम जल्द कट बाते हैं।

# बापूजी का

विष्णु देव का विवाह किसे  
 घर से भी मने मिला न प्सा।

प्रेमा की धारी हुए दो माह से जारा दुबल बुझे हैं मगर उ-  
 न्हरे पर मरणा ब हलीमाल की बलाओं मगर नहीं जाती। जो हरबल  
 मुकामिदर भी रखा करती है। उनका वैधता उन्हें है। और भीछे हूँ  
 घर के बाल विभवे परीणत उनके विल से कभी तक बापू जगतपाल की  
 मधुवन बाकी है। वह हर बल वाली है कि विल से उनकी मूल  
 उनके माव धामो मुहुरत कुछ बापू नहीं बल्ला। जो बापू जगतपाल  
 पार्शक मोत्रमाल होने के निरुपण हैंमगुन उदीक्यता ब विलमगर  
 बापूजी हैं मगर उनका कुछ बापू नहीं बल्ला। जो उनकी धामिद  
 करने से कर्मे बकीका नहीं करेयुवाका कली। अब भी मीदुर होने हैं  
 तो दो हूँगती भी हैं। बाकीत भी कली है मधुवन की प्रतापी हैं मगर  
 अब भी कहे जाने हैं। तो फिर भी मनीन हीनी है। अपने भी से उनको  
 उनकी मुँगी धाम उनकी धाम हीनी है। बाकीत भी कली है। उनको  
 में कि भी उनका धाम की निरुपण बापू जाती है। केवटी प्रेमा की प्रिणी  
 बापू मारुंकि पर है। उनकी हीनी चरुलान हीनी है। उनकी  
 बापू मारुंकि पर है। उनकी हीनी चरुलान हीनी है। उनकी  
 को कभी कभी माव के मगरे में निवार भी कली है मगर उनके प्सा  
 पर भी रीतक और बलक बलक नहीं वाली जाती जो विल हलीमाल मा  
 पली हीनी है। जो विवाचार करने ही करने में भीछे प्सा है।

कमी-कमी गाकर बिल बहसाती है। मगर उसका गाना इसलिए नहीं होता कि उसको सुनी हासिल हो। बरबक्स इसके वो दर्दनाक मगमे माती है और अफसर रोती है। उसको मामूम होता है कि मेरे दिल पर कोई बोम घरा हुआ है।

बाबू दाननाब इतना तो धादी करने के पहले ही जानते थे कि प्रेमा अमृतराम पर जान बेटी है। मगर उन्होंने सनमा या कि उसकी मुहम्बत मामुली मुहम्बत होगी। अब मैं उसको ब्याह कर लाऊँगा और उसके साथ इच्छास व प्यार से पेश आऊँगा तो वो सब भूल जायगी और फिर हमारी बिन्दसी बड़े इरमौगान से बहर होगी। चुनाथे एक महीने तक उन्होंने उसकी बिलगिरफ्तगी को बहुत रनावा परवा न की। मगर उनको क्या मामूम था कि वो मुहम्बत का पीषा जो पीष बरस तक जूमे बिल से सीष सीषकर परवान चड़ाया गया है महीने-बो महीने में हरगिब नहीं मूरसा सकता। उन्होंने जूमे महीने भर भी जस्य किया मगर अब अब भी प्रेमा के बेहरे पर घिगुपतगी व यशासत न मगर आयी तब तो उनको सबमा होने लमा। मुहम्बत और इसर का जोषी-दामन का साथ है। दाननाब सच्ची मुहम्बत करते व मगर सच्ची मुहम्बत के एबज सच्ची मुहम्बत चाहते भी थे। एक रोज वो मामूम से सवेरे मकान पर बापस आये और प्रेमा के कमरे में गये तो देला कि वो सर मुकाये हुए बैठी है। उनको देखते ही उसने सर उठाया हाय ! मुहम्बत के लहजे में बोली — मुझे आज न मामूम क्यूँ लाला जी की याद आ गयी थी। बड़ी बेर से रो रही हूँ।

दाननाब ने उसको बैलते ही समझ लिया था कि अमृतराम के किराफ में ये आँसू बहाये जा रहे हैं। उस पर प्रेमा ने जो यूँ हवा बतछायी तो उनको मिहापत नागबार मानम हुआ। खड़े लहजे में बोले — तुम्हारी आँसू हैं तुम्हारे आँसू भी जितना रोना जाय रो लो। जाहे ये रोना फिती बिन्दा आरमी के किए ही मा मुर्दा के लिए !

प्रेमा इस आखिरी जुबक पर चीक पड़ी और बिला जबाब दिय पीहर की तरफ मुस्तअतिराना निगाहों से देखने लगी। दाननाब ने फिर कहा — क्या ताकती हो प्रेमा मैं एसा बहलक नहीं हूँ। मैंने भी आरमी



## इन्तजुर्मा व हुमसबाब

मैं मांसु बहा-बहाकर अपने और मेरे ज्ञानदान के माझे पर कलंक का टीका लगाती हो।

दाननाथ पुस्तके के बोध में था। बेहूत तमठमाया हुमा था और मांसो से छोटे न निकलते हों मगर इन्तिहा दर्जे की रोसनी बरकर पायी जाती थी। प्रेमा बेबापी सर नीचा किये जाती ये रही थी। शीहर की एक-एक बात उसके सीने के पार हुई जाती थी। सुनते-सुनते कलेबा भूह को आ गया। आशिर बस्त न हो सका न रहा गया दाननाथ के बीरों पर फिर पड़ी और बर्म-भर्म अरक के कठरों से उनको मिया दिया। दाननाथ ने प्रीरन पर खिसका लिया। प्रेमा को चारपाई पर बिठा दिया और बोले — प्रेमा रोओ मत तुम्हारे रोने से मेरे दिल को सबमा होता है। मैं तुमको बलाना नहीं चाहता मगर जब बातों को कहे बिना रह नी नहीं सकता वो अपर दिल में रह पपीं तो मठीना मुठ होगा। काब जोतकर सुनो। मैं तुमको जान से बियाबा बवीब रखता हूँ। तुम्हारी बासाइय के लिए मैं अपनी जान निछावर करने के लिए हाजिर हूँ। मैं तुम्हारे बच से इसारे पर अपने को सदेके कर सकता हूँ मगर तुमको सिवाय अपने किसी और का सबाळ करते नहीं देख सकता। हाँ प्रेमा मुससे अब यह नहीं देखा जा सकता। एक महीने से मुसको यही बिककत हो रही है। मगर अब बिल पक गया है। अब वो बच-सी ठेस भी नहीं बरमित कर सकता। अपर इस जायही पर भी तुम अपने दिल पर काबू न पा सको तो मेरा कुछ फुसूर नहीं। बस इतना कहे देता हूँ कि एक बीरत के दो शीहर नहीं बिन्धा रह सकते।

वह कहते हुए बाबू दाननाथ पुस्त में भरे बाहर जले जाने। बेबापी प्रेमा को ऐसा माकूम हुआ पोसा किसी ने कलेजे में सूटी मार दी। उसको आज तक किसी न मूककर भी कोई कनी बात नहीं सुनायी थी। उसकी माबज कभी-कभी जाने दिया करती थीं मगर वो ऐसे सस्त नहीं माभूम होते थे। वो बष्टों रोती रही। माब बजा उसने शीहर की सारी बातों को घोषना शुरू किया और उसके कानों में यह आशिरि अलफाज पूजने लगे 'एक बीरत के दो शीहर बिन्धा नहीं रह सकते।

इतका क्या मतलब है?

बन्धु वृत्तरत्नाक साहित्य

हम पहले यह बुझे हैं कि जमान दरदाल से आबादी वाले के बाद  
 एक माह तक पूर्वा में बने बिन से बसर की। उन दिन बड़े आते थे। किसी  
 क्रिय की छिन्न की परछाई भी न दिखायी देती थी। हाँ ये वा कि अब  
 बान्धु जमानत बन्धु भी न दिखायी देती थी। हाँ ये वा कि अब  
 पान्धु जमानत बन्धु भी न दिखायी देती थी। हाँ ये वा कि अब  
 और जमान की पत्नी अब बुला लीजिए ताकि जमान को देखल में बान्धु  
 नट जमान की पत्नी अब बुला लीजिए ताकि जमान को देखल में बान्धु  
 की लज्जा की और भीने के ही दिन बसा ही गयी थी। इन दोनों की एक काव्य  
 और बान्धु जमानत में उनके जिय एक मकल झिड़के पर किया वा  
 और उनकी जमानत के प्यारवान के सुव्यभिचक भी होये थे। बान्धु  
 पूर्वा की पूर्वा की पत्नी अब बुला लीजिए ताकि जमान को देखल में बान्धु  
 और उनकी जमानत के प्यारवान के सुव्यभिचक भी होये थे। बान्धु  
 में इन दोनों की पत्नी अब बुला लीजिए ताकि जमान को देखल में बान्धु  
 की लज्जा की और भीने के ही दिन बसा ही गयी थी। इन दोनों की एक काव्य  
 और बान्धु जमानत में उनके जिय एक मकल झिड़के पर किया वा  
 और उनकी जमानत के प्यारवान के सुव्यभिचक भी होये थे। बान्धु  
 पूर्वा की पूर्वा की पत्नी अब बुला लीजिए ताकि जमान को देखल में बान्धु  
 और उनकी जमानत के प्यारवान के सुव्यभिचक भी होये थे। बान्धु  
 में इन दोनों की पत्नी अब बुला लीजिए ताकि जमान को देखल में बान्धु  
 की लज्जा की और भीने के ही दिन बसा ही गयी थी। इन दोनों की एक काव्य  
 और बान्धु जमानत में उनके जिय एक मकल झिड़के पर किया वा  
 और उनकी जमानत के प्यारवान के सुव्यभिचक भी होये थे। बान्धु

मुस्कणकर पूजा — क्यूँ रमन नामकक मन्दिर पूजा करने नहीं पाती हो ?

रामकली के छेपकर बबाब दिया — सबी तुम भी कही का बिच से बीठीं। अब ता मुसको मन्दिर के नाम से भी मज्जरत है।

कछमी को रामकली के पहले हाकाठ नामक से। जो बक्तर उसको छेड़ा करती। उस बक्तर भी न रहा बबा। बोल उठी — ह्रीं बुधा अब मन्दिर काहे को जामोणी। अब तो हँसने-बोझने का सामान बर ही पर मौजुद है।

रामकली — (तुनकरकर) तुमसे कौन बोलता है जो कहीं जहर उप सने। बहम इनको मना कर दो ये हमापी बातों में न बखर दिया करे नहीं तो मैं भी कभी कुछ कहूँ बीदुपी तो रोती फिरौपी।

कछमी — (मुस्कणकर) मैंने मूठ पोड़े कहा था जो तुमको ऐंठा कहबा नामूम हुमा। तो अवर सब बात कहने में ऐंठी पर्य होती हो तो मूठ ही बोला कहौपी। अवर एक बात बतला दो। मूठ भी वे मन्तर बेठे बक्त तुम्हारे कल्प में क्या कहा था। हमापी मती जाये जो मूठ बोले।

पूर्वा हँसने कमी मगर रामकली दमौपी होकर बोली — तुना कछमी हमसे सपारत करौपी तो ठीक न होगा। मैं बिठना ठरहूँ बेठी हूँ तुम जतना ही सर चढ़ी जाती हो। आपसे मठकब मूठ मे मेरे कान में कुछ ही कहा था। बड़ी मायो बहाँ से सीता बन के।

पूर्वा — कछमी तुम हमापी सबी को माहक सताती हो। जो बुधना ही बरा मुकायमत से पूछना चाहिए कि यूँ! ह्रीं बुधा तुम उनसे न बोलो मुसको बतला दो। उस ठमौली मे तुमको पान सिक्काठे बकृत क्या कहा था ?

रामकली — (बिपहकर) अब तुम्हें भी छेड़खानी की सूती। मैं कुछ कहूँ बीदुपी तो बुरा मान जाओपी।

इसी तरह तीनों सबियों में हँसी-मजाक बोली-ओली हुमा करती थी। साथ पड़तीं साथ हुमा खाने खावा करतीं कई मर्तबा पर्या-स्नान को परीं। अवर उची बनाने घाट पर जो बामुतराय ने बनवाया था। नामूम होता



## सुये पर सौ दुरें

पूजा के यज्ञ पर वहिं तो लिया। मगर रात पर उसकी आँसों में नींद नहीं आयी। उसकी समझ में यह बात न आयी थी कि अनुराग ने उसे यज्ञ क्यों दिया। उसे ऐसा मामूल होया था कि बंदिब बंधनकुमार उसकी तरफ बहुत कोप से देख रहे हैं। उसने चाहा कि यज्ञ उतार कर फेंक दे मगर नहीं मान्य क्यों उसके हाथ काँपने लगे। सारी रात उसने आँसों में काटी। प्रभात हुआ। अभी सूर्य उगवाने में ही हुआ न थी थी कि पंढारन और बीरबहन और राम कमलाप्रसाद की बुद्धा महारजित और पड़ीस की सेठानी जो कई दूरपी औरतों के साथ पूजा के मकान में आ उपस्थित हुईं। उसने बड़े आदर से सबको बिठावा उनके पैर छूए। उनके बाव यह पचासत होने लगी।

पंढारन (जो बुद्धा के बजह से मुझकर छोड़ारे की तरह ही यपी थी) — क्यों दुकहित पंदिब जी को यथाकाम हुए कितने दिन बीते ?

पूजा — (बरते-बरते) पाँच महीने से कुछ मजिद हुआ होगा।

पंढारन — और अभी से तुम सबके घर आने-जाने लगीं। क्या नाम कि कल तुम घरार के घर लगी यपी थीं। उनकी क्वारी कन्दा के पास दिन पर बीठी रहीं। भला सीजो जो तुमने कोई अच्छा काम किया। क्या नाम कि तुम्हारा और उनका सब बना साथ। जब वह तुम्हारी सपी थीं सब थीं। अब तो तुम चिन्ता ही लगीं। तुमको कम से कम साक भर तक घर से बाहर पाँच न निरासना चाहिए। तुम्हारे लिए साक पर एक हँसना बीसना बना है। हम यह नहीं कहते कि तुम बर्तन को न बाव या स्नान

को न जाय। सात-सूत्र तो पुस्तक बन ही है। ही किसी शोहरतिल या  
 किसी खाटी बच्चा पर तुमको अपनी कृपा नहीं आकली बाकिर।  
 संसार तुम ही तो सुरुपित्त दूसरी ही तरह बहकने लगी — सा  
 कलामें बही खर्च और पुलकित होलीं लड़ु का हूंट पीकर यह भई।  
 बहकने के ही ही वाज के लाले पड़े है। बुराई अब रोज देखा के पाव उठना  
 हैला है। नहीं मान्य गणपत सा करेनाके है। छोटी खर्च मांने  
 कोय के काम रही भी। बाकी से खावा निकक रही थी। बांने हीं उनको  
 पससाया कि बाज वाले दीखिए यह खापी ही। बांने हीं उनको  
 करे का नरुं सा जाने। खर्च का देटा जिसे अब बहुत पससाया लव जाके  
 गानी। नहीं तो खूली भी से बनी जाकर लगे लदे निकाल देली हैं। सो देटा  
 बं तुम शोहरतिलों के पाव बैठने योज नहीं रही। अरे खिलर ने तो तुम पर  
 विधि बाक ही। पर बसना मानिय ही न पूरा तो अब देखा देखा  
 बोला। अब तो तुम्हारा बनें नहीं है कि सुभाष कने नर से नहीं रही।  
 को कुछ सखा-सूखा निके खावो सिरो। और खर्च का देटा जिसे अरुं  
 तक ही सके बंन के काम करो।  
 भेदीयल और अरुं मोष ही। बरिवाल गरवने लगी। यह एक मोटी  
 की उठे पाँच महीने भी न मिले बनी से इस की छोटी बने लगी। सा  
 कि तुम अब विषया ही नहीं। तुमको अब विचार देटा से सा सरोकार  
 परा। सा नाम कि भीं हवाएँ बीलों को देखा है जो पति के मले के  
 बाव भूला-वाला नहीं पसलीं। हीला बोला लव कोय देली हैं। यह न कि  
 बाव तो भूला अब और कल विचार देटा हीं लवा। न कलको-वाली की  
 बाव नहीं जानती। कूटी कच। बांने किसी को टीला लने या गीटा।  
 बाव भूला-वाला का रोज रोज भई बना ठीक नहीं है। है कि नहीं सेलगी  
 की? घेलगी की बहुत मोटी थी और गाँठ-गाँठ यहाँ से लगी थी।  
 मांय के मोठे हरियो से बल्ला होकर गीके बटक रहे के। खलकी की  
 २६८

एक बहू रौंठ हो यमी थी जिसका जीवन इसने व्यर्थ कर रखा था। इसका स्वभाव वा कि बात करते समय हाथों को मटकामा करती थी। महाराजिन की बात सुनकर बंसी — 'जो सब बात होमी सब कोई कहेवा। इसमें किसी का क्या डर। मछा किसी ने कभी रौंठ बेवा को भी याने पर बिन्नी बेंते देखा है। जब घोहाय उठ गया तो फिर सेन्दूर बैसा। मेरी भी थी एक बहू बिबवा है। ममर आज तक कभी मैंने उसको लाल छात्री नहीं पहिनाई थी। न जाने इन लोकरियों का जो बैसा है कि बिबवा हो जाने पर भी तिमार पर भी लम्बामा करता है। बरे इसको चाहिए कि बाबा जब इस रौंठ हो गईं। हमको निबोड़े सिंगार से क्या केना।

महाराजिन — लकरि का बेटा जिदे तुम बहुत ठीक कहती हो छेठानी जी। कल छोटी लकरि ने जो इसको मांग में सेन्दूर लगाये देखा तो लकी ठक रह यमी। बाँधों तक संयमी बबानी कि मयी तीन दिन की बिबवा बीर बह सिंगार। जो बेटा जब तुमको समझ-बूझकर काम करना चाहिए। तुम जब बच्चा नहीं हो।

छेठानी — बीर क्या जाहे बच्चा हो ना बुझी। जब बेराह चलेंगी तो सब ही कहिये। चुप क्यों हो पंडाइन इसके लिए जब कोई राह-बाट निकाल हो।

पंडाइन — जब बह अपने मन की ही गयीं तो कोई क्या राह-बाट निकाले। इसको चाहिए कि वे अपने छे-छे केरा कटवा डालें। क्या नाम कि घुमरी के बर जाना-जाना छोड़ दें। कभी-बोटी कभी न करे। पाव न सारें। रंजीन साड़ी न पहनें बीर जैसे सहर की बिबवामें रहती है जैसे रही।

बीबाइन — बीर बाबू अमृतचम से कह वै कि महीं न जामा करे। हम वर एक बीरल के जो गहने-कपड़े से बहुत माकदार न जान पड़ती थी कहा — बीबाइन, यह सब तो तुम कह यमी मगर जो कहीं बाबू अमृतचम बिब वर तो क्या तुम इस बेचाटी का ऐटी-कपड़ा चला सीमी? कोई बिबवा ही गया तो क्या जब अपना मुँह सी ले।

महोपनिष — (हाथ बरकाकर) यह कैसा बोला? उसको! क्या मरवा ऊपरके लगी?

देवली — (हाथ खटाकर) डाले किसे बोलावा वो मा के बीच में बोल उठी। एह तो ही बदी ही कहे गयी वा के बाजार में बैठती ही।

बीबाबल — जाने मी दो देवली की इस गीरी के मुँह क्या कलती ही।

देवली है की ही मैं देखा हूँ कैसा ही इस मुँह की यहाँ किसके बुलाया। यह तो महोपनिष — इस तो बीच के खी मी तो रहे क्यों बुरा क्या?

बीबाबल — बहिन उध कुटनी से गारुह बोल्ती ही। उसको तो सब बुझाया बरला है।

महोपनिष मी मुसी बरौपचार के यहाँ जाता पकाने भयो। इसके बाद इस मलिन कुटुलीको धारा पीक देकर यह सब लिखां यहाँ से पारती।

देवली उकार से बहुत हल्की थी। यह इन पर बहुत विचार रली थी।

महोपनिष के बाले ही छोटे क्या बूरे तक लिखे कलाकर रली थी।

मौट छोटी वकार के मी इस बात को गठ बीच लिखा और मीरा को जलाये और मुलाके के लिए उसे जयन जलाकर उसके ऊपर की टारल कली।

मी तो मया प्रसिद्धि छोटे एव जाता इरली थी। गीरे क्या जा बरली थी

इमी बटे बाब बटे के लिए गीरे जा बरली थी। गीरे क्या जा बरली थी।

एक ऊँच ली जा बरली थी मगर जबसे उल्ले बाबू जगतएव की बगलियाँ के मैन में बैला वा और पूर्ण के घर से उठेई बरन उल्लेकी उरली की कि (जगतएव न बरद बाबा वा उल्ले पेट में खकली यही उरली की कि सब पूर्ण बाले और पूर्ण के घर से उठेई बरन उल्लेकी उरली की कि उठेउठ बरी पर जोरें बीबाबी कि सब सोर ही। एव को केकी के माँ के रीती की बाक कुपी ही यह मलाकर कि पूर्ण का खी है मणकी हुई परबाके तक जाती। मगर जहाँ मालक को रवा ठिक मुँह और बीली — कैसे कली जाती?

मायी तो यह बाबाही ही कि ही-काय के लिए कोई गीर्या निके।

वह प्रश्न सुनते ही विपक कर बोली— क्या बताऊँ कैसे बली? अब से अब तुम्हारे पास आया कहूँगी तो इस सवाक का जबाब छोड़कर भागा कहूँगी। तुम्हारी तरह सपका मोड़ू बोड़े ही खड़े हो गया है कि चाहे किसी की बाल निकल जाय थी का पड़ा इतक भाय। मगर अपने कमरे से पाँव बाहर न निकाले।

प्रेमा ने यह उवाच थीं ही कुछ लिया था। उसके अब यह अर्थ सपाव मये तो उसको बहुत बुरा मानूम हुआ। बोली— भाभी तुम्हारे तो नाक पर मुस्का रहता है। तुम बरा-सी बात का बतगड़ बना देती हो। मना मने कौन-सी बात बुरा मानने की कही थी?

भाभी— कुछ नहीं तुम तो जो कुछ कहती हो मारों मुँह से फल झाड़ती हो। तुम्हारे मुँह में बिठपी पोली हुई है न। और सबके का नाक पर मुस्का रहता है सपसे बड़ा ही करते हैं।

प्रेमा— (सल्लाकर) माबब इस समय तुम्हारा बिल बियड़ा हुआ है। ईस्वर के लिए झुलते मत बलसी। मैं तो यों ही अपनी जान की रो रही हूँ। उस पर से तुम और भी नमक छिड़कने वाली।

भाभी— (मटककर) हाँ रागी, मेरा तो बिल बिगड़ा हुआ है सर किरा हुआ है। बरा सीधी-साधी हूँ न। मूँसको बेबकर भाया करो। मैं कट्टी दुठिया हूँ सबको काटती बलती हूँ। मैं भी पापों की चुपके-चुपके चिट्ठी-पत्री लिता करती तसबीरें बरना करती तो मैं भी सीता कहवाती और मुँस पर भी बर भर जान देने लगता। मगर मान न मान मैं तेरा मेहमान। तुम आज बतल करो आज चिट्ठियाँ लिखो मगर यह सीने को चिट्ठिया हाब आनेवाली नहीं।

यह भाभी-कटी कुनकर प्रेमा से उलट ब ही लका। बेबाटी सीधे स्वभाव की बीरत थी। उलका अपों से किरह की कबि में बलते-बलते कनेजा और भी पक गया था। वह रोने लगी।

माबब ने अब उलको रोते देला ती मारे हृद के अर्थों अवमपा परी। हुनेरे की! कौसा बसा विमा। बोली— अब बिलबने परा लगीं क्या अम्मा की मुनाकर बेसनिकाता करा दीगी? कुछ नूड बोड़ा ही कहती हूँ। नहीं

मंगलारण्य

अनुप्राय त्रिकोण पात आप मुझे-मुझे भ्रम-भ्रम भेजा काली की जब दिन  
शुभने उठ दीर्घ मुर्दा के घर भागा है और बंदी बही हैठा पड़ता है। मुझी हूँ  
पूज के मन्दे का-काकर पहुँचाता है। धाव दी-मुझ बहने भी सि है।  
मुझारे पीत पड़ती हूँ पुन पर बसा करो। मुने भी बाढी कर को। (रो  
कर) बनी है, जो बाहे मार को। मगर किसी का नाम केकर और उठ पर  
मुँह मणाय मने निक को मूठ अलाओ। बाकिर किसी के घर पर मूठ

लेकर पर निकर गयी। बरक कर रोकी — हाँ हाँ उनी में मुझों पर  
मुझे मुझारे साथे मूठ बोलने में निकार मिलती रोनी। बाकिर कोने के  
निकाल पर झेन बैठलिया। मगर मैं एक मुँह हूँ। धारा उमला तो  
नहीं मला है। बाव मुझके घर में घर बर रही बर्बा हो रही है। पुन तो  
वही मिली ही मला मुझके घर में घर बर रही बर्बा हो रही है। पुन तो  
मला काम। मला कि यह उमका देसी-मपरा बलने हैं मगर यह तो  
मके मनुष्यों का यह धन नहीं है कि शिवों को बहकाना करे। और यह  
ओहरी की मर कोरे बहकाना बह तो आप मनों पर ओरे डाला करतो  
है। मैं तो विष रिन उमकी बाल रोनी ही मुझरा उलके मने मला है।  
यह एक ही विष की बाँठ है। कभी ठीक मिल भी मुझे को मने हुए नहीं  
मने कि मलको समझना रिलाने लयी। इतरा मला मरा मनों एक बला हूँ  
है। एक अब यह बुराई आई पी तो मैं बाल मुँहा खड़ी हो। मही तो-केटो  
के पीनार-तो-पर-पारो ही नहीं रोनी। मुँह बनी ही मने बाकिर मुझारे  
मही बलती है। मने म अनुप्राय को मला यौन रिलान करतो  
कर कोने बूटो भी। बरपाट जो अब कभी, मुझे मय मुँह को मने  
परा रिलान। मैं उमकी मूठ नहीं रिलाना बहती।

बबान यह बला है कि मूठ बाठ का भी विश्वास दिमा देती है। छोटी सफ़ार में जो कुछ कहा वह तो सब सच था। मन्ना उसका बघर क्यों न होता। बपर उधने गजरा लिये हुए बाठे न देखा होता तो भावज की बातों को अचस्य बनावट समझती। फिर भी वह ऐसी ओछी नहीं थी कि उधी बन्धु अमूठराय और पूर्वा को कोधने लगती और यह समझ लेती कि उन दोनों में कुछ सँठ-माँठ है। हाँ वह अपनी चारपाई पर आकर छेद गयी और मूँह छपेट कर कुछ सोचने लगी।

प्रेमा को तो पक्कें पर सेटकर भावज की बातों को तीकने बीजिए और हम मरति में चले। यह एक बहुत सभा हुआ मन्ना-बीड़ा बीबान-लाला है। कमीन पर मिर्चापुटी सबसूरत काकीनें बिछी हुई हैं। माँठि माँठि की गद्देदार कुचियाँ लगी हुई हैं। बीपारे उत्तम बिजो से मूषित हैं। पंजा सजा बा रखा है। मुँधी बरटीप्रसाद एक बारामकुर्सी पर बैठे ऐतक लगाये एक बज्जवार पड़ रहे हैं। उनके दाहने-बायें की कुचियो पर कई और महापय रईय बँडे हुए हैं। वह सामने की तरफ मुन्धी पुतुजारीकाम हैं मुँधी सम्मतलाल से कुछ काना-सूखी कर रहे हैं। बायीं ओर पी-पीन और बायमी है बिलको हम नहीं पहचानते। कई मिमट तक मुन्धी बरटी प्रसाद मखबार पढ़ते रहे। बाखिर उन्होंने घर उठया और समा की तरफ बेलकर बड़ी पम्पीरवा से बोले — बाबू अमूठराय के सेत बव बडे ही मिन्विज होते जाते हैं।

पुतुजारीकाल — क्या आज फिर कुछ बहुर उयला ?

बरटीप्रसाद — कुछ न पूछिए, आज तो उन्होंने सुनी-सुनी गालियाँ दी हैं। हमसे तो बव यह बरालि नही होता।

पुतुजारी — बाखिर कोई एक बरालि करे। मीने तो इस बखबार का पढ़ना तक छोड़ दिया।

सम्मतलाल — पीया आपने अपनी समझ में बड़ा भारी काम किया। बनी आपका धर्म यह है कि उन लेखों को काटिए, उनका उत्तर बीजिए।

मंगलाग्रहण

में आसकल एक कबिल एक एक ही भावना है कि यह भी क्या बार करे।

कमलाग्रहण — भाव अनुपपन्न ऐसे कबलके भावनी नहीं है कि जो से मिलते हैं।

सामान्य — हम भी सारे की से उनके पीछे एक भाविके। फिर देखें यह हीसे छुटने में मुझे रिखाते हैं। कही तो बुझकी सब ही उनको सारे छुटने में बहाल कर दूँ।

कमला — (बीर रेकर) यह बीर की बहादुरी है। अगर भाव जोर उनके बिरोध को पकिए, उनको मन में विचारिए, उनका उदाहरण लिखिए, उनको तरह देखें। मैं आ आकर आसकल दीर्घक एक आके काम करेगा। कई रिल दूर में बने रहाने पर से बा एक का कि एक पीछे में भी दस बारह हजार भाविकों की भीड़ देखी। मैं उसका पीछे में गया तब एक भावनी से पूछ तो मानन हुआ कि भाव अनुपपन्न कई हीराहार लड़के उनके उदाहरण ही बने हैं और यह तो भाव जोर ही है।

बुझापी — भाव ही लताइ इस तरह से ही भाव भाव हुए कुछ न करे।

कमला — न मैं इस काम में आपका सटीक नहीं हो सकना। मुझे अनुपपन्न के उदाहरणों में गैर है विचार विचार विचार के।

बहरीपुत्र — (बहरीपुत्र) कभी कभी बुझकी लताइ न भाविकों।

सामान्य — (कमलाग्रहण से) भाव भाव विचारण उनके के नियम विचार है ?

कमला — मैं अपने कोई हीन नहीं समझता।



मुलबायी — (हँसकर) यह मने बिपड़े हैं। इनको जमीन बसपताल की हवा खिलाए।  
 बदरीप्रसाद — (सस्ताकर) बच्चा तुम मेरे सामने से हट जाओ।  
 मुझे रूब होया है।

कमलाप्रसाद को भी मुस्सा जा गया। वह उठकर जाने लगे कि बो-  
 दीन आदिमियों ने मनाया और फिर कुर्सी पर लाकर बिठा दिया। इसी  
 बीच में मिस्टर शर्मा की सवारी आयी। आप नहीं उरसाही पुख है जिन्होंने  
 बभूतराय को पकरी सहायता का बादा किया था। इनको बेचते ही कोपों  
 ने बड़े आदर से कुर्सी पर बिठा दिया। मिस्टर शर्मा उस घहर में मिचनिसि  
 पैडिटी के सेक्रेटरी थे।

मुलबायी — कहिए पंडित जी क्या खबर है?

शर्मा — (मूर्खों पर हाथ फेरकर) वह ठाका खबर लाया हूँ कि  
 आप कोय मुमकर फड़क आवेंगे। बाबू बभूतराय ने दरिया के किनारे  
 बाकी हटौ-मटी जमीन के लिए दरखास्त की है। मुता हूँ वहाँ एक मनावा  
 बन बनवायेंगे।

बदरीप्रसाद — ऐसा कुरापि नहीं हो सकता। कमलाप्रसाद! तुम  
 आज उसी जमीन के लिए हमारी तरफ से कुमेटी में दरखास्त पेश कर दो।  
 हम वहाँ ठापुरखारा और बर्मघाला बनवायेंगे।

शर्मा — आज बभूतराय साहब क बैंगले पर गये थे। वहाँ बहुत बेर  
 तक बातचीत होती रही। साहब ने मेरे सामने मुसफउकर कहा — बभूत  
 राय मैं देखूँगा कि जमीन तुमको मिले।

मुलबायीलाल ने सर हिलाकर कहा — बभूतराय बड़े खाल के आदमी  
 हैं। मामूम होया है, साहब को पहले ही से जम्होंने अपने डप पर लगा  
 लिया है।

मिस्टर शर्मा — जनाब आपकी मामूम नहीं बघड़ों से जनका जितना  
 मसबूक है। इसको अयेज मेम्बरों से कोई आघा नहीं रखना चाहिए।  
 यह सब के सब बभूतराय का पक्ष करैने।

बदरीप्रसाद — (खोर बैकर) जहाँ तक मेरा बस जतेगा मैं यह जमीन

### मंगलाचार

यै आठवाक एक कविठ एव एहू हूँ जसै मीने सगको देना जगना है कि  
सू भी स्या याव करै।  
अनलापचार — बाबू अमृतदास जेसे अठवीने बाबयो तस्यै हूँ कि  
बाबुके कविठ बीसार्हें से कर जावै। बाबू जिन कास में लिख्ये हैं सारे  
की से लिख्ये हैं।  
अमल — हुन भी सारे जी से उनके पीछे नू प्राये। फिर देखे  
सू की सार में मूँह लिखा है। मरु तो बुटकी सज से उनको सारे सार  
में बदलाव कर हूँ।

अमला — (बोर देखर) बाबू कोम-बी बसुपुरी है। अगर बाप  
कोन उनसे विरोध नीक किया बाह्ये हैं तो कोन-अमल कर लिखिए।  
उनके कैसों को पकिए, उनको मल में लिखाए। उनका सवाब लिखिए।  
उनकी तरह देखतों में आ बाबर आस्थान दीखिए तब जा के कास  
कलना। कई दिन हुए मैं अपने सगके पर से बा सूर बा कि एक मोंक में  
मैंने इस सार हूँ बाबर भारतीयों की नीक है। मैंने सगसा पीठ है।  
बा आस्थान बा। और सूर कास अकेले तस्यै तस्यै करते कासिन के  
कई होमहार सगके उनके सहायक ही बने हैं और सूर ही बाप कोन  
तमी जानते हैं कि सार कई मरुके से उनको सगका अंशानुसू कर  
सही है।

बुलबाटी — बाप तो सगका इन सार से हैं सोना बाप सूर कुछ  
न करै।

अमला — न मैं इस कास में जायका सटोक तस्यै ही लख्या। मुझे  
अमृतदास के सब लिखतों से मेल है निवास निबन्धा लिखा है।  
बुरीयवार — (बुटकर) सगसा कमी अमल लिखा है।  
मामल — (अमलाप्रचार से) स्या बाप विकल्पन जसके के जिन  
देना कसै मूँह से मल लिखा करो।

बैबाट — मैं सगके कोई हाजि तस्यै समझना।  
अमला — मैं सगके कोई हाजि तस्यै समझना।

पुतबाटी — (हँसकर) यह नये विपड़े हैं। इनको अभी बस्पाखान की हवा बिछाए।

बदरीप्रसाद — (सस्ताकर) बच्चा तुम मेरे सामने से हट जाओ। मुझे रंग होता है।

कमलाप्रसाद को भी पुस्ता जा गया। वह उठकर जाने लगे कि दो-तीन बारिशों ने मनाया और फिर कुर्ची पर साकड़ बिठा दिया। इसी बीच में मिस्टर शर्मा की सबाटी आयी। भाव बही जस्ताही पुस्त्य है जिन्होंने अमृतदास को पक्की सहायता का वादा किया था। इनको देखते ही लोगों ने बड़े भावर से कुर्ची पर बिठा दिया। मिस्टर शर्मा उस गृह में मिस्टर सिंघी के सेक्रेटरी से।

पुतबाटी — कहिए पंडित जी क्या खबर है ?

शर्मा — (मूर्छों पर हाथ फेरकर) वह ठाढ़ा खबर सना है कि बाबू लीज सुनकर फड़क जायेंगे। बाबू अमृतराय ने दरिया के किनारे बसोड़ी मरी जमीन के लिए बरखास्त की है। सुनता हूँ वहाँ एक मनावा क्या बनवायेंगे।

बदरीप्रसाद — ऐसा क्वापि नहीं हो सकता। कमलाप्रसाद ! तुम भाव अभी जमीन के लिए हमारी तरफ से कुमेटी में बरखास्त पेश कर दो। हम वहाँ ठाढ़ाया और बर्षघाला बनवायेंगे।

शर्मा — बाबू अमृतराय साहब के बँगले पर गये थे। वहाँ बहुत देर तक बातचीत होती रही। साहब ने मेरे सामने मुसकराकर कहा — अमृतराय मैं देखूँगा कि जमीन तुमको मिले।

पुतबाटीखान से घर हँकाकर कहा — अमृतराय बड़े बाल के भाबमी हैं। भासूम होता है, साहब को पहले ही से जन्मने अपने रंग पर लमा लिया है।

मिस्टर शर्मा — जनाब आपको भासूम नहीं अंग्रेजों से जनाका बितना मतभोज है। हमको अंग्रेज मेम्बरों से कोई भावा नहीं रतना चाहिए। वह सब के सब अमृतराय का पक्ष करिये।

बदरीप्रसाद — (बोद देकर) जहाँ तक मेरा बस जसेमा मैं यह जमीन

संस्काराखण्ड

ही ईश्वरिणियर ने उसको गाय कर जनायात्म का मकड़ा बनाया आत्म  
कर दिया।  
घाहक और अनुप्राय के बने जाने पर यहाँ भी आठों हीने कर्मी —  
अमान • — यार हमको तो इन लोहे के काज पाँके ली के कर म  
बक दिया।

मुलबाटे — जगज भाए पाँके ली को रो छे है यहाँ लो एक दुबार  
पर पाती फिर गया। मुसी जी लो को आठे है यहाँ लो एक दुबार  
यहाँ लो कोई पाबबहादुरी को भी नहीं पूछ्या।  
अमला — बड़े लोक को बात है कि भाए लोए ऐसे घुए जावे में  
यहाँ लो केकर पछाले है। अनुप्राय को देखिए कि जबकि जगला एक  
मुसी बरटीमवाल — अनुप्राय बना जगलाही जाली है। कीने भाए  
मोने केकर बहा दुबार सया भी बिना और उल पर दीह घुए जगज कर

रुको जगला। बच्चा अमलाप्रवाल। उन भाए साय को जगके यहाँ  
पाकर हुमाटी और से बन्बाव है देना।  
अमान — (मुँह डेरकर) भाए यहाँ न प्रवाल हीने जायो लो  
यवनी निकली न ?  
अमला — (हीसकर) अगर जायका बहु कबिया देवार ही लो जरा  
उगापर।

जागल ओ अब एक गुपुवाल छे घुए मे रोके — अब भाए जगको  
मिल्ल घसी — बच्चा जो प्रमला कीनिय।  
कीनिय। भाए यह मालम हो गया कि जगलराय ककेले हए यर पर  
घाटे है।  
अमला — जगले नहीं गुना मल की मरा यर हीनी है।

## आज से कमी मन्दिर न जाऊँगी

बेचारे पूर्वा पंदाहन बीवाहन विद्वान्नाहन आदि के बने जाने के बाद ऐसे लगी। वह घोषणी भी कि हाम। अब मैं ऐसी महत्त्व लक्ष्मी पाती हूँ कि किसी के साथ बैठ नहीं सकती। अब लोगों को मेरी मूर्त काटने सीखती हूँ। जनी नहीं मास्म क्या-क्या भोपना बया है। या नारा यम। वृ ही मुष्ट दुखिया का बेड़ा पार क्या। मुस पर न जाने क्या कुमति सवार भी कि सिर में एक ठेक डलवा किया। वह निपौड़े बाल न हीने तो काहे को आज इतनी फ़नीहत होती। इन्हीं बातों को मुनि करते करते अब पंदाहन की यह बात शर आ गयी कि बाबू अमृतराय का रोस रोस आना डीक नहीं तब उधने सिर पर हाथ मारकर कहा — वह अब आप ही आप जाते हैं तो मैं कैसे मना कर दूँ। मैं तो उनका दिवा जाती हूँ। उनके सिवाय अब मेरी मुनि केनेबाबा कौन है। जगते कैसे कह दूँ कि तुम नठ आमी। और फिर उनके जाने में हरज ही क्या है। बेचारे पीचे-सादे मके अनुप्य हैं। कुछ नबे नहीं सीहूबे नहीं। फिर उनके जाने में क्या हरज है। अब वह और बड़े आरमियों के घर जाते हैं तब तो लोग उनको बाँधों घर बिठाते हैं। मुस निवारिनी के दरवाजे पर जाँचें तो मैं कौन मुँह केकर उनको बया दूँ। नहीं नहीं मुझे ऐसा कभी न होना। अब तो मुस पर क्विति आ ही पड़ी है। जिसके पी में जो जाने गई।

इन बिचारों से कूटी पाकर वह अपने विपनानुसार बंदा स्नाम को चली। अब से पंडित भी का बेहान्त हुआ या तब से वह प्रतिदिन पंपा नहाने जामा करती थी। मगर मुँह बँधेरे जाती और सूर्य निकलते निकलते



पान मत खाओ। एक दिन एक गुलाबी साड़ी पहन सी तो बुईल मारने लगी थी। बी में तो बोला कि सर के बाब मोष र्भ मगर बिप का बूट पी के रू पपी और नह तो बह, उसकी बेटियाँ और दूसरी बहुत मुझसे कभी काटती छिटकी हैं। भोर के समय कोई मेरा मुँह नहीं देखता। बभी पड़ोस में एक ब्याह पड़ा था। सब की सब गहने से सब बह माठी-बजाठी पपी। एक में ही अमाविनी घर में पड़ी रोती रही। नला बहिन अब कहाँ तक कोई छाती पर पत्थर रख ले। आकिर हम भी तो आदमी हैं। हमारी भी तो बजानी है। दूसरों का राम राम हँसी बहल देख-देख अपने मन में भी भावना होती है। जब बूझ लगे और जाना न मिले तो हार कर पीपी करनी पड़ती है।

मह कहकर रामकली ने पूर्वा का हाथ अपने हाथ में ले लिया और मुसकुरा-मुसकुरा कर बीरे बीरे एक पीठ बुकबुमाने लगी। बेचारी पूर्वा दिल में कुछ रही थी कि इसके साथ क्यों लगी। रास्ते में हवाये आदमी मिले। कोई इनकी ओर मार्लें फाड़ फाड़ बूरता था कोई इन पर बोलियाँ बोलता था। मगर पूर्वा सर को ऊपर न उठाती थी। ही रामकली मुसकुरा-मुसकुरा कर बड़ी बपझता से इबर-उबर ताकती बसिलें भिजाती और छेड़-छाड़ का जबाब देती जाती थी। पूर्वा जब रास्ते में मर्दों की छाड़े देखनी तो कठरा के निकल जाती मगर रामकली बरबस उनके बीच में से बूझकर निकलती थी। इसी तरह बसते बसते बीनों नदी के तट पर पहुँचीं। आठ बज गया था। हवायें मर्द, स्त्रियाँ बज्जे कहा रहे थे। कोई पूजा कर रहा था। कोई मूर्त देवता को पानी दे रहा था। माली छोटी-छोटी डालियों में गुळाम बेला जमेली के फूल सिन्ने महामेवालों को दे रहे थे। चारों ओर जै यंया! जै यंया! का दाम्ब ही रहा था। नदी बाढ़ पर थी। उठ मटमिले पानी में तीरते हुए फूल जति सुन्धर मानूम होते थे। रामकली को देखते ही एक पंजे ने कहा — 'इबर छेजानी जी इबर। पंजा जी महाराज पीताम्बर पहले तिळक-मुड़ा मगाव आसन भारि बन्दन रयङ्गे में जुटे थे। रामकली ने उसके स्थान पर जाकर पीपी और कर्मदक रख दिया।

मंगलवार

पंचा — (पुष्कर) यह दुधारे वाह क्यों है?  
राज० — (कोई मटकाल) कोई हीनो पुमसे मलक! पुम  
कोन हीने हो पुष्करासे ?  
पंचा — अट गाव पुन के काव मुच कर ले।  
राज० — (हीनकर) ओही हो। अका गाव पुन है।  
पुनं बामना के समान। प्रत्य भाव्य है कि ऐसे जमान का अरुण सुभा।  
होने में एक सुतर पचा काक हाक जाले निकाले कसे पर लठ रके  
मझे में बूट सुला-माला का सुभा और एन दोनों मलालों की और  
बूट कर बोला अरे रामदेसे बाब ठरे बदन का रके बहल बोला है।  
रामदेसे — सेटी बोले काहे को पूरे है। प्रेम की बूटी बाली है  
जब जा के देवा बोला रके मवा।  
पंचा — ठरे भाव को बाम है। यह रक बरन (रामकली की  
पलक देखकर) हो दो पहले ही पनर लका वा। परबु इत मलबानि  
(पुनो ही पलक बलाठ करके) के जाले हो उककी बोमा ही बाली रही।  
मुनो ही बह गोक-गोक के जाले हो उककी बोमा ही बाली रही। मगर राम  
को बोने ही मलबानि मिला कला है।  
रामदेसे — (पंचा से) अरे और से इन बालों का मने क्या जाले।  
मुनो मने मने बहल लजिबल हो कि इनके वाप करे अंग मनी। जब  
उक की बह बोके पर पुनो हीनो। रामकली से बोली — बहिन  
महाना हो हो महबो, मुमको रर हीनो है। मगर मुमको रर हो तो मैं  
बकेके जाके।  
रामदेसे — रही जमान। अभी तो बहल सबेर है। मगर  
मुनो में बाबर उगार कर पर ही और मागी कैकर रहने के लिए  
उपला बाहली हो कि यकारक बाबु बमपुण्य एक मारा कुनो पुरे,



घासी टोपी सर पर रखे हाथ में नापने का फीता लिये बंद ठेकेदारों के साम आते दिखायी दिये। उनको देखते ही पूर्णा ने एक लंबी भूषट निकाल ली और बाहा कि सीढ़ियों पर उतर जाऊँ। मगर काज ने उसके पैरों को वहीं बाँध दिया। बाबू साहब को सीढ़ियों की लम्बाई चौड़ाई नापना था क्योंकि वह एक बनामा घाट बनवा रहे थे। वह पूर्णा के निकट ही खड़े हो गये। और काजब वेंसिस पर कुछ लिखने लगे। लिखते-लिखते जब उन्होंने इन्धम बढ़ाया तो पैर लौड़ी के नीचे जा पड़ा। इन्दीब का कि वह भीचे मूँह गिरे और चोट चपेट आ जाय कि पूर्णा ने झपट कर उनको संभाल लिया। बाबू साहब ने चौंकर देखा तो बहिन हाथ एक कुम्हरी के कोमल हाथों में है। जब तक पूर्णा अपना भूषट बढ़ाई वह उसको पहचान गये और बोले — प्यारी आज तुमने मेरी जान बचा ली।

पूर्णा ने इसका कुछ जबाब न दिया। इस समय न जाने क्यों उसका दिल धोर धोर से पड़क रहा था और माँसों में झीसू मरा जाठा था। 'हाय ! नारायण जो कहीं वह आज फिर पड़ते तो क्या होता यही उसका मन बेर बेर कहता। मैं मसे सपोय से आ गयी ली। वह सिर नीचा किये गंगा की लहरों पर टिकटिकी समाने यही बातें मुमती रही। जब तक बाबू साहब खड़े रहे, उसने उनको और एक बेर भी न ताका। जब वह खड़े गये तो रामकली मुसकराती हुई आयी और बोली — बहिन आज तुमने बाबू साहब को मिरले गिरते बचा लिया। काज से तो वह और भी तुम्हारे पैरों पर सिर रखेंगे।

पूर्णा — (कड़ी निगाहों से देखकर) रामकली ऐसी बातें न करो। आजनी आरनी के काम जाठा है। अगर मैंने उनको जरा संभाल लिया तो इसमें क्या बात बतौबी हो गयी।

रामकली — ए ली ! तुम तो जरा से बात पर चिन्तित गयीं।

पूर्णा — अपनी अपनी बचि है। मुझको ऐसी बातें नहीं भायीं।

रामकली — अच्छा जपराय समा करो। जब सकार से दिस्तयी न करुँगी। जलो तुम्हारीबस ले लो।

पूर्णा — नहीं अब मैं यहाँ न ठहरुँगी। सूरज भाये पर आ गया।

मंगलाचरण

रामकली — जब एक इन्टर-अक्टर की बहूले भण्डा है। बार पर वो  
जलो अंवारों के विभाव और कुछ नहीं।  
जब दोनों गुरुदत्त निकली तो फिर वही के ठेका बादा मार पूर्ण  
एक दम भी न बकी। अखिर रामकली ने भी उलका गान छोड़ना उचित  
न लगा। दोनों दोनों हुए बकी हीन कि रामकली ने कहा — बसो

पूर्णा — गुरु वही मुझे बहुत डर ही आयी।  
राम — आज तुमको बसना पड़ेगा। तबिक दोनो को अंतिम विचार  
की जरूर है। अगर दो-बार मिल भी जाओ तो फिर बिना मिल पके जो  
न माने।

पूर्णा — तुम जब मैं न आऊँगी। जो नहीं चाहता।  
राम — यही बसो बहुत खतराका मत। इस की दम से तो  
कैसे भाँसे हैं।

राम — एक पानवली की इजाजत पुरी। अठ के पट्टों पर गुनेर सीमे  
पासे में एक पानवली की इजाजत पुरी। अठ के पट्टों पर गुनेर सीमे  
विशेष में गुनन की शक्ति का। उस पर शक्ति शक्ति के पान पानवली की गुनवली  
न। जामने ही दो बड़े बड़े शीतलदार भाँसे लगे हुए थे। लवादी एक  
गरीबा बवाल बा। गर-पर दोस्तकी टोपी गुनकर देवी के लगी थी। बल  
में गड़ेब का केमा हुना कुर्सी बा। गले में तोमे की टावरि। शीशों में गुनो  
साके पर टोपी हँसों पर पान की पहरो लाली। इन दोनों शिपों को  
शामने ही बोला — टैलली की पान वाली बा।

रामकली ने बट गर से बाहर लकवा दी और फिर उनको एक अनुपम  
पलवादी — भाँसे। भाँसे। यह भी तो प्रसार ही है। मत्तो  
के हाथ की बीह प्रसार से बरकर होली है। यह जान तुम्हारे हाथ कीमे  
गान है?  
राम — यह हमारो मती है।  
गरीबी — बहुत अच्छा होता है। शय भाग्य को बढ़ाने हुवा।  
२८४

## प्रेमा

रामकली झुकान पर ठमक ममी और छोटे में देख-देख अपने बाल सँभारने लगी। उमर पनबाड़ी ने चाँदी के बरक सपेने हुए बीड़े फुरती से बगामे और रामकली की तरफ हाथ बढ़ाया। जब वह लेने को मुर्गी ली उसने अपना हाथ बीच लिया और हँसकर बोला—तुम्हारी सखी से तो दे।

राम — मूँह बनवा बाबो मूँह! (पाम लेकर) लो सखी पाम खाव।

पूरुषा — मैं म खाऊँगी।

राम — तुम्हारी क्या कोई सास बँठी है जो कोसँगी। मेरी तो सास ममा करती है। मगर मैं उस पर भी प्रतिदिन खाती हूँ।

पूरुषा — तुम्हारी आबत होनी मैं पान नहीं खाती।

राम — आज मेरी खातिर से खाव। तुम्हें इसम है।

रामकली ने बहुत ठूठ की मगर पूरुषा ने गिलौरियाँ न लीं। पान खाना उसने सदा के लिए त्याग दिया था। इस समय तक घूप बहुत तेज हो गयी थी। रामकली से बोली — किबर है तुम्हारा मन्दिर? वहाँ चकते चकते तो घाँस हो जायगी।

राम — अगर ऐसे बिन कटा जाता तो फिर रोना काहे का था।

पूरुषा घूप हो गयी। उसको फिर बाबू अमृतराय के पीर फियलने का घ्याम आ गया और फिर मन में यह प्रसन्न किया कि कहीं आज वह गिर पड़ते तो क्या होता। इसी सोच में थी कि निदान रामकली ने कहा — लो सखी, मा ममा मन्दिर।

पूरुषा ने चौंकर बाहिनी ओर जो देखा तो एक बहुत ऊँचा मन्दिर दिखायी दिया। दरवाजे पर दो बड़े बड़े पत्थर के दोर बने हुए थे। और एकड़ों आदमी भीतर जाने के लिए बककम बकका कर रहे थे। रामकली पूरुषा को इस मन्दिर में ले गयी। अन्दर जाकर क्या देखती है कि पक्का भीड़ा जागम है जिसके सामने से एक अँधेरी और सँकरी पत्नी बेनी जी के धाम को गयी है। बाहिनी ओर एक बाराबरी है जो जति उत्तम पीठि पर सजी हुई है। यहाँ एक युवा पुरुष पीला रेशमी कोट पहने घर पर लूबसूत

मंगलाचरण

मुलाय रंग की पकड़ी भी कल्पिया मंगलर क्लास है। वैशाल बना हुआ है। उदात्त्याल पावलन और गाला प्रकार की उपर बलुओं से पाठ बनता प्रकित हो रहा है। उस युवा पुत्र के सामने एक उपर कल्पिया सिवारकिरे विरारण रही है। उसके उपर उपर उपरकासे डैटे हुए उपर मिला रहे हैं। हीकड़ों भावनी है और हीकड़ों कड़े हैं। पूर्वा के यह रंग देला की बाँकड़र बोली— तुला यह तो मंगलाचला माल्य होला है। तुम कड़ी मरु तो नहीं मरी ?

राम — (मुसकरकर) भूष। देसा भी कोई कहला है। मरी तो हैवी की का अचिर है। यह बापराटी से मरुत की डैटे हैं। वैशाली ही हैला देवीला कपाल है। बाज कुम्हार है। हर सुक की मरी रामरणी का बा कद बा। मोर किटा माली से कृषी की हुई मरुत पाग से मरे, माये पर विभुलि पलाये कले से मरे कडे माली की खाल की माला पहुँके कडे पर एक देसनी होखुा एके मरी मरी और बाज माली से इकर उपर ताख्या मरुत से वैककर कहे— कयो मया रमरठा। मरुत उपर ताख्या मरुत मरी मया ?

राम — तुम्हारी वाजिर सब हाजिर है। मरुते बलकर मरु तो पैठो। यह केशरी कासीर है मुलाय मरी है। मरुत की वैकक देसके मरुते एक इशार हाया काल से तुम्हें है। रामरणी से यह तुम्हें ही पूर्वा का हाय पकड़ा और बापराटी की जो मरी। वैशाली मरुत मरुते मे कही हुई। वैकड़ों मरुत से एक मरुत, उपाय कपडे पहले हुए। यह के सब एक ही के निके मुले जाये थे। बापल से कल्पिया बोली पाटी भी अकिरे मिलनी पाटी थी। तै मरुतों से, मरुतों से। यह वैककौल मरुतों को न मया। उसका

हिमान म हुआ कि भीड़ में बुझे। वह एक कोने में बाहर ही खरक गयी। मपर रामककी अन्दर बूझी और बहो कोई भाव भण्टे तक उसने बूम गुरुछर्रे चढ़ाये। अब वह निकली तो पछीने में बूझी हुई थी। तमाम रूपके मसछ गये थे।

पूर्वा ने उसे देखते ही कहा — क्यों बहिन पूजा कर चुकी? अब भी घर बल्लोपी या नहीं?

राम — (मुसकटाकर) भरे, तुम बाहर खड़ी रह गयी क्या? उरा मन्वर बलके देखो क्या बहुर है? इखर जाने कंभनी पाती क्या है दिल् मछोस केती है।

पूर्वा — बर्छन भी किया या इतनी देर केवल याना ही सुनती रहीं।

राम — बर्छन करने आती है मेरी बला। यहाँ तो दिल् बहलने से काम है। इस आदमी देखे इस आदमियों से हूँसी-विस्तनी की, बल्लो मग आन हो गया। आन इन्द्रवत् ने ऐसा उचम प्रसाद बनाया है कि तुमसे क्या बखान करे?

पूर्वा — क्या है बरनामूठ?

राम — (हँसकर) हाँ बरनामूठ में बूटी मिछा दी पयी है।

पूर्वा — बूटी कँसी?

राम — इतना भी नहीं जानती हो, बूटी मय को कहते हैं।

पूर्वा — पेह! तुमने मंग पी ली!

राम — यही तो प्रसाद है देखी थी का। इसके पीने में क्या हर्ज है। खयी पीते हैं। कही तो तुमको भी पिछवाडें।

पूर्वा — नहीं बहिन मुझे लमा करो।

इखर यही बावें हो रही थी कि इस पन्ध्र आदमी बाराबरी से आकर इनक आसपास भड़े ही गये।

एक — (पूर्वा की लण्ड पूरकर) भरे मारो यह ती कोई नया स्वल्प है।

बूसरा — बरा बच के बल्लो, बचकर।

इतने में किसी ने पूर्वा क कंभ में बीरे से एक ठोका दिया। अब वह

### संस्कारवाच्य

बधाई बनें केर से पड़ी। जिनके देवता है भारतीय ही भारतीय दिवानी देते  
हैं। कोई इतर से हैसता है। कोई इतर से जातों काटा है। रामकली  
है न यही है। कभी भारत की जिज्जाली है। कभी दोपटे की धोमाली है।  
एक भारतीय ने इतने पूछा — हठाली की बहू कौन है ?  
इसका — इतने अकल काटा करो। जो हो। कैसा बुल्ला हुआ  
रह है। बारे किसी एकदम भारतीयों से सुझाया हुआ। पूर्ण बार की जोर  
को जोर काल एकदम कि जात्र से कभी जिनके न पाठनी।

पूर्वा ने कान पकड़ कि अब मन्दिर कमी न बाढ़ेगी। ऐसे मन्दिरों पर दई का कोप भी नहीं पड़ता। उस दिन से वह सारे दिन घर ही पर बैठी रही। समय काटना पहाड़ हो जाता। न किसी के यहाँ आना न जाना। न किसी से भेंट न मुलाकात। न कोई काम न संभा। दिन कैंने बटे। पड़ी लिखी तो अबस्य भी मगर पड़े क्या। दो-चार किस्से-कहानी की पुरानी किताबें पंडित जी की सन्दूक में पड़ी हुई थीं मगर उनकी तरफ देखने को अब भी नहीं चाहता था। कोई ऐसा न था जो बाजार से उसके पढ़ने के लिए किताबें लाये। बिस्को बेचारी दूसरे सीधे तो बाजार से जाती मगर वह किताबों का मौक़ क्या जाने। वो एक बार भी मैं आया कि कोई पुस्तक प्रमा के घर से मँगवाये। मगर फिर कुछ समझकर चुप ही रही। बेठ-बूटे बनाना उसको आते ही न थे कि उससे जी बहलाये हाँ सीना आता था। मगर सीधे किसके कपड़े। नित्य इस तरह बेकाम बैठे रहने से वह हरबम कुछ उदास-मी रहा करती। हाँ कमी-कमी पंढारन और जीबाइन अपने बने चापड़ों के साथ आकर कुछ सिखावन की बातें सुना जाती थीं। मगर जब कमी वह कहती कि बाबू अमृतराय का जाना ठीक नहीं तो पूर्वा घाउ घाउ कह देती कि मैं उनको जाने से नहीं रोक सकती और न कोई ऐसा बताने कर सकती हूँ जिससे वह समझे कि मेरा जाना इसको बुरा समता है। सब तो यह है कि पूर्वा के हृदय में अब अमृतराय के लिए प्रेम का अद्भुत जमाने लगा था। यद्यपि वह अभी तक यही समझती थी कि अमृतराय यहाँ दया की राह से आया करते हैं। मगर नहीं मान्य कहीं वह उनके जाने

## मंगलकाल

का एक एक दिन मिला करता। और जब खरवार बाबा ठी सरे ही से उनके मुनाबना की ठैवालियाँ होने वाली। किसी बड़े मंत्र से बाबा मनाग साध करता। मुनिवाँ और लकीरों पर से सत मिल की कमी हुई मुद-दिनी पूर करती। मुनीं खुद भी कच्चे और धाक कपड़े पहनी। अब उनके दिल में बाप ही बाप बनाब विचार करने की शक्ल होती थी। मन्द-रिक्त की रोझनी। अब बाबू मनुवराय का बाते तो जवका मलिन मुख मुपल की तरह हमसे करता। उनको प्यारी मुख और भी-अधिक प्यारी मालम होती जाती। अब बाबू साहब की छे छेले अब अपना दर बाबा मुनम होकर दर को जाने। यहाँ वह सब मुनमुक की तरह रहते। कोई भी एक बाद होता रहे। यहाँ वह सब मुनमुक की तरह रहते। कोई रोटी बाल न करे। उनसे मुनीं दुखित हो। अब उनके बालों का समय जाता तो वह कुछ उपास ही जाती। बाबू साहब इसे पाठ आते और मुनीं की वाकिर से कुछ करे और बैठे। इसी तरह कमी-कमी बच्चों की उमर तक हर उमर बीकामई हुई जाती। जो जो बाले हुईं हीं। उनको मल में रोझनी। बाबू साहब इसे पाठ आते और मुनीं की हाँ और के मुल्ले ही मिलाव जाता है। मन् में भी वह मुदी ही बनी। जब मुनीं पहले से स्याव उपास रही ली। हाँ। जो विक में उनको-मुदकत समली जाती है और उनका रिक्त की देदी मुदकत रोम पाठ रहा है। उसे कुछ मालम है कि रम रोम की भीषण बरा है? अब प्रसू जाता है तो फिर स्या किय जाता पर यह लोह क्या रहा है और बाब साहब। तुमको क्या करना मनु है? तुम क्या करने पर मैंने हो? तुमारे भी मैं क्या है? क्या तुम नहीं जानते कि यह अन्न बनने की तो फिर मुनाब न मुनेकी। मुनेमें रोगा मीनना मुन है। कदां की भी मुनदे हैं



जो तुम प्रेमा प्यारी प्रेमा को त्यागे देते हो। वह बेर बेर मुझको बुलाती है। तुम्हीं बताओ, कौन मुँह लेकर उसके पास जाऊँ और तुम तो भाग लगाकर दूर से तमासा देखोये। इसे बुझायेया कौन ? बेचारी पूर्णा इन्हीं बिचारीयों में डूबी रहती। बहुत चाहती कि जमूतराय का स्याक न जाने पावे मगर कुछ बस न बसता।

अपने दिल का परिचय उसको एक दिन यों मिला कि बामू जमूतराय निपट समय पर नहीं आये। चौड़ी देर तक तो वह उमकी राह देखती रही मगर जब वह जब भी न आये तब तो उसका दिख कुछ मधीमने लगा। बड़ी ब्याकुलता से चौड़ी हुई बरबादों पर आयी और आज बघटे तक कान छ्याये लड़ी रही फिर भीतर आयी और मन मारकर बैठ गयी। चित्त की कुछ वही अवस्था होमे सभी जो पंडित जी के दोरे पर जाने के बसत हुआ करती। लंका हुई कि कहीं बीमार तो नहीं हो गये। मट्टी से कहा — बिस्की खरा देखो तो बामू साहब का भी कैसा है ? महीं माकूम क्यों मेरा दिख बैठा जाता है। बिस्की लपकी हुई बामू साहब के बैंगसे पर पहुँची तो बात हुआ कि वह आज दो-तीन तीकटों को साथ लेकर बाजार गये हुए है। अभी तक नहीं आये। पुराना बूडा कहार आभी टाँगों तक पीती बाँबे घर हिलाता हुआ आया और कहने लगा — बिटा बड़ा खराब जमाना आया है। हवार का सउरा होय तो बुर हवार का सउरा होय तो इमहीं लै जानव रहेन। आज खुद आप गये हैं। मसा इतने बड़े जादमी का जस चाहत रहा। बाकी फिर सब अँबेजी जमाना आया है। अँबेजी पड़ पड़ के जउन म ही जाय तउन अबरज नाही। बिस्की बूहे कहार के सर हिलाने पर हँसती हुई बर को लीटी। इकर जब से वह आयी ली पूर्णा की बिचिन दया ही रही ली। निकल ही-हीकर कमी भीतर जाती कमी बाहर आती। किसी तरह लैन ही न आता। आप पड़वा कि बिस्की के जाने में देर हो रही है, कि इतने में बूटे की आबाब मुनायी ली। वह बीड़ कर डार पर आयी और बामू साहब की टूट्टे हुए पाया तो मागी उसको कोई धन निक गया। सटपट भीतर से किबाड़ खोच बिदे। कुर्सी रख ली और चौतट पर सर नीचा करके लड़ी हो पयी।

मंगलाचरण

बभ्रुवाच — तिलो इरी बरी है क्या ?  
 सुर्षा — (उजाले हुए) हाँ आप ही के मुँहों की बरी है।  
 सुर्षा — आपके आँसे में तिलक्य हुवा तो मीने वासा हावर बीन बख्खा  
 बभ्रु० — (घार से रोककर) बीमाटी बाहे कीती ही हो यह मुँसे  
 वहाँ आने से नहीं रोक सकी। जरा बाबाएर बला क्या वा। वहाँ ऐर ही  
 बती।

यह कहेकर जहल्लि एक रडे ओर से पुकारा हुकई अवर बासो  
 और दो भावनी बनदे में हाकिम हुए। एक के हाव में एक वायुक वा और  
 अल्ले के हाव में वह किये हुए कपडे। अब मामाल बीकी पर ल रिवा  
 नया। बाबु वाहुर बोले — सुर्षा मझे पूटे भासा है कि गुन यह दो बार  
 मामुली बीहे लेकर मुसे ब्रुवाय कटेगी। (रिवाकर) यह देर में जाने का  
 मुमाला है।

सुर्षा बकस्ये में आ गई। यह था। यह तो फिर बही लेह बनने  
 वाली बले हैं। और रिवाके लटोलने के लिए आप ही बाबाएर चले गे।  
 बभ्रुवाच। दुधारे रिक् में जो है यह में जासकी है। अरे रिक् में जो है  
 यह गुन की जासले ही। मगर इनका मलीया ? बलमें कपड़े नहीं कि इन  
 बाएर तक चले वने वाली थी। मगर अब पड़ने को कोई कपड़े न ब। अल्ले  
 पोषा वा कि जब की जब बाबु वाहुर के मुँहों से साकिक वाक्काह निकलता  
 ही मामुली मारियाँ मँसा लेंगी। उसे यह क्या मामुल वा कि बीन ही न  
 मंगाली ओर ऐसी मारियाँ आ देर इन जायवा। पहिले तो यह रिवा  
 की त्वाभाविक बालभिलाया से इन बीनों की बनेने को मगर फिर यह  
 केश कर कि मेरा इन वाहुर इन बीनों की बनेने को मगर फिर यह  
 हट गयी और बोली — बाबु वाहुर ! इल बभ्रुवाच के निर्या उचित नहीं है, मगु अन्न  
 बाएर है। मगर यह माटी माटी बोड़े अरे बिना कप के। अरे निर्य मीदी  
 मीदी मारियाँ बाहिर। मैं वहाँ पड़नी तो कोई क्या करेगा।

अनुत्पद्य — तुमने ले लिया मेरी मेहनत ठिकाने लगी और मैं कुछ नहीं जानता।

इतने में बिल्लो पहुँची और कमरे में बाबू साहब को देखते ही निहाल हो गयी। सब चीजों पर दृष्टि पड़ी और इन चीजों को देखा तो बोली — क्या इनके लिए आप बाजार गये थे। बूढ़ा कहार रो रहा था कि मेरी बस्तूरी मारी गयी।

अनुत्पद्य — (यही जवान छ) यह सब कहार मेरे मौकर हैं। मेरे लिए बाजार से चीजें लाते हैं। तुम्हारे सफर का मैं जाकर हूँ।

बिल्लो यह सुनकर मुसकुराती हुई भीतर चली गई। पूर्ण के कान में भी भनक पड़ गयी थी। बोली — उल्टी बात न कहिए। मैं तो खुद आपकी बेरियों को बेचती हूँ।

इसके बाद इमर-उमर की कुछ बातें हुईं। मान-पूष के दिन के घरकी खूब पड़ रही थी। बाबू साहब देर तक न बैठ सके और माठ बनते बनते बह अपने घर को सिपारे। उनके चले जाने के बाद पूर्ण ने जो सम्बूझ खोला तो रंग रह गयी। स्त्रियों के सिगार की सब सामग्रियाँ मौजूद थीं और जो चीज थी सुन्दर और उत्तम थी। आइना कंबी सुगन्धित तेलों की चीचियाँ मॉट्रि मॉट्रि के इन हाथों के कंगन गले का जडहार, जडाळ बूझियाँ एक बरहला पातदाग लिखने-पढ़ने के सामान से मरी एक सम्बूझची क्रिस्ते-कहानी की किताबें इनके अतिरिक्त और भी बहुत-सी चीजें बड़ी-छोटी चीजें से सजाकर परी हुई थीं। कपड़ों का बेझन खोला तो अच्छी से अच्छी सारियाँ दिखायी दीं। सर्वती वाली गुलाबी रंग पर रेशम के बेल-बूटे बने हुए। आदरें मारी सुगहरे कान की। बिल्लो इन चीजों को देख देख पूनी न समायी थी। बोली — बह! यह सब चीजें तुम पहनोगी तो रानी ही जामोयी — रानी।

पूर्ण — (गिरी हुई आवाज में) कुछ नंग ला गयी हो क्या बिल्लो! मैं यह चीजें पहनूंगी तो बीवी बर्बूनी। बीबाइन और ठेठानी ताने दे-देकर जान ले लेंगी।

## मंगलाचरण

विलो — वहाँ क्या रही कोई विलो है। इतने उनके बाप का क्या खयाल। कोई उनके कुछ नामने जाता है।  
जहाँ मैं सट्टी को बाबाबा की आँखों से देखा। यही विलो है जो अभी हो बच्चे पहुँचे बाबाबा की आँखों से देखा। यही विलो है जो अभी पहुँचे-जैसे से बर्बा इतनी थी। इकायक यह क्या आयापक हो रही।  
विलो — कुछ संसार के बर्बा की भी तो काज है।  
जब बाप बाहर आते घोड़ी सेर के लिए पहुँच गया।  
जुर्ना (क्याकर) — यह तिसार करके मुसलें उनके घाले स्कोकर निकला जाया। दुर्जे भाव है एक हैर प्रमा से मेरे बाप मुँह दिसे मे।  
जुमले क्या सुँ। उव विल यह मेरी तरफ देया ताकले से हीसे कोई किलो और देखते हैं तो मेरी काली घड़-बड़ करने लगती है। मुसले जात-मुसकर फिर देही मुक न होयी।

वहाँ मैं सट्टी को बाबाबा की आँखों से देखा। यही विलो है जो अभी पहुँचे-जैसे से बर्बा इतनी थी। इकायक यह क्या आयापक हो रही।  
जब बाप बाहर आते घोड़ी सेर के लिए पहुँच गया।  
जुर्ना (क्याकर) — यह तिसार करके मुसलें उनके घाले स्कोकर निकला जाया। दुर्जे भाव है एक हैर प्रमा से मेरे बाप मुँह दिसे मे।  
जुमले क्या सुँ। उव विल यह मेरी तरफ देया ताकले से हीसे कोई किलो और देखते हैं तो मेरी काली घड़-बड़ करने लगती है। मुसले जात-मुसकर फिर देही मुक न होयी।

वहाँ मैं सट्टी को बाबाबा की आँखों से देखा। यही विलो है जो अभी पहुँचे-जैसे से बर्बा इतनी थी। इकायक यह क्या आयापक हो रही।  
जब बाप बाहर आते घोड़ी सेर के लिए पहुँच गया।  
जुर्ना (क्याकर) — यह तिसार करके मुसलें उनके घाले स्कोकर निकला जाया। दुर्जे भाव है एक हैर प्रमा से मेरे बाप मुँह दिसे मे।  
जुमले क्या सुँ। उव विल यह मेरी तरफ देया ताकले से हीसे कोई किलो और देखते हैं तो मेरी काली घड़-बड़ करने लगती है। मुसले जात-मुसकर फिर देही मुक न होयी।

माया। बिना निकलते ही बिस्वो ने हँसकर कहा — आज बाबू साहब के आने का दिन है।

पूर्वा — (अतमान बनकर) फिर?

बिस्वो — आज तुमको बरुर बरुर गहने पहनने पड़ेंगे।

पूर्वा — (दबी आवाज से) आज तो मेरे घर में पीड़ा ही रही है।

बिस्वो — नीम तुम्हारे बैरी का घर दर्द करे। इस बहाने से पीछा न छूटेगा।

पूर्वा — और जो किसी ने मुझे ताना बिया तो तुम जानना।

बिस्वो — ताना कौन रीझ बेसी।

सबेरे ही से बिस्वो ने पूर्वा का बनाद-सिमार करना शुरू किया।

महीनों से घर न मछा गया था। आज सुगन्धित मसाठे से मछा पया ठेक डाला पया कंबी की मयी बाल गूँधे गये और जब तीसरे पहर को पूर्वा ने मुसाबी कुर्ती पहनकर उध पर देखमी काम की धरंती साठी पहनी गये

में हार और हाथों में कंगन सजाने तो सुन्दरता की मूठि मात्म हीने लगी।

आज तक कमी उसने ऐसे रत्न-जड़ित गहने और बहुमूल्य कपड़े न पहने थे।

और न कमी ऐसी सुधर माधूम हुई थी। वह अपने मुसाराबिन्ध को आप देख

देख कुछ प्रसन्न भी होती थी कुछ सजाती थी थी और कुछ धोष भी कछी थी।

जब साँस हुई तो पूर्वा कुछ उदास हो मयी। तिस पर भी उसकी बाँधे बरबाजे

पर लगी हुई थी और वह चौक चौक कर ताकती थी कि कहीं अमृतराय तो

महीं आ मये। पाँच बजते बजते और बिनों से सबेरे बाबू अमृतराय आये।

कमरे में बैठे बिस्वो से कुछकामन्द पूछा और लसबायी हुई आँसों से

बन्दर के दरवाजे की तरफ ताकने लगे। मगर वहाँ पूर्वा न थी कोई दस

मिनट तक तो उन्होंने चुपचाप उधकी राह देनी मगर जब जब भी न

दियायी थी तो बिस्वो से पूछा — क्यों महरी आज तुम्हारी सकार

कहाँ है?

बिस्वो — (मुसकुराकर) घर ही में तो है।

अमृठ — तो आयीं क्यों नहीं। क्या आज कुछ ताराज है क्या?

बिस्वो — (हँसकर) उनका मन जाने।

संवादात्मक

अमृत — बरा पाकर लिया करो। अगर माया ही तो बलकर  
 माया है।  
 बहू मुझ पर विलो हैल्लो हईं बलकर मुई और पूर्ण से बीली — बहू  
 डोली या बहू बल ही माया है।  
 पूर्ण — विलो तुम्हारे हाव जोखी हईं पाकर बहू रो, बीमार हईं।  
 विलो — बीमारी का बहाना करोती तो बहू डाक्टर को लेके बसे  
 बासि।

पूर्ण — बच्चा बहू रो, रो रही हईं।  
 विलो — तो क्या बहू पनासे न बासि ?  
 पूर्ण — बच्चा विलो तुम ही कोई बहाना कर दो जिसमें मुझे  
 बाना न पड़े।  
 विलो — मैं पाकर बहू रोती हईं कि बहू आपकी सुलसी हईं।  
 पूर्ण को कोई बहाना न मिला। बहू डोली और बहू से घर मुझसे बहू  
 बरवासे पर पाकर बारी ही गई। अमृत राव ने देखा तो अचक से आ गये।  
 बासि बाधिया बनी। एक मिट एक ही बहू। बहू हाव से मिलीटीपाल जिसे  
 लम्का जिनासे को देखे। इसके बाद अमृत राव को देखे रहे जैसे कोई  
 पूर्ण — (लम्का ही हईं) बल अमृत से ?  
 अमृत — (जिनासे निबाही से बलकर) बल एक ही अमृत से बहू।

अमृत बहू और लल गरी मगर आली।  
 पूर्ण मगर बनी अमृत राव को देखी बालों का आगव सेले लेले बहू  
 बीली में लिजुन ही बनी बी। बीली — बासि बिसे का क्या बहाना ?  
 अमृत — क्या बिनी को कपली आल से और है।  
 पूर्ण ने लम्का बहू केर किया। बहू हाव देखे लके और पूर्ण को  
 एक प्यार की निगाहों से देखा। उसकी रजिक बासि उसको बहू न  
 उठ काल एक और रोती ही लल बनी बालों बीली रही। पूर्ण को इन बहू  
 मुझ से न बी कि भेरा इन लल बीली-बासि भेरे बिप रजिक गरी है।  
 उसको इन लल न संवादा का बरवा न पदोसियों का मय। बालों ही बालों

में उसने मुसकुराकर अमृतराय से पूछा—आपकी आजकल प्रेमा का कुछ समाचार मिला है?

अमृठ — नहीं पूर्णा मुझे इन्तर उनकी कुछ खबर नहीं मिली। हाँ इतना जानता हूँ कि बाबू दाननाथ से ब्याह की बातचीत हो रही है।

पूर्णा—बाबू दाननाथ तो आपके मित्र हैं?

अमृठ—मित्र भी हैं और प्रेमा के भोष्य भी हैं।

पूर्णा—यह तो मैं न मानी। उनका जोड़ है तो आप ही से है। हाँ आपका ब्याह भी तो कहीं ठहरा था?

अमृठ — हाँ कुछ बातचीत तो हो रही थी।

पूर्णा—कब तक हीने की आशा है?

अमृठ — देखें अब कब भाग्य जागता है। मैं तो बहुत जल्दी मरना चाहूँ।

पूर्णा—तो क्या उम्बर ही से सिखाव है। आश्चर्य की बात है।

अमृठ — नहीं पूर्णा मैं बरा भाग्यहीन हूँ। अभी तक सिखाव बातचीत होने के और कोई बात तय नहीं हुई।

पूर्णा—(मुसकुराकर) मुझे अनल्प नेवता दीविएगा।

अमृठ — तुम्हारे ही हाथों में तो सब कुछ है। अगर तुम चाही तो मेरे घर सेहरा बहुत जल्द यँप जाय।

पूर्णा भीषक होकर अमृतराय की ओर देखने लगी। उनका आपस अब की बार भी वह न समझी। बोली—मरौ तरफ से आप निश्चित रहिए। मुझे जहाँ तक हो सकेगा उठा न रखूँगी।

अमृठ — इन बातों को याद रखना पूर्णा ऐसा न हो भूल जाओ तो मेरे सब अर्मान मिट्टी में मिल जायें।

यह कहकर बाबू अमृतराय उठे और चलते समय पूर्णा की ओर देखा। उसकी आँखें डबडबायी हुई थीं मानो विनय कर रही थीं कि बरा देर और बैठिए। मगर अमृतराय को कोई अरुचि काम या बीरे से उठ लड़े हुए और बोले—जी तो नहीं चाहता कि मर्दा से जाऊँ। मगर आज कुछ काम ही ऐसा आ पड़ा है। यह कहा और चम दिने। पूर्णा लड़ी रोती रह गई।

गर्भ अंधार

तुम सचमुच जादूगर हो

तो बड़े रात का समय है। पूर्वा भंडारे ऊपर में बायाँ पर डेटी हुई  
कपट्टे बरक रही है और बीच खी है बाँधिर बड़े मुझे बसा बाँधे है ?  
मेरी आँखें बड़ बुझी कि जहाँ तक मुझो ही सकेना जाऊँ कर्म सिद्ध करते  
मेरे घर पर पाप की कठरी आते है। मैं उनको हम मोड़ती मुझ को रोनाकर  
केबन हुई जाती है।

है। ऐसा कौन होगा जो उनको जादूगरी बतें मुझ पर तो न बच ?  
मेरी आँखें बड़ बुझी कि जहाँ तक मुझो ही सकेना जाऊँ कर्म सिद्ध करते  
मेरे घर पर पाप की कठरी आते है। मैं उनको हम मोड़ती मुझ को रोनाकर  
केबन हुई जाती है।

है। ऐसा कौन होगा जो उनको जादूगरी बतें मुझ पर तो न बच ?  
मेरी आँखें बड़ बुझी कि जहाँ तक मुझो ही सकेना जाऊँ कर्म सिद्ध करते  
मेरे घर पर पाप की कठरी आते है। मैं उनको हम मोड़ती मुझ को रोनाकर  
केबन हुई जाती है।

है। ऐसा कौन होगा जो उनको जादूगरी बतें मुझ पर तो न बच ?  
मेरी आँखें बड़ बुझी कि जहाँ तक मुझो ही सकेना जाऊँ कर्म सिद्ध करते  
मेरे घर पर पाप की कठरी आते है। मैं उनको हम मोड़ती मुझ को रोनाकर  
केबन हुई जाती है।



मगर फिर वह प्रेम मुझसे क्यों लपटा है। क्या मेरी परीक्षा लिया चाहते हैं। बाबू साहब! ईश्वर के लिए ऐसा न करना। मैं तुम्हारी परीक्षा में पूरी न उत्तरेगी।

पूर्वा इसी जपेड़-बुन में पड़ी थी कि नींद जा गयी। सबेर हुआ। अभी नहाने जाने की तैयारी कर रही थी कि बाबू कमठराज के मायनी ने आकर बिस्को को बोर से पुकारा और उसे एक बंद लिफाफा और एक छोटी सी सन्कूची देकर अपनी राह लगा। बिस्को ने तुरन्त आकर पूर्वा को यह चीजें दिखायीं।

पूर्वा ने खींचते हुए हाथों से वस्तु छिपा। बीता तो यह लिफाफा था —  
'मायप्यारी से अधिक प्यारी पूर्वा!

'तिस दिन से मैंने तुमको पहले पहल देखा है उसी दिन से तुम्हारे रसोसे मैंने के लीर का भावक हो रहा हूँ और अब भाव ऐश बुझायी हो गया है कि सहा नहीं जाता। मैंने इस प्रेम की भाग को बहुत बचाया। मगर अब वह अकल अचल हो गयी है। पूर्वा! विश्वास मानो, मैं तुमको लम्बे दिन से प्यार करता हूँ। तुम मेरे हृदय कमल के कोप की मालिक हो। उठते-बैठते तुम्हारा मुसकुराता हुआ चित्र भाँजों के सामने छिरा करता है। क्या तुम मुझ पर बर्मा न करोगी? मुझ पर तरस न बामोनी? प्यारी पूर्वा! मेरी विनय मान जाओ। मुझको अपना दास अपना सेवक बना लो। मैं तुमसे कोई अनूचित बात नहीं चाहता। नारायण! कदापि नहीं। मैं तुमसे धार्मिक रीति पर विवाह करना चाहता हूँ। ऐसा विवाह तुमको अनोका मानूँ हीमा। तुम समजोगी यह घोषे की बात है। मगर सत्य मानो अब इस देश में ऐसे विवाह कहीं-कहीं होने लगे हैं। मैं तुम्हारे बिना मैं मर जाना पसंद करूँगा मगर तुमको बोधा न दूँगा।

'पूर्वा! नहीं मत करो। मेरी पिछली बातों को याद करो। अभी तक ही अब मैंने कहा कि 'तुम जाओ तो मेरे सर बहुत पसन्द सेहरा बँध सकता है। अब तुमने कहा था कि मैं भर भक्ति कोई बात उठा न रानी। अब अपना वारा पूरा करो। देखो मुझ पर मत जाना।

संस्काररत्न

इस घर के धार में एक अठाल कंबल डेरला है। धार को मैं पुनः  
घना करके आलेगा। अगर यह कमल दुग्घाटी कनार पर रिकारती सिवा तो  
मुँह न रिकारती।

दुग्घाटी देवा का अभिलषी  
दुग्घाटी देवा का अभिलषी

पुनः के बड़े और से इस बात को परा और सोच के अबाह वसुध में बसे  
जाने लगी। अब यह दुःख कितना। यह दुःख मे नहीं है किन्तु यह पाक  
रहा। यह दुःख को देखो कि मुझे केर केर कहते के कि दुग्घाटी ही ऊपर  
मेरा विवाह ठीक करने का सोच है। मैं ही ही क्या बालू कि पाके पाव से क्या  
बाह घनाती है। मुझे विवाह का नाम केर उनको काज नहीं आती।  
अब दुग्घातिन बनाम नाम से परा हीला ही विषया आहे की हीली। मैं  
अब इनको क्या अबाह है। मैं क्या लखी अमा से अबाह किन्ती  
हीली तो अलका कमी मुँह न रिकारती। मैं क्या लखी अमा से अबाह किन्ती  
मैं अले सुकर है? मुझे विवाह के मे पाक कवी केला विवाह हीला।  
हीली वाले लिखते है? मुझे विवाह के मे पाक कवी केला विवाह हीला।  
मैं मुझे इनकी भी समझ नहीं? यह सब उनका दुःख है। मैं ही रचना ही  
पर लखना चाहते है। अगर देवा मुझे बरापि न हीला। मैं ही रचना ही  
बाहरी है कि कमी अली अली मुझे मुँह का रचना पावा कहे। कमी  
कमी अली लखी कमी अली अली मुँह का रचना पावा कहे। कमी  
समाधार पावा कहे। कमी अली लखी अली मुँह का रचना पावा कहे। कमी  
हुना अगर हीन में उनको मुँह कने और उनका दुःख अलक अलक मुँह  
कले कले बाल है हीली। पर मोह के रूप में आकर मुझे देला माटी पाव  
न शिया जायवा। अगर इसमें उन केपारे का हीन नहीं है। मैं ही रचना ही  
विक के हीरे दुग्घाटी। मैं ही माकपकों मुँह अमाभिलषी में उनका मेम कन बना।  
अब हीन को न जाने क्या मंदूर का कि उनको लखी के मे अली बरापि न पावती।  
अब! आज ही मोह को यह आदि। मेरी कनार पर कमल न है हीले ही।

दिख में क्या कहूँ ? कहीं जाना-जाना त्याग है तो मैं बिना मारे मर जाऊँ। अगर उनका चित्त पारा भी मेरी मोर से मोटा हुआ तो अबस्य पहर छाई। अगर उनके मन में पारा भी मास आया जरा भी गियाह बरती तो मेरा जीना कठिन है।

बिस्वी पूर्वा के मुहड़े का चढ़ान-उतार बड़े मीर से देख रही थी। जब वह लत पड़ चुकी तो उसने पूछा— क्या लिखा है वह ?

पूर्वा— (मलिन स्वर में) क्या बताऊँ क्या लिखा है ?

बिस्वी— क्यों कुशल तो है ?

पूर्वा— हाँ सब कुशल ही है। बाबू साहब ने आज नया स्वामि रखा।

बिस्वी— (अचभे से) वह क्या ?

पूर्वा— लिखते हैं कि मुससे

उससे और कुछ म कहा गया। बिस्वी समझ गयी। अगर वहीं तक पहुँची जहाँ तक उधकी बुद्धि ने मरब की। वह अमृतदास की बहती हुई मुहम्मद को बेस-बेसकर दिख में समझे बैठी हुई थी कि वह एक म एक दिन पूर्वा को अपने घर अचभ्ये जाने में। पूर्वा उसकी प्यार करती है उन पर काम देती है। वह पहले बहुत हिचकिचायमी अगर अन्त में मान ही जायगी। उसने सैकड़ों रईयों की देखा या कि पाइनों कहारियों महा राजिनों को घर डाल किया या। अब की भी ऐसा ही होगा। उसे इसमें कोई बात मनोषी नहीं मानूम होती थी कि बाबू साहब का प्रेम सच्चा है अगर बेचारे सिबाय इसके और कर ही क्या सकते हैं कि पूर्वा को घर डालें। देखा चाहिए कि वह मानती है या नहीं। अगर मान नहीं तो जब तक जियेगी, सुख भोगेगी। मैं भी उनकी सभा में एक टुकड़ा रोटी पामा करूँगी और वो कहीं इनकार किया तो किसी का लिबाह न होगा। बाबू साहब ही का सहाय ठहरा। जब वही मुँह मोड़ लेंगे तो फिर कौन किसकी पूछता है।

इस तरह ऊँच-नीच सोचकर उसने पूर्वा से पूछा— तुम क्या बचाव होगी ?

पूर्वा— बचाव ! ऐसी बातों का भी भला कहीं बचाव होता है। मला बिपदाओं का कहीं ग्याह हुआ है और वह भी बाह्य का अचिब से।

## भेषजकारण

इस तरह की सब बहानियों के जेबियाँ में लगी थीं जो वह मुझे दे रहीं हैं। अगर ऐसा बात कही तो मुझे नहीं देखने में आती।  
 बिल्ली घबसी थी कि बाबू साहब उसकी बर बालेवाले हैं। जब  
 ब्याह का नाम सुना तो चकरा कर बोली — क्या ब्याह करने को कहते हैं ?  
 पूर्णा — हाँ।  
 बिल्ली — तुमसे ?

बाबू पकड़े सब देना खास है। मला देना कही गया है।  
 बिल्ली — बचपन का बचपन है। जलना अवलम्ब में पालन कसी।  
 पूर्णा — बही तो बाबुल है।  
 बिल्ली — बचपन का बचपन है। जलना अवलम्ब में पालन कसी।

बाबू पकड़े सब देना खास है। मला देना कही गया है।  
 बिल्ली — बचपन का बचपन है। जलना अवलम्ब में पालन कसी।  
 पूर्णा — हाँ तुम हैं। क्या करते।  
 बिल्ली — हाँ बिल्ली उनको नहीं पालन क्यों मुझे कुछ मुद्रकत हो  
 यही है और मेरे दिल का हाल तो तुमसे क्या नहीं। अगर वह मेरी जान  
 मंगलें तो मैं कभी से होती। फिर जानना है उनके बर से इतने पर मैं  
 जाने को निश्चय कर लखी हूँ। क्या करते।  
 बिल्ली — हाँ बिल्ली उनको नहीं पालन क्यों मुझे कुछ मुद्रकत हो  
 यही है और मेरे दिल का हाल तो तुमसे क्या नहीं। अगर वह मेरी जान  
 मंगलें तो मैं कभी से होती। फिर जानना है उनके बर से इतने पर मैं

जाने को निश्चय कर लखी हूँ। क्या करते।  
 बिल्ली — हाँ बिल्ली उनको नहीं पालन क्यों मुझे कुछ मुद्रकत हो  
 यही है और मेरे दिल का हाल तो तुमसे क्या नहीं। अगर वह मेरी जान  
 मंगलें तो मैं कभी से होती। फिर जानना है उनके बर से इतने पर मैं

जाने को निश्चय कर लखी हूँ। क्या करते।  
 बिल्ली — हाँ बिल्ली उनको नहीं पालन क्यों मुझे कुछ मुद्रकत हो  
 यही है और मेरे दिल का हाल तो तुमसे क्या नहीं। अगर वह मेरी जान  
 मंगलें तो मैं कभी से होती। फिर जानना है उनके बर से इतने पर मैं

नयाँमे। मी सखी प्रमा की मुँह विलामे पोष्य नहीं रहूँगी। बस वही एक उपाय है कि जान दे दूँ। म रहे बाँस न बजे बाँसुपै। उनको दो-चार दिन तक रंज रहेगा आखिर भूल जावँगे। मरी तो इरबत बच जायगी।

बिल्ला — (बात पकट कर) इस सन्तुके में क्या है ?

पूर्वा — बोल कर देखो।

बिल्लो ने जो उसे जोठा तो एक झीमटी कंगन हूँ मजमल में छपेट कर बरा बा और सन्तुक में से संदर की सुपक भा रही थी। बिल्लो ने उसको निकाल लिया और जाहा कि पूर्वा के हाथ में पहनाव कि उसने हाथ खींच लिया और बाँसों में बाँसु भर कर बाँसी — मठ बिल्लो, इसे मठ पहनाओ। सन्तुक में बंद करके रख दो।

बिल्लो — क्या पहनी तो देखा कैसा बल्ला मामूम होता है।

पूर्वा — कैसे पहनूँ। यह तो इस बात का सूपक हो जायगा कि मुझ उनकी बात मंजूर है।

बिल्लो — क्या यह भी इस चीटी में लिखा है ?

पूर्वा — हाँ लिखा है कि मैं आज शाम को आऊँगी और अगर कलाई पर कंगन देखूँगा तो समझ जाऊँगी कि मेरी बात मंजूर है।

बिल्लो — क्या आज ही शाम को आएँगे ?

पूर्वा — हाँ।

यह कहकर पूर्वा ने सिर नीचा कर लिया। महाने कौन जाता है। खाने-पीने की किचको सुब है। दोपहर तक चुपचाप बैठी सोचा की। मगर दिल ने कोई बात निर्भय न की। हाँ, क्यों-क्यों सँस बर समय निकट आता या क्यों-क्यों उसका दिल बड़कता जाता या कि उनके सामने कैसे आऊँगी। वह मेरी कलाई पर कंगन न देखेंगे तो क्या कहूँगे ? कहीं रुठ कर चले न जायें ? वह कहीं रिझा सब तो उनको कैसे मनाऊँगी ? मगर तबियत का आयादा है कि जब कोई बात उसको अति लौकीन करनेवाली होती है तो योड़ी देर के बाद वह उससे भागने लगती है। पूर्वा से अब सोचा भी न जाता था। माँ पर हाथ घरे मौल साब चिन्ता की चिन्त बनी बीवार की ओर तक रही थी। बिल्लो भी मन मारे बैठी हुई थी। तीन बजे होचि कि यकामक



## विवाह हो गया

यह बातें इसी बात हैं कि बहुत करके झूठी और बे-सिर-सीर की बातें आप ही आप फैल जाया करती हैं। वा मला जिस बात में सच्चाई गाननाम भी मिची हो उसको फँसते किठनी बेर लगाठी हैं। चारों ओर यही चर्चा थी कि अमृतराय उन बिबबा ब्राह्मणी के घर बहुत आया-जाया करते हैं। सारे सहर के लोग इसम खान पर उद्यत थे कि इन दोनों में कुछ साठ-नाठ जरूर है। कुछ दिनों से पंडाइन और चौबान्न आदि ने भी पूर्वा के बनाव-बुनाव पर नाक मों चढ़ाता छोड़ दिया था। क्योंकि उनके बिचार में अब यह ऐसे बख्तों की मामी न थी। जो लोग बिज्ञान व और हिन्दुस्तान के दूसरे देशों के हास जानते व उनको इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं यह दोनों नियोग न कर सें। हुबारों आपनी इस बात में थे कि अगर कभी रात को अमृतराय पूर्वा की ओर जाते पकड़ जायें तो फिर लौट कर घर न जाने पायें। अगर कोई अभी तक अमृतराय की भीषठ की लफाई पर बिबबाम रक्तता था तो यह प्रेमा थी। यह बेचापी बिष्णुमि में चलते चलते काँटा ही पई थी मगर अभी तक उनको मुहम्मत उसक दिल में बँसी ही बनी हुई था। उसके दिल में कोई बैठा हुआ कह रहा था कि तेरा बिबाह उनम अबस्य होना। इसी भाषा पर उतने जीवन का आचार था। यह उन लोगों में थी जो एक ही बार दिल का सीरा चुकाते हैं।

आज पूर्वा से बचन लेकर बाबू साहब बैससे पर पहुँचने भी न पाय व कि यह खबर एक काल में दूसरे काल फँसने लयी और घाम होते होते सारे सहर में यही बात घूमने लयी। जो कोई सुनता उस पहुँके ता बिश्वास

### संस्काराचार्य

हर के लिए उन्हें सब से बड़ा दिया। अपने से अधिक बड़का उनको  
पूर्वा के बारे में था कि कहीं यह सब कुछ ठहरे न कोई शक्ति मुटुबाबू।  
उसी वन काटने पहिल पैरानी पर सारा हीकर बटाट मजिस्ट्रेट के  
का अदोको से बहुत माल था। इनकिय नहीं कि यह बुलासी से या  
अक्सरों की पूजा किया करते थे किन्तु इसलिए कि यह अपनी मर्यादा  
रखना थाय बाले से। साहब ने उनका बरा भावर किया। उनकी बलें  
बुढ़े ध्यान से मुगी। सामाजिक गुणों की भाव्यकला को माना और  
पुस्तिक के इन्फ्लेक्शन को लिया कि भाव बाबू कमुरास को रखा के  
बाबू एक बार रखा कीकिय और लखर को रहिए कि मारवीट मुत  
कराबा न ही नाम। सोस ठहरे सोहे तीव सिताहिरी का एक बार बर  
साहब के मकान पर चुके था जिनमें से पंच बरमान भारती पूर्वा के  
मकान की डिजायल करने के लिए आये थे।  
है तो और भी मकानों। मुगी साहब रोना रोना प्रकाश कर रहे  
मजिस्ट्रेट के पास लुके और उठारै मकानों कि अगर यह बिबाह टोक न  
रिखा था तो घर में क्या उपजत हीया और बरला ही जाने का इत  
पूरीबाबा चाहते हैं। मुगी जो से कहा कि मकुर कट कमुरास को शक्ति  
बिबाह में किन्तु बालका नियम के विरुद्ध समझती हैं। अब तक कि उन  
काम से किसी दूसरे मनुष्य को औरि हुन न हो। यह टका ना वबाब  
पाकर मुगी भी बहुत लज्जित हुए। बहों से एक मुकुर मकान पर बाबे  
और अपने मकानों के साथ बैठकर डेनका किया कि कौं ही बारल  
निकले उची वन पचान बाबसी उन पर टूट पड़े। पुलिसवाली की भी  
उबर से और कमुरास के लिए यह मन्थ बुना मनुक था। अगर यह  
बाबू कमुरास के लिए यह मन्थ से इन गुणों के काम में बना हुआ था।  
बिबाह का तिल भाब से एक मन्थाह पीछे नियत किया गया। स्वीडि



ख्याता बिलम्ब करना उचित न था और यह सात दिन बाबू साहब ने ऐसी हुरानी में काटे कि जिसका खर्च नहीं किया जा सकता। प्रति दिन वह दो कास्टेबिलों के साथ पिस्तौलों की जोड़ी लगामे दो घेर पूर्ण के मकान पर आते। वह बेचारी मारे डर के मरी जाती थी। वह अपने को बार-बार कोसती कि मैंने क्यों उनको आशा दिखाकर यह जोखिम मील ली। अगर इन दुष्टों ने नहीं उन्हें कोई हानि पहुँचाई तो वह मेरी ही ताबानी का फल होगा। यद्यपि उसकी रखा के लिए कई सिपाही नियत थे मगर रात-रात भर उसकी आँखों में नींद न आती। पता भी पड़कता तो भौंककर उठ बैठती। जब बाबू साहब सबेरे भाकर उतको डारस देते तो जाकर उसके जान में जान आती।

अमृतराय ने चिट्ठियाँ तो इधर-उधर भेज ही दी थीं। विवाह के तीन चार दिन पहले से मेहमान आने लगे। कोई मुम्बई से आता था कोई मद्रास से कोई पंजाब से और कोई बंबाल से। बनारस में सामाजिक सुमार के निरोधियों का बड़ा शोर था और सारे भारतवर्ष के रिजामरों के भी से लगी हुई थी कि जाहे जो ही बनारस में सुमार के चमत्कार फैलाने का ऐसा अपूर्व समय हाथ दे न जाने देना चाहिए। वह इतनी दूर दूर से इसीलिए आते थे कि सब काशी की जूमि में रिजामरों की पताका बचस्य गाड़ें। वह जानते थे कि अगर इस सहर में यह विवाह ही तो फिर इस सूबे के दूसरे सहरों के रिजामरों के लिए रास्ता खुल जायगा। अमृतराय मेहमानों की आबजगत में लगे हुए थे। और उनके उरसाही जैसे साफ-सुपरे कपड़े पहने स्टेसन पर आ-जाकर आवरपूर्वक आते और उन्हें सब हुए कमरों में ठहराते थे। विवाह के दिन तक यहाँ कोई बेंदगी मेहमान जमा ही नये। मगर कोई मनुष्य सारे बार्गवर्त की सम्पत्ता स्वतन्त्रता उदारता और वैद्यवस्थि की एकजित देवना चाहता था तो इस समय बाबू अमृतराय के मकान पर बैठ सकता था। बनारस के पुरानी लकीर पीटनेवाले लोग हम वीदारियों और ऐसे प्रतिच्छिन्न मेहमानों को देख-देख दाँतों जैंगली बजाते। मुंशी बरदौप्रसाद और उनके सहायकों ने कई बेर घूम घाम से जलसे किये और हर बेर मही बात तम हुई कि

### मंगलपत्र

बाहे की ही माफोट बरु की जाय। विवाह के पहले साल को बाबू  
असलपत्र अपने हाथियों की केकर मुर्गी के मकान पर चूके और चूके  
उनको बरु मुर्गी के बाबर-सम्मान का प्रथम करने के लिए छहरा दिया।  
इसके बाद मुर्गी के पास गये। इनको देखते ही चरकी बाबाओं में बाबू

बाबू० — (मुझे से क्याकर) चारो मुर्गा उठो गल। फिर  
काम गही कर रहे हैं जिसको सम्भार बाबूनी बुर करके। हम कोई ऐसा  
बल्ले यहाँ बाबूनी की बाब तक इस कहर में किसी के दरवाजे पर न  
जायी होगी।

बरु माफोट हीमी। बाबों और से यह बरु मुर्गा है कि कर  
ही छु है। इस बरु की मुसी की के यहाँ तोक बना है।  
मुर्गी की के चूके ही ऐसे बल्ले मुर्गी से ही रहे हैं और बरु मुर्गा करके।  
बाबू का नाम हीमी। बाबू माफोट की चार की  
मुर्गी बाबू मुर्गा के नाम हीमी। बाबू माफोट की चार की  
मुर्गी बाबू मुर्गा के नाम हीमी। बाबू माफोट की चार की

मकान को खाना था।  
पहल पर गये मुर्गी के मकान पर कई पंडित देगनी बाबा लगे गये  
में मुर्गी का हार वाले बाबे और विभिन्नक कमी की पूजा करते गये।  
मुर्गी बोलते विचार किसे ही ही ही थी। बाबे एक मैन की देखने।  
दिल के सामल प्रकाश ही छु था। सोस्टेबिक दरवाजे पर दल  
के। दरवाजे का मकान साक किया था छु था और साकि

किया था रहा था। कुर्तियाँ लपानी या रही थीं। फर्श बिछाया गया गमले सजाने गये। सारी रात इन्हीं ठीयारियों में कटी और सवेरा होते ही बरात समूहचय के घर से चली।

बरात क्या थी सम्पत्ता और स्वाधीनता की बसती-फिरती तसबीर थी। बबाने का बड़ बड़ पड़ पड़ न विमुक्तों की धाँ धाँ पों पों, न पाठशियों का शुर्मूट, न सवे हूए बोड़ों की चिस्लपों, न मस्त हावियों का रेसपेन न सोंटे-बस्ममवाकों की झठार, न फूठबाड़ी न दपीने बस्कि मले मानुषों की एक मंडली थी जो बीरे बीरे इयम बग़्गती चली या रही थी। दोनों तरफ़ चंवी पुलिस के मादमी बधियाँ डटि सटि किये खड़े थे। सड़क के इतर उधर मुंड के मुंड बादमी लम्बी लम्बी काठियाँ किये एकत्र से और बरात की ओर देख देख बैठ पीसते थे। मगर पुलिस का बह रोब का कि किसी को भूँ करने का भी साहस नहीं होता था। बरातियों से पचास इयम की दूरी पर रिबर्न पुलिस के सवार हयियारों से लैस घोड़ों पर रान पटरी बमाने माले बमकाठे और बोड़ों को उछालते चले जाते थे। जिस पर भी सबको यह सटका लगा हुआ था कि कहीं पुलिस के मय का बह ठिखिम टूट न जाय। बरातियों के बेहरे से पबउहट लेसमान भी न पामी जाती थी तथापि बिल सबके बड़क रहे थे। जरा भी सटपट होती तो सबके कान बड़े हो जाते। एक बेर दुपटों ने सभमुख भाषा कर ही दिया। चारों ओर हलचल मच गयी। मगर उसी बय पुलिस ने भी इबस मार्च किया और दम की दम में कई फ़्यादियों की मुपकें कस ली। फिर किसी को उपद्रव मचाने का साहस न हुआ। बारे किन्ही तरह बटे मर में बरात पूर्ण के मकान पर पहुँची। यहाँ पहले ही से बरातियों के मुनाममन का सामान किया गया था। बाँयन में फर्श सया हुआ था। कुर्तियाँ बटी हुई थीं और बीचोंबीच में कई पूज्य बाइयन हवनकुण्ड के किनारे बैठकर आहुति दे रहे थे। हवन की मुपन्न चारों ओर उड़ रही थी। उस पर मंत्रों के बीठ मीठे मध्यम और मनोहर स्वर जब कान में आते तो दिस आप ही आप उछलने लगता। जब सब बगती बैठ गये तब उनके माथे पर केसर और चन्दन मसा गया। उनके मलों में हार डाले गये और

मंगलकारण

बहु जगदराय पर सब कारियों के पुण्यों की शर्त की। इसके पीछे बर  
मकान के भीतर गया और वहाँ विविध प्रकार के विवाह हुआ। न मील  
गाने गये न बाली मलीन की शौचल बायी न मेघचार का उमग गया।  
नीलर ही माती ही रही की बाहर हवाओं आरवी कठिना और  
संदि लिए बुझ गया रहे थे। पुलिवाके उनको रोके हुए मकान के बागिचे  
कमरे थे। इसी बीच में पुलिवा का कपान भी जा पहुँचा। उलने जाते ही  
हूम दिया कि बीच हटा ही जाय। और उनी वन पुलिवाको ने रोटीयें  
से मार मार कर इस मीन को हटाना अक भिदा। इस में सर कर सी। जब गया बा  
के लिए बकुलों की सो-चार बाड़े हुए मं सर कर सी। और पुलिवा के बागिचे  
बाटी और अमलक मच बयी। कोय एक पर एक मिलने लगे। मकर ठीक  
उनी वान ठाकुर जोटावर सिंह बाकी वसिया बाड़े खजूरी बाग सने  
रोहटी पिलीक सनाये विबायी रिया। उनका मुँह बनी भी। बाँकी  
से अंगरे उठ रहे थे। उलको देखते ही बहु सोन जो छिडिर बिडिर ही  
रहे थे फिर इकठ्ठा होने लगे। जैसे वहीरे को देखकर मावती हुई सेवा  
वम पकड़ के। हकते ही वेकते हवाए बावती से अथिक एकत्र ही गये।  
और लकवार के बनी ठाकुर ने मालो बिजली कोय मनी बीच मरक उठा।  
को म्ने। उनी पुलिवाके भी मनीने बकुले माफ़ बाड़े हटे गये थे।  
मब कोई वन में लोड की गयी रहा बाकली है। कपान ने जब इस बाव  
और अने ऊपर जाते हैवा वी अपने गिवाहिरी को लकवाए और बने  
की भावक मावी और कपान की टोरी उनीन पर निर पनी मकर बाव  
मर की है। उनसे ही बट बागी बमूक मीमकी और गिवाके का कपान  
बा कि बीच से भावक हुई और जोटावर सिंह बाटी गाने बित उनीन पर  
जा रहा। उसके मिलने ही सबके हिसाब पूर गये। के भेयों की मीन

मायने लगे। जिसकी जिनर सीब समाई बल निकला। कोई भाव बध्ते में नहीं बिड़िया का पुत भी न दिखायी दिया।

बाहर ठी यह उपद्रव मचा वा भीतर बुझहा-बुझहिन मारे डर के सूबे जाते थे। बाबू अमृतराम भी बम दम की खबर सँवाते और घर पर कौपती हुई पूर्णा को डारस बैठे। वह बेचारी रो रही थी कि मुत अभा यिमी के लिए माया पिटीबल हो रही है कि इतने में बन्दूक की आवाज कान में आयी। बरे!!! वह क्या ही गया। पूर्णा मारे डर के अमृतराम के बके से छिपट गयी। उसी बम एक आदमी ने आकर कहा — बाबू साहब प्रबल ही गया। कप्तान साहब क गोली लग गई। अभी उसकी बात भी पूरी न हुई थी कि फिर बन्दूक फूटी। या नाउपयय अब कौ किसकी जान गई। अमृतराम पबराकर उठे कि जरा बाहर जाकर देखें। मगर पूर्णा से हाय न सुझा सके। इतने में एक आदमी न ठिर आकर कहा — बाबू साहब! ठाकुर डेर ही मरे। कप्तान ने गोली मार दी।

भाव बध्ते में सैबान साक़ ही गया और अब यहाँ से बराठ की बिवाई की ठहरी। पूर्णा और बिस्मो एक सेत्रपाड़ी में बिठाई गई और जिस सब-बज से बराठ आयी थी उसी तरह पापस हुई। अब की किमी को सर उठान का साहस नहीं हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि इबर-उबर झुंड के झुंड आदमी जमा थे और इस मंडली को कौय की निपाहों से देख रहे थ। कमी कमी कोई मनबला जवान एकाध पत्पर भी बला देता वा। कभी ताकिमा बजायी जाती थीं। मुंह बिड़ाया जाता वा। मगर इन घराणों से ऐसे बिल के पीड़े आदमियों की पम्भारता में क्या बिध्न पड़ सकता वा। कोई भाव बध्ते में बराठ ठिकाने पर पहुँची। दुकिनुन बटापी यरी और बरातियों की जान में जान आयी। अमृतराम की खुसी का क्या पूछना। वह बीड़-बीड़ सबसे हाय मिसाते फिरते थे। बाँके सिमी बाटी थी। ज्याही बुल्लिन उस कमरे में पहुँची वो स्वयं भाप ही बुल्लिन की तरह सजा हुआ वा तो अमृतराम ने आकर कहा — प्यारी, ली, हम दुयब से पहुँच बरे। नै, तुम ठी रो रही हो यह कहते हुए उन्होंने क्माक से उनके आँसू पोछे और उसे गले से लगाया।

प्रेम रस की माली पूर्वा ने अनुत्पल्य का हाथ पकड़ लिया और बोली — भाव तो आज ऐसे मलमल बिचल है माली कोई राज निक मया है।

अनुत्पल्य — (खिन्नाकर) कोई झूठ है। जिसे एसी राती निके ऊठे राज की मया परवाह।

भाव का दिल बने आनन्द में कटा। दूसरे दिन बरालियों ने बिदा होने की आज्ञा माँगी। मगर अनुत्पल्य को यह सवाह हुई कि माला अनुत्पल्यकीकाक कम से कम एक बार सबकी अपने व्याख्यान से कलम एक बना साहित्यगत बना करवाया और बने उल्लाह के अपने बजाके में मुनीधार व्याख्यान हुए कि सामाजिक सुधार का नीरव सबके दिलों में गाया घुट्ट टूटा पड़ता था। वीकनों बरालियों का अकेल टूट गया। इस उल्लाह के भाव तो निरवा विवाह और हुए। वीकों हुई अनुत्पल्य के असाही सहायकों में से और दुश्मनों में से एक पूर्वा के साथ बना गढ़ीवाली रामकली थी। और काका अनुत्पल्यकीकाक ने तो तीन दिन मुलाकहत केली ही परी। और काका अनुत्पल्यकीकाक ने तो तीन दिन उसे बराबर ली बने की सिखा दी।

उसकी एक बर लिखाऊ दिया। परा तो प्रेमा का प्रमन्य था। उसके उसे मुनाककाती ही ही और भाव अनुत्पल्य की बहु लखीर जो बलों की काखिटी लखे यह भी — लखी दुम बनी सामकली ही। फिर ठहा अनुत्पल्य तोहाग कपय परी। पुसुदरे रान की लखीर पुसुदरे वात भेजली हुई। इने मेंही पाकरा मयागा। दुम आगनी ही कि मैं मुमकी जाल के प्यारा लखी मसली परी। मगर अब मैं इन योग्य नहीं कि इने अपने पान रा सबे। अब यह

प्रेमा

तुमको मुबारक हौ। प्यारी मुझे मूखना मत। अपने प्यारे पति को मेरी  
ओर से धन्यवाद देना।

तुम्हारी बभागिनी सुखी—

प्रेमा

अफसोस ! आज के पन्द्रहवें दिन बेचारी प्रेमा बाबू रामनाथ के  
सके बाँध ली गयी। बड़े मूमनाम से बरात निकली। हजारों रुपया मुटा  
दिया गया। कई दिन तक सारा घर मूँधी बघरीप्रसाद के दरवाजे पर  
नाथ देखता रहा। लारों का बार-बार ही गया। प्याह के तीसरे ही  
दिन मूँधी जी परलोक को सिधारे। ईश्वर उनको स्वर्गवास दे।

### विरोधियों का विरोध

मेहमातों के विरा ही जाँने के बार महु बाबा की जखी बी कि बिटोबी  
गोप सब विर न उठावे। बिबिग हउलिख कि ठाडुर जोराबर लिख जोर  
मुदी बरौजताव के गर बाजे से उनका बर बडुल कम ही मवा बा।  
गर महु बाबा मुटी न हुई। एक मज्याह भी न मुबले पाबा बा और  
करी मुबिल से शैखे भी न पावे के कि फिर कही दलालिकिकल मुक  
ही मदी।

- मेहपराज कमेरे से शैखे हुए एक पत्र पके रहे के कि मेहपराज उनके  
से बाबा और हान जोकर बहा ही मवा। मेहपराज ने घर उठाकर  
उनको देखा ही मुकपाकर रोके — शैखे बले मेहपराज ?
- मेहपराज — हुँदुद बाल बकली होव ठो महुँ।
- मेहपराज — वीक से कही।
- मेहपराज — बाल ठो कही।
- मेहपराज — हुँदुद बर कली है।
- मेहपराज — बाल ठो कही।
- मेहपराज — क्या ठाकाब बइबाला बाहो ही ?
- मेहपराज — किर क्या बाहो ही ?
- मेहपराज — हुँदुद हमार इलाका से लिना जवा।
- मेहपराज — क्या गीकटी ठोमेने ?
- मेहपराज — ही मरकार। सब हमसे बाव मही हीना।



अमृत — नहीं अभी तो मजबूत हो। जी चाहे तो कुछ दिन मायम कर लो। मगर नीकरी क्यों छोड़ो।

महाराज — नहीं सरकार अब हम बर को जाइव।

अमृत० — मगर तुमको यहाँ कोई तकलीफ हो तो ठीक ठीक कह दो। मगर उनस्वाह कहीं और इससे ब्यादा मिलने की आशा ही तो बँसा रहो।

महाराज — इजूर, उनस्वाह जो आप देत है कोई स्वा मारि का कास देगा ?

अमृत० — फिर समझ में नहीं आता कि क्यों नीकरी छोड़ना चाहते हो ?

महाराज — अब सरकार में आपस क्या कहूँ।

यहाँ तो यह बातें ही रही थीं उपर चम्मन न रम्मन व मम्मन कहार और मयेसू व हुकली मारी आपस में बातें कर रहे थे।

मयेसू — बसो बसो जस्टी। नहीं तो कचहरी को बेका जा जैह।

चम्मन — जाये जाये तुम बसो।

मयेसू — हमसे आरु न बछा जैह।

चम्मन — तब कौन आरु बसै।

मयेसू — हम केका बछाई।

रम्मन — कौन न बसै आरु तो हम बसित है।

हुकली — तँ जाये बसेवा तो पीछे कौन बसिहै।

मयेसू — हम एक बात कहित है। न कोई आरु बले न कोई पीछे।

चम्मन — छिर सैस बला जाय।

मयेसू — सब साय साय बसै।

चम्मन — तुम्हार कपार।

मयेसू — साम बले माँ कौन हरज है।

रम्मन — तब सरकार के बसियाये कौन ?

मयेसू — हुकली का एब बसियाब जाबत है।

मंगलाचरण

इसकी — बड़े पास रे। मैं उनके पास न जाँदूँ। उनका रोल के  
 मोका गुलाब ही बावत है।  
 मोल — अच्छा मोल न बलें ठी इस ही बावत बलिज है।  
 सब के सब बले। जब बटावसे में खुदि ठी मोलक एक गया।  
 मंगल — ठाँके काहे ही बनो। बले बली।  
 मोक — जब इस न जाने। हारा ठी ठाँदी परबल है।  
 बगुलपार मे ओ बटावसे में एकको हीय मीस भाँतें बरले गुला ठी  
 बनने से बाहर निकल जाये और हँस कर पूछा — कैसे बले मोक ?  
 मोक का हिसाब बताते कुछ कहते जाते हैं।  
 मू सब कष्टर जानते कुछ कहते जाते हैं। फिर गीना करके बोला — ठंडूट

बगुलपार — स्वा कहते हैं ? यह सब ठी बोलते ही नहीं।  
 मोक — (असह्योसे) तुमकी जीन कुछ कहना हीय वाफार से कहो।  
 यह सब कष्टर जानते कुछ कहते जाते हैं। पर फिर मैं बहुत हाकावे।  
 बगुलपार — क्या कहते हैं ? तुम काहे गाँही कहल हो। तुमदूरे  
 कष्टर मोक के इस तरह निकल जाने पर कहते गाँही कहल हो। तुमदूरे  
 मोक ने बटा ठीके ठीकर कहा — तुम काहे गाँही कहल हो। तुमदूरे  
 बगुल मे बटा ठीके नहीं है।  
 मोक — तुम पास गये। बावत तुम मीस श्राव माने जाते हो।  
 मूँ से जीन नहीं है।  
 बगुल — बगुलपार ही कहते के बाव पर एक गया।  
 मूँसे से जाये ठी बॉ बाँते कले मने —  
 मंगली कोठरी में जाये ठी बॉ बाँते कले मने —  
 बगुल — मीनला बना बीरा है।  
 इसकी — बल रोल हाकल एह कि बाव नरे का है।  
 मोक — बल बाव के ठंडूट ठीकाली कई बाव।  
 इसकी — तुम काहे ठी कहते बावने कुछ कहें न गया।  
 इसने में तुमदूरे कष्टर बकरी देखा नमाना हुआ का पूँसा। और  
 हाकी गया देखकर बोला — का यरा ? मकौर का कहें ?  
 इसकी — मकौर के गालने प्राव के सब पूँसे ही बले। कोई के  
 बल न निकली।

मयेकू— सुखईं दादा! तुम नियाब करी जब सरकार हँसकर इनाम देने छाने तब कैसे कहा जात कि हम नीकरी छोड़न जाये हैं।

सुखईं— हम तो तुमसे पहले कह दीन कि यहाँ नीकरी छोड़ के सब जाने पछरौंही। अब मसामानुष कहुँ न मिले।

मयेकू— दादा तुम बात कात बपया की कहत हो।

बम्मन— एसा कौन शूठ है। अब मनईं कहुँ मिले।

रम्मन— आज इस बरस रह्य मये मुदा बाबी वात कबहुँ नाहीं कहें।

मयेकू— रीस तो उनके देह में छू नाहीं दी। जब बात करत है हँसकर।

मम्मन— मीया हमचे तो कोऊ कहत कि तुम बीस कसदार सेज और हमारे यहाँ बत क काम करो तो हम सरकार का छोड़ के कहुँ न जाइत। मुदा बिरायरी की बात ठहरी। हुकका-पानी बन्द होइ गया तो फिर केह के बारे जीवे।

रम्मन— मही डर तो जान मारे डालत है।

बम्मन— बीपरी आज कह मये हैं कि आज इनकर काम न छोड़ दीहो तो टाट बाहर कर दीग जैही।

सुखईं— हम एक बेर कह दीन कि पछरौंही। अब मन में जाने करो।

बाठ बने रात को जब बाबू बमूतराय घेर करके जाये तो कोई टमटम पामनेबाछा न बा। चारों ओर बूम बूम कर पुकारा। मगर किसी की आहट न पायी। महाराज कहार, सारिस सभी बत बिये। यहाँ तक कि जो सारिस उनके साथ बा बह नी न जाने कहुँ लोप ही गया। समझ पये कि दुष्टों ने छल किया। बोड़े को आप ही लौकने छये कि सुखईं कहार जाता दितापी दिया। उसस पूछा— यह सब के सब कहुँ बने गये?

सुखईं— (बयिकर) सब छोड़ पये। अब काम न करैवे।

बमूठ — सुखईं कुछ मालूम है इन समों ने क्यों छोड़ दिया।

मंलाबखर

मुन्नी — माकूम काहे गाही। उनके विरादोपाने कहुते हं उनके  
यही बात मत करो।  
अमलदास की बात में मुटो बात आ रही कि विरोधियों के अलावा  
कोई और बल न बल्ले देकर अब यह बन रहा है। और बिल्लो पर उबर दीप  
देखते हैं कि मुन्नी हैठी जागा रका रही है।

मुन्नी — (हँसकर) इसे बात मत कहुते हैं। यह तो मेरा सीमाप  
बडा कष्ट उठाना पडा।

मुन्नी — (हँसकर) इसे बात मत कहुते हैं। यह तो मेरा सीमाप  
बाक के बड़े झूठे उतर बरक गये। मरकता इना कोक उठा पर मया  
और उसे माय देही बाजे का बख मुसकान और बीकों में येन सेककर बापू

ही जला ही जमी अति यम बही कमलदास का शिप भी बिल्ले के करले  
रना। बात देना न पाब। कौट पालन जूते पहले हुए एसाई से बैयाक  
बुन मये। मुन्नी ही ही कहुती ही रही। मगर कौन मुन्ना है। और उ

मुन्नी — मगर हाथों में उनके पदे ही में मुसकान के मया।  
मुन्नी भी शीति के मळे में बैयाक हीकर बोको — के न मायदी।

अमल — मैं उन छाकों को पूल समझूँ। मुसकान के मया।  
मुन्नी — और जो विर में बसक बसक हुई तो मुसकान।

अमल — बात । ऐसे मले न हूँगे। बखन एकरा पदेना।  
मुन्नी — (हँसकर) पर पेट भोजन कर दूँगी।

अमल — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।  
मुन्नी — ठंठा पाती भी दी लेना।

अमल — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।  
मुन्नी — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।

अमल — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।  
मुन्नी — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।

अमल — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।  
मुन्नी — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।

अमल — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।  
मुन्नी — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।

अमल — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।  
मुन्नी — मुसकान की एकराई क्या मिलेगी।

राय के पक्षपातियों में एसा उत्साही और कोई न था जैसे यह दोनों मुकक थे। बाबू साहब का जब तक जो कर्ब सिय हुआ था वह इन्हीं परोपकारियों के परिश्रम का फल था। और वे दोनों केवल उबानी बकवास समानेवाले नहीं थे। बरन बाबू साहब की तरह वह दोनों भी सुबान का कुछ-कुछ कर्नभ कर चुके थे। मही दोनों और न जिन्होंने सहकों कजावटों और बाधाओं को हटाकर बिजबामों से ब्याह किया था। पूर्वा को सखी राम कबी ने अपनी मरहो से प्रामनाय के घाय बिबाह करना स्वीकार किया था। और सखी के माँ-बाप जो बागरे के बड़े प्रतिष्ठित रईम थे जीवन नाम से उसका बिबाह करने के लिए बमारस भाये थे। ये दोनों अल्प अल्प मकान में रहते थे।

बाबू अनृतराय उनके घाने की जबर पाते ही ठाहुर निकक भाये और मुसकटाकर पूछा — क्यों क्या खबर है ?

जीवननाथ — यह बापके मही सनाटा बीठा ?

अमृत — कुछ न पूछो भाई।

जीवन — बाबिर यह परजन मर नीकर कही समा मये।

अमृत — सब बहधुम भले मये। जासिनों मे उन पर बिबाहरी का बबाव हाककर बही से निककना दिया।

प्रामनाथ ने ठट्ठा लगाकर कहा — नीत्रिए मही भी मही बंप है।

अमृतराव — क्या तुम लोगों क यही भी यही हाल है।

प्राथ — ममाथ इनसे भी बदतर। कहाए, कहाटी सब छोड़ भाये। जिस फुरें से पानी माता था वही कई बरमाघ लट्ठ लिए बीठे हैं कि कोई पानी मरमे भाये या उसकी गई छाईं।

जीवन — ममी बह दो कही कुमस ही मरी कि पाहके से पुलिस का प्रबन्ध कर किया ? नहीं तो इस बकस घायर अस्पताल में होते।

अमृत — बाबिर अब क्या किया जाय। नीरुपे बिना जैसे काम चलेगा ?

प्राथ — मेरी तो राय है कि बाप ही ठाहुर बनिए और माप ही जाकर।

मैलाखरक

पीपल — तुम तो मोटे-पाके हो। कुर्से से ख खींच कल्लो पागो  
 खींच का लकड़ो हो।  
 प्राण — और कौन कहे कि आप खींच मोटे नहीं खींच लकड़ो।  
 कल्लो है अब तक इतने बीमार बहुत प्राण लेने। आज इलाके पर लिल  
 भेजता हूँ वहाँ से दो-चार सीकर आ जायेंगे।  
 पीपल — यह तो आपने अपना इजिबाय किया। हवाप काय  
 भीसे बके।

भगुल — यह बाब ही वहाँ सठ बाजो बटपटा।  
 पीपल — यह तो ठीक नहीं। और फिर वहाँ इलाकी जावू वहाँ है ?  
 कल्लो से यह लकड़ो है।  
 पीपल — भागो बाब से भी तो सगाह के लीजिय।  
 प्राण — यह दिल से पावो है। कपड़े केर कुछ चुको है कि कल्लो  
 भी सबपला है। यह सबर मुलकर चुको न जयलेंको।  
 पीपल — आप भी भावो है बा यमबकरा। वहाँ टोड़ भूँ बड़  
 टोड़ में। भलमली बाही तो बावो जोसकर के बलो। दोनो प्राणियो को  
 वहाँ लाकर बैठा हो। नहीं तो बाब टोड़ किया करो।  
 प्राण — और क्या ठीक हो बहो है। रात स्वावा जावो तो  
 फिर कुछ बलाय न बनेगी।  
 पीपल — बकका वही बाकी रावो।  
 दोनो मुक बलायक में भेने। पोरा सोला और भादो जोलकर  
 ही प्रकप हो गई और इन प्रेहरानो के बाकर पूर्जा में यह सलावार बूहा। यह मुल्लो  
 बाब है मुल्लो की मबर से दो कनरे बाड बूपावे। उनमें केर मुनिवो  
 और प्राणी बकल की बीहें रलका ही। और भी बड़े हीने कि मबरियाँ  
 न चुकी। पूर्जा जने बड़े प्यार से गले लियो और बीहो ही केर में

तीनों सखियाँ बुरुबुरुल की तरह बहकने लगीं। रामकली पहले बरा खेंती। मगर पूर्वा की दो बार बातीं ने उसका हिसाब भी खोल दिया।

बौड़ी देर में मोजन तैयार हो गया। और तीनों आदमी रसोई पर बसे। इतर बाग-बाँध बरस से अमृतराज दास-भाठ खाना भूख पये थे। कास्मीरी बाबरणी तरह तरह के ताकन धनेक प्रकार के भांस सिखाया करता था और मसजि बन्दी में पूर्वा सिखाय सारे खानों के और कुछ ब बना सकी थी मगर खाने इसकी बड़ी प्रशंसा की। बीनतनाब और प्रायतनाब दोनों कास्मीरी ही के मगर बहू नी कहते थे कि रोटी-दास ऐसी स्वादिष्ट हमने कभी नहीं खाई।

रात ती इस तरह कटी। दूसरे दिन पूर्वा ने बिस्ली से कहा कि बरा बाजार से सीदा लाओ तो आज मेहनामों को अच्छी अच्छी चीजें खिलाऊँ। बिस्ली ने आकर मुखाई से हुकम लगाया। और मुखाई एक टोकरा लेकर बाजार गये। वह आज कोई ठाँस बरस से एक ही बलिये से सीदा लिया करते थे। बलिया एक ही चाकाक था। बुझक को खूब बस्तूरी देता मगर सीदा रुपये में बाखू माने से कभी अधिक न देता। इसी तरह इस बूरे साहू ने सब रईसों को खँसा रक्खा था। मुखाई ने उसकी दूकान पर पहुँचते ही टोकरा पटक दिया और तिपाई पर बैठकर बोला—काब बूरे, कुछ सीदा मुमुफ़ दो दो। मगर बेटी न लये।

और हर बेर ती बूरे हँसकर मुखाई की समाखू खिलाता और सुरन्ध उनके हुकम की तामील करने लगता। मगर आज उसने उनको और बड़ी खसाई से देखकर कहा—आगे जाव। हमारे महाँ सीदा नहीं है।

मुखाई—बरा आदमी देख के बात करो। हमें पहचानते नहीं क्या ?

बूरे—आपे जाव। बहुत हँ-हँ न करो।

मुखाई—कुछ भाँव-बाँव तो नहीं खा गये क्या ? अरे हम मुखाई हैं।

बूरे—अभी तुम जाट हो दो क्या। बल्लो अपना रास्ता देखो।

मुखाई—क्या तुम जानते हो हमें दूसरे दूकान पर बस्तूरी न मिलेगी ? अभी तुम्हारे सामने दो आन बपया लेकर दिखा देता हूँ।

संकाशरत्न

दूर—पुनः शीघ्र से भाजीये कि नहीं। दुकान से हटकर बाल बटो।  
दुकान पर गया। वहाँ भी एक स्काफ़ पर आसपास कपड़ा हुआ दूसरी  
बाई भी बड़ी बख़्खार गिली। फिर तो उठके गाद बाजार जान डाला।  
मगर वहाँ भी बख़्खार गिली। किलो में दूने दुकान पर ख़ाली छोड़े न दिया।  
आजिब सज़ा फ़ारक़ अपना सामूह किसे कटे भावा और वह मजाफ़ार  
में बली हूँ। खेले के कोड़े ठोका नहीं वेना। मगर वह शरीर से जो ही  
बाहर निकली कि एक आसली उले इतर उतर टरकला बिलामी गिला।  
गिली की देखते ही वह उसके पास हो लिया और जिस जिन दुकान पर  
बहुत ही पुराने हाथ मुलाते कटे जाती। बेकारे दुर्गा के हाथ कर मते

तो जो पुराना मनुष्यकोलाक को धार दिया कि आज हमारे दुर्गे  
पेच हीमियार मिललवार में दुष्ट कोन मिलता उतर मचाये बाजार है। तार पले  
हूँ अ कि बाजार में दुष्ट कोन मिलता उतर मचाये बाजार है। तार पले  
ही उलझे करने हीटक के पेच मोकरो को बालम बाला बिया। जिसके  
एक पकाये से जो न तो बिपारटी के मुलाय से और जिसको टाल बाउ  
किये जाने का मत्का था। मोला भी लगनक से इतना देना लिया जो कई

मगर दुष्ट कोन म बला। मोला भी लगनक से इतना देना लिया जो कई  
महीना को काये था।  
एक मोला के देना कि वह मारलों से बग़ुलपन की उठ होकि न  
कुछ ही सिद्ध ही रहे हैं। मारकों के मंग केडकर मते हैं। उनको  
किसी मारकर के मंग में बिचार नहीं है। एक बिचारा बाकलों में बिचार  
लिया है। उनका मूल देखा उनमें बाकलों बाला भी मारने के



विच्छेद है। मुक्किल्लों में बहुधा करके देहातों के रामपूत ठाणुर और मुहहार मे जो या तो अविद्या की कालकोठरी में पड़े हुए थे या नये ब्रह्मणे के ब्रह्मकार ने उन्हें बाँधिया दिया था। उन्होंने जब यह सब उठ पटाप बातें सुनीं तब वे बहुत विगड़े बहुत सन्तप्य और उर्छा इन कमन जाई कि अब चाहे जो हो इस अघर्मी को कमी मुकदमा न देने। राम ! राम ! इतको बेबघारन का तनिक विचार नहीं मया कि यह एक रात्र को घर में बैठाल लिया। छी ! छी ! अपना कोर-परकोर बोनी बियाइ दिया। ऐसा ही या तो हिन्दू के घर में काहे को ब्रह्म किया था। किसी शीत-शंभाल के घर बनमे होते। बाप गद का नाम मिटा दिया। ऐसी ही बातें कोई ही सप्ताह तक उनके मुक्किल्लों में फँसी। जिसका परिमाण यह हुआ कि बाबू अमृतराय का रय फ्रीका पड़ने लगा। जहाँ मारे मुक्किल्लों के शीत लेने का अवकाश न मिलता था वहाँ सब दिन भर हाथ पर हाथ बर बैठे रहने की नीरत जा गयी। यहाँ तक कि तीसरा सप्ताह कोरा बीत गया और उनको एक भी अच्छा मुकदमा न मिला।

जब साहब एक बंगाली बाबू थे। अमृतराय के परिश्रम और वीरता उत्साह और अपकृता ने जब साहब की आँखों में उन्हें बड़ी प्रथसा दे रक्की थी। वह अमृतराय की बड़ती हुई बकाकत को देख देस समझ पये थे कि लोड़े ही दिनों में यह सब बकौलों का समापति हो जावगा। मपर जब तीन हफ्ते से उनकी सूण न रिलायी थी तब उनको आश्चर्य हुआ। मरिस्तेदार से पूछा कि माककल बाबू अमृतराय कहाँ हैं। मरिस्तेदार साहब जाति के मुसलमान और बड़े सच्चे साफ जावमी थे। उन्होंने साठ मीठ भी सुना था कह मुनावा। जब साहब सुनते ही समझ गये कि बेचारे अमृतराय सामाजिक कामों में अग्रबन्ध बनने का फल नैम रहे हैं। दूसरे दिन उन्होंने खुद अमृतराय को इजलास पर बुलवाया और देहाती जमीनबातों के सामने उनसे बहुत देर तक इधर-उधर की बातें कीं। अमृतराय भी हँस हँस उनकी बातों का जबाब दिया किये। इस बीच में कई बकौल और बैरिस्टर जब साहब को विजाने के लिए कावज-मज जाये मपर साहब ने किमी भी और ध्यान नहीं दिया। जब वह जले ती साहब

मंगलाचरण

ने तुम्हीं से उठकर जल्दो हीय विकास और बरत कोर से कोने — बहुर  
कच्चा बाबू बाहर । वैसा बाप बोल्दा है इस मुकदमे में बैठा ही होगा ।  
बाप जब बहुरही बरबाल हुई तो उन कमीशनों में जिनके मुकदमे

बाप गेह में यों गलतीर होने लगी ।  
ठाकुर साहब — (जमड़ी बांधे मुँहें) यही किये मोटा-जा लख  
होम में सिधे) बाप जब साहब बगुलराब से हुए जब बहुराब रहे ।  
बाप बी — (गिर बटाने टीका क्यारे) मुँह में लम्बाइ बराने  
बाप कचे पर बैठीका लके) बुर बहुराबत पूरा मागोकोठ अल्पे सिध

ठाकुर — बगुलराब काप होत हैस यही शिवाबत रहा ।  
मिष बी — बने बावमिषल का सब अकत बापर होत है ।  
ठाकुर — जब लो दोनो बहुराबत रहे तब ठाकुर रुठ बकोल बावे  
बाकी साहब कोठ को कोर लमिक गाही पाकिल ।  
मिष बी — हुम कचे देखत है हुमार मुकदमा जसही के राब से बने ।  
हुम लखो कि गाही जब बगुलराब बने काने तो जब साहेब कहेल कि  
बस मुकदमे में बैठा ही होगा ।  
ठाकुर — हुमा कचे गाही बाकी फिर काब कटो ।  
मिष — हुमा तो हुम कहिल है कि मम बकोल सिपही गर में गाही

ठाकुर — कस बहुर कयल है मामों बिरुदा पर बरबलो बैठी होस ।  
जगदर बरबटो कय्या बाप कोठ गाही है ।  
मिष — हुमा ईगार हीय गया । राब से ब्याह बिधिनि ।  
ठाकुर — एलाने तो बीब परा है । मकद जमका बकोल सिधे हीय  
तो बाबी बर के बील बाबल ।  
राब के पास गये और जलने मुकदमे को हुल सपराब बवाल बी । बा  
साहब ने लुने ही ममल किया पा कि इस मुकदमे में मुठ बाल गठी है  
सिल पर भी जसही मुकदमा से लिसा और हुनरे सिल ऐसी घोसला से

बहुत ही कि डूबती ओर के बकील मुखतियार बड़े मुँह तक के रह गये। और बाबिर पीस का सेहरा भी उन्हीं क घिर रहा। जब साहब उनकी आब की बकूता पर ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने हँसकर बन्धबाद दिया और हाथ मिलाया। बस अब क्या था। एन ती अमृतराय पों ही प्रसिद्ध के उस पर जब साहब का यह बर्ताव और भी सीने में सीहापा हो गया। वह बँपसे पर पहुँचकर पीन से बैठने पी न पाये थे कि मुखकिल्लों के बल के एक आने लगे और दस बजे रात तक यही ठाँठा लगा रहा। दूसरे दिन से उनकी बकालत पहले से भी अधिक बमक चठी।

श्रीहिनों ने अब देखा कि हमारी यह बात भी उमरी पड़ी तो और भी दाँठ पीसने लये। अब मुँगी बदरीप्रसाद तो के ही नहीं कि उन्हें सीबी चालें बठाते। और न ठाकुर के कि कुछ बाहुबल का बमत्कार बिलाते। बाबू कमसाप्रसाद अपने पिता के सामने ही से इन बातों से बलग हो गये थे। इसलिए श्रीहिनों ने अपना और कुछ बस न देसकर पठित भुगुदत का द्वार खटखटाया और उनसे कर ओढ़कर कहा कि महाराज! हुमा सिन्धु! अब भारतभर्य में महा उत्पात और और पाप हो रहा है। अब आप ही चाहो तो उसका उद्धार ही सकता है। तियाम आपके अब इस पीका को पार लगानेवाला इस संघार में कोई नहीं। महाराज! अपर इस समय पूरा बल न लगामा तो फिर इस नगर के बासी कहीं मुँह बिलाने के योग्य नहीं रहेंगे। कृपा के परमात्मे और धर्म के पोखरा ने अब अपने बजमार्गों को ऐसी बीनता से स्तुति करते देना तो दाँठ निकालकर बोले—आप जोन जीन है तीन बबरारों मत। आप देना करें कि भुगुदत क्या करते हैं।

सेठ बूनीमख—महाराज! कुछ ऐसा यत्न कीजिए कि इस दुष्ट का सत्यानास हो जाय। कोई नाम देना न बने।

कई आबनी—हाँ महाराज! इस बड़ी तो यही चाहिए।

भुगुदत—यही चाहिए तो यही देना। सर्वथा नाप न कर हूँ तो ब्राह्मण नहीं। आज के घातबेँ बिन उनका नास ही जायगा।

सेठ बी—दृष्य जो सग वेपटके कौड़ी से रंगा देना।

### मंगलाचरण

मुमुक्षु — इसके कर्तु को कोई बाधसकला नहीं। केवल योग ही बाधन का प्रतिकूल भोजन होता।  
मानु दीलानाथ — तो कष्टिए तो कोई हलवाई क्या दिया जाय। हाँ हाँ हाँ हाँ देते और कष्टदू मुक्त कष्टे कराता है।  
मुमुक्षु — जो पूजा में कष्टदेता उसमें पैसा जाता मजिद है। हाँ मजिदी अधिक समझी का देवल ही उलता ही कार्य फिट ही जाता है।  
मानु पर पंडित जी के एक कले ने कथा — मुझ भी। आज तो आजने

मंगलाचरण — (हैवकट) हाँ हाँ सब समज हुआ। मनु जी ने इस माय का पाठ हैते घामस कहा बाकि पंथे के साथ रही मिला दिया जाय तो उसमें कुछ दोष नहीं रहता।

मंगलाचरण — (मुमुक्षुकरकट) मंगलाचरण । केला तो क्या ठीक है। कोक में इस बात का प्रमाण दिया है।  
मंगलाचरण — सब को इसके एक मल में दो घेर पुतियां बायीं उन दिन से घेरे हुका मान बलिग पठेला में लिख दिया।  
मंगलाचरण — मंगल ही उठा। अगर उजमान हाँ

मंगलाचरण — (हैवकट) हाँ हाँ सब समज हुआ। मनु जी ने इस माय का पाठ हैते घामस कहा बाकि पंथे के साथ रही मिला दिया जाय तो उसमें कुछ दोष नहीं रहता।  
मंगलाचरण — (मुमुक्षुकरकट) मंगलाचरण । केला तो क्या ठीक है। कोक में इस बात का प्रमाण दिया है।  
मंगलाचरण — सब को इसके एक मल में दो घेर पुतियां बायीं उन दिन से घेरे हुका मान बलिग पठेला में लिख दिया।  
मंगलाचरण — मंगल ही उठा। अगर उजमान हाँ

मंगलाचरण — (हैवकट) हाँ हाँ सब समज हुआ। मनु जी ने इस माय का पाठ हैते घामस कहा बाकि पंथे के साथ रही मिला दिया जाय तो उसमें कुछ दोष नहीं रहता।  
मंगलाचरण — (मुमुक्षुकरकट) मंगलाचरण । केला तो क्या ठीक है। कोक में इस बात का प्रमाण दिया है।  
मंगलाचरण — सब को इसके एक मल में दो घेर पुतियां बायीं उन दिन से घेरे हुका मान बलिग पठेला में लिख दिया।  
मंगलाचरण — मंगल ही उठा। अगर उजमान हाँ

मंगलाचरण — (हैवकट) हाँ हाँ सब समज हुआ। मनु जी ने इस माय का पाठ हैते घामस कहा बाकि पंथे के साथ रही मिला दिया जाय तो उसमें कुछ दोष नहीं रहता।  
मंगलाचरण — (मुमुक्षुकरकट) मंगलाचरण । केला तो क्या ठीक है। कोक में इस बात का प्रमाण दिया है।  
मंगलाचरण — सब को इसके एक मल में दो घेर पुतियां बायीं उन दिन से घेरे हुका मान बलिग पठेला में लिख दिया।  
मंगलाचरण — मंगल ही उठा। अगर उजमान हाँ

की हानि होवी। यदि पाँच सी पाठ मिराय हों तो हर दिन पाँच वर्ष आयु बढ़ती है।

सेठ जी—महाराज आपने इस बड़ी ऐसी बात कही कि हमारा बौका मस्त हो गया मस्त ही गया।

दीपाताम—कृपासिन्धु आप बन्धु हो। आप बन्धु हो।

बहुत से आश्चर्य—एक बार बोली पंडित मनुवत की जय।

बहुत से आश्चर्य—एक बार बोली—दुष्टों की छे! छे!!

इस तरह कौकाहल मचाते हुए वह लीज अपने अपने बरों को लीटे। उसी दिन राधो हलवाई पंडित जी के मकान पर जा बटा। पूजा-पाठ होने लगे। पाँच सी मुखड़ा एकत्र हो यजे और दोनों जून मास उड़ाये लगे। बीरे बीरे पाँच सी से एक हजार मन्त्र पढ़ाया और पूजा-पाठ कीज करता है। सबेरे से मोहन का प्रबन्ध करते करते दोपहर हो जाता था। और दोपहर से मग डूटी जानते रात ही जाती थी। हाँ पंडित मनुवत का नाम सारे शहर में उजागर हो रहा था। चारों ओर उनकी बड़ाई गई जा रही थी। सात दिन यही अंधाधुंध मचा रहा। यह सब कुछ हुआ। मगर बाबू अमृतराय का बाल भी बाँका न हो सका। कहीं चमार के सरापे जागर मरते हैं। ऐसे जाँस के अंबे और पाँठ के पूरे न पड़े तो मनुवत जैसे मुर्गी को बखीलिया कीज करण्ये। सेठ जी के आश्चर्य तिल तिल पर अमृतराय के मकान की ओर बीड़ते थे कि बिलें कुछ अंध मंत्र का फल हुआ कि नहीं। मगर सात दिन के बीतने पर कुछ फल हुआ तो नहीं कि अमृतराय की बकालत सवा से बढ़कर चमकी हुई थी।

मंगलाचरण

उसके बल में आन लन गयी। ठीकी बिलगों से देखकर मोक्षे—  
दुसरी मोक्षे है और दुसरे बौद्ध, जितना रोना आन रो जो। मगर  
मेरी मोक्षों में मूक नन मोक्षो। मेना इस कठोर बल को मुककर बौद्ध  
पयी और जिना कुछ उतर सिधे पक्षि की और उबरबाई हुई बालों से  
वाकने कयी। बालाब के फिर कथा—  
सा वाकनी ही मेना। मैं रोना मुझे गरी हुई बीसा दुल समझी ही।  
मैंने भी आरनी देके है और मैं भी आरनी पहिनामला हूँ। मैं दुसरी  
एक एक बात को गौर से देखला हूँ मगर जितना ही देखला हूँ उतना ही  
बिना को दुल मुना। बसकि दुसारा बसकि मेरे पाव पीका है। यद्यपि  
दुसकी मरु मुना अक्का न मालम होना मगर हाट कर कथना पयला है  
कि दुसकी मुसले केसवान भी मुन गयी है। मैंने अब तक इस विषय में  
बसल बीरले का वाहय न गयी किया ना और देखर जामला है कि मुसले  
किस तरह मुसले केसवान भी मुन गयी है। मगर मुसलेक सब कुछ मरु कथना पयला है  
स्वाई नहीं मरु कथनी और मरु भी मैंने स्वामी को कितनी सुन्दर दुसले  
जिदोन में उलय हुई है। रोना केल वैस्था लिकेकन आरनी होला जो  
यह देखे कि उतकी पली किली सुन्दर के लिये बियोजिल बनी हुई है और  
उतका मरु उबरले न बने और उतके सुवय में कोप की आवा बसक न  
उठे। सा तुम नहीं जानती हो कि बर्गवाल के बनुवार ली अरने पक्षि  
के निवाय किली सुन्दर मनुष्य की और जिस बरले की तुम मुसले को पाव की गयी  
हो जाती है और उतका पलिषठ मन हो जला है। प्रमा। तुम एक  
मनु उके बरले की मुसलो ही और जिस बरले की तुम मरु हो मरु भी इन  
पहल में किनी से हटा नहीं। सा दुसारे लिये मरु मने की बल नहीं है  
कि तुम एक बाबायी की मुसलो की और जिस बरले की तुम मरु हो मरु भी इन  
जयो और यह कौन है जिनेने दुसारा रोड बाइको के तुम मरु की न जानती  
अनुपण्ड जितके लिये तुम काले पुर मोक्षो रोना निरावर किया ? मरु  
तुम दुष्ट के दुसव में दुसारा तुम की मेम होला ली यह दुसारे जिना के  
बागवार कइले पर भी तुमकी इस तरह पाव न जानला। मैंने केर की  
बात है। मरु बालों में जो दुसरी कलवार को मेरी से पीले हरु होला

है। क्या तुमको मेरी बातों का विश्वास नहीं आता? क्या अमृतराय के कर्णभ्य से नहीं विदित होता है कि उनको तुम्हारी रत्ती मर भी परबाह नहीं है क्या उन्होंने डंके की चोट पर नहीं साबित कर दिया कि वह तुमको तुच्छ समझते हैं? माना कि कोई दिन ऐसा था कि वह विवाह करने की अनिच्छापा रमते थे। पर अब तो वह बात नहीं रही। अब वह अमृतराय हैं जिसकी बबबसनी की सारे सहर में धूम मची हुई है। मगर चोक! भीर बति चोक की बात है कि तुम उसके लिए भांसू बहा-बहाकर अपने भीर मेरे ज्ञानदान के माथे कासित का टीका लगाती हो।

दागनाथ मारे क्रोध के काँप रहे थे। बेहरा तमतमाया हुआ था। भाँसों से चिनमाटी निकल रही थी। बेचाटी प्रमा सिर गीचा किये हुए पड़ी रो रही थी। पति की एक एक बात उसके कलेजे के पार हुई जाती थी। आगिर न रहा गया। दागनाथ के पैरों पर गिर पड़ी और उन्हें परम-परम भाँगू के बूंदों से मियो दिया। दागनाथ ने पैर खसका लिया। प्रमाको चारपाई पर बैठा दिया और बोले—प्रमा रोबो मत। तुम्हारे रोने से मेर दिक् पर चोट लगती है। मैं तुमको दलाना नहीं चाहता। परन्तु उन बातों को कहे बिना रह भी नहीं सकता। अगर यह तिक में रह मयी तो नतीजा बुरा पैदा करेगी। कान लोलकर सुनो। मैं तुमको प्राण से अधिक प्यार करता हूँ। तुमको आराम पहुँचाने के लिए मैं अपनी जान निछावर करने के लिए हाजिर हूँ। मगर तुमको सिबाय अपने किसी दूसरे का खयाल करते नहीं देख सकता। अब तक न जाने कैस कैसे मैंने दिक् को समझाया। मगर अब वह मेरे बस का नहीं। अब वह बह जलन नहीं सह सकता। मैं तुमको बेताये बेता हूँ कि यह रोना बोनो छोड़ो। यदि इस बेताने पर भी तुम मेरी बात न मानो तो फिर मुझे बीप मत देना। बस इतना कहे बेता हूँ कि एक स्त्री के दो पति बदापि पीते नहीं रह सकते।

यह कहते हुए बाबू दागनाथ क्रोध में मरे बाहर चले जाये। बेचाटी प्रमा को ऐसा मामूम हुआ कि मानी किसी ने कलेजे में छुरी मार दी। उसकी आज तक किसी ने भूसकर भी कोई कड़ी बात नहीं सुनायी थी।

## संस्काररत्न

उसकी शापक कभी कभी सामे सिना करती थी मगर वह ऐसे कडोर न  
होले थे। वह बेटों रोती थी। उसके बाद उसके पति की साटी बालों-  
बिभार करणा शुरू किया और उसके बालों में यह सख मुँहके -  
एक लगी के दो पति कपारि जीते नहीं एउ मरने।  
शकका क्या मरलक है ?



## शोकदायक घटना

पूर्वा रामकृष्ण और सक्ती तीनों बड़े आनन्द से हिल मिलकर रहने लगीं। उनका समय जब बातचीत होती विस्मयी में कट जाता। चिन्ता की परछाई भी न दिखायी देती। पूर्वा दो-तीन महीने में निश्चर कर ऐसी कोमलांगी हो गयी थी कि पहिचानी न जाती थी। रामकृष्ण भी खूब रंग-रूप निकाले थी। उसका निश्चर और जीवन पूर्वा को भी भात करता था। उसकी बाँहों में जब वह बचसता और मुक्त पर वह बचसता न थी जो पहले दिखायी देती थी। बस्कि अब वह अति सुकुमार कामिनी ही मयी थी। अच्छे संग में बैठे बैठे उसकी चाल-डाल में गम्भीरता और धर्म आ गया था। अब वह गंगा स्नान और मन्दिर का नाम भी न लेती। अगर कभी-कभी पूर्वा उसको छोड़ने के लिए पिछली बातें याद दिलाती तो वह नाक भी चढ़ा लेती कूठ जाती। मगर इन तीनों में सक्ती का रूप निराला था। वह बड़े घर में पैदा हुई थी। उसके माँ-बाप ने उसे बड़े छाड़-प्यार से पाला था और उसको बड़ी उत्तम रीति पर सिखा भी थी। उसका कौमल गाठ उसकी मनीहर बाणी उसे अपनी सखियों में रानी की पदवी देती थी। वह गाने-बजाने में निपुण थी और अपनी सखियों को यह मुग सिखाया करती थी। इसी तरह पूर्वा को अनेक प्रकार के ब्यंजन बनाने का ब्यसन था। बेचारी रामकृष्ण के हाथों में यह सब गुण न थे। हाँ वह हँसीढ़ थी और अपनी रसीली बातों से सखियों को हँसाया करती थी।

एक दिन शाम को तीनों सखियाँ बँठी बातचीत कर रही थीं कि पूर्वा

भैरवाचार्य

- ने मुकुटधारण करने को देखा — तब रमल बाघक मन्दिर पूजा करने नहीं जाती थी।
- बाघ्या। कम्पनी पाण्डवों का एक पुत्रात्त मुकुट थी। वह बोली — रामकली ने मन्दिर जाने को मना किया — अब नहीं जाने को जो नहीं कर ही पर मन्दिर जाने को जाओगी। अब तो हंसने-बोलने का सामान्य जगत् है।
- जगत् है। बहिन शकरी मना कर दो मुझे कौन बोलता है, जो कभी पहर नहीं तो कभी कुछ कह बैठती थी देखी जिन्दगी।
- पूजा — मर कम्पनी (कम्पनी) कभी को मत छोड़ो।
- कम्पनी — (मुकुटधारण) मैंने कुछ मुँठ बोड़े ही कथा या श्री शकरी देखा कथना सामान्य हुआ।
- पूजा — शैली बाघ है शैली एकको पाण्डवों हैं।
- पूजा — कम्पनी तुम इसादी कथा को बहुत विचार किया कथनी ही।
- उत्सारी कथा से वह मन्दिर में जाती थी।
- कम्पनी — अब मैं कहती हूँ तो देखी कथने ही तुम कथने को उत्सारी कथा से वह मन्दिर में जाती थी।
- पूजा — अब वह बाघ उत्सारी कथनी नहीं कथनी ही तुम कथने को कथनी ही। खरखार, अब फिर मन्दिर का नाम मत देना।
- कम्पनी — कथना रमल (रामकली) हमें एक बात बता दो तो हम फिर तुम्हें कभी न छोड़ें — खरखार और मैं मर लेते समय तुम्हारे काल मर गया। इसाएत नाम धर ओ मुँठ बोले।
- पूजा — (बिचिक कट) तुम कम्पनी हमने बाघक कथनी ही ठीक न होना। मैं खिला ही बाघ कौन हूँ तुम उत्सारी ही मर कथने कथनी ही।
- पूजा — देखो। कथना क्यों नहीं कथनी हमने बाघक कथनी ही बाघ कथने से बीता मर है।
- पूजा — कथना मरने मत बलाग्नी, विचारको कथने को ही।

लक्ष्मी — बताने की बात ही नहीं। बतला कैसे दें।

राम — कोई बात भी हो कि यों ही बतला दूँ।

पूर्णा — अच्छा यह बात जाने दो। बताओ उस तंबोली ने तुम्हें पाग तिलाते समय क्या कहा था।

राम — फिर छेड़खानी की सूनी। मैं भी पते की बात कह दूँगी तो क्या जानोगी।

लक्ष्मी — तुम्हें हमारी कसम सली बकर कहो। यह हम लोगों की बातें तो पूछ लेती है अपनी बात एक नहीं कहती।

राम — क्यों सली कहें? कहती हूँ बियड़ना मत।

पूर्णा — कहो साँच की आँच क्या।

राम — उस दिन बाट पर तुमने कितने छाती से लिपटा लिया था।

पूर्णा — तुम्हारा सर।

लक्ष्मी — मैं समझ गयी। बाबू अमृतराय होंगे। क्यों है न?

यह तीनों सलियाँ इसी तरह हँस-बोल रही थीं कि एक बड़ी भीरत ने आकर पूर्णा को आशीर्वाद दिया और उसके हाथ में एक सत रस दिया। पूर्णा ने अक्षर पहिचाने प्रमा ना पत्र था। उसमें यह लिखा था —

‘प्यारी पूर्णा! तुमसे भेंट करने को बहुत जो चाहता हूँ। मगर यहाँ घर से बाहर पाँच निकालने की मजाल नहीं। इसलिए यह छठ लिखती हूँ। मुझे तुमसे एक अति आवश्यक बात करनी है। जो पत्र में नहीं लिख सकती हूँ। अगर तुम बिस्वों की इस पत्र का जबाब देकर भेजो तो बखानी कह दूँगी। देखो देर मत करना। नहीं तो अनर्थ हो जायगा। आठ बजे के पहले बिस्वो यहाँ अवश्य आ जाय।

तुम्हारी सखी  
प्रेमा

छठ पढ़ते ही पूर्णा का चित्त व्याकुल हो गया। बेहरे का रंग उड़ गया और अनेक प्रकार की संकाएँ होने लगीं। या गारायन! अब क्या होनेवाला है। लिखती है बेबी देर मत करना। नहीं तो अनर्थ हो जायगा। क्या बात है।।

मौलाकारण

में मुकुटाकर राजकी से पूजा — क्यों उत्पन्न आजकल मन्दिर पूजा  
कले नहीं जाती ही।  
राजकी में जेपकर उबाव दिया — जब बुरी जाने की भी नहीं  
बाह्या। कभी राजकी का सब भाल्ल गुन चुकी थी। यह बोली —  
पर ही पर मीनूद है।  
पाम० — (सिक्क कर) पुनले कौन बोला है, जो कभी उदर  
जगको। बहिन राजकी मा कद हो यह हारी बातों में न बोला करे।  
नहीं तो कभी कुछ करे हैंदनी तो ऐसी किरीली।  
कभी — मल कछिनी (कभी) कवी को मल छोडो।  
पूजा — (मुकुटाकर) मैंने कुछ पूँडे मीने ही कहा या जो सको

पेवा बहुत मालम हुआ।  
पाम — बीती बात हैं बीती सबको समझी है।  
पूजा — कछिनी गुन हारी सारी को बहुत रिक्त किया कली ही।  
दुसरी क्या से यह मन्दिर में जाती थी।  
कभी — जब यह बात उनको अच्छी नहीं जाती तो गुन काहे को  
पूजा — जब यह बात उनको अच्छी नहीं जाती तो गुन काहे को  
कली ही। जबराए, जब फिर मन्दिर का नाम मत केना।  
कभी — कछा रमना (राजकी) हमें एक बात क्या ही तो हुए  
किर गुनै कभी न छोडे — मरुल ही ने मल केले सम्य दुसरे काम  
या कहा। हमारा माया हुए जो कुछ बोले।  
पाम — (सिक्क कर) गुना कछिनी हमने मरुल करेनी तो  
ठीक न होना। मैं जिला ही ठावू लेनी हूँ गुन कभी ही पर कभी जाती

पूजा — दे तो। बरका मों नहीं लेनी हमने क्या हूँ है।  
पाम — कुछ कहा हीना गुन कौन हीनी ही पर कभी जाती  
पूजा — कछा मारै मल बनायो, विवादी करे को ही।

कश्मी — बताने की बात ही नहीं। बतला कैसे हूँ।

राम — कोई बात भी हो कि यों ही बतला दूँ।

पूर्वा — अच्छा यह बात जाने दो। बताओ उस तंबोली ने तुम्हें पान तिलाते समय क्या कहा था।

राम — फिर छेड़सानी की सूली। मैं भी पते की बात कह दूँगी तो ठग्रा जाओगी।

कश्मी — तुम्हें हमारी कसम सली बकर करो। यह हम बीपों की बातें तो पूछ लेती हैं अपनी बातें एक नहीं कहतीं।

राम० — क्यों सली कहीं? कहती हूँ बियड़ना मत।

पूर्वा — कहो साथ को साथ क्या।

राम० — उस दिन घाट पर तुमने किसे छात्री से तिनटा लिया था।

पूर्वा — तुम्हारा सर।

कश्मी — मैं समझ गयी। बाबू अमृतराय होये। क्यों है म?

यह तीनों सजियाँ इमी तरह हँस-बोल रही थी कि एक बूढ़ी बीछल ने आकर पूर्वा को आधीबिचि रिया और उसके हाथ में एक छत रख दिया। पूर्वा ने अंतर पहिचान प्रमा का पत्र था। उसमें यह लिखा था —

‘प्यारी पूर्वा! तुमसे भेंट करने को बहुत ही चाहता हूँ। अगर यहाँ घर से बाहर पाँच निकालने की मजाल नहीं। इसलिए यह छत तिरागी हूँ। मुझे तुमसे एक अति आवश्यक बात बतानी है। जो पत्र में नहीं लिख सकती हूँ। अगर तुम बिल्ली की इस पत्र का जवाब देकर मेरी तो खबानी कह दूँगी। देखा देर मत करना। नहीं तो अनर्थ हो जायगा। घाट बने क पहले बिल्ली यहाँ अबस्य आ जाय।

तुम्हारी सखी

‘प्रेमा’

अब पड़ते ही पूर्वा का चित्त व्याकुल ही गया। चेहरे का रंग उड़ गया और अनेक प्रकार की छंकारें होने लगीं। या नारायण! अब क्या होनेवाला है। लिखती हूँ देसी देर मत करना। नहीं तो अनर्थ हो जायगा। क्या बात है!!

मंगलवार

अभी तक यह कबूटरी से नहीं छोटे। रोब तो अब तक जा जाता  
कैसे है। इसकी पूरी बात तो इसकी जल्दी नहीं लगती।  
लम्बी और रामकी ने अब अलको ऐसा ब्याजुक देना तो बरफक  
भीली — क्या बहिन कुलक तो है? इस पक्ष में क्या लिखा है?  
पुष्पा — क्या बहाई क्या लिखा है। रामकी पुन उदा करने में  
या के साँके तो जाने या नहीं अभी।

लम्बी — अभी कैसे आये? आज ही टीनी जावरी म्वाव्याय  
के बने है। इतौ बरफक में बात बना। पुष्पा ने म्वा के पक्ष का बनाव  
लिखा और बिल्लो को कैर देना क बर अेर दिया। आज बदा भी न  
भीला या कि बिल्लो छोटे जावरी। एव उदा हुवा। बरफक और बरफारी  
हुई। पुष्पा ने उसे देखते ही बरफार कर पुष्पा — क्यों बिल्लो कुलक छोटे।  
बिल्लो (पाषाण ठोककर) क्या क्यूँ यह कुलक छोटे नई जावा। न जाने  
अभी क्या होयेवाला है।

पुष्पा — क्या क्या? कुलक बिल्लो-मारी तो नहीं दिया?  
बिल्लो — बिल्लो छोटे से छोटी। इसकी म्वावर बलाने उरली भी।  
देखते ही देखे लगी और कहा — बिल्लो में क्या कले अेरा भी पसुं  
बिल्लुकुन नहीं लगता। न लिक्नी हाते पाद करके रोवा कलती है। यह  
(बालाव) अभी अब मुसे देखे देन लेते है तो बहुत म्वाकावे है। एक  
एक भील के दो बालेवाले बरफारि अैले नहीं यह लकले। यह बहक  
बिल्लो बुझो पती। पुष्पा के म्वाका में पूटी बात न जावरी। अलने कहा —  
पुन दानी हो पती। अभी कहा अेरा एव क्या हुवा है। फिर मुलकी म्वागीक  
बना के बाल में कहा — बिल्लो उनी लि न म्वा अलके कैर बलने हुए  
देवती है। यह टीन बरफारि को पाव कैर रोब म्वा म्वा। बाह के म्वा  
छोटी जावे है। आज म्वा डिपकर अकी बालकीन पुन म्वा। बाह के म्वा  
पल को बाव बगुवारय पर चोट करने को म्वावह हुई है। अब ये म्वा म्वा

मुना है हाथों के लोते उड़े हुए हैं। मुझ ममागिनी के कारण न जाने कौन कौन कुछ उठायेगा।

बिस्मो की जबानी यह बातें सुनकर पूर्णा के पर तले छ मिट्टी निकल गयी। दामनाय की लसवीर मजानक रूप धारण किये उनकी माँओं क सामने आकर पड़ी हो गयी।

वह उसी दम धौड़ी हुई बैठने में पहुँची। बाबू ममूतराय का बर्ता पता न था। उजने अपना माया ठीक बिस्मो से कहा — तुम जाकर भासियों से कह दो। फ़टक पर सड़े हो जायें। और सुद उसी जमह एक कुर्ची पर बैठकर गुनने लयी कि अब उनको कैसे लबर कहें कि इतने में गाड़ी की सड़कड़ाहट मुनायी बी। पूर्णा का दिल बड़े खोर से बड़ भड़ करने लगा। वह सनक कर दरवाजे पर आयी और काँपती हुई आवाज छ पुकार कर बोली — इतनी देर नहीं छपायी। नस्वी आते क्यों नहीं।

ममूतराय बस्ती से उठरे और कमरे के अन्दर कब्रम रखते ही पूर्णा ऐसे सिपट गयी मानों उन्हें किसी के बार से बचा रही है और बोली — इतनी जल्दी क्यों भाये अभी तो बहुत सबेरा है।

ममूत — प्यारी समा करो। आज जरा देर ही गयी।

पूर्णा — बकिए रहने बीबिए। भाप ली आकर सैर-सपाटे करते हैं। यहाँ बूमरों की जाग हुआकान होती है।

ममूत — क्या बतायें आज यात ही ऐसी आ पड़ी कि रुकना पडा। आज माफ़ करो। फिर ऐसी देर न होगी।

यह कहकर वह कपड़े उतारले लय। मपर पूर्णा वहीं खड़ी रही बीजे कोई पीकी हुई हरिपी। उसकी माँलें दरवाजे की तरफ़ लपी थीं। मजानक उसको किसी मनुष्य की परछाईं दरवाजे के सामने दिखायी पड़ी। और वह बिजली की तरह बमककर दरवाजा खोककर लड़ी हो गयी। देखा तो कहार था। जूता पोलन आ रहा था। बाबू साहब ने प्यान से देखा तो पूर्णा कुछ मबरायी हुई दिखायी बी। बोले — प्यारी आज तुम कुछ मबरायी हुई हो।

पूर्णा — सामनेबाका दरवाजा बन्द करा दो।







मंगलाचरण

मृत्यु स्वर ही बने और उसको बुर भेज पार किया। इतने में  
दिलो ने आकर कहा — बलिष् एसीई हीमार है।  
अमृतदाय वो उबर भोजन पाने वने और पूर्वा ने शरको बालकाएँ  
बोलकर पिलीक निकाल ली और उसे उल्ट-मुल्ट कर नीचे और पूर्वा ने  
बाज किसका बिकार हो औरलाब के मसहुराकर पूजा — सो जाती

पूरी — इते कीसे छोड़ते हैं, ऐसे वो समझ ही ने गरी जाता।  
औरल — शरको में बहा है।  
मृत्युकर औरलाब के पिलीक हाथ में ली। उसने बीली मरी  
भीर बापमरे में आते और एक वेग के लने में निवाता लगा कर दोडील  
और कियो। सब पूर्वा ने पिलीक हाथ में ली। बीली मरी और निवाता  
क्याकर दाता मार ठीक न पाया। इतरा और फिर किया। जब की  
रख ही और मुककाएँ हुए कल्प बनी मरी। अमृतदाय ने पिलीक उठा  
लिया और औरलाब से बोले — कुछ समझ में नहीं जाता कि आज  
इतको पिलीक की तुल नवीं उबार है।  
औरल — पिलीक रख देल के छोड़ने को भी बाहर होता।  
अमृत — नहीं आज जब से मैं जाता हूँ। कुछ बचपना हुआ देख  
छा है।  
औरल — बालने कुछ पूजा नहीं।  
अमृत — पूजा तो बहुत मगर जब कुछ बचकाने भी हूँ हीं करके  
दाक नहीं।  
औरल — किसी बियाब में पिलीक की लगाने पड़ी है नी। और  
सा? प्राणपाय — नहीं मैं भी समझता हूँ।  
औरल — बियाब बनके और ही हीं क्या मरना है।  
कुछ देर तक तीनों बारासी की बच-पच करते रहे। जब सब बरने

को माये तो लोग अपने अपने कमरों में विराम करने लगे मये। बाबू साहब भी सटे। बिग भर के चले थे। बसबार पड़ते-पड़ते सो मये। मगर बेपारी पूर्वा की आँसों में नींद कहीं? वह बारह बजे तक एक कहानी पढ़ती रही। जब तमाम सोता पड़ गया और चारों तरफ सन्नाटा छा गया तो उसे अकेले डर मासूम होने लगा। डरते ही डरते उठी और चारों तरफ के दरवाजे बन्द कर लिये। मगर जपानी की नींद, बहुत रोकने पर भी एक सपकी आ ही गयी। आभी भड़ी भी न बीटी थी कि मय में सोने के कारण उसे एक अति ममकर स्वप्न दिखायी दिया। चीक कर उठ बैठी हाथ-पाँव बर-बर क्रीपने लगे। दिछ में बड़कन होने लगी। पति का हाथ पकड़कर चाहती थी कि जगा दे। मगर फिर यह समझकर कि इनकी प्यारी नींद उचट जायगी तो तर्कनीक होयी उनका हाथ छोड़ दिया। अब इस समय उसकी जो अवस्था है बर्षन नहीं की जा सकती। बेहरा पीसा ही रहा है डरी हुई निमाहों से डबर-उपर तक रही है पता भी पड़सड़ाता है तो चीक पड़ती है। कमी अमृतराय क सिखाने खड़ी होती है, कमी पीताने। सैम्प की धूमिली रोसनी में वह सन्नाटा और भी मयामक मासूम हो रहा है। उसबीरे जो वीबारों से लटक रही है इस समय उसको धूरते हुए मासूम होती है। उसके सब रोंसटे लड़े हैं। पिस्तील हाथ में लिये बबरा मत्ररा बर बड़ी की तरफ देन रही है। मकामक उसको ऐसा मासूम हुआ कि कमरे की छत दबी जाती है। फिर बड़ी की सुइयों को देखा। एक बज गया वा इतने ही में उसको कई आबमियों के पाँव की आहट मासूम हुई। कलेजा बाँधों छड़कने लगा। उसने पिस्तील सम्हाली। यह समझ गयी कि जिन लोगों के आने का सटका वा बहु आ मये। तब भी उसको बिस्वास वा कि इस बन्द कमरे में कोई न आ सकेगा। वह कान लगाये पैरों की आहट ले रही थी कि अकस्मात् दरवाजे पर बड़े जोर से बजका गया और जब तक वह बाबू अमृतराय को जगामे कि मजबूत किबाड़ आप ही आप लुल मये और कई आबमी पड़बड़ाते हुए अन्दर धुस आये। पूर्वा ने पिस्तील सर की। तकाक की आबाज हुई। कोई घम्म से फिर पड़ा फिर कुछ लट लट

मंगलाचार्य

होने लगा। दो ब्राह्मणों विस्तीर्ण के सुन्दरों की और हुई। फिर वनाका हुआ। इनमें से बाबू कमलदास बिलकवे — सीधे सीधे बोट और। इन ब्राह्मण के पुत्रों ही दो बालवी उनकी तरह लगे। मगर इनमें से एक ही में सीधे फिर का लुबि। और मायके से मगर दो के वीलों एक ही पुत्रों की बात की और दूसरी एक लड़की पर देखा तो दो कावे दिखायी दी। बिलका कर कहा — बटे। मू तो बाबू रामलाल हैं। एक एक ब्राह्मण ने हाथ में विस्तीर्ण देखा लगी से बिल में एक बटका वा लगा हुआ था। मगर हाथ बना जाला था कि ऐसी भावति भाविकी है।

ब्राह्मण — रामलाल तो बालके जिनमें से थे। \*  
 कमलदास — जिनमें से अब से एक थे। अब तो बाबू हैं। \*  
 पुत्रों की दुनिया से ठठे दो बने नील गया है। लाल का लाल है। वीरक मुनिवित बिप्रा की हों देखाती हुआ सब रही है। पुत्रों की बिप्रा देखाती किन्तु बिप्राकी से बाबू कमलदास के मने हुए करते में जाती है। और पुत्रों के पूरे रूप की लगीर के पैरो को पूरा पुत्र बन कर गली जाती है। उनकी गली से लाल कमरा गुजरता हो रहा है। रामकी और लगी के मुझे इस समय मारे बालक के बलाक की लच्छु निकले हुए हैं। दोनों लड़के पाते तो सैन हैं और अब सब बिप्राकी से घर निकाली हैं और गुजरती किन्तु उनके मुलाय-से मुजरी पर पडती है तो जाल पडता है कि मुने माय बनया ले रहा है। मरुतु लुकर-ऐसी बिलकवे से लगी है कि मुने माय पाए जा रही है। एक एक रामकी के पुत्र हीकर बना — मली बाबू एक जिन गुजर-पिडल बन-बन करती हुई बटका के और रामिन से बरती है। और बनेके के बालके में बाहर लगी है। बाबू कमलदास उनके से बरती है। मगर बनेके गरी। उनका एक हाथ प्रया के हाथ में है।

यद्यपि बाबू साहब का सुन्दर चेहरा कुछ पीला हो रहा है। मगर होंठों पर हलकी-सी मुसकराहट झलक रही है और माथे पर केशर का टीका और बले में खूबसूरत हार और भी सोमा बड़ा रहे हैं।

प्रेमा सुन्दरता की मूरत और जबानी की तसवीर हो रही है। जब हमने उसको पिछ्छी बार देखा था तो चिन्ता और दुर्बलता के चिह्न मुखड़े से पाये जाते थे। मगर आज कुछ और ही जीवन है। मुखड़ा कुन्दन के समान चमक रहा है। बदन गदरामा हुआ है। बोटी बोटी गांध रही है। उसकी शैलता देखकर आश्चर्य होता है कि क्या वही पीछे मुंह और उससे नाम वाली रोमिग है। उसकी आँखों में इस समय एक चक्रे का नशा समाया हुआ है। गुलाबी जमीन की हरे किनारेवाली बनारसी साड़ी और ऊँचे रंग की कलाइयों पर चुनी हुई चाकेट उस पर खिच रही है। उस पर योटी मोटी कलाइयों में बड़ाऊ कड़े बालों में गुँबि हुए गुलाब के फूल माथे पर साँझ रोटी की मोल बिंदी और पाँव में बरखीजी के काम के सुन्दर जूते और भी सोने में सुहागा हो रहे हैं। इस बंध के सियार से बाबू साहब को विशेष करके लगाव है क्योंकि पूर्वा देवी की तसवीर भी ऐसे ही कपड़े पहिने दिखायी देती है और उसे देखकर कोई मुश्किल से कह सकता है कि प्रेमा ही की मूरत माइने में उतर कर ऐसा जीवन दिखा रही है।

अमृतराय ने प्रेमा को एक मसमली कुर्ती पर बिठा दिया और मुसकरा कर बोले — प्यारी प्रेमा आज मेरी जिनंदनी का सबसे मुबारक दिन है।

प्रेमा ने पूर्वा की तसवीर की तरफ मस्किन चितबर्णों से देखकर कहा — तुमारी जिनंदनी का क्यों नहीं कहते ?

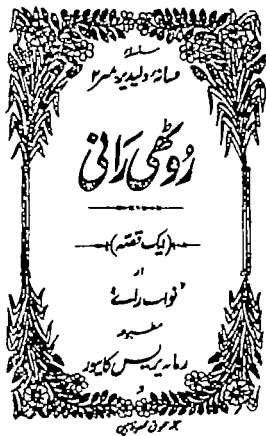
प्रेमा ने यह कहा ही था कि उसकी तसवीर एक काल नीब पर था पड़ी जो पूर्वा की तसवीर के नीचे एक खूबसूरत बीमारगीर पर बठी हुई थी। उसने कपकपकर उसे उठा लिया। और अमर का रेशमी पिलाऊ हटाकर देखा तो पिस्तौल था।

बाबू अमृतराय ने गिरी हुई आबाज में कहा — यह प्यारी पूर्वा की नियांनी है, इसी से उसने मेरी जान बचायी थी।

यह कहते-कहते उनकी आबाज काँपने लगी।

## भंगलाप्रवास

अमा के सव् मुसकर उठ गिल्लीक को दूध किया और फिर बही लिखूब  
के धाब उठी जगह पर रख दिया।  
रुने में दूसरी छिल्लन बाधिल होली है। और उलमें से तीन मुसक  
हँसते हुए चलते हैं। तीनों को हुन पहचानते हैं।  
एक ठी बाबू जोगलान हैं, दूसरे बाबू आलगाब और तीसरे अमा के  
माई बाबू जमलाप्रवास हैं।  
जमलाप्रवास को देखते ही अमा कुली से उठ खड़ी हुई और जलदी से  
मुँद निकाल कर छिट मुका लिया।  
जमलाप्रवास ने बहिन को मुसकराकर काली से बना लिया और  
बोले— मैं तुमको लम्बे रिक से मुवाक़ाब देता हूँ।  
दोनों मुसकों ने मुक यबाकर कहा— जलमा कपारए, जलमा से  
पीका न हूँबा।



رُوٹھی رانی





## शादी की तैयारी

उमादे जैतसमेर के राजल सोनकरन की बेटी थी जो सन् १५८६ ई में राजगद्दी पर सुशोभित था। बेटी के पैदा होने से पहले तो दिल बरा दूटा मपर जब उसके सौन्दर्य की खबर मापी तो आँसू पँछ गये। जोड़ ही दिनों में उस लड़की के सौन्दर्य की बूम सारे राजपूताने में मच गयी। सलियाँ सोचती थी कि देखें यह युवती किस माम्बाम की मिकली है। वे उसके माये देस-देस के राजों-महाराजों के गुणों का वलाम किया करतीं और उसके थी की माह लैतीं सेकिन उमादे अपने सौन्दर्य के गर्ब में किसी को ख्याल में न लाती थी। और सिर्फ अपने बाहरी गुणों पर उसे गर्ब न था अपने दिल की मखबूती हीसले की बुलन्दी और उदारता में भी वह बेजोड़ थी। उसकी बाहरी सारी बुनिया से निराली थी। छुई-मुई की तरह जहाँ किसी ने उँगली दिखायी और वह झुम्हलायी। माँ कहती — बेटी पराये घर जाना है तुम्हारा निबाह क्योंकर होगा। बाप कहता — बेटा छोटी-छोटी बातों पर बुरा म मानना चाहिए। पर वह अपनी बुन में किसी की न सुनती थी। सबका खबाब उसके पास लामोधी थी। कोई कितना ही मूँके, जब वह किसी बात पर अड़ जाती तो अड़ी ही रहती थी।

मास्तर लड़की दाबी करने के लालिब हुई। रानी ने राजल से कहा कि देखकर कैसे बीठे हो लड़की सयानी हुई, उसके लिए बर हुँडो बेटी के हाथों में मँहपी रखाओ।

राजल ने खबाब दिया — जल्दी क्या है राजा सोपों में खर्चा हो र्ही है, बाजकल में दाबी के पैशाम भाया चाहै है। मपर मैं अपनी

- ज्योतिषी — चारे घर में मेरे सिवा और है ही क्या। परमा-पत्नी  
 मरीची को बुकाले है।  
 मरीची — ज्योतिषी ओ साएव न इतिपत्ता मित कश्चिदं को  
 आदिबां आप करवाते है कइ किल्ली देर एक इहामिल रहती है ?  
 ज्योतिषी — (बौककर) है यह पूरे क्या कहू। क्या मुझे किल्ली  
 बरती है ?  
 मरीची — गृही ज्योतिषी की किल्ली तो गृही कलही सबकुछ कहती है।  
 ज्योतिषी — तुम बाती का जवाब मेरे पाव नहीं। ठीक मतलब जो  
 कुछ ही पाऊ-पाऊ कह।  
 मरीची — कुछ नहीं आप अपने सुहृदं को एक बार और बोध लीजिए।  
 ज्योतिषी — कुछ कहेगी भी ?  
 मरीची — बल ही ही मुझे से बोल नहीं करते।  
 यह कहकर ज्योतिषी को बन्दर बने बसे मगर फिर सोच-विचारकर  
 गूँटी निकाली पाएव को बुझ कलही पावू जोंबा और जमीलों पर मित  
 निगाकर होके सुहृदं में कोई चीज नहीं है।  
 मरीची — (जयम स्वर में) तो फिर किसल ही पूटी हीगी।  
 ज्योतिषी — (भीषक सीकर) गृही मी जयमली देखकर सुहृदं  
 निकाला बा।  
 मरीची — जयी जयमली भी देसी है। तुम्हारे सुहृदं में तो बापू  
 भी को कुछ जोसला किना है।  
 ज्योतिषी — (एक को घुंभकर) तो क्या एतलभी इस-करीब करके  
 बाते है ?  
 मरीची — ही पाव मारके को सीतो मारके मे रहे, अब एतल ही  
 है कि पाटी में बलु केपी में जम्मे मार डाले।  
 ज्योतिषी — मेरे एतल । देखे पाजयो को निगाव है।  
 मरीची — महाउम इस मज्जा इन बाती को तो रल्लो मगर निगाव  
 भी कोई एतवीर ही तो बलगावो।

ज्योतिषी — अब रावस भी ही को बेटी पर रहम नहीं जाता तो मैं परीब ब्राह्मण क्या कर सकता हूँ।

मारीसी — इंसान चाहे तो सब कुछ कर सकता है।

ज्योतिषी — तू ही बता मैं क्या करूँ ?

मारीसी — अच्छे ज्योतिषी हो। राजदरबारी होकर मुझे पूछते ही कि मैं क्या करूँ।

ज्योतिषी — राजदरबारी होने से क्या होता है। तूने सुना नहीं बुरु बुरु बिद्या और सिर सिर बुद्धि।

मारीसी — तो फिर मेरी तो यही सलाह है कि राव मासबेन को साबनाम कर देना चाहिए।

ज्योतिषी — हाँ ऐसा हो सकता है।

मारीसी — तो क्या मैं बाई जी से जाकर कह दूँ कि तुम्हारा काम हो गया।

ज्योतिषी — हाँ ऐसा हो सकता है।

मारीसी — बी हाँ ?

ज्योतिषी — अच्छा मैं जाता हूँ।

## सारी

दिन डक गया। बाजार में छिड़काव हो गया। लोग बाजार देखने के लिए घरों से उमड़े अने आते हैं। ज्योतिषी ने घरबार में जाकर रावस से कहा — अब अमवानी करने का समय पास आ गया है। अब सवारी की तैयारी का हुकम बीजिए।

रावस — बहुत अच्छा। बाजारवालों को भी इसकी खबर कर दो।

ज्योतिषी — हाँ बुरा याद आया एक बात मुझे मारवाड़ के ज्योतिषियों से पूछनी है।

रावस — वह क्या ?

ज्योतिषी — अममपत्री से तो नहीं पर बीछते नाम से राव जी को आज बीपा चन्द्रमा और आठवाँ सूरज है।

भयकरत्व

राजक — तो पहले क्या सुनते तो आपने जगजगती से ही निकाला है।  
स्त्रीलियो — महाराज मुझसे के पास से भी यह पूछे करते हैं।  
बीना बज्रमा और बाजरी मूल बसंतु होता है। कोई घर बाजरी

राजक — (बी में) क्या अच्छा होता जो कोई बाजरी घर भी होता थाकि तीनों बसंतु एक जगह ही होते। (मुकट) मारवात बड़ा को बिचार लिया होता। आप कुछ न कहियेगा नहीं तो उन्हें सामान्य

स्त्रीलियो — उन्हें खेत कर देना मेरा काम है। मैं आपके सामान्य का स्थित बाहरीवाला हूँ। मैं बसो बाकर उनके कहना हूँ कि विपत्ति को

राजक — यह सब मैं अपना घरक से करा देना। उन्हें कहने को स्त्रीलियो — क्या मुझे ही मरणा है ?

राजक — नहीं यह राज मुझे ही घरक से देना चाहिए। स्त्रीलियो — क्या मेरी घरक से होने में कुछ दुःख है ?

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजक — बाज बाई की का यह हैना है। स्त्रीलियो — बसल अच्छा बहुत पुन। फिर बीरक के बरों का अच्छा

राजस से हुकुम पाकर ज्योतिपी जी सुन-सुन वहाँ से चले। राज मासदेव जी को खबर हुई कि ज्योतिपी राजकी जाते हैं। राज जी ने कहा — उनका बड़े सम्मान से स्वागत करो। वे बड़े मामी ज्योतिपी हैं। वे क्या उनके बेटे चण्डी जी भी ज्योतिपि विद्या के बड़े पण्डित हैं।

बोबहार और बनीझीहार दीड़े और ज्योतिपी जी को हाथों हाथ ले भाये। ज्योतिपी जी आशीर्वाद देकर बैठ गये। राज जी ने कुसुम-ममल पूछकर कहा — आपने कैसे जाने का कष्ट किया ?

ज्योतिपी — (इधर-उधर देखकर) कुछ सादत विचारनी है। यह सुनते ही सोम हट गये। ज्योतिपी जी राज साहब से बो-बो बातें करके चल दिये। राज जी को बड़ी चिन्ता हुई, फौरन सरदारों को बुलाकर समाह-मण्डिरा किया कि ऐसी हाकत में क्या करना चाहिए।

इतने में मन्त्रियों की आबाब आयी और खबरों से घोर मचने लगा कि राजस जी की खबर आयी। तब राज जी भी सिर पर और और माथे पर सेहरा बाँधकर अपने डेरे से बाहर निकले और बोड़े की पूजा करके उस पर सवार हुए। बराह चढ़ी कुछ दूर आकर सब चुसुस पम गया। ऊर्ध्व-ऊर्ध्व तकिया-मसनब लगा दिये गये। राजस और राज दोनों अपने-अपने घोड़ों से उतरे और पसे मिले। फिर निघान का हाथी आये की तरफ बढ़ा और उसके साथ दोनों महाराजे किले की तरफ चले। दरवाजे पर पहुँचकर राजस जी ठो बन्दर तसरीक के गये और राज जी ठोरा बाँधने की रमन अदा करके पीछे पहुँचे। रनिवास में फिर दोनों मिसकर एक साथ मसनब पर बैठे।

राजसहस्र मं शारी की ठीकाणी हो गयी। बाहिर राज जी को बुलाने आया। राज जी के साथ राजस जी भी उठे मगर राज के सरदारों ने उन्हें रोका कि आप हमें अकेला छोड़कर कहाँ जा रहे हैं। राजस जी ने साधा देकर कहा कि यहाँ से चला जाऊँ, मगर कौन जाने देता है। राज के सरदारों ने उनका हाथ पकड़कर बीच में बिठा लिया। अब ठी लेने के देने पड़ गये। जाते थे राज को मारने, अब अपनी ही जान के खाले पड़

मंगलाचरण

मरे। उनके कपार भी सब सिट्टी-सिट्टी भूक मरे। हार राग भी बसलके  
धीरे से रमिवाल में घुसिबल हो गये।  
जगती डबोही में घुसके ही उमारे की नाँ ने राग जी की बाली  
उठाटी उनके भाये पर छरी का टीका लगाया और जी में कहा कि ऐसे  
ही भरा कलेबाठबा रहे। इसके बाद राग बीनकर अपना गुफ्टा उनके  
पके में डालकर उन्हें बंदरी में के बाकी।  
हरन हीने लबा। राग जी का हाथ उमारे के हाथ से मिलाया गया।  
उमारे भाये हीं और राग जी पीछे-पीछे बले। तीन बार हरन गुफ के  
परिक्रमा की। उस भीले यह भीत माने लगी —

पुसे केरे भाई लखारी लीकी  
तौसे केरे भाई जगारी लीकी  
लौसे केरे भाई बाप लकी उस बल के तुख्या है जब  
भीत का मल्लब यह है कि बाप लकी उस बल के तुख्या है जब  
घामार से मने मिल्या है। उनके बाद केर और घाल के लुघार लकी का  
का टीका लगाती है। उन बल उस पर बाबा माना और मुना का बीना  
विवाह हुक रहे जला है। अर बाबा की अउ कहला हो या जगति  
कली हो तो पूसे केरे एक कर सख्या है। माना जगरे केरे एक और  
मुना तीसरे केरे एक। लौसे केरे में लकी परबी हो जली है। फिर बिनी  
का ऊप पर कोरे हुक बाकी नहीं रहे बाबा। इतीव्य लौसे केरे के पूसे  
ही इति गुफ के माने का जला है कि जैसे उन बल के यह उनका पान  
और लगती माना जला है। इन भीत के बर भी प्रकट होता है कि मुना  
का एक लकी पर बहल माना गया है।

१. जैसे बर की नाँ बरल रचना होके के पूसे जैसे बर मिलली है  
जैसे ही साध उनके भाये पर रही लगली है यानी उसे भल्ली लकी  
या पति मान ली है। सख्या है रही की बल सरी।

बाँये फेरे में राब जी बाँये ही मये और उमादे उमके पीछे बसने लगी। तब बीरतों ने यह पिछसा बंद पाकर अपना गीत पूरा किया —

बाँये फेरे बाई हुई रे परायी।

गीत सुनते ही माँ और बहनों के दिल भर आये। बाँसों से बाँसू टपकने लगे कि अब प्यारी उमादे परायी हो गयी। इस तरह यह शादी बँसास सुधी तीन सम्पत् १५९३ की रात को मच्छी तरह सम्पन्न हुई।

रंग में भंग

शादी हो जाने के बाद लड़की अपने महल में चली गयी। बड़ी बूढ़ी बीरतों इधर उधर खिसक गयीं। बहू की सहेलियाँ राब जी को उसने महल की तरफ से चली। रास्ते में एक जगह गाना हो रहा था। कितनी ही चन्द्रवली सुन्दरियाँ मुहाम के गीत बजाप रही थीं। राब जी बसते बसते वहाँ फिसस पड़। बीरतों के गाने और स्व रंग में उन पर बाहु कर दिया। वहीं डट गये। पचासे दौड़ीं। एक ने चाँदनी कुसरी ने सोबनी और तीसरी ने तकिये लगा दिये। पाँच-साठ सलियों ने मिलकर छोटा-सा घामियाता बड़ा कर दिया। राब जी स्टूटू ही गये फिर क्या था वहीं बैठ गये। दो सबासें दावे-बाँये मोरछस केकर लड़ी हो गयीं दो बँबर हिलाने और पंसा चलने लगीं। गमियों की मुहानी राठ। चाँदनी छिटकी हुई थी। ठण्डी हवा चल रही थी। मीनी मीनी खुसबू चारों तरफ फैली हुई थी और राब जी उस परित्तान में इन्द्र बने परियों से चुहल और छेड़-छाड़ कर रहे थे। गार्हनें चुप थीं और सामने कुछ आसले पर पन्द नापनेवाकियाँ बनी-ठनी लड़ी इशारे का इस्तबार कर रही थीं।

कसौल करनबाकियों में से एक लड़की ने बाँये बड़कर राब जी को सामाम किया और सोबनी से कुछ हटकर बैठी और गानेबाकियों को इशारा किया कि हाँ कुछ छेड़ो लड़ी मुँह क्या तकपी ही।

बस तबसे पर बाप पड़ी और गानेबाकियाँ ऊँचे और मीठें मुँह में गाने लयीं —

मंगलाचरण

भर का दो गुपर कपालो  
वीरबासो कालों रो

रत कम्बो ने जो ब्रह्मचरि के नाम से मशहूर भी जाने के होते  
उसीके बड़े शीक से निकर करार दी और प्याका कवाडिनी से भरकर लौटा  
रिया। ब्रह्मचरि ने उठ ठठकर सामान किये और बस्ने गले के बरतदार  
दोहरकर उलके मोटी रात भी पर से निकार करके मंगेवालिनी की तरफ  
कीली कनी। भाइने सोठ के मुटों में माने कनी।  
बिरज पैलौ बरख बना भीरो प्युर्नी सोइ  
बाइ कवा लंका कनी राजकुली रठौर

(दिली में बुज गनी में बरख प्युर्नी में भीरो बिरिनी में पल  
भीर दिली में लंका बरका उपजाव है। बिस ही सब राजबाली में  
राठौर का मरला सबसे अंवा है।)  
ब्रह्मचरि ने फिर प्याका भरकर रात भी जो रिया और भाइने  
माने कनी —  
बाक सिवो रल कडो रला रकनो रैन  
भीरो गुवाए कल मरे पुल बनेवा लैन।  
(मराब सिवो भीर लामे जो कडो गौनें लाल रकनो जिनसे गुवाए  
उपल जल मरे भीर रोल मुच ही।)  
बाक दिली बामरा बाक भीकलेर  
बाक सिवो साइवा सो कनी रा कर  
(मराब ही दिवनी जालत है और पाठव ही भीकलेर। दो पाठव  
पाठव पीजिठ, इनका एक एक भीर सो-सो ससे का है।)



सोरठतो बूहा भलो रूपड़ा भलो सछे  
 मारी ठो नबली मली घोड़ा भलो कुमठ  
 मर सा ऐ सुमड़ कलामी।

(पत्नी में बोहा रूपड़ों में सछे रूपड़ा बीरलों में नबेसी बीरठ और  
 घोड़ों में कुमठ घोड़ा बण्ठा होता है। ऐ छोकरि पाराब सा।)

इन गाने-बजाने और तपस्त्रियों का प्रथम भ्रम करनेवाली स्त्रियों के  
 बभाल-दिमाने ने राव जी का दिम छीन लिया। उस पर गानेबासियों  
 का समवेत स्वर में ताल सगाना और भी सितम डा गया। राव जी ऐसे  
 बेचुप और आनन्द की सुरा में ऐसे मस्त हुए कि खपती नपी-नबेसी  
 बुनहन को मूल गये जो उनकी प्रतीक्षा में अपनी बांहें खोले खड़ी थी।

राव जी की राह देखते-देखते उनादे की मसीसी भाँसे धरकने  
 लगी। कितनी ही बाँदियाँ उनको बुलाने के लिए गयी पर राव जी उस  
 परियों के जमघट से न उठ सके, यहाँ तक कि रात बहुत कम बाकी रह  
 गयी।

रानी ने जब देखा कि वह और किसी के बुसाने से नहीं भाटे हैं तो  
 अपनी बचस सहेली मारीकी स कहा कि अब राव जी को लाना ठेरा ही  
 फान है। उसने कहा कि राव जी इस बन्द भाँसे में नहीं हैं मुठे न  
 भेजिए। मगर उमादे ने न माना और उरी को भेजा।

इधर घाटी की महकिल भी खरी थी। माइनें तैयार बीठी थीं।  
 पाराब की बोटसें खुनी हुई थीं। पत्रक तस्त्रियों में घटी हुई थी। मिर्क  
 पत्रा क माने की बेर थी। रानी को मझीन हो गया कि मारीकी गयी है  
 वो गजा को बकर ही खीब लायेगी। मानबासियों को इशारा किया कि  
 कुछ छेड़ो और वह नीठे गुरों में पागे लपी —

महली पपारी महाराज हो  
 बाक रा भारो महली पपारो महाराज हो  
 करी जोहूँ सेजा बाठ हो

(महाराज महलों में ठपटीऊ ले बकिए। ऐ पाराब का मजा

### मंत्रालय

उत्तेजाके मुहों में बह। मैं बहुत देर से मेज पर तेरे इन्वॉयस में बैस हो रही हूँ।  
मैंने मुस्क के मुहाबिक मील मुलकट उगाये मुस्कटापी और फिर भी जो कैडिल हो रही थी बयान नहीं की था मस्कटी। उगाये मुहों के दम दम पर दीवानी वाली थी कि देख राजा जो था वो नहीं रहे हैं।  
मैंनेका इन्वॉयस में बैस हो रही थी। मस्केवालों के बीच का इन्वॉयस बर बाया —

मधुरा मुस्क पराम मरो कासूरी मस्के  
देवावर म्क बजनी और म्कक  
मुहों पवारो मुहुराज हो।  
(मधुरा मुस्क पराम मारवाज काहीट मजनी देवावर मस्के  
और देवावर म्क बजनी मुहुराज हो। दे म्कक मुहों में म्कक  
म्क की मुहुराज म्क देवावर म्क देवावर म्क देवावर म्क  
मधुरा की ही और मुहुराज मुहुराज म्क देवावर म्क देवावर म्क  
कारों छापी रल मुहुरा छापी देवा  
भीरी छापी है म्क प्क देवा देवा देवा देवा  
देव म्क देवा देवा देवा देवा देवा देवा

(दे मेरे दम बजाती के म्क देवा। उल कारों के म्क मुहुरा  
से और भीरी म्क के म्क देवा। उल कारों के म्क मुहुरा  
मधुरा में म्क देवा के म्क देवा। उल कारों के म्क मुहुरा  
मुहुरा और प्क के म्क देवा। उल कारों के म्क मुहुरा  
मधुरा भी म्क देवा के म्क देवा। उल कारों के म्क मुहुरा

## ठ्ठी रानी

भर ला ऐ सुघड़ कलासी बाक बाजाँ री  
 सोने री मट्टी कर्के क्ये री घर नार  
 हाथ पिमालो बन खड़ी पीयो राजकुमार

(ए सुघड़ साकी बंगूरी धराब भर ला। सोने की मट्टी और चाँदी का बीका बनाई। रानी अपने हाथ में प्याला लिये बहती है राजकुमार तुम पियो।)

जाम फले पतवार सों महू कले पतखीय  
 साको रत साजन पिये साज कहीं ते हीय

(जाम पत्तियों के साथ फलता है और महुआ अपने पत्ते झोकर। उसका रस साजन पीता है फिर उसे साज क्योंकर भाये? जिस बकत महुए के फूल सपते हैं सारे पत्ते झड़ जाते हैं। पत में श्लेष है। पत का मतलब पत्ता भी है और साज भी। मतलब यह है कि धराब बेधर्म महुए से बनती है तो धराब पीनेवाला क्योंकर साज निमा सकता है।)

महलों में पुकार पड़ी है और ऐ बेटे राजकुमार, तुमको माने की फुरसत नहीं।

इस खंपल घोष भारीकी कुछ इस अन्दाज से इठलाती सचकती बस सागी राब जी के पास पहुँची कि वह अबानी और धराब की मस्ती में उनी को रानी समझकर उसके साथ चल दिये। भारीकी ने भी उन्हें वहाँ से हटा ले जाना ही ठीक समझा। मगर वह भी बुद्धबुली तबीयत की लड़की थी राब की मजर अपने ऊपर बेइब पड़ते देखकर लक्ष्मा गयी। यह न कहा बंदी रानी नहीं बाँधी ही है। बल्कि राब जी को पीछे में धाककर अपने घर ले गयी। रानी उमावे ने जब यह सुना तो सप्ताटे में भा गरी और उसकी गाइनें माने सर्गि—

भर ला ऐ सुघड़ कलासी  
 पहुँचा तोड़ी कलासी हमारो भारो भी रे से भामिली  
 अब ते आलीबारी घर नार

संस्कारवचन

(भार का दे मुझ कबाली भंडुटी सपर का। पहले तो कबाली  
उत्की मेमिका की पर अब तो उस कालीबाहु की परबाली ही रही है।)

बिजलियां जाड़े बिबाल ऊपर के रलियां  
परदेरियां रा साजना खी के बिलियां  
(कैलकोर देस में जब बिजलियां बजकडी हैं बहु ऊपर ही ऊपर  
बली जाती हैं। ऐसे ही परदेनी साजन से मिलके का परकील नहीं होला।)

सुदुरी लीली उनले खीली खली कपाल  
खाली खीली खलके बिबल यली बिबल दे पाल  
(सब ली ली की उनके लिए पर अब बहु खी सुई कपाल बरली है।  
खी बहेब में खी मयी की अब बहु रिया से हिल मिल बनी है।)  
उमादे का बिलान बनन राब जी की इन बरालीला से उठा पर  
आस मार खी की क्या क्या हीलके वैवाही खे के उनले पति की खालत  
बनाब बुनाब में खी कपाल न खीली खी मार खलमोस पर सामान पर  
पर मया। बहु खलकाबर उठी बालेबालियां से कुरा पुन खेब खाबो,  
खीर सुपही ब बाम उखकर पटक दिव। बहु बाल खी बराली के बिन्धु  
उतले बहुत लकर सयाया का खीर जो मुनसे की खलन में परके पर मुई कोटकर  
उतले खीया रिया खीर बम खीर मुसे की खलन में परके पर मुई कोटकर  
में वैरा हीले से उनका बब्याबा कलना मुकिन्न है। अगर राब मालदेन  
खी न बहुब बाले ली बहु लक खी कुरा मुईवा होला — खीर खी खीर  
के खीर बल्ले हीले मुदीके रातो में कुरा मुईवा होला। जिन ठोपटी को एगो  
मेमिका एक मुदी के धोम के मुदे बल्ले होले। मार मार बाले अब कुरा।  
खेपठ हवा। एत ली का मया उतरा। जिन ठोपटी को एगो  
बगले हुए से उमे देला ली पानी का पाना खीर बिजलियां सिने बाली

## रानी

महल की तरफ जा रही है। समस्त गये बड़ा भोखा हुआ। उठी बन्धु घरमाये हुए महल में गये। वहाँ का सन्नाटा महल की बीरानी और रानी की बेस्त्री देखकर बिल बैठ गया बोले—

मान गुमानी कामिनी उमारे बड़ भाग  
रानी बैठी सिद्ध में मालदेव पिया को त्याग।

(ऐ बड़े सनेवाली नाबनीन उमारे, तू बिद में आकर क्यों अपने पिया स रानी सब पर बैठी हुई है।)

राज जी को देखते ही वह उठ खड़ी हुई पर मुँह से कुछ न बोली। मर्दों की कमान को खींचकर, उममें पलकों के तीर का निशाना लगाय हुए, हाथ मरोड़े मुँह मोड़े गोपी पी स मरि बैठी है।

खबाते दूर-दूर चुप खड़ी थीं। भायली का डर क मारे महु मुला जात्रा था। पर यानेवासिया बन्द न हुई। वे याने लगी—

ऐ दाराब में मस्त महाराज !  
तुम्हें दाराब किसने पिलायी !

राज जी ने बहुत कहा कि मैं नये में था इस बबह से ऐसी यमती हुई मपर रानी ने एक न मुनी। गानेवासियों ने भी राज के हमार से बहुत ध रुडे हुए को मनानेवाले गीत माये मपर रानी पर कुछ ममर न हुआ। हम समेले में बिल बहुत बड़ भाया। आखिरकार राज जो यह सोचकर कि फिर मना लेंगे महल से बाहर निकल भाये। उनी बन्धु उनके सरदार भी राजल जी के पास स रुडे।

राज जी ने फिर महल के बन्दर जाकर अपनी जान खतरे में बाधना ठीक न समझा। बाहर ही से सन्नाटा की दरबानासत की। राजल जी भी यही चाहते थे कि ये न खुले चुपचाप बियाई हो बाय।

उमारे राज जी क माय जाने को राजी नहीं होनी थी। राजीजी पनीतिपी न यह मुना तो उससे कहा कि कल तुम्हें राज जी की जान प्यारी

संसाररत्न

की क्या भाव यह प्यार थावा रहा? उनकी बात कभी एक खलरे में ही और इस तरह खलरे का सीका नहीं है। यह सुनकर राजी कमें हुईं। हिन्दू राजा की पूजा करने की विद्या होता है। राम की मालेबाली ओ पाली की पछि की पूजा करने की विद्या होती है। राम की पूजा कर सकिनी से बने निककर रोती रही फिर दो मुँह पाली गया और पुपचार मुक्पाक में बैठ गयी।

विद्या विद्या बोला अपनी वधाही को अपने पाप के वाली। योनिनी की पूजासे के बहाने से पाप ही गये। उनके बेटे बच्ची को पढ़के से पाप के निकर में जा गये के स्कॉकि इन दोनों को बर वा कि रावक की कही पीछे से चक्की मरमाल न करे योकि रावक की को रोइइ ही गया वा कि इन्ही दोनों की माकिश से लिक्कार हाव से गया।

राजी की लड़की को ले न रोइली के कर से स्वागत करती है मगर फिर बालक वा बैठती है। राम की जाते ही तो यह उनका बच्चा बरब और रावक मूल न टार की को बहुत मोइ किया है। यह बहुत बारी है कि कुछ न ही तो यह जरा हुँकर बोल ही है। मगर राजी उनको बिलकुल कठिँर में गरी कलौ। इसके मार ही पाप यह जाती है और कुछ किसी रहती है। माँपी करने मामली बात कि पाप की मालमे के कि मारीली ही ने मोटा पाप बापापी। यह उर कही कि मार ही को बरीकल सेठे यह गाकरो ही रही है। मगर आपके हाव है। मगर आपने इन मीला किया तो मार लूनी। राजीनी योनिनी के भी कही कि मगर मारीली मारी तो भी क्या मी बापाकी की है यह इतिव न पाप की शरना तो जाले से कि रावक की की ३

मुझे ज्योतिषी भी मे बी और ज्योतिषी भी को भारीसी से इसका पता लगा मगर वह यह न जानते थे कि भारीसी से कहनेवाला कौन था। उनका हाक तो जब मामूम हीठा कि रानी उमादे अपने मुँह से कुछ कहती। मगर वह तो भारीसी राव भी और ज्योतिषी सबों से ऐसी खिल हो रही थी कि खबान ही न खोसती थी। उसका बर्न यह कहता कि तेरा यों रुठे रहना सोमा नहीं देता। मगर उसका दिख नहीं मानता था। वह जब तबीयत को बबाकर कुछ बातचीत करने की नियत करती तो कोई खबान पकड़ केता। बेचारी अपने दिल से साधार थी।

भारीसी उमादे की इस खामोशी से डरती रहती है कि कहीं मुझ पर बरस न पड़े। एक दिन दिल कड़ा करके वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और गिरगिराकर कहने लगी कि बाई भी बाप जो चाहें सोचें आपको बलित्यार है। मगर मैंने तो उध बज्ज भी आपकी भलाई ही की थी जब आपने मुझे राव भी को लेने के लिए भेजा था क्योंकि महल से बाहर निकलते ही मुझे संदिह हुआ कि कोई आदमी खाने भेष में राव भी पर ताक छमाये हुए है। इसलिए मैंने उन्हें आपके महल में लाना छतरे से झाड़ी न समझा और अपने घर सिवा गयी। राव भी मछे में मतभाले ही रहे थे। रात भर सोते रहे और मैं बटार लिये लड़ी रही। जब उनकी नींद खुली और वह अपने होश में आये तो मैं आपकी खबरमत में हाजिर ही पयी। मगर इसमें कुछ मेरी खता ही तो आप माफ़ करें।

उमादे ने यह सब बातें सुन तो सीं पर मुँह से कुछ न बोली। भारीसी खिसियानी होकर चली गयी।

बारात ओधपुर पहुँच गयी। दीवान और मंत्री बड़ी बूमबाम से मन्बानी को आये। कौनों तक डीज और तमासाइयों का ताँठा सममया। किले में पहुँचते ही रनिवास की तरफ से बाजों के साथ फूँक-पत्तों से सजा हुआ एक कससा आया। राव भी उसमें अघक्रियाँ डाककर अन्वर चले गये। वहाँ उनकी माँ रानी पधा भी ने बेटे और बहू पर से अघक्रियाँ निछावर कीं। बेटे और बहू ने उनके पैर चुमे। अन्वर आकर देवी-देवताओं की पूजा की गयी और उमादे एक सजे हुए महल में उठाटी गयी।

मंगलस्यारण

राज जी के और भी कई टर्मियां थी और उनके बाल बच्चे भी थे।  
बहुरंग राज के राजा जीप की बेटी काछलदेई थी। राज जी का बेटा  
राजिों में सुबर था। उनके राज जी का मित्राज बिलकुल जलने कावू में  
मुझे सुबरवा में कहीं बड़े बहुरंग है ठग से उसकी छाली पर सोप मोटे  
के बाल में न ही बालें। लेकिन अब कावू जलने मुता कि यह पहली  
राज को रूठ नहीं और यही बाहर भी बड़ी मित्राज है ठग उसकी बाव में  
बाव जायो।

मों से रूठल हीकर राज जी जाली राजी सखलदेई के मुठ में  
बपता मोलियों का जगदीक हार ठोकर उन पर मोली मिछार बियो।  
बह जमारे के बिके होने और प्रलेपन से मुठ बिसा और मुकी हो रहे  
हूए और उने मादी का एक वल मुता क्मे। राजी ने सब मुबर जने  
की कि बगर बाव कहे ठो एक दिन में जो प्रवाली जो से निक बाडे।  
राज जी — भटाली बरा है एक गाला है।  
सखलदेई — (हँसकर) बाह बावने बड़ी दरबत की। गाला बरा  
हीने ली भटाली है।  
राज जी — हाँ भटाली ठो है मगर सखर की बनी है। बगन की  
सखी मुला।  
सखलदेई — सखर ने खप दिला है ठो बगन बयो न कटे। सब  
भापको यह बाल भी न थायी।  
राज जी — बाजिर पगन की भी कोई हर है।  
सखलदेई — बला ठो एक बने पर की बेटी हो एक बने राज की  
राजी ही, मेकी मुलाज ही गोबगल ही मुबर ही, उनके बगन की बरा  
हर ही सखी है। मुस केने मदीन पर की बरा पगन करी।



## कठो रानी

राज जी — यह सब तुमने ठीक कहा। मगर उसका स्वभाव सचमुच बहुत कठोर और खूबा है। तुम उससे मिलकर नुस न हींगी।

सख्मदेई — अच्छा तो आप तयारीक न बछिए, हम सब आपके साथ-साथ चलेंगे।

राज जी — (हँसकर) ठीक है, तुम्हारे साथ चलकर अपनी बेइरबती कराऊँ।

सख्मदेई — (गर्म होकर) वह क्या उसका आप भी आपकी बेइरबती नहीं कर सकता।

राज जी — बीरत चाहे तो पति की बहुत कुछ चीहीन कर सकती है। अगर तुम्हारे सामने वह मुझसे मुझातिव न हुई तो बठकाओ मेरी बेइरबती हुई या नहीं ?

सख्मदेई — अब आप इतनी-सी बात में अपनी बेइरबती समझिये तो उसका ममण्ड क्योंकर निभेया और कौन निभायेया ?

राज जी — हाँ यही देसना है।

### उमादे और उसकी सौतिनें

रानी सख्मदेई ने सब रानियों से कहला मेजा कि भट्टानी से मिलने के लिए तैयारी कीबिए। दूसरे दिन सब रानियाँ बन-उमकर बड़े ठस से उमादे के महल में आयीं। उमादे ने उठकर रानी साछलदेई को सबसे ऊपर बिठाया और स्वाभावत उची से बातचीत की बाकी सब रानियों से मामूली तौर पर मिली और बहुत कम बोली। इसलिए वह दिन में बहुत कुछकुझापी और उसकी राकल-मूरत को देखकर तो उनके विलों पर दाग पड़ गये।

बोलने पर साछलदेई तो अपने महल में चली गयी बाकी रानियाँ सख्मदेई के महल में जमा होकर मघबिरा करने लगीं और बहुत विमाय खर्च करने के बाद यह राय तय पायी कि उमादे तो कठी ही है राज जी को भी जोड़-तोड़ लगाकर उससे कडा कर देना चाहिए ताकि वह उमन महल में जाता बिलकुल छोड़ दें। क्योंकि अगर कमी उसने हँसकर राज जी की

संस्काररत्न

चारु देव किया तो वह उठी के ही बार्दि। इतने में राव जी का बसे  
 और मुझा — बड़ी सुलुली जो सीधी है ?  
 सख्तदेई — हाँ तो बहुत बच्छी पर बहुत बच्छी ही।  
 राव जी — ठर जो सुलुलियाँ भी साबली हीं।  
 सख्तदेई — हाँ इतने सा जो पाव बाय बह काठ बाय।  
 राव जी — जिते सुलुलियाँ लागी हीं। बही पाव बायबा।  
 ठर राव जी ने हुनरी रागियों से भी राव मुठी। रागी पारसी के  
 कथा — महाराज बह बही बनारस है अपने बराबर हुने सा जो  
 की जो भी नहीं समझी।  
 राव — महाराज ने ऊरगाबा — महाराज कुछ न पूछिय अपने  
 माकी रागी हीपदेई ने ऊरगाबा — से तो बाकर बहुत पछावा।  
 सिवा बह सबको जानकर समझी है।  
 भावही रागी काठोई बीली — से तो बाकर उठके पाठ न जाने हुनी।  
 उठकी माँ ऐसी बिदी जोकरी न जाने कही से लावी। उठकी कोकी से न  
 सब है न बागवत में लेख। से तो भावकी उठके पाठ न जाने हुनी।  
 गोगरा रागी काठाने कथा — बह तो मारे बरख के मरी जाती है।  
 न बाये की इरबत है न बये की जातिर। ऐसी महारागी के पाव कोई  
 बाकर सा करे।  
 बीकली रागी इरर बीली — महाराज की बहुत मोलें देनी  
 एक से एक मुकद मार देवा फिर हुआ निबाज किनी का न देवा। न  
 जाने उठके मोरे बरन से कौन या मूल मया है।  
 रागी रावबाई ने ऊरगाबा — मोरी बिदी है तो सा लखन की  
 दो बीली के भी नहीं है। बने पर बा मयी है, नहीं तो मार बरख  
 बरा पछा।  
 माकी रागी गोरारई बीली — उरगली के मरी से दीपली ही रही  
 है। यह नहीं जानकी उरगली तो यह सब दिलाव बाक में मिल जायना।  
 बह नबानी जाती ऐसी तो यह सब दिलाव बाक में मिल जायना।  
 बह सब बहरीनी बाते मूल मुकद राव जी को भी मुला सा मया।

उन्होंने उमारे के यहाँ जाना-जाना कम कर दिया। कमी जाते भी तो उसे एक निगाह देखकर चले जाते। उमारे भी सिर्फ उनके आबर के लिए सही हो जाती कुछ बातचीत न करती।

राव जी के दो और भट्टानी रानियाँ भी उनसे वह उमारे के बारे में कुछ बातचीत न करते क्योंकि वह जानते थे कि उन्हें उमा की शिकायत मागवार मुझेगी। वह भी राव जी से कुछ न कहतीं पर भी मैं यहाँ चाहती थी कि अगर उनका उमा से मिलाप हो जाता तो बहुत अच्छा होता। एक दिन मौझा बुँडकर उन्होंने कछवाही रानी साछरदेई से कहा कि उमारे नाबानी से अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रही हैं अभी कमतिन हैं सीतों के बान-बैब को क्या जानें। अगर यही कैजियत रही तो बेचारी की जिनगी बजीरन हो जायगी। आप देखती हैं कि अब राव जी भी उनके यहाँ कम जाते हैं। मगर उसकी अकड़ अभी तक भ्यों की त्यो है। राव जी को ऐसी बेदखी न दिखानी चाहिए। वह भी अभी मरुड़ है। अगर नाबानी करे तो माझी के हाबिस है। मगर राव जी अकलमन्द होकर क्यों कठते हैं।

साछरदेई बहुत नेक और समझदार औरत थी। उन्होंने बाबा किया कि मैं राव जी से इसका बिक्रि करूँगी। सिहाजा एक दिन शाम के बक्त वह राव जी की खिदमत में हाजिर हुई और इबर-उबर की बातचीत करते-करते पूछा — अपनी नयी रानी के पास जाना-जाना क्यों कम कर दिया ?

राव जी — मैं तो बराबर माता-जाता वा मगर उसी ने कठकर मबा किरकिरा कर दिया।

रानी साछर — वह कठौ क्यों मुझे इसका भेर अब तक न सुना।

राव जी — भारीली की बदीमत।

साछर — फिर आप भारीली को क्यों इतना मुँह लगाते हैं ? वह उमा के बराबर की नहीं।

राव जी — इसमें मेरी क्या खता है। उमारे ही ने उसे मेरे पास भेजा था।

मंगलाचारण

लाकड़ — ठीक है मगर बाहिर कि भारीकी भारीकी की बगल  
 रहे और उमा उमा की बगल।  
 राम जी — मैं भी तो यही चाहता हूँ पर उमा नहीं मानती।  
 उसके भी का कुछ हूक ही नहीं बुझा कि बाहिर उतका क्या मंशा  
 काफ़ल — बहुत अच्छा कोई मौका जाने दीजिए।  
 रागी काकड़केरें के घर सब बातें उमासे कही। उसी उमकी बसबाब  
 दिया मगर उतका कुछ गरीजा न निकला। हाँ उमा की मरु मालम हो  
 गया कि यहाँ भी एक बीछल ऐसी है जो मेरे दुख को मलत छकरी है।  
 अब से मरु बसबाब लाकड़ से मुलाकात करके उससे मिल रहगयी और  
 उसे भीनी बाई कहली। उसके बड़के कुमार राम को भी बहुत प्यार  
 काली थी।

मंगले की कोसिले

इसके बाल राम मालेब के अपने पास के दौरा कराया मुक किया और  
 पूछते हुए बजोर का पछि। बड़ी कुछ दिनों तक किले में उतका म्याम  
 पूछा भी किले मंगले में बीनकेश और पुनीराब जैसे मलापी मरुपामों  
 के सबाबिहालन से मुहोसित होता था। राम जी को इस किले पर राम  
 कले का बहुत बर्न था। एक दौर इतफाकर उसी कोसिले रामिनी से  
 कहते लये — मेरे मरु अच्छी तरह सेन लो। मरु मुन्सरे मुन्सों को  
 रामबाणी है।  
 बेशुकी रामिनी को मरु मंगवालक बासब बहुत प्यार लगा। राम जी  
 एठोर बे। मका बेशुम किती एठोर की उबाल से ऐसी बाल मुन्सरे  
 बर्नकर कला कर लकला। रोनी मंगलामों में मारी-म्याह होता था मरु  
 मरु मुपानी धनुता दिनों से घाऊ न हुई थी। मुन्सकि मिता भीनी से जो  
 बहुत बाद बापल में कमी कमी बालों की मौकल था बाणी थी।  
 रामिनी के अबाब दिया — बाप हमारे मालिक है हम आपके मुठ नहीं  
 न ककरी। मरु हमारे मरु जैसे वे उन्हें बाकके बने ही पूर मंगले शिने

## रुठी रानी

यह बबबर राव जी के सीने में तीर की तरह रुका क्योंकि यह रानी संयोजिता और पृथ्वीराज के स्वयम्बर की तरफ इशारा था। गुस्ते में मरे हुए रतिबास से बाहर निकल आये। उस बन्धु कामी-काली बटाएँ छापी हुई थीं कुछ कुछ बूँदें पड़ रही थीं। राव जी की जाँतों में नगा पा रिस में मुस्ता और हाथ में खंजर। बाहर निकलते ही उन्होंने आबाब की झील हाज़िर है।

ईस्वरदास चारण ने आगे बढ़कर मुजरा किया और बोला — हुजूर, खैरदा हाज़िर है।

राव जी — ममी आप जायते हैं? मुझे खन्वर नींद नहीं आयी परा कोई कहानी तो कहो। मैं यहीं खेदूंगा। ठण्डी हवा है पायर नींद था आय।

ईस्वरदास — ओ आज्ञा। बैठिए।

राव जी बैठ गये और ईस्वरदास कहानी कहने लया। कहानी के बीच में उसने यह बोझा पड़ा —

मारबाड़ नर नारी बैसलमेर  
तोरी तो सिबा निरा करमल बीकानेर।

यानी मारबाड़ में मरें बैसलमेर में औरतें सिब में बोड़े और बीकानेर में खैर मच्छे होते हैं।

राव जी ने इन बोड़े को सुनकर क्रमाया — चारण जी बैसक बैसलमेर की औरतें बहुत मच्छी होती हैं पर मुझे तो बह परा मी रास न आयी।

ईस्वरदास — यह हुजूर क्या क्रमाते हैं। बैसलमेर की मच्छी औरत उमादे तो

राव जी — (बात काटकर) अबी बह तो खेरों की रात ही से रुठी बैठी है।

ईस्वरदास — हुजूर मुस्ताखी भाऊ आपने उसे नी मामूली औरत समझा होगा। खैर बसिए बंदा ममी मेज कराये देता है।

मैलापटल

राखी ने भी खाल दिया कि यह बात बालेबाग आली है  
 क्या जब है राखी को बालों में लगाकर उन्हें पर के बारे। उनके पास  
 उनसे के मुहल की एक बत्ती। यथायक बत्ती-बत्ती एक मने और  
 रिकारालम से बोले — बाप बत्ती तो है अगर वह बोलेगी भी नहीं।  
 रिकारालम — मुँह में बापक मुँह बापक बहरे तो एक बार मुँह को  
 क्या करता है। यह तो फिर भी नहीं है।

लिया और उनसे से कहना भेजा कि मैं राख जी को जलो पीछे डिया  
 बुराबे पर मुँहकर रिकारालम ने राख जी के पास से कुछ कहने के  
 लिए शक्ति हुआ है। उसके डील पर के पास जा रही। रिकारालम ने  
 बड़े बुरे से मुँहा बने कले के बाल कहा — बाई की लामा मुँह ही।  
 उनसे के कुछ उबाव न दिया। रिकारालम ने फिर कहा — मेरा  
 मुँहा मुँह ही। अब उसका भी उबाव न जिला ही राख जी ने रिकारालम  
 के काम में बोले से कहा — हेनो, मैं न कहा बा कि वह न रिकारालम  
 मुँहा बोले तो बोके मर दिया। रिकारालम ने फिर कहा — मेरा  
 बाई की बाई जी कहाई। अगर उसका भी उबाव न जिला ही राख जी ने रिकारालम  
 कापाम को कैना सीन्या कहा। यह कैना-सी रिकारालम है। रिकारालम  
 मुँहा ने उसका भी कुछ उबाव न दिया। रिकारालम ने फिर कहा — बाई की बाई  
 मुँहा में एक टाक लवाजी से। यह मुँहालों में कहाई में बाप बाप से।  
 उनकी रानी ने बापक लवाजी से। यह मुँहा ही तो है कहा कि बाबा जी अगर टाक जी  
 का फिर का रो तो मैं लवाजी जाऊँ। हीलों की कहाई के मौलम में बने मुँहा  
 बड़े हुए हीलों के डेर में टाक जी का फिर लवाजी जाऊँ। उनका  
 हीलों की ने बड़ी मुँहा-मुँहा को काम में बाकर टाक जी की जाहीक करला  
 मुँहा की और उनको मुँहा ही टाक जी का फिर हीन पाया। हीलों की  
 को परबाकर रानी के पास लया। उसके बारे में अब तक एक रोना  
 गयाई है —

भारण होंपि सेम्यो साहब बुजंग सस  
बरबाला घर बोस्यी गीता बोहा कल

यानी होयां भारण ने अपने मासिक दबानी की सेवा की थी। इसलिए दबानी का घर अपने बफ़्तदार गौकर की ज़बान से अपनी तारीफ़ सुनकर हँस पड़ा। यह बात गीतों और बोहों में मशहूर है। सी बाई भी तुम भी उनी राजल दबानी के बराने की ही। वह मरकर बोला तुम पीली भी नहीं बोलती क्या तुम्हारी रमों में बुजुगों का लून नहीं बीड़ता ?

उमादे — (बोध में आकर) बाबा भी मैं भी यही देखना चाहती थी कि देखू तुम्हारी ज़बान में कितनी ताकत है। कही क्या कहते हो और क्यों माये ?

ईस्वरदास — तुम्हारी छींते कहती हैं कि वह अमरभे चन्द्रमंदा में पैदा हुई, बुद भी चाँद की तरह रीसल हैं मगर बेहरे पर मैंस अभी तक बाकी है। मैं यही पूछने आया हूँ कि वह मैंस कैसा है और क्यों बाकी है ?

उमादे — उन्हीं से क्यों न पूछ लिया !

ईस्वरदास — वह तो कुछ साफ़-साफ़ नहीं बतलाती।

उमादे — मैं साफ़-साफ़ बतला दूँ।

ईस्वरदास — इससे बढ़कर क्या होगा।

उमादे — मुझमें यही मैंस है कि मैं चाहती हूँ राब जी बीबी और बाँदी की पहचान रखें।

ईस्वरदास — अब ऐसा ही होगा। रानी रानी रहेंगी और बाँधी बाँधी।

उमादे — तुम इसका पक्का झील दे सकते हो ?

ईस्वरदास — हाँ अभी।

उमादे — अच्छा हाथ बढ़ायो।

ईस्वरदास ने राब जी का हाथ पकड़कर परदे में कर दिया।

उमा ने उसे देखकर कहा — बाह यह तो बही सकत हाथ है मिलने मेरे कर्मन बाँया।

ईस्वरदास — तो दूसरा हाथ कहाँ से माये।

मंगलाचरण

यह उगाकर उगारे बरकर बनी बनी और राख जो भी टटा हुआ निक  
 निकर उठ गये। मगर रीखराराह बड़ी पल्लर की ठण्ड बना छू। साठे  
 राख बील नही विल निकल बना मूल की मरल दिल्ले ठण्डे पाये पर  
 बरदाने ली। पल्ले की मुँद ठण्डे पाये से दुल्ले ली मर उगका  
 मरल मर उल्ले उगकी गण्ड और पाक में बना पल्लक उल्ले लिप्  
 मरल मरला बा कि बरु देटी बाल हुरनिच न टालेनी रीखिलिप राख की की  
 मरल मरला बा। अब मुसे यही मरला है। रवा बाई जो के कमी  
 बालों के बरी करले की बटला नही मुनी? अब बाएल किरी कलने में  
 और बाक कपल लने के किप माल्लेला बर किना करले है। सब  
 मुसे ही उगारे बरदाने मुँद ठण्डे पाल जाती और मुका—रवा मर  
 रीखराराह—बरकर कल्लेना नही वो राख की की कल्लेना मुँद  
 उगारे—वो बाएले मुसे बरल लने नही रिला?  
 रीखराराह—राखा लली के लपले है में कीउ जिमेरारी केला।  
 रीखराराह—रवा लली के लपले है में कीउ जिमेरारी केला।  
 उगारे—रवा लने से बया कपयदा मुका?  
 रीखराराह—और यह बाले किर हौली रवा बरु पागल की लपले।  
 उगारे—रवा लने से बया कपयदा मुका?  
 रीखराराह—पागल बरु लपले कल्लेना में बरुकेला।  
 उगारे—रवा लने से बया कपयदा मुका?  
 रीखराराह—पागल बरु लपले कल्लेना में बरुकेला।  
 उगारे—रवा लने से बया कपयदा मुका?  
 रीखराराह—पागल बरु लपले कल्लेना में बरुकेला।



ईश्वरदास — बहू सौंऊ से भोजन करें, उन्हें किसने रोका है।

माटीसी — भला ऐसा भी मुमकिन है कि चारण तो दरवाजे पर वूवा पड़े रहे और कोई राबपूत औरत तुद खाना खा के।

ईश्वरदास — अगर बाई जी चारणों की इतनी इस्बत करती है तो उनकी बात क्यों नहीं मानती ?

माटीसी — भाप क्या कहते हैं ?

ईश्वरदास — मैं यही कहता हूँ कि बाई जी राब जी से यह गिनाबट दूर कर दें।

इतने में उमा भी निकल आयी — राब जी भी कुछ करेंगे या नहीं !

ईश्वरदास — जो तुम कहोगी बहू करेंगे। हाथ जोड़ने बहोगी हाथ जोड़िये पैर पड़ने कहोगी पैर पड़िये जैसे मानोगी मनायेंगे मैंने यह सब तय कर लिया है।

उमा — बाबा जी भाप समझदार होकर ऐसी बातें कैसे मुँह से निकालते हैं। क्या भरे खानदान की यही रीत है और मेरा यही धर्म है ? राब जी मेरे स्वामी हैं मैं उनकी सौधी हूँ। भला मैं उनसे कह सकती हूँ कि भाप ऐसा कौजिये बैसा कौजिये। मैं तो रुठने पर भी उनकी तरफ से विस में बरत बराबर पैस नहीं रखती और बहू भी जैसी चाहिए मेरी इस्बत करते हैं। मेरा गर्ब मेरा अभिमान उन्हीं के निमाने से निम रहा है। यह चाहते तो बम के बम में मेरा बमबड दूर कर सकते थे। यह उन्हीं की कृपा है कि मैं अब तक जिन्या हूँ। स्वामिमान हाथ से लौकर मैं जिन्या नहीं रह सकती।

ईश्वरदास — शाबाश बाई जी शाबाश सटी स्थियों के यही लक्षण है।

उमादे — बाबा जी अभी से शाबाश न कौजिये अब यह धर्म भासिटी बम तक निम जाये तो शाबास कहिएया।

ईश्वरदास — अच्छा तो तुम फिर क्या चाहती हो ?

उमा — कुछ नहीं तुम भोजन करो तो मैं भी कुछ खाऊँ।

ईश्वरदास — तुम जाओ खाना खानो मैं तो तब खाऊँगा जब तुम मेरा कहना मान लोगी।

भंसलाकर

मा — अच्छा नहीं कीज की बात कहते हो।  
शिरदास — राब जी से कहना ठीक ही।  
उमा — राब जी अगर मेरी जान मर्ने तो हे कछीई मर मेरा  
विक्र उनसे अब न मिलेगा।  
शिरदास — मेरे कहने से मिलना पड़ेगा।  
बोली मेरे तक उमारे दीवली रही फिर बोली — मेरा जी नहीं  
बाह्या कि जो बात ठान के उठे फिर तोड़ई। यह मेरी बात मर  
डिनाक है। मर आपकी बिर से काबारई। और आपकी बात मर  
शिरदास — (मुन दीकर) बाई जी मुझे मेरी जान एक की।  
मरीज मरजी राब जी मुझे बाहर नहीं। जो कुछ पुन कछीही नहीं

उमा — मैं उनसे कुछ नहीं कह सकती। उन्हें सब बातों का जाल  
पाद है। मर ही अगर कभी बाबल के खिलाफ फिर कोई बात देवई  
तो एक इन उनसे नहीं न छुकेगी।  
शिरदास — बहुत अच्छा रही रही। कछी तो राब जी को के  
बाई। या अगर पुन कहना शुरू कछी तो मुजबान का बलवान  
उमा — बोली नहीं राब को बुझी। बात अब जाना सवई।  
शिरदास — पहले मैं राब जी को बपई दे बाई।  
शिरदास मुन-मुन राब जी की सेवा में कतिल हुमा और उमारे  
के फिर से जाना बनवाकर उनसे मेरे पर निजबा रिया।

राब जी मरे मुनी के हुने नहीं माले। अनिका के सुबार में  
परिर्वा मिल रहे हैं। राजमदर मजाना या रहा है। मरने के सुबार में  
उमा ही नहीं। जाना ही रहा है। पराब का हीर बल रहा है। उमारे  
की बुजाने के लिए सीधी पर कौरी-नेरी या रही है। मर कभी तक राब  
का बलाब विचार पूरा नहीं हुमा। मौन में सीली मरे जा रहे हैं। बोली

भूमी जा रही है। प्रसाधिका उसे पटी बना देने की कोशिशें कर रही है। जबका जी बमी तक रात जी की ठरक मुका नहीं है। कुरहाटी अलय शान्त सीध रही है दिख अलय मचक रहा है। बमी तक जी पछावेरा में है कि जाऊँ या न जाऊँ। तबीयत किसी बात पर नहीं बमती। कैसे जाऊँ, कौन-सा मुँह खेकर जाऊँ कहीं बह मह न ब्याक करमे सयें कि बाबिर सत मार के भायीं। नहीं नहीं मेरा जामा मुनामिब नहीं। मगर बात हर बुझी हूँ। न जाऊँगी तो सूठी ठहरेगी। बह इसी धोष-बिचार में थी कि फिर बुलावा आया। उमा ने भायीली स कहा — तू जाकर बह से भावे-भावे भावेंगी एमी क्या बस्ती है। भायीली यह मुनकर सहुन पयी। कान्त हुए बोली — बाई जी क्या बंभेर करती हो। मुझे क्यों भेजती हो। क्या बीर सबायें नहीं है।

उनाय ने कहा — कौई हुमें नहीं। यह जबाब देकर बस्ती से बली बाना बही ठहरना नहीं। तुझे फिर मेरे साथ चलना हीमा।

काचार होकर भायीली गयी। रात जी की नजर पयो ही उन पर पड़ी बह रानी को भूक गये। उसका हाथ पकड़कर बिठा लिया। बह बहुत कर्षी रही कि जो मैं कहने आयी हूँ उसे मुनिए और मुझे जाने नीबिए नहीं तो रंग में भय बड़ जायगा। रात जी बोके कुछ नहीं हीगा। तू सूठसूठ बरती है। भट्टानी ने मुझे मेरे बिलबहलाम ही के लिए भेजा है। जब तक बह न बामें तू यहीं रह फिर बली जाना।

रात जी घरबा के नसे में चूट, भायीली से बिमटे जाते हैं अपनी बुन में न उनकी बात मुनते हैं न उसे जाने देते हैं यहाँ तक कि माचने-मानेबालिमी भी महकिर का रंग देखकर बही स सिसक जाती है।

बोड़ी देर के बाद रानी उनारे बलाब सिगार किये भायीं थी देखा रात जी भायीली को सिये बैठे हैं। उसी बम उस्टे इवन बापस हुई। जी मैं कहा अचछा हुमा मैं भी यही चाहती थी कि मेरी बाम हाथ से न जाने पाये।

उपर भायीली ने ज्योंही रानी को देखा चबराकर उठी और बिड़की से नीचे कइ पड़ी। बही बाबा नाम का एक संनरी पहरे पर बा। खेर की

### मंथनाखण्ड

तबहार मुनकर बीकड़ा हुआ ऊपर को देखा तो भारतीनी गोके को निर  
खी है। लपककर उठे बाबा जिला और उठते मुझे क्या—तू कौन  
है परिवाराल की पटी है या इन्पर के बसादे की हूर।  
भारतीनी ने उंगली हँडों पर रखकर कहा—तुप। अपनी जाल को  
और बाहला है तो कभी मुझे यहाँ से निकाल ले बस नहीं तो हल-तुप दोनों

बाबा ने कहा—मैं रात जी का गीकर हूँ विना भाबा यहाँ से निक  
भारतीनी ने भिड़निकाकर कहा—इत बल्ल तू मुझे अपने सेरे पर  
सुँबा दे, फिर देखा हीना बा। इन्पर रात जी के पाव चुँके। वह बबरावे हुए ठीके  
बाबा का डेरा रिपरदाव के पाव ही था। बारल जी ने ज्योड़ी उठे  
देखा पहजाल बवे। हटपट रात जी के पाव चुँके। वह बबरावे हुए ठीके  
ने। सब मला दिल ही गया बा। रिपरदाव को देखते ही बहुत अराल होक  
गोके—सेरे हाँके से तो दोनों ही तोले उठ दये।

रिपरदाव—जगने से एक तो बड़ जागे ही बाकिल बा उनका क्या  
बजजोम। बाबा जिलारी से अपासदे उठे हसी बस जैमकोर चुँबा जाके।  
नहीं तो इन्पर टोला कभी जाके ही नहीं है तो बाबा से जो बाड़े बह  
रात जी—बबर जालकी यही मुजो है तो बाबा से जो बाड़े बह

हीनिय।

रिपरदाव ने जमी बल्ल जाकर भारतीनी को एक सोली पर सवार  
करके बाबा की हिलकल में जैमकोर में  
रात जी—बबर तो मुटली की टण्टी हौनी ?

रिपरदाव—तू में नहीं बह सकता मसिकि बाप उनका निवार  
जालने है।  
रात जी—इती बर मे तो में उनके पाव गया नहीं। बाप जाकर  
हीनिय बबर ही मके ती मना जावर।

रिपरदाव—बबर उनका जाला बहुत मुकिल है, पर में पाला हूँ।

ईश्वरदास ने जाकर देखा राजमहल सुना पड़ा है और रानी बुर्ज में जा बैठी है। लबासों ने सफेद चाँदनी टाँगकर परदा कर दिया है, बौड़ियाँ-बाँदियाँ पहरे पर हैं पर्ये के पास और दो रानियाँ गंगी लकवारों लिये लड़ी हैं।

ईश्वरदास की हिम्मत न हुई कि तबदीक जाये दूर ही से बेवकर लौट आया और राज ली से सब माजरा सुनाया।

राज ली — (सुँघलाकर) क्या भट्टानी ली बुर्ज में जा बैठी? यह क्या हरकत की?

ईश्वरदास — घायल उस बुर्ज के भाग्य जागनेवासे ये। आज बहाँ बहू टौलक है जो कभी पूष्पीराज चौहान के लल्ल को भी तचीब न हुई होयी। चाँदनी का पर्दा पड़ा है, गंगी लकवारों का पहरा है। मेरी तो बहाँ जाने की हिम्मत न पड़ी और क्या अर्थ करें।

राज ली — (आश्चर्य से) क्या सबमुच गंगी लकवारों का पहरा है?

ईश्वरदास — बीहाँ महाराज यक्रीनही ली बुर्ज बरकर देख लीजिए।

राज ली — तब ली उनका मानना बिलकुल मामुमकिन है।

ईश्वरदास — हुनूर ठीक कहते हैं। रानी ने मुससे पहले ही यह धर्य करवा ली थी। आपने बड़ा राजब किया कि ऐसे माबुक मामले में उनके मिजाज के सिक्काक काम किया। जब एक बार एसी हरकत का बुल लमुर्बा आपको हो चुका था ली बूसरी बार बकर होघियार होना चाहिए था। रानी की तरफ से भी कुछ प्रकती हुई, उन्हें नाटीसी को ऐसे मीके पर भेजना मुनासिब न था। मगर जहाँ तक मेरा लयास है आपकी तरफ से उनके दिख में संदेह था और सिर्फ आपकी परीदा के लिए उन्होंने भाटीसी को भेजा था।

राज ली — होनहार नहीं टकयी। मैं भी बहुत पछताता हूँ। पहली बार भी माटीसी ली की बदीकत बियाड़ हुआ था।

ईश्वरदास — लीर बहू ली किसी तरफ से दूर हुई, बला टकी।

राज ली — इसका भी मुले अकसोय ही रहेगा। उस बेचाटी की कोई लता न थी।

शिवराज — (बाग काटकर) बनी तो मुट्ठी भी रो-बार  
 किया जाय। एक मछुल भासी लही रिखावी हैठी उनके लिये क्या इसकाय

राज भी — मैं तो रुक बला जाऊँगा। मुझे बीकानेर पर कब्जाई करलो  
 हुमायूँ बादशाह के नामे की उबर दी बरु भी नहीं आया। फिर बेकार बरु  
 नयो बरुन करके। पुन बही लही और उब बरु के पाव ऊनाते लही करवा के  
 पड़े बीकी का पूरा पूरा बरुन करके देतो। अब बरु की का निबाय अत  
 भीना हो तो समता मुसाकर जोखपुर के आला। मैं किलेदार से कहूँ ई  
 वह सब इसकाय कर देया।

उन्के हुम से राजीनर परना एनी अगरे की राजीनर में लियकर पूरा  
 उनके पाव अत किया। अब राजीनर में राजी की आजकाली है। किसे  
 बार उसकी इयोकी पर पठे और अनाय का इसकाय करके रोव साम  
 सारे सबान की काबिर होता है। राजीनर का अनाय और हुम से अनाय  
 इयोकी पर मुजे के लिये आला है और उकी की सहाय और हुम से अनाय  
 बने भी अब लही राजी का मुजे करवाये क्या है और आज तक एनी साम  
 से मछुल है।

जोखपुर पूरेबर राव मालदेव ने मुना कि बंवाल में हुमायूँ और  
 दरवाह से कपारि छिड बनी और दिल्ली कापार लाली पना है। किपुबा  
 इन बरुन अहीन बीकानेर का जवाह छोड दिया और पूरा की तक अते  
 पड़े और हिन्दुन अपना तक अगेन करते बले नये। बरु से लोडकर मछु  
 १५१२ में बीकानेर की गोल किया।  
 इन बीन दोस्ताइ हुमायूँ को सिब में मराकर बावरे फुँया। उनके  
 नामे ही के सब राजे रीन-जोखुर जिनके इलाके मालदेव ने बना लिये के  
 बीकानेर की सरपल्ली में दोस्ताइ के दरवार में सरदार के लिये सजिद  
 हुए और उके राव पर हमला करने के लिये आगारा करते नये। मालदेव

वही बेखबर न था। अस्सी हजार सवार खेरसाह के मुकाबले के लिए इकट्ठा किये और ईश्वरदास को लिखा कि माप कडी रानी को लेकर चले जाएँ और बजमेर के किले में जंगी बंदोबस्त करा बीजिए। कडी रानी ने इस पर कहा — मझे क्या डर पडा है। मैं राजपूत की बेटी हूँ। किले पर कोई चढ़ जावेगा तो मैं कुरमेती हूँबी की तरह सज़ुकर मरूँगी। राज जी को लिख दो यह क़िस्सा मेरे भरोसे पर छोड़ दें और बाक़ी राज्य को बचाने का इत्तजाम करें।

राज जी ने जवाब दिया कि बजमेर में तो हम खेरसाह से लड़ेंगे वहाँ रानी का रहना मुनासिब नहीं। अगर उन्हें ऐसी ही रजपूती दिखाने की इच्छा है तो जोधपुर का क़िला हाज़िर है। हम उसे बिस्फुल ठहरी के भरोसे पर छोड़ देंगे। उनको बहुत अस्त साओ।

ईश्वरदास ने तब रानी से कहा — बाई जी महाराज को मापकी बात मज़ूर है मगर बजमेर के बरसे जोधपुर का क़िला आपको सौपा जामगा माप वहाँ तयारी के बसिए। यह अपना पर है। बजमेर तो परायी जामदार है, बोडे ही बिगों से हमारे क़ब्जे में जाया है। रानी ने कहा बहुत खूब जो राज की मर्जी हो बजमेर न सही जोधपुर सही। सबारी का इत्तजाम करो। अगर यह मीका न आ जाता तो मैं वहाँ से हरक़िब न जाती।

### सौतिमा बाह

ईश्वरदास ने बजमेर के हाकिम और क़िलेदार से कड़ाई की तैयारियों का इत्तजाम करने के लिए कहा। इसी बीच जोधपुर से अस्पदेई और डूमरी रानियों ने उसके पास एक बड़ी रिखत भेजी और प्रार्थना की कि जिस तरह मुमकिन हो इस बला को वहीं रहने दो वह किसी तरह जोधपुर

१ कुरमेती हूँबी महाराजा साँग की रानी और जयसिंह की माँ थी। जब गुजरात के बादशाह मुल्तान बहादुर ने संवत् १५९१ में विलीङ्ग का क़िला जीता तो कुरमेती बहतर हज़ार भीरुओं के साथ भावक बचाने के लिए चिता बनाकर जल मरी।

मंगलाचरण

जागे पावे। जमेरा से बरसे बसु हुने बासिे पही बाळ वही वा और  
अब तक बासो इस बात का इयाक रखा है। अब ती बहु मुसुरे ही रोके  
रक पावती है। दुसरा उसे छोड़े नहीं रोके उठता। बाप राब जी को घन  
घारु कि रोना हरिकण न कर। हम इस इयाक से किपु बापके बहुत  
पुश्यामन्य होवे। बापक जी रिखत पाकर निव्यामके के डेर में पक गये।  
कहाँ ती रोके ठीकरी में भी डेर होने कमी।  
एक और रसा मुल लिना। हुमातु में जो देखाह से विकल बाकर  
लिप भाव गया था अब मुना कि राब जी कासिे की सवाटी करती है न  
उके पास गया एक पूर मू संवेस देकर देना कि बाप बरके डेर  
हउिख अल लडिएया। मैं भी बापका पाब होने को जा रहा हूँ। हम दो,  
मिककर उसे हउावे। इस मख के बरके में बापको मुकपल छोड़ करवा  
मै हीकर ठाघरीक काएया। बुरीकाले हमारे रिखेवार है। बहु बापका  
अनर पाव रहे। अबर रिबरबास की वाकीर की कि रागी को लेकर अरब  
भाबो हम हुतुं कुछ उलटी काम के किपु राबक जी के पास अलखेद  
अवेने। राब जी का इयाक था कि इन मख हुमातु की मख करके  
उसे गल पर विडा है और उके नाम से घारा इस जाले बवीन

रिबरपाल ने इन बाबयक कसंदों को पूरा कले में अपना रावा  
करा लिया और वही रागी की बड़ी माल के पाव जोपुदरवाता कर दिया।  
दुसरी रागीने ने अब मू उबर मुनीती इअलीर एक बने कि अब मू बला  
आ लुईनी। मुदी मालम इसके पाव का मारु है कि राब जी इसके बाळ न  
पुछने पर भी बुजाल में कने उले है। अब उसे किना नौपकर बाप कउने  
पायि। बुद बील क्या है मारु की पुनिया है ? मला अब किना उनके  
मारे पर बख्सा ती इयाटी रिबरती इर कर रही। हुने उरकी हुकमल  
न हीनी। उनसे मना मुजोर का पर क्या है कि किना उनको  
१८४



सीपा जाता। वह बाहुगरनी है। बाहुगरनी ने साठ कोस से वह मन्तर मारा कि जिसका उदार नहीं। आशिम बगवान ईश्वरवास भी अपनी तरफ आकर फिर उभर हो गया।

एक सवास ने रानी को यह बातचीत सुनकर कहा कि ईश्वरवास फूट गया तो क्या हुआ उसका भाजा भासा जी तो यही मौजूब है। उससे काम काविए। वह ईश्वरवास से बहुत बयादा होशियार है। रानियों को यह सलाह पसन्द आयी। शासी रानी ने इसी सवास को आसा जी के पास भेजा और कहसबाया कि तुम्हारा भतीजा वहाँ बैठे-बैठे यकी बेइन्साफी कर रहा है, हमें अब आपके सिवा कोई दूसरा मन्तर नहीं भता। आप ही हमारा काम कर सकते हैं। किसी तरह इस बला को रोकिये वना हम कहीं के न रहेंगे। आसा ने कहा वह नासायक मेरे कहने में नहीं है। और जो कुछ हुनम हो उसे बबा आऊँ।

शासी रानी—मट्टानी यहाँ हरमिज न आने पाये।

आसा जी—बहुत अच्छा ऐसा ही होया। न आने पायेगी।

शासी रानी—न कैसे आवेगी वह तो बच बी हैं। कल-परसों तक आ पहुँचेंगी।

आसा जी—आप खातिर जमा रक्षिये मैं उसे रास्ते में रोकूँगा।

रानियों ने मन-बीकत से आसा जी को माकामाक कर दिया और कहा अगर आप हमारा काम कर देंगे तो हीरे-जवाहरात से आपका पर भर दिया जायगा।

आसा जी ने रात जी से यह बहाना किया कि एक बकरी काम से बर जा रहा हूँ और इजाजत पाते ही जजमेर की तरफ चला। जब ओपपुर से पन्द्रह कोस पूरब को साना गाँव के इरीब पहुँचा तो उसे दूर से निजान का हाथी दिखायी दिया और नककारे की आवाज कान में आयी। समझ गया कि कठी रानी की आवाज कान में आ रही है।

सुधारी का दूर तक ताँता समा या। हाथी के पीछे झोंके का नीकत खाना या। उसके पीछे घोड़ों पर नककारा बज रहा था। परा और

संसाधन

मैंने इसे सुअंडे और फिर बीजों का कुछ हुआ में कहना शिकायी दिया।  
 मछों के पीछे लड़क बहादुर राठौरों का एक रिलाला बा फिर एक बलूक  
 रमणु से। उरा और पीछे उनके पोरंधार और उसके बाद बाल-उल्लाराल  
 में दूरे हुए उरी और उरईपल के सामल से मैं भीमि-भीमि बल्ले से। उनके  
 बाद महीन और बोधर सोने वाली के दूरे जिसे राता साउ करते बल्ले  
 बीने भीमि बल्लेवाले जी भी पोरों हलियार क्वाले उरबी को एक  
 बाबा कला जी पर पदी मोर से उरालर मुभरा किना और पूका —  
 भाप यही कही। आवा जी बोले — बाई जी को अपपानी करते  
 बाबा हूँ। दोनों यही कहे होकर बाते करते कले। मुझ बल्ले  
 बला गया।  
 महीनों के पीछे एक जगल सवाल विचों की बापी जो पीर-कजा  
 और उरर क्वाये हुए थी। उरी के मुसुट में रानी उवाये का मुसुट  
 अनुलक जगहल और महीने उर हुए से जिल पर लिवाल मही उरली  
 हुए मुलपाल के पीछे मही क्वाखार के किवाय पड़े हुए से। इस मछे  
 रिलो पालकियो, पीलली और रली से थी। उनके बाद राठौरों का एक रिलाला  
 और रिलाले के पीछे मुलक के बाकी कौल हापी भीम और उरई से। उनके  
 पीछे उरईपजाला पीमाखाला लरखाला और कौम की सुनरी उरली  
 बीजों की बाभिलों थी।  
 बागा जी के उरपरी क्वाले से कि रेलें बागा जी मैंने इस मुस-मुसके  
 से बल्लो हुई रमती सवारी को टोक री बिलके बाई कोई में मही कर  
 सक्या। इसने से कही रानी का मुसपाल बागा जी के बलर का मुसुपा।  
 बोधर के निवाल या गाये से भील की लखीर बनी रेली है।  
 इस कौली निवाल है।

## रानी

उसने बड़े अदब से शेरशाह को आवाज देकर कहा — बाई जी से मर्दानगी का आधा आधा मुझरा करता है और कुछ अर्ध भी किया जाता है। उसके साथ ही यह बोझ पड़ा —

मान रखे तो पीव तज पीव रखे तज मान  
बोमी हाथी बाँधिये एकड़ घतमो ठान

यानी अगर मान रखना चाहती है तो पति को तज दे और पति को रखना चाहती है तो मान को तज दे क्योंकि एक ही घान में दो हाथी नहीं बाँधे जा सकते।

यह बोझ सुनते ही रानी का जोर फिर ताजा हो गया और दिल काट में न रहा। औरत हुकूम दिया कि अभी सवारी लीटो और एक ऊँच नौ आगे रखो उसकी मर्दानगी उड़ा दी जायगी। सब सोच रूख में जा गये कि यह क्या हुआ। यकायक मह कायापसठ क्योंकर हुई। ईश्वरदास ने व्युत्थ शोर मारा हाथ जोड़े पैरों पड़ा सारी नाकछक्ति लपट कर डाली मगर आधा भी के आधुमरे शब्दों के सामने उसकी कुछ न बनी। सरदार शिरहशाहकार बहुत-बहुत आर्जु-मिश्रित करते रहे मगर उसने किसी को न सुनी। उसी कोसाला गाँव में डेरे उछला दिये।

आधा जी को अभी तक संशय था कि कहीं लोचों के कहने-सुनने से रानी का इरादा फिर न पसट जाय। सिहाबा खोली डेरे पर गये वह उसकी खोली पर हाजिर हुआ और मुझरा करके कहा — बाई जी आपकी मिलनी स्तुति की जाय खोली है। आपने जो ठान ठानी है वह आप ही का काम है।

रानी — बाबा जी यह बोझ फिर पड़िये। बहुत अच्छा और सच्चा है। मैं अपनी टुक कमी न छोडूमी।

आधा जी — (बोझ पड़कर) बाई जी राजाओं में सच्चा मानी दुर्बलन हुआ। उसी कुरु में आप है। रानियों में आपका-सा अपनी बात पर कायम रहनेवाला कोई और नहीं है।

रानी — बाबा जी दुर्बलन नाम का तो एक ही राजा हुआ है पर

जगदी उमा के मास की तो कई रातियाँ हुईं। उनमें एक के मास का चर  
दोहा मधुपुर है—

हार तियो क्यो कियो मोखो मास मलय  
जमा पीठ न बखो जादी केज करय।  
मागी हार शिया शिवावा इरय कोपी फिर भी उमा को जल का  
हुंख न महीन हुमा। उनकी डिम्बल की लकीर बादी एक मदी।

रानी — (रोकर) बाबा जो रोहे में लिङ्ग बना रहा है, माँकेले  
मट्टनी केज जाके।  
बाबा जी — क्यों न जाके। यह रोहा बचक्याल का कष्ट हुमा  
जमादेर माँकेले जलकी रानी थी। जसे जल जाले है, जमा हुन मही जाले ?  
रानी — अरे और पुस्यारे जाले से क्या होला है। रोहे में तो कई  
मास्यो मही की। अरे और पुस्यारे पीछे केज जाकेना ?  
बाबा जी — पुस्यारे पीछे एक भयर जौला रू' तो पुस्यारे मास को  
भयर बना जाकेना।

१ जमादेर लोलेली बापों के राजा बचक्याल की रानी थी। उसके  
कील लोली रानी राजा के दोहे मेंहु लगी थी कि राजा उसके बर से लोलेली  
के पाल मही बाबा बा। जब इस तरह बहुत पाल मजबूत मों तो एक दिन  
लोली रानी ने लोलेली के पाल एक जलमोल हार देकर एक राज के लिङ्ग  
पाल जाने है। लोली ने यह बात मंडूर कर दी मगर राजा को एक पाल उलके  
शिया कि जाम्ब मगर बुचक्याल पल बचक्याल के भाल। राजा ने राजा  
मगर जलमुरीर राजा को बारा भी पाल न माला। राजा में यह रोहा मना।  
मिराया के समय में यह रोहा बना करते हैं।

रानी — बड़ी खरियत हुई कि आप जा गये। अगर आप न जाते तो न जाने क्या होता। आपके मतीजे के हमबापों में आकर मैं अपनी मरबाद छोड़ देती तो सीतों मुस पर हँसती और कहती कि अस इतना ही पानी था।

इतने में जोबदार ने आकर अर्ज किया कि ईश्वरदास हाज़िर है। बाबा भी यह सुनते ही सटक गये। ईश्वरदास ने आकर कहा — बाई जी आपने यह क्या जुस्म किया बलती सबायी राह में ही ठहरा दी। राब जी आपका रास्ता देख रहे हैं। कुमार रामसिंह रायमल उदयसिंह और चन्द्रसेन आदि आपकी बगबानी के लिए तैयार हैं। सारे सहर में बसल ही रहा है कि बूठी रानी तपरीक़ साती हैं और राब जी उन्हें क़िसा साँपकर लड़ने जाते हैं। मका यहाँ एक जाने से सोय अपन दिल में क्या समसेये।

रानी — इन्तबाम जो हो वह मेरे सुपुर्ब करें और खुब धीक़ से लड़ने जायें। राजपूतों को दुस्मनों से लड़ने में बीस-बाक़ न करनी चाहिए।

ईश्वरदास — क्या अंभेर करती हो यहाँ रहकर क्या करोगी। राब जी ने अपने-पराये सबसे दुस्मनी पैदा कर रक्की है, सारे खानदान में फूट फँसी हुई है। बहारेब मेड़ठिया और मारबाड़ के दूसरे ठाकुर और जागीरदार, जिनकी बमीन राब जी ने छीन ली है दोरसाह के पास ख़रियाद करने गये हैं। एक तरफ़ से दोरसाह और दूसरी तरफ़ से हुमायूँ के जाने की सबरें उड़ रही हैं। ऐसी हाक़त में तो यही मुतासिब है कि आप जोबपुर बलकर क़िले की निगरानी कीजिये।

रानी — बादसाह जाते हैं तो मान दो मुझे जनका क्या बर पड़ा है। मैंने तो तुमसे जो बात अजमेर में कही थी वही यहाँ भी कहती हूँ। राब जी अगर कोई काम मेरे सुपुर्ब करेगे तो मैं यहाँ बैठे-बैठे जोबपुर समहाक लूंगी। राब जी वहाँ जाहे जायें मैं सब जोबपुर न जाऊँगी। हाँ अगर राब जी की मर्जी हो तो राबसर में जा रहूँ।

ईश्वरदास कह-सुनकर हार गये। अब कुछ बस न बला तो जोबपुर जाकर राब जी से अर्ज की कि मैंने तो बाई जी को यहाँ जाने पर राजी कर लिया था अगर बाबा जी ने बनी बात बिगाड़ दी सारी मेहनत पर पानी



श्रीरत्न मारबाड़ पर चढ़ दीं। राव जी अजमेर जाने की तो पहले से ही तैयार थे अब मेड़ते का रास्ता छोड़कर जेठाराम के रास्ते से चले। जोधपुर के श्रीमदार ने राव जी के हुजम से कोसाला में जाकर रानी उमादेई के बुल्लस का इत्तजाम मेड़ते के हाकिम से ल मिया। मेड़ते के हाकिम और आसा जी दोनों में झगड़ते होते बचन रानी की सरकार से बिलगत पायी। हाकिम मेड़ते को गया आसा जी जैसलमेर सिवारे। राव जी ने मादिरसाही हुजम से लिया था कि तुम आज से हमारे राज में न रहना।

जब राव जी अजमेर पहुँचे तो खेरसाह ने सुना कि उनके पास अस्ती हथार सवार हैं। सुनते ही सघाटे में जा गया। हियाब भूँ गया। आगे कदम न उठे। मगर बीरम जी मेड़ते ने कहा — आप बस तो सही, मैं राव जी की बम के बम में मगामे देता हूँ। हिन्दुओं में अजबम और कूट ने हमेघा मुस्क वीरान किये हैं और ईरों से हमेघा हारें बिलायी हैं। यह बीरम जी मेड़ते का सरदार और उस बहादुर बीमल का बाप था जिसने भित्तीड़ के घेरे में अकबर की नाकों बने बचवाये थे और जिसके नाम पर आज तक सारा राजस्थान गर्ब करता है। राव जी ने उसे मेड़ते से निकाल दिया था। इसी का बदला लेने के लिए वह खेरसाह से जा मिला था।

खेरसाह को बीरम जी के कहने का यकीन न हुआ वह फूँक-फूँककर अरम चरता आगे की चला मगर जब अजमेर के बहुत कठीब पहुँच गया तो उसने जमस कहा कि अब आप अपनी हीसियाटी दिखाइये। बीरम ने कहा — बहुत बुरा। बुनाबे उसने राव मासरेव जी के सरदारों के नाम अरसी में इस मजमून के अरमान लिखे —

हम आप साहबों के लगातार ठकावों से मजबूर होकर यहाँ तक आ पहुँचे हैं। अब आप लोग अपने बचन के अनुसार राव जी को गिरफ्तार करने हमारे पास से आवे। खर्च के लिए श्रीरोबिया<sup>१</sup> भेजी जाती है।

इससे बाद बहुत-सी डालें मँगाकर एक अरमान जल्दी गद्दी में रसकर ली दिये और जिस डाल में जिस सरदार के नाम का अरमान था वह उसी

१ श्रीरोबसाही सिक्कों को कहते थे जो इस जमाने में चलता था।

संस्काररथ

प्राण है, कहीं से जाये, इस ठी केलाह दे नहीं जानकर कहे। यह भी तो  
रहे कि रामभूत जमीन के लिए कौमी नेलवी से करकर बात हो है।  
एक भी ने कहा — यहाँ जगना किमु है। जब बने है तो जोरभूत हो  
सुंकर कहे। मर जेता कौना ने न माला। ने जगने एक हजार बाल पर  
केनेवाके बहादुर राठोरी को केकर पल्ले और बारबाही कीज पर मिल वने  
मर इस हजार रामभूत पचास हजार बारबाही कौज पर मिल वने  
मर देला भी तोकर कहे कि बायसाह उनका बर हाए बर हाए।  
वक्रे के। हाँ मरने उस रामभूत किठोरी का मरना बिला जिया  
कोरुए सोकरे हरीपाटी बिलोवन के मरानों में बार-बार जाति हो  
जकी है और जगने सब के सब देत रहे मर बगरी बहादुर का निकला  
बायसाह के रिक पर जमा गये। घेरसाह ने जगना का दोहर मुक्ता क्का  
किना और सरहाटी से कहा — बड़ी अरिख हई जगने मुहली पर बगने के

मरने विल इस हार की कर पाकर राव जी ने बराने की ठाड़ बाल  
कीस को जिया कि किने की पूर बैबाटी करो और रागियों को  
मरने विल सब रागियों को बराने भेज दिया। जोरभूत ने पकिठन +  
मरने पास भेज रो। बड़े रागी को भी यही पैमान दे दो। खिलार ने  
जुनी ठीकर बरल हो बने से और कुछ है। और बुर किला दुपल करके कले  
ही भले। इस ठाड़ रागी के पास निककर कोलाके में बड़ी रागी की बरुमारी के  
से पूर न किया।  
घेरसाह मर तो न बाया मर जगने सरबार उबाल जाँ को पाँच  
हारात निराहिली के साग जोरभूत कोरु करके के लिए भेजा। उनने बाकर  
किना कर दिया। खिलार उनने कई विल एक क्का मर जब किने का  
सब पानी जगने ही बुका तो जगने बरबाबा भोक दिया और एक बसालन



सड़ाई लड़कर मर गया। क्रिसे पर खवास खाँ का क्रम  
तख़्ता राब जी की बरमुमानी और बुजदिली से दुश्मनों के हाथ  
उत्तेह का शबा दे दिया।

बेता और कौषा के मारे जाने के बाद भी राब जी के पास छत्तर हजार  
सिपाही थे। अगर बजाय सेवाने के खोबपुर आठे और सारी ताकत से  
मुकाबला करते तो यकीन था कि बादशाह की हार होती बर्ना यह नीबठ आ  
गयी कि पाँच हजार आबमियों ने खोबपुर को घेरा डालकर जल किया।  
राबपुतों ने जहाँ असीम बीरता दिखायी है वहाँ बहुत बार रणनीति के अपने  
अज्ञान का सबूत भी दिया है।

खवास खाँ ने क्रिसे पर अपना क्रम बजाकर खीर का एक हिस्सा  
बीकानेर को रखाता किया कि वह राब जीसठी के लड़के कल्याणमल को गद्दी  
पर बिठा दे। इसी तरह बीरम जी के साथ भी बोझो-सी खीर मेड़ता उत्तेह  
करने के लिए भेजी।

इतने में खवास खाँ को खबर मिली कि राठीर कोसाने में जमा हो रहे  
हैं। वह खीरन पहुँचा और ठठी रानी से कहलाया कि या तो हमसे लड़ो या  
जगह खाली कर दो। रानी ने जबाब दिया कि मैं लड़ने को तैयार हूँ तेरा  
जब जी चाहे भा जा। मैं बीरत हूँ तो क्या मगर राबपुत की बेटो हूँ।

खवास खाँ ने अपने सरदारों से सलाह ली कि अब क्या करना चाहिए।  
उन्होंने कहा अभी थोड़े से राबपुतों से बादशाह से लड़कर आश्रय मचा ली  
थी। उनके साथ राजा भी न था। अगर वह होता तो नहीं मामूम क्या  
बुराब हो जाता। अब फिर उन्हीं से खामशाह सपड़ा मोल लेने की क्या  
बकुरत। यह ठीक है कि राजा यहाँ नहीं है, मगर रानी तो है। उसके  
सरदार अपनी रानी की इरबठ बचाने के लिए जी लौड़कर लड़ने और रानी  
बुद भी बचनेवाली नहीं मबर आती। खवास खाँ ने कहा यह तो ठीक है  
अगर यहाँ से बिना लड़े बला जाऊँगा तो लोप कर्हने कि मर्य होकर एक भीरत  
के सामने से भाग गया। सरदारों ने जबाब दिया कि भीरत से न लड़ने में  
इतनी जिस्मत नहीं जितनी उससे हार जाने में। आखिरकार यह फ़ैसला  
हुआ कि इन मामले से बादशाह की राय की मुबारिका की जाय।

में राती की ही पड़ना है। राती काजकोई के अपने डेरे कुमार राम की राती छेड़वाने का सामान करके राम की से इस एज के बसा करके और प्रजम मानने की इजाजत मानी। उन्हे मरुत कर दिया मकर मुँके बाकर बुकियो मलादे जो रिककहा बानो और नरबाटी से भात हुआ है। इस कहने से बहु मखीर बना बाया और यहाँ अपने दोस्तों और सदसियों और अपना भेर जालेबानों को बना करके रोला कि राम की बुद्धि ही तपे है। उगरी बदरलबानी से मुँक में मगने मके हुए हैं। अपने रोला को रोब व रोब दुमनों से निकले जते हैं। लिखुबा मार मरी से बल्ले ही उन्हें पकड़ की और ऊँच कर दो एक मुँक में जमान-मन ही मार। यहाँ बहु मलाह होली ही रही उबर राम की को भी इसको उबर लन गयी। यही कहता कि बनी किले से लीके या जाने। राती ने पूजा भेरी तथा ? क्या मिला कि ठेरा देता दुसरे बल्ला देना। राती को उगी दम किना छोपना पड़ा। राम को राम की मगम के मते में मुल्ला हुआ बाया और किले में जाने बाया ही किलेपाद ने कहा बायो मरुत जाने का दुमम कहत है कि पुन मीठीय बने जाये। यही पुसारे लिखु सब इसकाय कर दिया बाया। मरुतल राम बली मो के बाब मीठीय बना गया। राती रामियों के पीछे यही कि किमी ठकू यह सिल छाली पर से मारक जाली हो जिद किमी बाल का पच्छा न रहता। ह्वादे हाब में राम की ही ह्वादे से राम देना बायावोली और कनावी ही गया है। रामियों के ह्वादे

१ मीरीर मारबाय को मुल्लो राबबालो है। जोबुद से तील कोब  
 मार में एक पशुमी के मीके बला है।

## कठो रानी

से और लोगों ने भी कठो रानी की शिकायत की। यहाँ तक कि राव जी ने उसे भी गौडीज भेज दिया। अब की बार पति की आज्ञा उसने बड़े सौक से मानी क्योंकि कछवाही रानी और कुमार राम से उसकी बहुत स्नेह हो गया था। इसके अलावा वह राव जी को इतनी परीयानियों में फँसा देकर उन्हें तब करना ठीक न समझती थी। जिस दिन उसके गौडीज जाने की खबर रनिवास में पहुँची उसकी सौत्रों के घर भी के चिरास असे।

कुमार राम की शादी राणा उदय सिंह की लड़की से हुई थी। गौडीज में अपना निवाह न देकर वह उदयपुर चला गया। राणा ने उसका बड़ा स्वागत-सत्कार किया और मौजा कलवा उसके रहने के लिए दे दिया जो मारवाड़ से बहुत मजदीक है। बोड़े दिनों में राम अपनी माँ और उमादे दोनों को उसी जगह ले गया। इस तरह शाही रानियों की आज्ञा का कड़ा निरूक्त गया। राव जी भी बाहरी और भीतरी छसटों से फुरसत पाकर बेध जीतने में लग गये और बहुत से लोने हुए इलाके फिर से लिये यत्कि कई नये इलाके भी छेहे किये।

मगर इन छेहेओं का सिससिमा बहुत जल्द टूट गया। अकबर के उत्तर पर जाने और ओर पकड़ने से राव जी को अपनी ही पगड़ी समझानी मुश्किल हो गयी। धीरे धीरे कितने ही इलाके हाथ से निकल गये। जबाम बादशाह की ओपीसी चढ़ाईयों का बूझा राव गया सामना करता। उसकी जिनगी के दिन भी पुरे ही गये थे। आखिर संवत् १९१९ के कातिक महीने में राव मालदेव ने बड़ी कामयाबी से राज करने के बाद स्वर्ग की राह ली।

### कठो रानी का सती होना

रानिमाँ सती होने की तैयारियाँ करने लयीं। शाहा रानी को उसके बेटे चन्द्रसेन ने सती होने से रोक लिया और कहा कि दो-चार दिन में सब सज्जदार बाहर आ जायेंगे उनके मेरी मदद का वादा कराके तब सती होना। शाही रानी ने चन्द्रसेन को बाबजूद उदयसिंह से छोटे होने के राव जी से कह-मुनकर उत्तराधिकारी बनवा दिया था। रानी हीरादेई ने भी समझाया कि चन्द्रसेन को इस तरह छोड़कर सती होने में बहुत नुकसान

मंगलाचरण

जा तो कुछ बयाल ही न बिना बीर क्या करता। यह बरा देर खर जाता  
तो हमें राम जी के नाम जाने में इसी देर न देती। उसको देखना कौन  
या नाम दे देखा तो क्या जाता।  
पति का प्यारा नाम सुनकर अगारुई को जेब का गया। पति को  
माझी मुहलत घण्टा भ्रम उस पर छा गया। उस बसल उसकी निवास  
जिन पर पत्नी ही यह मसबाका ही जाता था। किन्ती के बुन कहा है—  
मेन छके बैना छके छके अरर मुसकाय  
कमी बुद्धि का परवने रीज रीज छक बाय।

माजी जाके बाले बीर मुकलमेवाके हीं छक तये में मल ही बीर मल  
मियाहू विज पर पत्नी है उसका टोमी मल ही बावा ही।  
किर कही रामीने चरा मालक नाम का एक अंगक रठोर मिला। यह  
हरी है ? अगारुई के जील मालक नाम का एक अंगक रठोर मिला। यह  
अला बला जाया और बाब बीरकर बोला — ली माला मुस पर बवा  
कीजिय में तो मुस से तन होकर माकाय चीन बाया हूँ और मेवाय में  
नेहल मसदूरी करके रेट वाला हूँ। मैं बिना में जान लेने के काबिल नहीं हूँ।  
अगारुई के बहू — ठाकुर इटो मल लाल करके पिता में जान दे दो।  
मुन रठोर मल के ही बसलिय मुहू बुलया है।  
अगारुई के बहू — ली माला जात तो मैं तुंमा पर माली छुं  
अगारुई के बहू — ठाकुर इटो मल लाल करके पिता में जान दे दो।  
बलै किर बहू की — ली माला जात तो मैं तुंमा पर माली छुं  
बिनाबर बाबू रित बहू हैतुमा। मेरा तो बर भी इतना मया नहीं है कि  
अगारुई के बहू मुनकर दुंगी को स्वागत किया। अगले उसी वन राया  
उके गारों की छहू में रात काटा करता हूँ। मैं तो पेटों के  
बी के नाम मलिया की ठाकुर मे छन मिला कि राम हमको और मनी बिये  
बसा गया है। अब यह कौनसा बाबू अगले चीनकर जील मालक रठोर को  
है है। इस ठाकुर ली के वन हवार का मौर उन रठोर अटैब को रिला  
किया। चील मालक के बिट्टी हाथ में ली और अटैब यह बीरकर रिया।

बाय दे दी। इन काल में बहूँ राज की एक डेरी के निवा कोई निदान बाणी न रहा। बहूँ की बहूँ में हवा ने राज के डेरी को इतर-उतर बिबेरकर मीर की जिज्ञा समान कर दिना।

सा सहर बहूँ नी न छोड़ी तुने मी बावे सबा  
मारगारे रानडे म्मुक्ति भी परवाने की बाक

मपर बाक न रहीं ती क्या कठी रानी का नाम अभी तक बना बाजा है। मीर अभी तक उनके नाम का भरव करते हैं। इस तरह रादी के सत्तारिम बरस बाद समावेई का मान टूटा और मान के साथ विन्दगी का पाला भी टूट गया। उमावेई म्हुनी तुसे बन्ध है। अब तक तू विन्दा रहीं तूने जान निबाड़ी और मरी मी ती मान के साथ मरी। तू विमान पर बहूँ का उरिस्ते हाथों में फूट निम्न तेरे इन्धवार में बड़े हैं कि तुसे देखें और फूनों की बरणा करे। ऐ बिबि देवी जा सतीत्व तुस पर स्योछावर होने की तैबार है और तेरा प्यारा पति जिसके नाम पर तुने जान की बाँधें बिछाय तेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

उमावेई म्हुनी के सती होने की खबर जब जोधपुर पहुँची तो लोच धन्ध-धन्ध करने लगे। जायन रहे बहूँ बाटी बंध जिसमें ऐसी-ऐसी राज कुमारियाँ पैश होती हैं बति से कठने पर मी बिबके सतीत्व की बाबर पर कभी कोई बन्धा नहीं भपला, जिससे कठनी हैं सती के खबरों पर अपना सर निछावर कर देती हैं। ऐसा कठना कहीं किन्हने देवा है ?

राज की के देहान्त के बाछुँ बिन जीव माकबत के लिए जोधपुर के पपड़ी बायी। उसने सब किया-कर्म करल बपड़ी बायी फिर सधपुर जाकर बहूँ बिट्ठी राजा सरपनिह की बी। उन्होंने बिट्ठी पढ़कर आदरपुरीर उठे सिर पर रस लिमा और कमेवा का पट्टा उसके नाम लिम्ब बिमा। उसने जोटकर उठ बाँध पर अपना इम्मा कर लिमा। जहाँ कठी रानी सती हुई थी बहूँ एक बन्धी छपरी बनवा बी थी जिसका निदान अभी तक मीमूर है। कठी रानी की सिफारिस से जिस तरह जीव माकबत की कमेवा निम्न गया उनी तरह उसकी बहबुजा भी बेजसर न हुई। मुबार राज की जोधपुर









## रुठी रानी

धासा जी ने उसी ब्रह्म चौबहू बंदों की एक कविता सिखी और उसकी मऊसे सारे राजपूताने में भिजवायी क्योंकि उसने वादा किया था कि अगर मैं तुम्हारे बाब तक बिधा रहा तो तुम्हारे नाम को अमर बना जाऊँगा। बात के पक्के में अपने वादे को पूरा किया।

मह पद आज तक नारबाड़ में बच्चे-बच्चे की खबान पर हैं और अब तक इन पर्वों के पढ़नेबासे बाक्री रह्ये रुठी रानी का नाम रीतन रहेगा।

